अपराध और दण्ड

दोस्तोवस्की

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन,
मथुरा

★

अनुवादक :
प्रवाहण सूर्य एम० ए०

★

प्रथम संस्करण
१९५६

★

मूल्य
चार रुपया

★

मुद्रक :
साधन प्रेस, मथुरा।

अपराध और दण्ड

"मुझे इन बेकार की बातों से क्यों भयभीत होना चाहिये जबकि मैं भय से मुक्त 'कार्य' पर विचार पूर्वक विचार कर रहा हूँ," उसने विचार किया। तब वह एक अनोखी हँसी हँसा। "ओह! मनुष्य उपचार भी अपने ही हाथों में रखता है, और केवल बुजदिली के सहारे ही वस्तु को अपने आप गतिशील होने दो—यही तो सूत्र है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि मनुष्य किस चीज से सबसे अधिक डरता है। लेकिन मैं तो बहुत अधिक बोल रहा हूँ। मैं चूँकि बोलता हूँ इसलिये कार्य कुछ नहीं कर रहा हूँ यद्यपि मैं ऐसा कह सकता हूँ चूँकि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ इसलिये बोलता हूँ। गत माह से मैंने इस प्रकार बात करने की आदत डाल ली है। मैं अब क्यों जा रहा हूँ? क्या मैं उस कार्य के योग्य हूँ? बिल्कुल नहीं! ये सब बेकार की बातें हैं जो मेरे दिमाग में आ गई हैं!"

सड़कों पर गर्मी असहनीय थी। भीड़, चूने के ढेर, ईंटें, लकड़ी के तख्तों के मचान और वह विचित्र गंध जो कि सेंट पीटर्सबर्ग के रहने वालों की नाकों के लिये स्वाभाविक हो गई थी तथा जिनसे गर्मी के दिनों में बचने का कोई भी साधन नहीं था, इन सबने उस नवयुवक के बिगड़े मिजाज को और बिगाड़ देने में सहायता दी। शराबखानों की तीखी गंध ने, तथा हर स्थान पर दृष्टिगोचर होते हुए मदमस्त शराबियों के दृश्य ने उस वातावरण की कटुता को पूर्ण कर दिया। कुछ क्षण के लिये हमारे नायक के सुसंस्कृत हाव भावों को कटुतापूर्ण नैराश्य में बदल दिया। कुछ ही क्षणों में वह गहन चिन्ता में, या एक प्रकार की मानसिक उदासीनता में डूब गया। वह उस वातावरण में बिना ध्यान दिये, या ध्यान देने का प्रयत्न किये हुए चलता गया। वह कभी-कभी अपने आप कुछ शब्द बोलता जाता था। यह उसकी आदत हो गई थी। इसी समय उसे ऐसा भास हुआ कि जैसे उसके विचारों में कुछ गड़बड़ होती जा रही थी तथा वह कुछ कमजोर सा हो गया था; दो दिनों से उसने ध्यान देने योग्य कुछ भी नहीं खाया था।

उसके कपड़े भी बेतुके थे। सेन्ट पीटर्सबर्ग के मध्य में, उन सड़कों पर जो कि हेमार्केट के पड़ोस में थी, अधिकतर मिस्त्रीगण रहते थे इसलिये वहाँ पर साधारण कपड़े कम से कम आश्चर्य की वस्तु थे। इसके अतिरिक्त उस नवयुवक की भयानक नफरत इस सीमा तक पहुँच चुकी थी कि, अपने प्रति

अपराध और दण्ड

पहिला भाग

१

जुलाई की एक गर्म सन्ध्या में, परिग्राम—के पाँच मंज़िले मकान के एक कमरे से सटे हुए निवास स्थान से, एक नवयुवक निकला। फिर वह अनिश्चित दशा में धीरे धीरे क—पुल की ओर मुड़ा। ज़ीनों पर सौभाग्य से वह अपनी मकान मालकिन से नहीं मिला। उसके नीचे की मंज़िल में ही वह रहती थी। इस प्रकार जब भी यह नवयुवक कभी बाहर गया तो उसे रसोई को ज़ीने में से होकर जाने पर मजबूर होना पड़ता था। उस उसका कुछ रुपया देना था, इस कारण उसकी मुठभेड़ से डरता था।

यह बात नहीं थी कि वह दुर्भाग्य से भयभीत या कुचला गया था। पर बात यह थी कि कुछ दिनों पहिले से उस पर मानसिक उदासी छा गई थी जिसे कठिन-भय का भागी भी कह सकते हैं। वह समाज से अलग हो गया था। उसने अपने को इतना सीमित कर लिया था कि न केवल मकान मालकिन से ही, वरन किसी भी आदमी की शक्ल से दूर भागता था। गरीबी ने एक बार फिर उसे दबा दिया था; उसने अपने रोज़ के काम छोड़ दिये थे। पर अपने हृदय में मकान मालकिन के ऊपर तिरस्कार-पूर्ण हँसी हँसता था। फिर भी उसने उसकी माँगों तथा शिकायतों को सुनने से बचने के लिए, यही ठीक समझा कि बिना ध्यान दिए चुपचाप नीचे चला जाए। इस समय जब कि वह सड़क पर आ गया था तो उसे उस औरत से, जिसका कि वह कर्ज़दार है, मिलने से डरने के विचार पर आश्चर्य हुआ।

अपराध और दण्ड

पहिला भाग

१

जुलाई की एक गर्म सन्ध्या में, पेरिश्रोस—के पाँच मंजिले मकान के एक कोने से सटे हुए निवास स्थान से, एक नवयुवक निकला। फिर वह अनिश्चित दशा में धीरे धीरे क—पुल की ओर मुड़ा। सीढ़ियों पर सौभाग्य से वह अपनी मकान मालकिन से नहीं मिला। उसके नीचे की मंजिल में ही वह रहती थी। इस प्रकार जब भी यह नवयुवक कभी बाहर गया तो उसे रसोई की बगल में से होकर जाने पर मजबूर होना पड़ता था। उसे उसका कुछ रुपया देना था, इस कारण उसकी मुठभेड़ से डरता था।

यह बात नहीं थी कि वह दुर्भाग्य से भयभीत या कुचला गया था। पर बात यह थी कि कुछ दिनों पहिले से उस पर मानसिक उदासी छा गई थी, जिसे कल्पित-भय का रोगी भी कह सकते हैं। वह समाज से तटस्थ हो गया था। उसने अपने को इतना सीमित कर लिया था कि न केवल मकान मालकिन से ही, वरन् किसी भी आदमी की शकल से दूर भागता था। गरीबी ने एक बार फिर उसे तोड़ दिया था; उसने अपने रोज के काम छोड़ दिये थे। वह अपने हृदय में मकान मालकिन के ऊपर तिरस्कार-पूर्ण हँसी हँसता था। फिर भी उसने उसकी माँगों तथा शिकायतों को सुनने से बचने के लिये, यही ठीक समझा कि बिना ध्यान दिए चुपचाप नीचे चला जाय। इस समय जब कि वह सड़क पर आ गया था तो उसे उस औरत से, जिसका कि वह कर्जदार है, मिलने से डरने के विचार पर आश्चर्य हुआ।

"मुझे इन बेकार की बातों से क्यों भयभीत होना चाहिये जबकि मैं सब से मुख्य 'कार्य' पर विचार पूर्वक विचार कर रहा हूँ," उसने विचार किया। तब वह एक अजीबसी हँसी हँसा। "ओह! मनुष्य अपना सब कुछ अपने ही हाथों में रखता है, और केवल बुजदिली के कारण ही वस्तु को अपने पास गतिशील होने दो—यही तो सूत्र है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि मनुष्य किस चीज से सबसे अधिक डरता है। लेकिन मैं तो बहुत अधिक बक रहा हूँ। मैं चूँकि बोलता हूँ इसलिये कार्य कुछ नहीं कर रहा हूँ यद्यपि मैं ऐसा कह सकता हूँ चूँकि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ इसलिये बोलता हूँ। गत मास से मैंने इस प्रकार बात करने की आदत डाल ली है। मैं अब क्यों जा रहा हूँ? क्या मैं उस कार्य के योग्य हूँ? बिल्कुल नहीं! ये सब बेकार की बातें हैं जो मेरे दिमाग में आ गई हैं?"

सड़कों पर गर्मी असहनीय थी। भीड़, चूने के ढेर, ईंटें, लकड़ी के तख्तों के मचान और वह विचित्र गंध जो कि सेंट पीटर्सबर्ग के रहने वालों की नाकों के लिये स्वाभाविक हो गई थी तथा जिससे गर्मी के दिनों में बचने का कोई भी साधन नहीं था, इन सबने उस नवयुवक के बिगड़े मिजाज को और बिगाड़ देने में सहायता दी। शराबखानों की तीखी गंध ने, तथा हर स्थान पर दृष्टिगोचर होते हुए मदमस्त शराबियों के दृश्य ने उस वातावरण की कटुता को पूर्ण कर दिया। कुछ क्षण के लिए हमारे नायक के खूबसूरत हाव भावों को कटुतापूर्ण घृणामय में बदल दिया। कुछ ही क्षणों में वह गहन चिन्ता में, या एक प्रकार की मानसिक उदासीनता में डूब गया। वह उस वातावरण में बिना ध्यान दिये, या ध्यान देने का प्रयास किये हुये चलता गया। वह कभी-कभी अपने आप कुछ शब्द बोलता जाता था। यह उसकी आदत हो गई थी। इसी समय उसे ऐसा भास हुआ कि जैसे उसके विचारों में कुछ गड़बड़ होती आ रही थी तथा वह कुछ कमजोर भी हो गया था; दो दिनों से उसने ध्यान देने योग्य कुछ भी नहीं खाया था।

उसके कपड़े भी बेहूदे थे। सेन्ट पीटर्सबर्ग के मध्य में, उन सड़कों पर जो कि हेमार्केट के नज़दीक में थीं, अधिकतर भिखारी रहते थे इसलिये वहाँ पर साधारण कपड़े कम से कम आश्चर्य की वस्तु थे। इसके अतिरिक्त उस नवयुवक को भयानक नफरत इस सीमा तक पहुँच चुकी थी कि, अपने अति

सुई-धुई-पथ के अलावा भी उसे अपने फटे पुराने कपड़ों का सड़क पर प्रदर्शन करते किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव नहीं हुआ। पर यदि कोई जान पहिचान वाला सामने आगया होता तो उसने ऐसा अनुभव नहीं किया होता। फिर भी, मार्ग से जाते हुए एक शराबी की मोटी आवाज़ को सुनकर, जो कि उसकी ओर इशारा करके कही गई थी, रुक गया। "ए! उस जर्मन टोप वाले की तरफ देखो।" उसने अपना टोप उतारा और उसे देखने लगा।

"मुझे यही शङ्का हुई थी" कठिनाई के साथ वह बड़बड़ाया, "मैंने इसे पहिले ही सोचा था। यह टोप तो वास्तव में बड़ा दर्शनीय है, यह कितना बेतुका लगता है। इन चिथड़ों से मेल खाने के लिये मुझे एक टोपी लेनी चाहिये; इस सब से तो कोई भी पुरानी वस्तु ठीक रहेगी। मुझे इसी तरह, कम से कम ध्यान आकृष्ट करना चाहिये। ज़रा सी बातें महत्वपूर्ण बन जाती हैं, हर चीज़ फिर उन पर आधारित हो जाती है।"

उसे बहुत दूर नहीं जाना था। अपने निवास स्थान से जहाँ तक वह पहुँचा था वहाँ तक की दूरी वह जानता था—ठीक सातसौ तीस कदम।

ज्यों ही वह उस इमारत की कतार के सामने आया जिसके कि एक ओर नहर थी तथा दूसरी ओर सड़क त्यों ही उसका दिल धड़कने लगा। उसके हाथ पैर काँपने लगे। दो दरवाज़ों के द्वारा भीतर तथा बाहर से लोग इकट्ठा हो रहे थे। तीन या चार कारीगर वहाँ खड़े थे। वे उसी मकान के थे। लेकिन उस नवयुवक का किसी से भी सामना नहीं हुआ, इसकी उसे तसल्ली थी। और उनका ध्यान बचाते हुए वह एक दम जीनों की दाहिनी तरफ चढ़कर अन्दर घुसा। उसने इस अँधेरे तथा पतले जीने से अपने आपको अभ्यस्त बना लिया था। घूरती हुई आँखों से बचाने के लिये वहाँ काफी अँधेरा था। "यदि मैं अभी अपने को इतना कायर अनुभव करता हूँ तो उस समय क्या होगा जब कि मैं अपनी योजना को कार्यान्वित करूँगा!" उसने विचार किया ज्योंही वह चौथी मन्ज़िल पर पहुँचा। यहाँ उसने रास्ता रुका हुआ पाया। कुछ सैनिक चौकीदार फर्नीचर को हटा रहे थे। "भविष्य में कुछ समय के लिये इस स्थान पर उस वृद्धा के अतिरिक्त और कोई नहीं होगा। उस वृद्धा की घण्टी को बजाते हुए उसने अपने मन में कहा। बड़ी हल्की सी ध्वनि आई जैसे वह घण्टी

मजाम सौंपे के सिर की मरी हुई हो। ऐसे मकानों में छोटे छोटे निवासों के
ऐसी ही गन्दी होती है।

दूसरे ही क्षण द्वार थोड़ा सा खुला तथा उस कमरे की रहने वा
सिरिच्छ-शक की दृष्टि से आगन्तुक को अपलक द्वार से झाँकना आरम्भ कि
उसकी छोटी चमकती हुई आँखें उस अंधेरे में से चमकते हुए बिन्दुओं
भाँति चमक रही थी। लेकिन जब उसने उस स्थान पर उसको देख लिया
उसे विश्वास हो गया, और उसने द्वार पूरा खोल दिया। वह नवयु
उस चेम्बर में घुसा। वह बुढ़िया तीव्र दृष्टि से देखती हुई उसके सामने चुप
खड़ी हो गई। वह लगातार साँस रही थी। शायद वह गन्तव्य उसे सि
प्रकार से देख रहा था, क्योंकि एकदम बुढ़िया के चेहरे पर अविश्वास की झल
दिखाई दी।

"विद्यार्थी रासकोल्निकोव। एक मास हुआ मैं आपके पास आ
था।" जरा झुकते हुये आगन्तुक ने जल्दी में कहा। उसे ठीक ही याद
गया था कि उसे अपने आपको अधिक विनम्र बनाना चाहिये।

"मुझे याद है बबुआ! मुझे अच्छी तरह याद है," पास से उस
देख न हटाते हुए उसने उत्तर दिया।

"ठीक, तब इधर देखिये! मैं फिर उसी प्रकार के काम से आ
हूँ" रासकोल्निकोव ने कहना जारी रखा। उसे कुछ आश्चर्य हुआ तथा आ
मन भी क्योंकि उसका स्वागत अधिक अविश्वास सहित हुआ था। "फिर
यह उसका साधारण तरीका हो सकता है, यद्यपि मैंने पहिले इस पर ध्या
नहीं दिया," असम्भव रूप से प्रभावित होते हुए उसने विचार किया।

कुछ क्षण के लिये बुढ़िया शान्त रही और तब कहा, "भीतर आ
बबुआ!"

जिस कमरे में वह नवयुवक बुलाया गया था वह पीले कागज से मढ़
हुआ था। उस कमरे में कुछ भी विशेषता नहीं थी। एक छोटे सी प्रतिमा
के सामने एक लैम्प कोने में जल रहा था। फर्श और फर्नीचर साफ तथा च
किये हुए थे। 'इसको ऐन साफ लिज़ावेता करती है," नवयुवक ने विचा
किया। "ऐसी बरसाती बूढ़ विधवाओं के यहाँ ही इस प्रकार की बातें होतीं

है, ' दीर के पर्दे पर देखते हुए जो कि दर्वाजे पर लटक रहा था, तथा जाकि दूसरे छोटे कमरे में जाने के लिये था, उसने विचार किया। उसने उसमें कभी भी कदम नहीं रखा था। वह उस बुढ़िया का सोने का कमरा था। वह हिस्सा इन दो कमरों का था।

"तुम क्या चाहते हो ?' घर की मालकिन ने बड़े रूखेपन से पूछा। वह अपने आगन्तुक के साथ अन्दर आ गई थी तथा उसको भली प्रकार से पास से जाँचने के लिये उसके सामने ही बैठ गई थी।

"मैं कुछ गिरवी रखने आया हूँ, बस यही !" इसके साथ साथ ही उसने अपनी जेब से एक चपटी पुरानी चाँदी की घड़ी निकाली। एक ग्लोब ढक्कन के अन्दर खुदा हुआ था। चेन लोहे की थी।

"पिछली रकम मैंने पहिले दी थी वह तुमने वापिस नहीं की ? दो दिन पहिले ही तो उसे चुकाना था।"

"मैं दूसरे माह के लिए उसका सूद दे दूँगा। जरा तसल्ली रखिये।"

"मैं तसल्ली रख सकती हूँ, या मैं तुम्हारे सामान को एक दम बेच सकती हूँ भइया ! जो भी मेरे मन में आवे।"

"इस घड़ी पर आप मुझे क्या देंगी, एलिना इवानोवना ?"

' यह तो बेकार की चीज है बबुआ ! बिल्कुल नहीं के बराबर। पिछले समय मैंने तुम्हें एक अँगूठी पर दो रूबल उधार दिये थे कि मैं डेढ़ रूबल में जौहरी से एक नई खरीद सकती थी।

"मुझे चार रूबल दे दो और मैं इसे फिर वापस खरीद लूँगा, यह मेरे पिता के पास थी। मैं शीघ्र ही कुछ पैसों की आशा कर रहा हूँ।"

"डेढ़ रूबल ! तथा सूद मैं पहिले से ही ले लूँगी।"

"डेढ़ रूबल !" नवयुवक ने विरोध किया।

" चाहे लो या न लो, तुम्हारी खुशी " यह कहते हुए उसने घड़ी लौटा दी। उसके आगन्तुक ने इसे ले लिया और नाराज होता हुआ जाने ही वाला था, तभी उसके दिमाग में यह आया कि यह उधार देने वाली उसका अन्तिम आसरा है और इसके अतिरिक्त उसके आने का और भी तो उद्देश्य था

"अच्छा निकालो।" उसने रूखे शब्दों में कहा।

उस वृद्धा ने अपनी जेब में चाबियों की तलाश किया, और पास के कमरे में चली गई। उस नवयुवक ने जो वहाँ अकेला रह गया था अपने कान ध्यान से लगाये और विभिन्न प्रकार की कल्पना करने लगा। उसने उस नली सूखपोर को ड्राअर खोलते सुना। 'यह सबसे ऊपर का होगा'' उसका अन्तिम निश्चय था। "अब मैं जानता हूँ कि वह सीधी तरफ के जेबों में चाबियाँ रखती है– वे सब लोहे के छल्ले में लटकी हैं।

वृद्धा फिर उपस्थित हुई। "देखो बबुआ! यदि मैं हर रूबल पर हर माह दस कोपेक लूँ तो मुझे डेढ़ रूबल पर पेशगी सूद पन्द्रह कोपेक लेने चाहिये फिर तुम मुझे उन दो रूबल की अदायगी के लिये एक मास और रुकने को कहते हो जो मैं तुम्हें उधार दे चुकी हूँ तो तुम्हें बीस कोपेक मुझे और अदा करने हैं। इसका अर्थ हुआ कि कुल मिलाकर पैंतीस। इसलिये इस घड़ी के बदले जो मुझे देना है एक रूबल और पन्द्रह कोपेक; वह ये रहे।"

"क्या! आपका आशय केवल एक रूबल और पन्द्रह कोपेक से है जो आप मुझे देंगी।"

"बस यही तो तुम्हारा है भी।

नवयुवक ने बिना और तर्क किये धन ले लिया। पर जाने की जल्दी में नहीं दीखता था उसने वृद्धा की ओर देखा। वह बिना भली प्रकार समझे हुए कुछ और कहने अथवा करने का इच्छुक लगा। 'शायद जल्दी ही मैं आपके लिये कुछ और वस्तु लाऊँ, एलना इवानोवना! एक बहुत ही सुन्दर सिगार-केस—चाँदी का—ज्योंहि मैं उसे अपने मित्र से वापस ले लूँ जो मुझ से उधार ले गया है।" ये शब्द बड़ी परेशानी के साथ कहे गये थे।

"अच्छा! तो उसके बारे में हम तभी बात चीत करेंगे, बबुआ।"

"आप हमेशा अकेली रहती हैं—क्या आपकी बहिन आपके साथ कभी नहीं रहती?" उसने बड़े निरपेक्ष भाव से जब वह बाहर के कमरे में गया पूछा।

'तुम्हें मेरी बहिन से क्या करना है बबुआ।"

कुछ नहीं। पूछने का कोई कारण नहीं था। अच्छे, एलना इवानोवना!"

मस्तिष्क की असन्तुलित अवस्था में वह बाहर निकला। ज्यों ही वह नीचे गया, वह बराबर रुका, जैसे किसी प्रबल भावना का शिकार हो गया हो। जब वह अन्त में सड़क पर आ गया था तब अपने आप बुड़बुड़ाया "कितना घृणित है यह सब! क्या मैं, क्या मैं कभी भी ! नहीं, यह बकवास है।' अपने आप उसने फिर कहा, "ऐसा भयानक विचार मेरे दिमाग में कैसे प्रवेश कर सका ! क्या मैं इस अपकीर्ति के योग्य कभी भी होऊँगा ? यह कुत्सित है, अपकीर्तिकर है, घिनौना है। और पूरे माह तक—"

निराशा एवं अनिश्चित भाव, जिसने कि उसे बुढ़िया के यहाँ जाते समय सताना आरम्भ कर दिया था, अब इतने अधिक गहरे होने लगे थे कि वह उनसे बचने के लिये इच्छुक हो गया। वह मदमस्त शराबी की भाँति उस पथरीली सड़क पर झूमा, इसका बिना ध्यान दिये हुए कि कौन आ जा रहा है, लेकिन उनसे टकरा रहा था। पास ही देखने पर उसे एक शराब खाना दीखा; उसके कदम फुटपाथ पर से उतर नीचे वाली मंजिल की ओर मुड़े। तभी रास्कोल्निकोव ने दो शराबियों को बाहर निकलते हुए देखा, जोकि एक दूसरे पर बुरी तरह से भरे हुए थे तथा गन्दी भाषा भी बोल रहे थे। वह पहिले कभी ऐसे स्थान पर नहीं गया था, लेकिन इस समय उसने अपने को थका पाया तथा प्यास से भी बुरी तरह परेशान था। वह कुछ बीयर लेना चाहता था क्योंकि उसका ख्याल था कि उसकी कमजोरी का कारण उसका खाली पेट है। एक अन्धेरे गंदे कोने में, एक गंदे चौरे से टेबल के सामने बैठते हुए उसने बीयर की आज्ञा दी, और बड़े चाव के साथ एक गिलास पी गया।

एकदम उसने कुछ शाँति का अनुभव किया और उसका दिमाग भी कुछ ठिकाने आया। "मैं कितना कम अक्ल हो गया हूँ," उसने अपने आप से कहा, "वास्तव में अशान्त होने का कोई भी कारण नहीं था। यह तो केवल शारीरिक था।" उसका चेहरा चमकने लगा जैसे कि मानो एकदम किसी भारी वजन से उसने अपने आपको हल्का किया, और [illegible] उसने कमरे में चारों ओर देखा। उसी समय उसे यह अपूर्ण [illegible]

"अच्छा दिखाओ।" उसने रूखे शब्दों में कहा।

उस वृद्धा ने अपनी जेब में चाबियों को तलाश किया, और पास के कमरे में चली गई। उस नवयुवक ने जो वहाँ अकेला खड़ा रह गया था, अपने कान ध्यान से लगाये और विभिन्न प्रकार की कल्पना करने लगा। उसने उस भारी सन्दूक को ताला खोलते सुना। 'यह सबसे ऊपर का होगा" उसका अन्तिम निश्चय था। "अब मैं जानता हूँ कि यह सीधी तरफ के जेबों में चाबियाँ रखती है– वे सब लोहे के छल्ले में लटकी हैं।

वृद्धा फिर उपस्थित हुई। "ऐसा बबुआ! यदि मैं हर रूबल पर हर माह दस कोपेक लूँ तो मुझे डेढ़ रूबल पर पेशगी सूद पन्द्रह कोपेक लेने चाहिये फिर तुम मुझे उन दो रूबल की अदायगी के लिये एक माह और ठहरने को कहते हो जो मैं तुम्हें उधार दे चुकी हूँ या तुम्हें बीस कोपेक मुझे और अदा करने हैं। इसका अर्थ हुआ कि कुल मिलाकर पैंतीस। इसलिये इस घड़ी के बदले जो मुझे देना है एक रूबल और पन्द्रह कोपेक, वह ये रहे।"

"क्या! आपका आशय केवल एक रूबल और पन्द्रह कोपेक से है जो आप मुझे देंगी।"

'अब यही तो तुम्हारा है भी।

नवयुवक ने बिना और तर्क किये धन ले लिया। वह जाने की जल्दी में नहीं दीखता था, उसने वृद्धा की ओर देखा। वह बिना भली प्रकार समझे हुए कुछ और करने अथवा कहने का इच्छुक लगा। "शायद जल्दी ही मैं आपके लिए कुछ और वस्तु लाऊँ अलना इवानोवना! एक बहुत ही सुन्दर सिगार-केस—चाँदी का—जबकि मैं उसे अपने मित्र से वापस ले लूँ जिसे मुझ से उधार ले गया है।" ये शब्द बड़ी परेशानी के साथ कहे गये थे।

"अच्छा! तो उसके बारे में हम तभी बात चीत करेंगे, बबुआ।"

"आप यहाँ हमेशा अकेली रहती हैं—क्या आपकी बहिन आपके साथ कभी नहीं रहती?" उसने बड़े निरपेक्ष भाव से जब वह बाहर के कमरे में गया पूछा।

"तुम्हें मेरी बहिन से क्या करना है, बबुआ।"

कुछ नहीं। पूछने का कोई कारण नहीं था। अच्छा अल्योना इवानोवना!''

मस्तिष्क की असन्तुलित अवस्था में वह बाहर निकला। ज्यों ही वह नीचे गया, वह बराबर रुका, जैसे किसी प्रबल भावना का शिकार हो गया हो। जब वह अन्त में सड़क पर आ गया था तब अपने आप बुदबुदाया "कितना अभिनिष्कृत है यह सब! क्या मैं, क्या मैं कभी भी! नहीं, यह बकवास है!" अपने आप उसने फिर कहा, "ऐसा भयानक विचार मेरे दिमाग में कैसे प्रवेश कर सका? क्या मैं इस अपकीर्ति के योग्य कभी भी होऊँगा? यह कुत्सित है, अपकीर्तिमान है, घिनौना है। और पूरे माह तक—"

निराशा एवं अनिश्चित भाव, जिनने कि उसे बुढ़िया के यहाँ जाते समय सताना आरम्भ कर दिया था, अब इतने अधिक गहरे होने लगे थे कि वह उनसे बचने के लिये इच्छुक हो गया। वह मदमस्त शराबी की भाँति उस पथरीली सड़क पर घूमा, इसका बिना ध्यान दिये हुए कि कौन आ रहा है, लेकिन उनसे टकरा रहा था। पास ही देखने पर उसे एक शराबखाना दीखा; उसके कदम फुटपाथ पर से उतर नीचे खाली मंजिल की ओर मुड़े। तभी रास्कोल्नीकोव ने दो शराबियों को बाहर निकलते हुए देखा, जोकि एक दूसरे पर बुरी तरह से लदे हुए थे, तथा गन्दी भाषा भी बोल रहे थे। वह पहिले कभी ऐसे स्थान पर नहीं गया था, लेकिन इस समय उसने अपने को चक्कर पाया तथा प्यास से भी बुरी तरह परेशान था। वह कुछ बीयर पीना चाहता था क्योंकि उसका ख्याल था कि उसकी कमजोरी का कारण उसका खाली पेट है। एक अन्धेरे गन्दे कोने में, एक गंदे चिपचिपे टेबल के सामने बैठते हुए उसने बीयर की आज्ञा दी, और बड़े चाव के साथ एक गिलास पी गया।

एकदम उसने कुछ शांति का अनुभव किया और उसका दिमाग भी कुछ ठिकाने आया। "मैं कितना कम मजबूत हो गया हूँ," उसने अपने आप से कहा, "वास्तव में परास्त होने का कोई भी कारण नहीं था। यह तो केवल शारीरिक था।" उसका चेहरा चमकने लगा जैसे कि मानो एकदम किसी भारी वजन से उसने अपने आपको हल्का किया, और सम दृष्टि से उसने कमरे में चारों ओर देखा। उसी समय उसे यह भ्रमपूर्ण ज्ञान हुआ कि

के हाथों सहती भी उसे मैं टाल जाना ही उचित समझता था। केथरिन इवा-नोवना, यद्यपि पूर्ण रूप से विलास भावना की है फिर भी अपने क्रोध को वश में रखने में अयोग्य है। अच्छा, यहाँ इन सब पर बात करने में कोई लाभ नहीं है। सोनिया को, जैसा कि आप विचार सकते हैं उच्च शिक्षा नहीं दी गई।

"और अब, श्रीमान! मैं आप से स्पष्ट रूप से पूछता हूँ कि गरीब कुलीन लड़की किस प्रकार अपनी गुजर-बसर करे? जब तक कि उसमें कुछ विशेष योग्यता न हो, वह बड़ी कठिनाई से पन्द्रह कोपेक एक दिन में कमा सकती है और इसके लिये उसे एक पल भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिये। सोनिया ने कौंसिलर के किसी सदस्य के लिये किनन को ६ कमीजें बनाई थीं, यही नहीं कि उसके लिये कभी भी उसे मजदूरी नहीं मिली वरन् इस कारण कि उसने गले का नाप गलत बनाया था, उसे गन्दी गालियों सहित वास्तव में घर से बाहर निकाल दिया गया। इधर बच्चे भूखों मर रहे थे। केथरिन इवानोवना कमरे में इधर उधर, अपने हाथों को मलते हुए घूम रही थी। 'मुफ्त खाती' उसने कहा, 'तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम बिना कुछ काम किये हुए यहाँ रह रही हो? खाना खाना और पीना और अपने आपको गर्म रखना बस यही काम है तुम्हारा!' तुम अच्छी तरह यह पूछ सकते हो कि वह बिचारी लड़की क्या खा और पी सकती थी जबकि बच्चों को रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था। मैं लेटा हुआ था—मैं कह सकता हूँ—पिये हुए। मैंने सोनिया की मधुर आवाज सुनी, 'लेकिन केथरिन इवानोवना, मैं यह कैसे कर सकती हूँ?"

"मुझे कहना चाहिये कि डेरिया फ्रानोवना, एक बदनाम औरत, जिसे पुलिस भली प्रकार जानती थी, हमारी मकान मालकिन के द्वारा तीन दफे उसके पास आ चुकी थी। 'क्या! केथरिन इवानोवना ने व्यंग से कहा, 'तुम्हारे पास वास्तव में एक सुन्दर खजाना है जिसे तुम आवश्यकता सुरक्षित रखे हुवे हो।' उसे दोष मत दो, श्रीमान! उसे मत दो, उसे नहीं मालूम था कि वह क्या कह रही थी, वह अस्वस्थ थी और सताई गई थी उसने अपने बच्चों को भूख से बिलखते हुवे देखा था और उसके शब्द सोनिया को केवल चिढ़ाने के

लिये थे न कि उसे गुमराह पर धकेलने के लिये कैथरिन इवानोवना हमेशा ही इस प्रकार की रही । जब कभी वह अपने बच्चों को रोता हुआ देखती है वह उन्हें मारना आरम्भ कर देती है, भले ही भूख से ही चिल्ला रहे हों। उस समय पाँच बज चुके थे । मैंने उसे उठते, बुरनस पहनते हुये तथा बाहर जाते हुये देखा । आठ बजे वह लौटी, और सीधी कैथरिन इवानोवना के पास जाकर बिना कुछ कहे, मेज पर तीस रूबल चाँदी के रख दिये । फिर उसने हमारा हरी रूमाल लिया, अपने सिर के चारों ओर लपेटा और दिवार की ओर मुँह किये पड़ गई, परन्तु उसके कन्धे व सारा शरीर काँप रहा था। उस समय चुपचाप,मैंने कैथराइन इवानोवना को सोनिया के पास जाते देखा जो चुपचाप मुड़ने के बाद बिस्तरे के पास झुक गई और बिना हिलने की इच्छा किये हुये वह उसके पास सारी रात इसी प्रकार झुकी रही, मेरी लड़की के पाँव चूमती रही । और अन्त में दोनों एक दूसरे की बाँहों में लपेटे सो गये ।"

मारमीलाडोव खामोश हो गया मानो उसकी आवाज़ उसका साथ नहीं दे रही हो, फिर एकदम उसने गिलास भर पिया और कुछ पल पश्चात फिर आरम्भ किया, 'तब से भी मान ! इस दुर्घटना के कारण और कुछ दुष्ट आदमियों के द्वारा प्रसारित निन्दा के कारण—जिसमें कि डेरिया फ्रान्सोवना का भी मुख्य हाथ है मेरी लड़की सोफिया सेमिनोवना का नाम रजिस्टर में लिख लिया गया है, जिसके कारण मजबूर होकर हमें अपना निवासस्थान बदलना पड़ा । हमारी मकान मालकिन अमेलिया फेडोरोवना इस बात पर रुष्ट सी मालूम देती है, इस बात को भूलते हुये कि कभी डेरिया फ्रान्सोवना के सम्बन्ध में उसने भी स्वीकृति दी थी । श्री लैबीज्याटनिकोव ने उसका साथ दिया था—और—सोनिया की बात को लेकर ही कैथरिन इवानोवना और वह लड़े थे जिसका कि अभी मैंने जिक्र किया है । पहले तो उसने सोनिया पर बड़ा ख्याल दिया पर उसका वह रोब ही बैठ गया । 'मुझ सरीखा ज्ञान सम्पन्न मनुष्य उस मकान में कैसे रह सकता है जिसमें इस प्रकार के लोग रहते हों ?" उसने कहा । सोनिया की तरफ से कैथरिन इवानोवना ने तुरन्त ही झगड़ा किया जिसका कि अन्त घूसेबाजी से हुआ । अब हमारी लड़की अक्सर रात बीतने पर आती है और कैथरिन इवानोवना की सेवा

अधिक सहायता देती है। वह कैपरनासुमोव नामक दर्जी के यहाँ रहती है।

"अच्छा तब एक दिन सुबह मैं उठा और अपने फटे कपड़े पहिने, परमात्मा को हाथ जोड़े और दयामूर्ति इवान अफनासिविच के पास गया। उसने मेरी कहानी आरम्भ से अन्त तक सुनी और उसकी आँखों में आँसू छलक आये। 'अच्छा मारमीलादोव। उसने कहा, 'तुमने मुझे एक बार निराश किया है—मैं तुम्हें एक बार फिर अजमाता हूँ और अपने उत्तरदायित्व पर तुम्हें रखता हूँ—इस चेतावनी से एक बार फिर काम करो। तुम अब जा सकते हो।' मैंने उसकी चरण रज स्पर्श की— मन ही मन में क्योंकि वास्तव में वह मुझे ऐसा नहीं करने देता। लेकिन बाहर ईश्वर! जब मैंने घर पर यह घोषित किया कि मुझे फिर नौकरी मिल रही है और मुझे तनखा मिलने वाली है तो उन लोगों ने मेरा क्या स्वागत किया।"

यहाँ फिर मारमीलादोव आवेशित हो गया। ज्यों ही उसने फिर से नौकर हो जाने की बात कही त्योंही उसके माथ में आभा की किरण मस्त करने लगी। रासकोल्नीकोव बड़े ध्यान से सुन रहा था।

"यह पाँच हफ्ते पहले की बात थी, श्रीमान! हाँ—जब कैटराइना इवानोवना तथा सोनिया ने यह समाचार सुना तो उन्होंने शुभकामना प्रगट की, मैंने अपने आपको सातवें आसमान पर समझा! एक समय तो सिवाय गालियों के कुछ भी न था। 'कमबख्ती, जाओ और सो जाओ!' पर अब वे सब तत्पर लगते थे और बच्चों को चुप रखते थे। 'चुप! साइमन थका हुआ दफ्तर से लौटा है उसे आराम करने दो।' दफ्तर जाने के पहले वे मुझे क्रीम डालकर काफी देते थे। उन्होंने मुझे पैरों से चोटी तक सुसज्जित कर दिया, जूते लाये, एक वर्दी और अच्छी कैलिको की बनी कमीजें। उन्होंने साढ़े ग्यारह रूबल खर्च किये थे इसके लिये। छः दिन पहले मैंने अपनी सारी कमाई बीवी को दी—तेईस रूबल और चालीस कोपेक और बीवी ने मेरे गाल नोंचते हुये मुझे प्यार किया। 'तुम कितने प्यारे हो,' उसने कहा।"

मारमीलादोव रुका और हँसने का प्रयास किया। वह अपने आवेश को दबाने में सफल हुआ। रासकोल्नीकोव यह नहीं जान सका कि ऐसे शराबी के साथ क्या किया जाय जिसने पाँच दिन हुये चरसा पर छोड़ दिया

है यद्यपि अभी भी अपने परिवार से लगाव रखना चाहता है। वह पूरे ध्यान से इसे सुन रहा था, पर वह कुछ परेशान हो गया, और उस स्थान पर आने के लिये पछताने लगा।

'ओह! श्रीमान!" मारमीलाडोव ने कहा, "उस तमाम सुस्त दिन में हवा में किले बना रहा था, मैं यह स्वप्न देख रहा था कि किस प्रकार अपने जीवन को हम फिर सङ्गठित करें और उस कीचड़ से अपनी एकमात्र लड़की को बाहर निकाला जाय। मैंने कितने मनसूबे बनाये। उसी के दूसरे दिन प्रातः ठीक पाँच दिवस पूर्व, मैंने कैथरिन इवानोवना की चाबियाँ चुराईं, और उसके सन्दूक में से वह तमाम बचा हुआ धन जो मैंने उसे दिया था निकाल लिया। वहाँ क्या ही कितना था? मैं याद नहीं कर सकता। मैंने पाँच दिन एक पर पीया और वे लोग नहीं जानते कि मेरा क्या हुआ, मैंने अपना स्थान भी खो दिया। और ई–पुल के पास शराब खाने में मैंने अपनी वर्दी भी फेंक दी और बदले में ये बेकार से कपड़े ले लिये। अब सब कुछ समाप्त हो गया।"

उसने हँसते हुये कहा, "मैं आज सोनिया के पास गया और पीने के लिये कुछ माँगा, हा! हा! हा!"

"और क्या उसने तुम्हें कुछ दिया," नयी हँसी हँसते हुये किसी ने पूछा।

'यह उसी का धन था जिससे इस पापी बोतल की कीमत चुकाई," मारमीलाडोव ने उत्तर दिया—रासकोलनीकोव की ओर देखते हुए। "उसने तीस कोपेक निकाले और अपने हाथ से मुझे दिये। मैंने देखा कि उसके पास केवल इतना ही था। उसने कुछ नहीं कहा, केवल मेरी ओर देखा, एक भव्य दृष्टि वैसी कि देवताओं की होती है जब कि वे हम मनुष्यों के पापों पर रोते हैं। तीस कोपेक! और उसे उसकी आवश्यकता होनी चाहिये। वह बनाव शृङ्गार जिसकी उसे आवश्यकता थी वैसे ही बनाये नहीं रखा जा सकता। आप मेरा मतलब समझे? उसे पोमेड खरीदना चाहिये तथा कलफदार पेटीकोट और छोटे सुन्दर जूते भी जिनके द्वारा वह उस दलदल के तालाब में से बचती है। श्रीमान! आप इस स्वच्छता का अर्थ समझते हैं। और यहाँ मैंने, उसके पिता ने, अपने स्वाभाविक अधिकार से उसके काम के

होस कोपेक पीने में खर्च करने के लिये ले लिये। अब मैं उन्हें पी रहा हूँ। क्या अब भी श्रीमान ! आपको मेरे ऊपर दया आ सकती है ? बोलिये !" वह दूसरा गिलास भरने वाला ही था कि उसने देखा कि उसकी आधी बोतल तो समाप्त हो चुकी है।

"और कोई तुम पर दया क्यों करे ?" दुकान के मालिक ने चिल्ला कर कहा।

हँसी का ठहाका मचा। वह लड़खड़ाता हुआ उठा और अपने हाथ फैलाये।

"कोई मुझ पर दया क्यों करे ?" भर्राई हुई आवाज में उसने कहा। "क्यों तुम कहते हो, तुम ठीक कहते हो। कोई कारण नहीं है। मुझे शूली पर चढ़ा देना ही ठीक है मुझ पर दया न करो। शूली पर चढ़ा दो। मैं अपना दण्ड पाने जाऊँगा, क्योंकि मैं सुख का भूखा नहीं हूँ, परन्तु दुख और आँसुओं का हूँ। इस बोतल में सुख, दुख और आँसू थे जिन्हें मैंने पीया और पाया परन्तु वह ईश्वर जो सब पर दया करता है और सब के दिल की जानता है, हम पर दया करेगा। अन्तिम दिन वह आयेगा और कहेगा, 'वह लड़की कहाँ है जिसने अपने भौतिक पिता पर दया दिखाई और निराश होकर भी एक शराबी से विमुख नहीं हुई ? वह लड़की कहाँ है जिसने अपने आप को बीमार कठोर विमाता पर वार दिया और उन बच्चों पर जो कि उसके हाड़ माँस के नहीं थे ?' और वह कहेगा, 'आओ मैंने तुम्हें एक बार फिर क्षमा किया और अब तेरे सब पाप धुल गये क्योंकि तूने अधिक स्नेह किया।' वह मेरी सानिया को क्षमा कर देगा मैं जानता हूँ जब मैं अभी उसके पास था तो मुझे इस बात का विश्वास हो गया था। और वह हम सब को क्षमा कर देगा— अच्छों को और बुरों का।'

यह बिना किसी और देखे बेंच पर लुढ़क गया जैसे आस-पास का उसे बिलकुल ज्ञान न रहा हो। श्रोतागण एक क्षण के लिए शान्त हो गया लेकिन तुरन्त ही हँसी आरम्भ हो गई।

"बड़े बार का तर्क किया !"

"पुराना मूर्ख !!"

"नौकर शाह !!! आदि आदि।

"अब हम चलेंगे, श्रीमान !" मारमीला बार ने एक दमदमाता

रहा है। मैं कुछ चाय लाई हूँ, क्या तुम एकाध कप पीओगे? तुम कितने पीले दीख रहे हो?"

रासकालनीकोव ने आँखें खोलीं और नास्तासिया को पहचाना। "क्या मकान मालकिन ने यह चाय भेजी है?" बड़े कष्ट से बैठते हुए उसने पूछा।

"उसकी कोई उम्मीद नहीं है।" और नौकर ने अपना ही पॉट उसके सामने रखा जिसमें अभी थोड़ी सी चाय बाकी थी।

"सुनो नास्तासिया! कृपा करके दूसे न जाओ," अपनी जेबों में हाथ डालते हुए, कुछ रेजगी निकालते हुए रासकालनीकोव ने कहा "और मेरे लिए सफेद रोल ला दो तथा कुछ सस्ती सी चटनी भी।"

"रोल मैं एक मिनट में अभी ला दूँगी लेकिन क्या चटनी के बजाय तुम सूप नहीं लोगे? उसे हम लोग यहीं बनाते हैं, बड़ी अच्छी होती है। गत रात्रि मैंने कुछ तुम्हारे लिये बचा कर रखी थी पर तुम्हें बड़ी देर हो गई थी जब तुम आये थे। तुम्हें वह बड़ी अच्छी लगेगी।" वह सूप लेने चली गई और जब रासकोलनीकोव ने खाना आरम्भ किया तो वह सोफा पर उसके बिलकुल पास ही बैठ गई और गाँव की लड़की के समान जैसी कि वह थी इधर उधर की बातें करने लगी। "प्रास्कोविया पावलोवना का इरादा पुलिस में रिपोर्ट करने का है।" उसने कहा।

नवयुवक की भौं पर बल पड़ गये। "पुलिस में? क्यों?"

"क्योंकि तुम किराया नहीं देते हो और जाते भी नहीं। इसलिये तो"

"शैतान!" अपने दाँतों के बीच वह बुदबुदाया "यही तो अन्तिम वार है, यह बड़े बुरे समय में आता है। वह मूर्ख है" वह जोर से बोला। "मैं कल जाऊँगा और स्वयं उससे बात करूँगा।"

"वह वास्तव में इतनी ही मूर्ख है जितनी कि मैं, पर तुम जो कि इतने कुशाग्र बुद्धि हो यहाँ पड़े रहते हो और कुछ भी काम नहीं करते हो! अब यह क्यों होता है कि तुम्हारे पास कोई वस्तु खरीदने के लिये पैसे भी नहीं रहते! मैं सुनती हूँ तुम पढ़ाया करते थे अब क्या हो गया कि तुम कुछ भी नहीं करते?"

"मैं किसी काम में लगा हुआ हूँ" रूखेपन से रासकोलनिकोव ने उत्तर दिया।

"किस में ?"

"किसी काम—"

"किस प्रकार का काम ?"

"विचार करना" उसने कुछ चुप रह कर गम्भीरता पूर्वक कहा।

नास्तास्यिया खिलखिला कर हँस पड़ी। वह प्रसन्न चित्त लड़की थी। "और तुम्हारे विचार करने से तुम्हें धन प्राप्त होता है?" उसने पूछा।

"देखो, जब मेरे पास बाहर जाने को जूता पहनने को नहीं है तो मैं पढ़ाने नहीं जा सकता।"

"चिन्ता किया करो नहीं तो कष्ट होगा तुम्हें।"

"पढ़ाने से भी तो बहुत कम धन मिलता है!" उसने कटु वेदी के साथ कहा।

"तो तुम अपना साम्राज्य एकदम चाहते हो?"

उसने विचित्र प्रकार से उसकी ओर देखा और कुछ क्षण शान्त रहा। "हाँ मेरा भाग्य" भावपूर्ण होकर उसने कहा।

"बस! तुम मुझे डराते हो, तुम भयानक लगते हो। क्या मैं तुम्हारे लिये रोल लेने जाऊँ?"

नास्तासिया ! कृपा करके तुम चली जाओ ! अपने तीन कोपेक लेती जाओ और परमात्मा के लिये चली जाओ !!

पत्र उसकी उँगलियों में नाच रहा था। उसने नास्तासिया के सामने खोलना पसन्द नहीं किया, लेकिन उसके जाने की प्रतीक्षा में था ताकि वह उसे पढ़ सके। अन्त में उसने लिफाफे को फाड़ा और एक लम्बा पत्र निकाला।

'मेरे प्यारे रोडिया।" माँ ने आरम्भ किया, 'मैंने दो माह से अधिक हो गये तुम्हें कोई पत्र नहीं लिखा। फिर भी मुझे विश्वास है कि तुम मेरी चुप्पी को क्षमा कर दोगे। तुम जानते ही हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ। दुनिया और मैं यह अनुभव करते हैं कि तुम हमारे सबकुछ हो, हमारा भविष्य और आशायें तुम में हैं। मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि तुम धनाभाव के कारण कुछ माह पूर्व विश्वविद्यालय छोड़ने पर मजबूर हो गये तथा तुम पढ़ा भी नहीं रहे थे और किसी प्रकार के साधन भी तुम्हारे पास नहीं थे। मेरा भी उस समय तुम्हारी मदद करना कितना असम्भव था जब कि मेरे पास केवल एक सौ बीस रूबल सालाना की पेन्शन मात्र थी ! वह पन्द्रह रूबल जो चार माह पूर्व मैंने तुम्हें भेजे थे, उधार लेकर भेजे थे।

'अब परमात्मा को धन्यवाद है कि मैं कुछ धन तुम्हें भेजने के योग्य हूँ। अब अपने भाग्यों में जो परिवर्तन आया है उससे मुझको चाहिये कि शीघ्र ही तुम्हें अवगत कराऊँ, और तुम्हें वह भी बता दूँ जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं है वह यह कि तुम्हारी बहन गत छै हफ्तों से मेरे पास ही रह रही है और अब मेरे ही साथ रहने का उसका विचार भी है। उसकी वेदना का परमात्मा की कृपा से अन्त हो गया है। पर आरम्भ से शुरू करते हुए मैं तुम्हें वह सब बता दूँगी जिसे हम लोग तुम से छुपा रहे थे। तुमने मुझे दो माह पूर्व लिखा था कि दुनिया स्विद्रिगेलोव परिवार में अजीब वातावरण में फँस गई थी ऐसा तुमने सुना; तथा तुमने सब हाल जानने के लिये भी लिखा था। उस समय मैं तुम्हें क्या उत्तर देती ? यदि मैंने तुम्हें बता दिया होता तो तुम सब काम छोड़कर हमारे पास आ गये होते, भले ही तुम्हें पैदल चलना पड़ा होता; क्योंकि मैं जानती हूँ तुम्हारे

प्यार और ममता ऐसी है कि तुम कभी यह विचार भी नहीं कर सकते कि तुम्हारी बहिन का कहीं पर अपमान हो। मैं स्वयं निराश हो गई थी पर मैं क्या कर सकती थी? दुर्भाग्यवश गत वर्ष दूनिया को इस परिवार में धाय का काम स्वीकार करने पर सौ रूबल पेशगी मिल गये थे जो कि उसकी तनखा में से प्रति मास कट जाने को थे; परिणामस्वरूप जब तक कि कर्जा पूरा न हो गया तब तक उसे नौकर रहना पड़ा था।

'उसने यह पेशगी इस कारण और लिया था कि तुमको ६० रूबल जो भेजने थे जिसकी कि तुम्हें उस समय इतनी आवश्यकता थी—जोकि गत वर्ष हमने तुम्हें भेजे थे। तब हमने तुम्हें धोखा देने के लिये यह लिख दिया था कि दूनिया ने वह रकम अपनी आमदनी से बचाई थी। श्री स्विद्रिगेलोव ने उसके साथ बुरा व्यवहार आरंभ किया और टेबल पर अक्सर वह उसके साथ अशिष्टतापूर्ण व्यवहार व अपमानसूचक शब्दों का प्रयोग करने लगे। मार्फा पीट्रोवना, जो कि उसकी पत्नी थी उसके साथ अच्छा व्यवहार करती थी। लेकिन उसको तब काफी दुखना पड़ता था जब कि वह शराब पीकर आता था—जिसकी कि उसे लत पड़ गई थी। लेकिन यही सब कुछ नहीं था। उसके ऊपरी दुर्व्यवहार व्यवहार के भीतर वह उसके लिये वासना के भाव छिपाये था।

अन्त में उसने उस आवरण को भी उतार फेंका और उसके सामने असभ्य प्रस्ताव रखे। कई वायदे करके उसे बहकाने की कोशिश की, और यह भी घोषणा की कि वह उसे साथ लेकर अपने घर बार को छोड़कर किसी गांव में जाकर रहने को भी तैयार है। आखिरकार एकदम सब सामने आ गया। मार्फा पीट्रोवना ने अपने पति को बगीचे में दूनिया को अपने साथ भगा ले जाने के लिये फुसलाते हुए एकदम पकड़ लिया और बिना समझे बूझे उसकी ही तमाम झगड़े की जड़ समझ लिया। बड़ा हृदयनाक दृश्य था, वह। मार्फा ने दूनिया की पीड़ा और किसी भी बात को सुनने से इन्कार कर दिया। और अन्त में दूनिया उसी वक्त मेरे पास भेज दी गई।

"तनिक विचार करो मैं उस पत्र के उत्तर में तुम्हें क्या लिखती जो मुझे दो मास पूर्व मिला था। मैं बिलकुल हताश थी। तुम्हें सब कहने की

तुम में हिम्मत नहीं थी क्योंकि तुमने बहुत बुरा माना होता और तुम कर ही क्या सकते थे ? पूरे माह यही बात गाँव का प्रधान विषय बना हुआ था । इस सब का कारण मार्फा पीट्रोवना थी जिसने कि दूनिया का हर घर में बदनाम किया जिसका परिणाम यह निकला कि न केवल गाँव में वरन् सारे जिले में यह कहानी मशहूर हो गई । मुझे बहुत बुरा लगा लेकिन दूनिया मुझ से अधिक सहनशील थी, वह दृढ़ी है ।

"परन्तु परमात्मा की कृपा से हमारे दुःखों का अन्त आया । मी स्विद्रिगेलोव अपने आपे में आये और उन्होंने पश्चात्ताप किया और शायद दूनिया पर तरस खाकर मार्फा पीट्रोवना के सामने निरपराधी होने का लिखित प्रमाण उस पत्र के रूप में रखा जिसको उसने बगीचे की घटना के पूर्व मजबूर होकर लिखा था तथा जिसमें उसने व्यक्तिगत सफाई देने तथा प्रेम मिलन के लिये इन्कार किया था ।

"उसी दिन शाम को बिना देर किये मार्फा पीट्रोवना दूनिया के निर्दोषता के सबूत लेकर गाँव में हर घर पर गई । और उसके विचारों तथा व्यवहार की चापलूसी भरी प्रशंसा की और इसके अलावा स्विद्रिगेलोव के नाम लिखा दूनिया का पत्र उसने हर एक को बताया और पढ़कर सुनाया ।

"तब दूनिया के पास कई परिवारों से पढ़ाने के निमन्त्रण आने लगे जिन्हें कि उसने इन्कार कर दिया । इन सबके परिणाम स्वरूप जो परिवर्तन हमारे भाग्य में आया मैं तुम्हें लिख रही हूँ ।

"जान लो प्यारे रोडिया ! तब उसके पास एक प्रस्ताव विवाह का आया जिसे उसने स्वीकार कर लिया । मैं जानती हूँ कि यह सब बिना तुम्हारी राय लिये हुआ पर मुझे विश्वास है कि तुम हमसे नाराज़ नहीं होगे क्योंकि तुम्हें लिखकर उत्तर की प्रतीक्षा करना हमारे लिये असंभव था । यह सब इस प्रकार हुआ । वह पीटर पीट्रोविच लूज़िन परिषद् का सदस्य है तथा दूरका मार्फा का रिश्तेदार भी है । मार्फा के द्वारा ही उसने हम से पहचान करने की इच्छा प्रगट की । हमने उसको निमन्त्रित किया, उसने वहाँ कॉफी पी और दूसरे दिन बड़ी नम्रतापूर्वक उसने अपना प्रस्ताव रखा और शीघ्र ही निश्चयात्मक उत्तर माँगा । वह अब सेंट पीटर्सबर्ग जा रहा है और व्यापारी होने के नाते

उसका एक एक शब्द महत्वपूर्ण है, भी लूशिन साधन सम्पन्न तथा चरित्रवान पुरुष है और दो स्थानों पर काम करता है। यह सत्य है कि वह ४५ वर्ष का है; फिर भी वह मामूली तौर पर सुन्दर है और महिलाओं को आकर्षित कर सकता है।

'मैं तुम्हें सावधान किये देती हूँ प्यारे रोदिया! कि जब तुम उससे सेंट पीटसबर्ग में मिलो क्योंकि बहुत शीघ्र ही होने वाला है, तो उसे समझने में जल्दी या गर्मी से काम मत लेना जैसी कि तुम्हारी आदत है। पीटर पीट्रोविच, हर हालत में आदरणीय व्यक्ति है।

"तुम अपनी दूनिया को तो जानते ही हो—कितनी चरित्रवान और धैर्यवान है जिसका कि मुझे भी अनुभव है। यह ठीक है कि उन दोनों में एक दूसरे के लिये कोई विशेष प्रेम नहीं है; लेकिन दूनिया समझदार होने के साथ साथ, शरीफ और देवी तुल्य है। वह अपने पति को प्रसन्न रखना अपना कर्तव्य समझेगी, यदि उसने उसका तनिक भी ध्यान रखा।

' निश्चय करने के एक दिन पूर्व दूनिया सारी रात नहीं सोई; और, यह समझते हुए कि मैं सो रही थी, वह उठी और सारी रात कमरे में इधर से उधर घूमती रही। अन्त में वह पवित्र मूर्ति के सामने घुटनों को टेक कर बड़ी देर तक बैठी प्रार्थना करती रही। प्रात: उसने मुझे बताया कि वह निश्चय कर चुकी थी।

" मैं तुमसे कह चुकी हूँ कि पीटर पीट्रोविच अब सेंट पीटर्सबर्ग के लिये प्रस्थान कर चुका है। वह वहाँ तुम्हारे बड़े काम का हो सकता है, और मुझे तथा दूनिया को पूर्ण विश्वास है तुम अपना भविष्य का कार्यक्रम उसकी सहायता में सुचारु रूप से चला सकते हो। ओह! ऐसा तो परमात्मा की कृपा से ही हो सकता है। दूनिया इसका स्वप्न देखती है। तुम्हारी तरफ से हमने पीटर पीट्रोविच से कुछ बात करने का दुस्साहस किया था। उसने बड़े सम्हल कर उत्तर दिया और कहा कि बिना सेक्रेटरी के उसका काम नहीं चल सकता और यदि वह अपने कर्तव्य को ठीक प्रकार से कर सके तो किसी दूसरे आदमी को कुछ देने से अपने रिश्तेदार को देना ही अच्छा है।

" तुम जानते हो प्यारे रोदिया! — इस बात से पीटर का कोई

सम्बन्ध नहीं है, मेरा व्यक्तिगत है, और दुनिया की समझ भी हो सकती है—लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उनके विवाह के पश्चात यदि मैं अकेली रहूँ तो अच्छा रहे। मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि वह दयालु डाक्टर मुझे अपनी पुत्री के साथ रहने के लिये ही कहेगा यद्यपि अभी तक उसने ऐसा नहीं किया है, पर मैं इन्कार ही करूँगी। जीवन में मैंने देखा है कि सासों को अक्सर पति नहीं चाहते। मैं किसी के लिये तनिक भी असुविधा का कारण बनना नहीं चाहती। यदि सम्भव हो सका तो, रोडिया! मैं तुम्हारे पास रहूँगी। यह बिल्कुल सच है कि दूनिया और मैं सेंट पीटर्सबर्ग आरहे हैं; कब, यह अभी मैं नहीं जानती, लेकिन, ऐसा लगता है कि जल्दी ही, बहुत जल्दी ही। यह सब पीटर पर ही निर्भर है, वह वहाँ पहुँच कर हमें समाचार भेजेगा। वह कई कारणों वश शादी जल्दी ही करना चाहता है। ओह! कितनी प्रसन्नता के साथ मैं तुम्हें अपनी छाती से लगाऊँगी।

'दूनिया तुमसे मिलने के लिये पागल होरही है, और एक दिन मजाक में उसने कहा था कि तुमसे मिलने के लिये ही वह पीटर से विवाह कर रही है। वह अपना स्नेह व हजारों चुम्बन तुम्हें भेज रही है। और यद्यपि हम शीघ्र ही मिल रहे हैं पर मैं कुछ धन तुम्हें भेजूँगी—जितना भी मुझसे हो सकेगा।

"अब मैं समाप्त करती हूँ। मैं एक माँ का आशीर्वाद तुम्हें भेजती हूँ प्यारे रोडिया! अपनी बहिन को प्यार करना, उसी प्रकार जिस प्रकार कि वह तुमसे करती है, और यह विश्वास रखो कि वह तुम्हें अपने जीवन से भी अधिक प्यार करती है। तुम सुखी रहो और हम सुखी होंगे।—मैं हूँ, तुम्हारी, जीवन के अन्तिम समय तक—पुलचेरिया रास कोल्नीकोव।"

सारे पत्र को पढ़ते समय रासकोल्नीकोव का चेहरा आँसुओं से भीगा था। ज्योंही उसने पत्र समाप्त किया उसने अपना सिर तकिये पर टिकाया और विचारों में खो गया। उसका दिल बुरी तरह से धड़क रहा था और उसके विचारों में तेजी थी। इस समय उसने अपना टोप उठाया और जीनों पर कोन मिलेगा उसकी चिंता न किये हुए बाहर निकल गया। वह वसिलिवस्की द्वीप की ओर मुड़ा, व मोस्पेक्टस को पार किया, जैसे उसे आवश्यक काम के

जिसे चल रहा हो—अपनी आदत के अनुसार बड़बड़ाता हुआ और फिर ज़ोर से बोलता हुआ, इसलिये कई आदमियों ने उसे शराबी समझा ।

४

उसकी माँ के पत्र ने उसे दुःखी बना दिया । पत्र के प्रमुख विचार के लिये उसे अपने दिमाग में कोई आशंका नहीं थी, पढ़ते समय भी नहीं थी । क्या करना चाहिये यह उसने एकदम तय कर डाला था । "यह विवाह जब तक मैं जीवित हूँ कभी नहीं हो सकता । श्री लूशिन जहन्नुम में जाय !"

"यह बिलकुल स्पष्ट है । नहीं, माँ, नहीं, दूनिया तुम मुझे धोखा नहीं दे सकतीं । और फिर भी बिना मेरी सलाह के किसी निश्चय पर पहुँचने के लिये अपने आप को क्षमा कर रही हैं । कितना बड़ा बहाना; और यह पीटर पीट्रोविच किस मज की दवा है । नहीं, दूनिया,मैं देखता और समझता हूँ कि क्या कहने की तुम तैयारी कर रही हो, बहुत सी बातें ! हाँ और मैं जानता हूँ कि जब तुम कमरे में इधर उधर घूम रही थीं तो तुम्हारे विचार क्या थे, और आखिर मेरी माँ के कमरे में तुमने कज़ान की देवी की पवित्र मूर्ति के सामने क्यों प्रार्थना की । ओह ! वो सब तय हो चुका है । क्या वास्तव में, दूनिया इस कारबारी तथा निकम्मे आदमी को स्वीकार करने में प्रसन्न है ।

"यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना उचित होगा । क्या उनकी सारी बहस रही रहाई थी, क्या अपने वास्तविक विचारों को उन्होंने पीछे ही रखा और उनको कभी सामने नहीं रखा हो सकता है कि कुछ अंशों में यही सत्य हो । और माँ यह क्यों लिखती है, ! रोडिया ! दूनिया को प्यार करना क्योंकि वह, तुम्हें अपने जीवन से अधिक चाहती है ! क्या अपने पुत्र के लिये पुत्री को त्याग करने में उसकी कोई अन्दरूनी चाल नहीं है ! तुम हमारी आशा हो, हमारे सब कुछ हो ! ओह माँ, माँ !!

वह अधिकाधिक क्रोध में आता गया और इस समय यदि श्री लूशिन उसके सामने होता तो वह मार डालता ।

"यह सत्य है" उसने अपने विचारों के धाराप्रवाह में बहते हुए

आरम्भ किया। "किसी मनुष्य को समझने के लिये धीरे धीरे और सावधानी से काम लेना चाहिये, पर मी लूशिन को समझने में कोई भी कठिनाई नहीं हो सकती। और लूशिन तुम्हारा क्या है। वह तुम्हारी दूल्हिन है। और क्या तुम यह नहीं जानते कि सफर के वास्ते मेरी माँ को अपनी पेन्शन पर रुपया कर्ज लेना पड़ा है!

"क्या वे यह सब नहीं देखते हैं, या क्या वे जानबूझ कर मूर्ख बन रहे हैं। तब भी वे सन्तुष्ट हैं, और सोचते हैं कि यह तो पुण्य है और फल तो शीघ्र प्राप्त होने वाला है। आखिर में मुझको जिसकी आशंका है वह उसका सब भाड़ा नहीं, पर वह है उसका बात करने का ढंग। विवाह के पश्चात् के उसके व्यवहार को मैं अभी से अनुमान लगा सकता हूँ लेकिन मेरी माँ क्या सोच रही है। सेंट पीटर्सबर्ग में वह क्या करेगी। यह स्पष्ट है कि वह यह अनुमान लगा रही है कि दूनिया के विवाह के पश्चात् उसके साथ रहना असम्भव है। वह किस पर विश्वास करती है—अपनी एक सौ बीस रूबल सालाना पेन्शन पर। अंत तक ऐसे भोले भाले मनुष्यों पर वे लोग विश्वास करते हैं। और फिर ऐसा आडम्बरवादी आदमी उन लोगों पर हँसता है और अपनी असलियत बताता है।

"और मेरी माँ! परमात्मा उसकी मदद करे!! परन्तु दूनिया, प्यारी दूनिया! मैं तुम्हें जानता हूँ। अंतिम बार जब तुम १९ वर्ष की थीं तब मैंने तुम्हें देखा था। तब मैंने तुम्हारे चरित्र को जाना। ढाई साल पहले ही मैं यह जानता था, और यदि तुम श्री स्विद्रिगैलोव के व्यवहार और उसके परिणाम को सह सकी थीं तो अब वह उससे भी अधिक सह सकती है। और वे लोग समझते हैं वह श्री लूशिन की अपनी पत्नियों के प्रति विचारधारा, कि गरीबी से उन्हें ऊपर उठा कर सुखी बनाया जाय, को भी सह सकती है उसने वास्तव में बड़ी गलती की, लेकिन मुश्किल से इसे गलती कहा जा सकता है और उसका निश्चय सब कुछ शीघ्र ही समाप्त करने का है। लेकिन दूनिया को देखना चाहिये कि वह क्या है। नहीं, दूनिया कभी भी ऐसी लड़की नहीं थी और माही वास्तव में वह बदल सकती है। साथ ही, यह कहा जा सकता है कि स्विद्रिगैलोव के साथ रहना कठिन है। केवल दो सौ

स्वार्थ के लिये, जान बन कर एक स्थान से दूसरे स्थान जाना कठिन है, लेकिन इतना होते हुए भी मैं जानता हूँ कि अपनी आत्मा को दुखी बनाने के तथा ऐसी आदमी से सम्बन्ध स्थापित करने के बजाय जिसके कि साथ कुछ भी उसकी समानता न हो, और जिसे पसन्द भी न करती हो वह शीघ्र ही किसी प्लांटर की गुलाम बन जायगी। कभी नहीं, वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये कभी नहीं। भले ही भी लूजिन असली सोने व हीरों के बने होते तब भी उसने विधिवत पत्नी बनने को स्वीकृति न दी होती। फिर उसने अपनी स्वीकृति क्यों दी!

"क्या चालबाजी है! इसका हल कहाँ है! बात स्पष्ट है। अपने लिये अपने सुख के लिये, अपने जीवन को बचाने के लिये भी, वह अपने को नहीं बेचेगी; पर दूसरे के लिये। हाँ, अपने किसी निकट स्नेही के लिये वह ऐसा कर सकती है। यही तो रहस्य है। किसी भाई के लिये, किसी माँ के लिये वह सबकुछ त्याग देगी। ओह! तब हम अपनी नैतिकता, स्वतंत्रता तथा शांति, सब को भाड़ में झोंक देते हैं, हम जीवन दे सकते हैं यदि हमारे प्यारे सुखी हो जायं। अब यह दिन की तरह स्पष्ट है कि रोदिया रोमनोविच रासकौलनीकोव इस सबका गुप्त सूत्र है तथा मुख्य ध्येय है। और उन सबके लिये जो मेरे लिये किया गया है, मुझे क्यों आपत्ति होना चाहिये—विश्व विद्यालय में भरती करने के लिये, तब लूजिन का साझीदार बनने के लिये और अंत में उसका व्यापार हथिया कर बड़ा आदमी बनने के लिये।

"ओह! प्यारे व निर्दयी हृदयो!! ऐसी दुर्दशा में किसी सोनिया के भाग्य से कौन किनारा कर सकेगा। दूनिया, क्या तुम जानती हो कि लूजिन के साथ तुम्हारा भाग्य, सोनिया से अधिक हीनोन्मुख नहीं है। यद्यपि वह कोई वास्तविक स्नेह नहीं हो सकता, माँ लिखती है। क्या तुम समझती हो कि लूजिन की पतिव्रता सोनिया के सद्गुणों की सूक्ष्म मात्र है। उससे अधिक हेय व नीच हो सकती है, क्योंकि दूनिया तुम तो ऊपरी दिखावे व आराम को मानती हो लेकिन उसके लिये तो मौत और भूखों मरने के अलावा और कुछ नहीं है। ऐसी पवित्रता मूल्यवान है, अधिक मूल्यवान, दूनिया, लेकिन यदि वह उसकी शक्ति के बाहर हो जाय और उसे पछताना हो! कौन से दुःख

न आँसू होंगे जो सब से छिपे रहेंगे! तुम मार्फा पेत्रोवना नहीं हो, और मेरी माँ का क्या होगा? मैं उसे वैसे ही विचलित पाता हूँ और जब वह सब कुछ देखेगी तो उसका क्या हाल होगा? और मेरा! वे लोग मेरे बारे में क्या सोच रहे हैं मैं तुम्हारे त्याग को दुनिया! स्वीकार नहीं करूँगा। नहीं, माँ जब तक मैं जीवित हूँ यह कदापि नहीं हो सकता। मैं इसे कदापि नहीं होने दूँगा।"

उसने एक दम अपने बारे में विचार किया और शान्त हो गया।

"नहीं होने दूँगा! मैं क्या कर सकता हूँ? उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिये मैं अब विश्वविद्यालय छोड़ता हूँ और—? अब, अभी के लिये क्या करना है? कुछ न कुछ एकदम होना चाहिये; यह तुम नहीं सोचते! तुम क्या करने वाले हो! ये लोग जो कर सकते हैं वह इतना ही कि सौ रूबल पेन्शन पर और कुछ पेशगी ले लें। मैं उन्हें किस प्रकार बचा सकता हूँ! यह भी तुम कुछ सोचते हो!"

ये प्रश्न उसके लिये नवीन नहीं थे, पर बड़े पुराने और अप्रिय थे और इनसे वह बेहद परेशान भी था। किसी भी प्रकार कुछ न कुछ निश्चित होना चाहिये और कुछ न कुछ होना चाहिये, या—

"या जीवन को ही त्याग दो!" वह एक दम चिल्लाया "और आज्ञाकारी के समान जो भाग्य में है उसे स्वीकार कर लो, और कार्य करने का, रहने का तथा प्रेम करने के अधिकार को तिरस्कार करदो!"

तब वह काँपा। एक दूसरा विचार, पिछली रात्रि से, आगया था। परन्तु वह काँपा नहीं वह जानता था कि वह आयगा, लेकिन वह विचार एक दिन पूर्व का नहीं था, यही अन्तर था। एक मास पूर्व, और अभी तक वह एक स्वप्न था, पर अब वह स्वप्न नहीं ज्ञात होता, वह तो एक भयानक आकृति होगया और बिल्कुल नवीन। उसने एक परिवर्तन का अनुभव किया और उसका मस्तिष्क झनझना उठा, और उसकी आँखें झपने लगीं। शीघ्र ही उसने चारों ओर देखा और आराम करने का स्थान तलाश किया। वह अब क—बाजार में था। सौ कदम दूरी पर एक बेंच पड़ी थी, वह शीघ्र ही उस

ओर चला। लेकिन मार्ग में एक घटना घटी जिसने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

बेंच की ओर देखते हुए, लगभग बारह कदम दूर पर अपने सामने उसने एक औरत देखी; लेकिन साधारण तौर पर उसने उस पर पहिले ध्यान नहीं दिया। उसकी उत्सुकता धीरे धीरे बड़ी प्रबल हो उठी और यहाँ तक कि वह यह जानने का उत्सुक होगया कि आखिर उसमें क्या विशेष बात है। वह जवान सी लगती थी, और गर्मी में, नंगे सिर ही बाहर निकल पड़ी थी। अपने हाथों को इधर उधर हिलाते हुए अजीब तरह से चल रही थी। अब रासकोल्नीकोव उसमें एक कमसे दिलचस्पी लेने लगा था। वह बेंच के पास तक पहुँचा लेकिन बीच तक पहुँचने पर बुरी तरह बेंच पर गिर पड़ी—आँखें बन्द करते हुए, मानो वह अधिक थक गई हो। उसने ऐसा अनुमान लगाया कि वह पिये हुए है। अजीब बात—ऐसे दृश्य को देखने से दुःख होता था। उसके सामने एक मुँह था—एक दम बालसा—सोलह वर्ष से अधिक नहीं, हो सकता है कि पन्द्रह का ही हो। उसे इसका ज्ञान नहीं था कि वह सड़क पर थी।

रासकोल्नीकोव बैठा नहीं पर उसके सामने खड़ा रहा। लेकिन इस समय, दो बजे, इतनी गर्मी में, शायद ही कोई बाहर निकल रहा था। फिर भी, थोड़ी दूर पर एक सड़क के किनारे, एक आदमी खड़ा था, जोकि ऐसा ज्ञात होता था कि वह भी लड़की के पास, किसी कार्यवश, पहुँचना चाहता है। उसने, निस्सन्देह उसे देखा था और उसका पीछा किया था। उसने रासकोल्नीकोव की ओर घूरकर देखा, लेकिन साथ ही साथ इस बात का भी उत्सुक था कि वह उसे न देख ले। सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट था। वह लगभग तीस वर्ष का था, मूँछें थीं, और फैशनदार कपड़े पहिने था। ज्योंही रासकोल्नीकोव ने उसे देखा, उसको क्रोध आ गया, और एक दम उसके दिमाग में उस जोकर का अपमान करने की बात उठी। एक क्षण पश्चात वह लड़की से हटकर उस आदमी के पास जा पहुँचा।

"ऐ! तुम स्विद्रिगेलोव, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" क्रोधित होकर और मुट्ठी बाँधते हुए वह चिल्लाया।

"इसका क्या मतलब है?" भौं चढ़ाते हुए और रासकोल्नीकोव को ऊपर से नीचे तक देखते हुए उस युवक ने कहा।

"चले जाव यहाँ से, यही मैं तुमसे चाहता हूँ।"

"तुम्हारी यह हिम्मत गँवार' कैसे हुई, गँवार?" उसने बेंत घुमाया।

दोनों मुट्ठी बाँधे रासकोल्नीकोव उसकी ओर दौड़ा,—बिना इसकी चिंता किये हुए कि वह तगड़ा युवक उससे बल में दुगना है। परन्तु उसी पल किसी ने पीछे से उसको कसकर पकड़ लिया, और अब उन दोनों के बीच में एक पुलिस का आदमी था।

"ठहरो भद्र! आमआमों पर मत लड़ो। यह क्या है? तुम कौन हो?" रासकोल्नीकोव की ओर मुड़ते हुए, उसके कपड़ों को देखते हुए उसने कहा। "यहाँ, मेरा तुमसे ही आशय है।" रासकोल्नीकोव का हाथ पकड़ते हुए उसने कहा।

' मैं एक विद्यार्थी हूँ, मेरा नाम रासकोल्नीकोव है, तुम भली भाँति तसदीक कर सकते, हो" और उस युवक की ओर मुड़ कर "और आप भी श्रीमान्, यदि चाहें तो। यहाँ आओ, मैं तुम्हें बताऊँगा।" और उस अधिकारी का हाथ पकड़ते हुए उसे घसीट कर बेंच तक ले गया।

"देखो, यहाँ, बिल्कुल पिये हुए है! अभी मार्ग में आई है। किसे मालूम कि वह कौन है? तब भी वह मुश्किल से वह है जो वह लगती है। ऐसा अधिक सम्भव है कि उसे पिलाली गई है, या दवा दी गई है और तब सड़क पर छिपाया दी गई है। उसकी ओर देखो। यह बिल्कुल स्पष्ट है, और अब इधर देखो। यह जोकर, जिसको कि मैंने मार दिया होता, इसको मैं नहीं जानता, और यह पहिला ही अवसर है कि मैंने इसे देखा है, लेकिन इसने उसे देख लिया था, और उसका पीछा किया। इसने उसकी हालत देखी, और अपने काम के लिये उसे पकड़ लिया होता। यह सत्य है, मेरा विश्वास करो। मैं कोई भी गलती नहीं कर रहा हूँ। जैसे

उसका सब समाप्त हो जायगा। मैंने कितनों को ही इस प्रकार समाप्त होते देखा है जिनका कि जीवन उसी की तरह आरंभ हुआ ? और वे इसे आवश्यक दोष कहते हैं।

"पर मैं कहाँ जा रहा हूँ ?" एक बार उसने सोचा 'अजीब ! वैसे तो मैं पत्र पढ़ लेने के बाद कहीं जा रहा था। ओह ! अब याद आया ! —वैसिलिव्स्की ऑस्त्रोव की तरफ, राजुमिखिन के पास लेकिन क्यों ? यह अजीब बात है। किस विचार ने मुझे उसकी ओर जाने के लिये प्रेरित किया ?

उसे अपने ऊपर आश्चर्य हुआ। राजुमिखिन, विश्वविद्यालय में उसका सबसे अधिक गहरा दोस्त था, यद्यपि यह ध्यान देने योग्य बात है कि रास्कोल्नीकोव के बहुत कम मित्र थे। वह बिना अपनी चिंता किये अपने आपको कुछ न कुछ काम में लगाये रखता था; इस कारण उसका बड़ा सम्मान होता था। वह गरीब होने के अलावा बड़ा अहंकारी था, इस कारण कोई उसे प्यार नहीं करता था। कुछ विद्यार्थी यह कहा करते थे कि वह सबको बच्चों की तरह समझता है क्योंकि वह उन सबसे ज्ञान में कहीं अधिक था। फिर भी वह राजुमिखिन से मिलता था—अर्थात् उससे और लोगों की अपेक्षा अधिक बातचीत करता था।

राजुमिखिन बड़ा गरीब था और अपनी रोटी स्वयं कमाता था कुछ न कुछ काम करके वह अपना आवश्यक काम चलाता था; और उसके पास साधन भी बहुत थे। अभी हाल ही में उसे विश्वविद्यालय का अध्ययन छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा था। यद्यपि वह अपनी हालत सुधारने का प्रयत्न कर रहा था। रास्कोल्नीकोव उसके पास चार माह से नहीं गया था, और राजुमिखिन को अपने मित्र के बारे में भी कुछ ज्ञात नहीं हुआ।

५

"आह ! कुछ दिनों पहिले मैंने विचार किया था कि मैं राजुमिखिन के पास जाऊँ और उससे कुछ काम दिलाने के लिये कहूँ" उसने अपने आप कहा, "और अब वह मेरी सहायता कर सकता है, वह मुझे कोई काम दिला सकता है, और मुझे कुछ धन भी दे सकता है—यदि उसके पास हुआ तो—

अपने जूते खरीदने व कपड़े ठीक करने के लिये शक्ति में पहनने योग्य हो जाएँ।"

"क्या! क्या यह सम्भव है कि मैं अपनी सारी आशायें किसी रज़ुमिखिन पर आधारित कर रहा हूँ?" उसने अचरज से अपने आप प्रश्न किया। थोड़ा और अपना माथा रगड़ा। "हाँ" उसने एक दम निश्चयपूर्वक कहा, "मैं उसके पास जाऊँगा—यह निश्चित है—लेकिन अभी नहीं मैं उस कार्य के एक दिन पश्चात् रज़ुमिखिन के पास जाऊँगा।" वह रुका। "उस कार्य के पश्चात्" वह बुदबुदाया "बस! यदि वह कार्य हो जाय? क्या वह वास्तव में होगा?"

वहाँ से उठकर उसने वापस लौटने का इरादा किया, लेकिन घर जाने का विचार उसे बहुत बुरा लगा—वहाँ, उसके उस घर में! जहाँ एक माह से अधिक हुए उस विचार का जन्म हुआ था। उसे एक कँपकँपी सी चढ़ी और इन विचारों से वह ठंडा सा पड़ गया। ऐसी हालत में वह तमाम वासिलि वस्की ओस्ट्रोव में घूमता रहा, छोटी नौका को पार किया और अब द्वीप पर पहुँच गया था। थका हारा वह हरे दरख्तों को देख कर, आकर्षित होकर उनके सामने खड़ा होता।

एक बार वह थका हुआ और उसने अपने पैसे गिने जो कि लगभग तीस कोपेक थे। "बीस अधिकारी को, तीन नास्तासिया को, तब मैंने सैंता-लिस या पचास मारमीलाडोव के पास छोड़े होंगे" उसने विचार किया, और पुनः सूझ गया कि किस लिये उसने अपने पैसों को जेब के बाहर निकाला था, और एक ढाबे को देखते ही उसे याद आया कि वह भूखा है। उसमें जाकर उसने एक गिलास ब्रांडी पिया और एक केक लिया जिसे कि उसने सड़क पर चलते हुए खाया। उसके हाथ पैर भारी होने लगे और उसने नींद सी अनुभव की। वह घर के लिये रवाना हुआ, पर पीट्रोवस्की द्वीप पर पहुँच कर उसे अधिक कमजोरी के कारण रुकना पड़ा। उसने सड़क छोड़ी और उस ओर मुड़ा जहाँ कि झाड़ियाँ थीं, घास पर लेट गया, और तुरन्त ही सोगया।

जब स्वप्न देखने वाला अस्वस्थ होता है तो स्वप्न अधिक और

दिखाते हैं-। कई भयानक चित्र एक साथ इकट्ठे हो जाते हैं। ऐसे स्वप्न अधिक समय तक याद रहते हैं तथा स्वप्न देखने वाले मनुष्य के वैसे ही असन्तुलित अवयवों पर और भी अधिक बुरा तथा गहरा प्रभाव डालते हैं।

उसका गला घुटने लगा और सांस रुकने लगी। वह ज़ोर से चिल्लाया और जाग पड़ा।

वह पसीने से सराबोर हो रहा था, और उसका सिर भी भीग रहा था और वह हाँफता हुआ तथा बड़ा भयभीत हुआ उठा था। "परमात्मा को धन्यवाद है कि वह केवल स्वप्न था" उसने कहा, और वह स्वस्थ होने के लिये पेड़ के नीचे उठ कर बैठ गया। "पर यह क्या है? मुझे बुखार है। कितना बुरा स्वप्न था!" उसके हाथ पैर ढीले हो गये, और उसका मस्तिष्क उलझन में पड़ गया। उसने अपनी कोहनी को घुटनों पर रखा और अपने हाथों पर अपना सिर।

"परमात्मा! क्या मुझे उसकी खोपड़ी को कुल्हाड़ी या ऐसी ही किसी वस्तु से चोट करना है गर्म खून में चलना होगा, तोड़ कर ताला खोलना होगा, और चुराना व कांपना, रक्त का चारों ओर बहना और अपने आपको कुल्हाड़ी सहित छुपाना। ओ ! ईश्वर !! क्या यह वास्तव में सम्भव है, क्या यह कभी हो सकता है?" वह एक पत्ते की भाँति काँप गया ज्योंही उसने यह कहा।

"मैं क्या सोच रहा हूँ!" वह चकित होकर चिल्लाया। "मैं भली प्रकार जानता हूँ कि जिसके द्वारा मैं कह पा रहा हूँ उस सबको मैं सह नहीं सका। यह मैंने कल ही भली भाँति देख लिया था जब कि मैंने रिहर्सल किया था। बिल्कुल स्पष्ट है। क्या मैंने क्या नहीं कहा-जब कि सीढ़ी के ऊपर चढ़ा था-कि यह सब कितना हेय, तुच्छ तथा निम्नकोटि का था तथा क्या मैं उस समय भाग कर भाग नहीं गया!"

वह खड़ा होगया, और उसने चारों ओर देखा यह आश्चर्य करते हुए वह यहाँ कैसे पहुँच गया। तथा टी-पुल की ओर मुड़ा। वह पीला पड़ गया था और उसके नेत्र गर्म थे, लेकिन वह श्वांस ठीक तरह से ले रहा था। उसने यह अनुभव किया कि पुरानी परिस्थितियों से वह मुक्त हो चुका है जिनका

कि पहले उसके पिता की थी, तथा सोने की छोटी अँगूठी जिस पर तीन लाल पत्थर जड़े थे। उसने दूसरी वस्तु म सुनकारा पाने का निश्चय किया और उस औरत के घर की तरफ चल पड़ा। प्रथम भेंट में ही, और व्यक्तिगत रूप में उसके बारे में कुछ भी जाने बिना ही, उसने उसके हृदय में अवर्णनीय अदम्बिरूप आदर के भाव दिये। उसने उससे दो नोट लिये, और वहाँ से एक रेस्तराँ में जाकर चाय के लिये आज्ञा दी। वह बुदबुदाता हुआ वहीं बैठा और उसके दिमाग में अजीब तरह के भाव भर गये। उसके पास ही, एक दूसरी टेबल पर, एक विद्यार्थी— जिसे कि वह नहीं जानता था, तथा एक अधिकारी बैठा था। वे बिलियर्ड खेले थे और चाय पी रहे थे। एक दम रास कोल्नीकोव ने सुना कि वह विद्यार्थी उस अफसर को एलिना इवानोवना का पता दे रहा था, जोकि एक प्रोफेसर की विधवा थी तथा जो कि अम्बक के बदले में धन देती थी। केवल यही बात रासकोल्नीकोव को बड़ी अजीब सी लगी। वे लोग उसी व्यक्ति के बारे में बातचीत कर रहे थे जो कि अभी उससे मिलने गया था। वास्तव में यह केवल अवसर की बात थी, लेकिन, उस समय जब कि वह एक विशेष भाव को दबाने का असफल प्रयत्न कर रहा था, इस अजनबी के शब्दों ने आकर उसको और अधिक बल दिया। वह विद्यार्थी बोलता ही गया, और अपने साथी को एलिना इवानोवना के बारे में बतलाता रहा।

"वह बड़ी प्रसिद्ध है" उसने कहा "और पैसे की हमेशा बाबती है। वह यहूदी की तरह अमीर है। और पल भर के नोटिस पर पाँच हजार रुपया तक दे सकती है। फिर भी बंधक के रूप में वह एक रूबल की कीमत की वस्तु को भी ले लेगी। वह हमारे कई साथियों के लिए आसरा है—लेकिन वही दुष्ट बुढ़िया है!" और वह उसके बारे में बतलाता गया। उसके एक बहिन भी थी, एलिजाबेथ, जो उसके साथ रहती थी, और एलिना इवानोवना उसके साथ बुरा व्यवहार करती थी और उसको एक बच्चे की भाँति निर्भयम में रखती थी।

"यह तो बिलकुल चमत्कारिक है!" उसने कहा, और आर्

मिला पड़ा।

वह उसकी ओर प्रश्न भरी दृष्टि से मुड़ी । वह आँखें बचाकर बिना कुछ । चला गया । लेकिन काम तमाम हो गया । उसके पास कुल्हाड़ी नहीं । और वह पूर्ण रूप से हताश हो गया । वह नीचे चला गया । वह छि छिपाते हुए दरवाजे पर खड़ा हुआ । सड़क पर आना या वापिस लौ समान रूप से भयंकर थे । "यह सोचना कि मैंने एक बड़ा अच्छा मौ हाथ से खो दिया," वह बड़बड़ाया, ज्यों ही वह पहरेदारहीन दरवा पर खड़ा हुआ, तथा उसने चौकीदार के खुले दरवाजे में झाँका । एक । वह चौंका—उस अँधेरे कमरे में किसी वस्तु ने उसका ध्यान आकृष्ट किया उसने चुपचाप चारों ओर देखा । पास कोई नहीं था वह पंजों के बल कदम ऊपर बढ़ा और चौकीदार को पुकारा । कोई उत्तर नहीं मिला वं वह सीधा कुल्हाड़ी के पास जा पहुँचा और शीघ्र ही उसे अपने फन्दे बाद वह सड़क पर आ पहुँचा । इस घटना ने उसे बड़ा साहस दिया ।

किसी को कोई सन्देह न हो इसलिये वह चुपचाप चला गया वं सड़क पर नीचे दृष्टि गड़ाये, राहगीरों की शक्लों को बचाते हु वह चलता गया ।

साढ़े सात बजे, वह मकान के पास खड़ा हुआ ।

वह समझ था कि बिना लोगों के देखे ही वह भीतर चल गया । एक क्षण में ही वह बुढ़िया के जीनों पर था । अपनी श्वास को ठी करते हुए और धड़कते हृदय पर हाथ दबाते हुए, उसने चढ़ना आरं किया । हर क्षण वह आहट लेने के लिये खड़ा हुआ । जीने बिलकुल सुन सान थे और प्रत्येक द्वार बन्द था । उसे कोई नहीं मिला । दूसरी मंजि पर एक खाली हिस्से का द्वार खुला था, जब पेन्टर्स कार्य कर रहे थे प उन्होंने ऊपर नहीं देखा । वह विचार करने को एक क्षण रुका, और फि चढ़ना प्रारंभ किया । और अन्त में वह चौथी मंजिल पर पहुँचा, औ एलिना इवानोवना के द्वार पर था । वह हिचकिचाते हुए एक क्षण खड़ा रहा उस बुढ़िया के मकान से कुछ भी शब्द सुनाई नहीं दिया । जीने भी सर्व नीरवता से परिपूर्ण थे । अधिक देर तक टोह लेने के बाद, नवयुवक ने अन्तिम बार चारों ओर देखा, और अपनी कुल्हाड़ी को टटोला । "क्या मैं

अधिक फीका नहीं लगता ? ' उसने विचार किया। 'क्या मैं बहुत विचलित नहीं लगता ? वह बड़ी अविश्वासिनी है। मैं कुछ देर और रुक कर अच्छा करूँगा"।

लेकिन उसका हृदय बजाय शांत होने के और जोरों से धड़कने लगा। वह उसे अधिक नहीं सह सका, और घंटी की डोरी की ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने उसे अपनी ओर खींचा। आधे क्षण रुकने के पश्चात्, उसने फिर बजाई, इस बार ज़रा ज़ोर से। कोई उत्तर नहीं। बुढ़िया निश्चित ही घर पर थी, लेकिन स्वभाव से शक्की होने के कारण, इस समय शायद वह और भी अधिक शक्की हो गई थी क्योंकि वह अकेली थी। रास्कोल्निकोव एलिना इवानोवना की आदतों के बारे में कुछ जानता था। इसलिये उसने अपने कान द्वार पर लगाये। एक दम वह सावधान होगया क्योंकि कोई हाथ सम्हाल कर रक्खा गया था तथा कपड़ों की रगड़ भी दरवाज़े से होती जान पड़ी। भीतर भी कोई उसी प्रकार का काम कर रहा था, जिस प्रकार का कि वह बाहर कर रहा था। कोई ताले के पीछे खड़े होकर, अपने को छिपाये सुन रहा था, और शायद उसके कान भी दरवाज़े पर लगे हुए थे।

कुछ ही क्षण बाद उसने कुण्डे सरकने की ध्वनि सुनी।

७

पहिले की तरह, द्वार थोड़ा सा खुला, और अन्धकार में से फिर दो नेत्रों ने, अविश्वास पूर्ण दृष्टि से झाँका।

"नमस्ते, एलिना इवानोवना!" उसने कहा, लापरवाही से, लेकिन उसकी आवाज़ ने उसका साथ नहीं दिया, और वह हकलाया और काँपा। "नमस्ते, मैं तुम्हारे लिये कुछ लाया हूँ, पर अच्छा हो यदि हम रोशनी में चलें।" उसने उसे धकेला और बिना बुलाये ही वह कमरे में घुसा। बुढ़िया भी उसके पीछे दौड़ी और तब बोली।

"तुम क्या चाहते हो ? तुम कौन हो ?" उसने कहा।

"क्षमा करना, एलिना इवानोवना, मैं तुम्हारा पुराना परिचित

रासकोल्नीकोव हूँ। मैं एक बन्धक लाया हूँ, जैसा कि उस दिन मैंने वचन दिया था," और तब उसने वह बन्धक उसे थमाया।

वह बुढ़िया उसका निरीक्षण करने ही वाली थी, जब कि उसने अपनी आँखें ऊपर को उठाईं और उस आने वाले की ओर देखा जो कि इस प्रकार बेअदबी से घुस आया था। उसने एक क्षण उसका निरीक्षण बड़े ध्यानपूर्वक तथा अविश्वासी ढंग से किया। रासकोल्नीकोव ने अनुभव किया कि उसका रंग बदलता जा रहा है और यदि वह इस प्रकार बिना कुछ कहे ही देखती रही तो वह एक दम भाग जाने पर मजबूर हो जायगा।

"तुम मुझे इस तरह क्यों देख रही हो?" अन्त में गुस्से में हो कर उसने पूछा। "तुम इसे लोगी या नहीं? या इसे मैं कहीं और ले जाऊँ? मेरे पास समय बर्बाद करने के लिये नहीं है।" वह यह कहना नहीं चाहता था, लेकिन शब्द निकल ही पड़े। बोलने के ढंग ने उसका संशय समाप्त कर दिया।

"तुम इतने बेसबर क्यों हो, बचुआ! यह क्या है!" उसने बन्धक की ओर देखते हुए पूछा।

"चाँदी का सिगरेट केस, जिसके बारे में उस दिन मैंने तुमसे कहा था।"

उसने अपने हाथ बाहर निकाले। "लेकिन तुम इतने पीले क्यों दिख रहे हो, तुम्हारे हाथ क्यों काँप रहे हैं? बचुआ! क्या बात है!"

"बुखार", उसने एक दम जवाब दिया। "तुम भी इसी प्रकार पीली हो जाओगी यदि तुम्हें खाने को कुछ न मिले।" वह मुश्किल से यह कह पाया और अनुभव किया कि वह शक्तिहीन हो रहा है।

"यह क्या है?" उसने एक बार फिर, उसे हाथ में तोलते हुए, तथा आगन्तुक की ओर देखते हुए पूछा।

"सिगरेट केस चाँदी, उसे देखो।"

'ऐसा मालूम नहीं पड़ता कि यह चाँदी का है। ओह! गाँठ कितनी बेतुकी लगी है!"

उसने पैकेट को खोलना आरंभ किया, और वह उजाले की ओर

सोने के कमरे से बाहर भगरा। कमरे के बीचों बीच, एलिज़ावेथ हाथ में एक बड़ा बन्डल लिये, खड़ी हुई भयसे आतंकित अपनी मरी हुई बहिन की ओर घूर रही थी, भयसे वह सफेद पड़ गई थी। एक दम खूनी के सामने भ्राजाने पर उसका हर हिस्सा शरीर का कांप उठा। उसने अपने हाथ ऊपर उठाने का प्रयत्न किया, मुँह खोलने की कोशिश की, पर वह तनिक भी चिल्लाने में असमर्थ थी, और, धीरे धीरे पीछे की ओर चलती हुई, उसने रासकोल्नीकोव को देखना जारी रखा तथा एक कोने में भागई। बड़ी घामोशी के साथ वह बिचारी पीछे खसकी थी, मानो उसके शरीर में श्वांस ही न रही हो। नवयुवक उसकी ओर भपटा, अपनी कुल्हाड़ी को उठाये हुए। उसने बड़ी कठिनाई के साथ अपना बाँया हाथ उठाया, और खूनी की ओर धीरे धीरे बढ़ाया, मानो वह उसे दूर रखना चाहती हो। कुल्हाड़ी उसकी खोपड़ी में घुसी। एलिज़ावेथ मर कर गिर पड़ी।

वह अधिकाधिक भयाकुल था, खास तौर पर इस दूसरे खून के बाद, जो कि उसके द्वारा पहिले से निश्चित नहीं था। वह भाग जाने की जल्दी में था। धीरे धीरे उसका दिमाग दूसरे विचारों में उलझा, और वह एक प्रकार की चिंता में पड़ गया। कुछ देर बाद, रसोई घर में देखकर उसने एक बरतन को जो पानी से भाधा भरा था, देखा, और इससे उसे विचार आया कि वह ... थ व कुल्हाड़ी को धो डाले। खून ने उसके हाथों को चिपकना बना दिया था। कुल्हाड़ी के फले का पानी में डुबा देने के बाद उसने एक साबुन का टुकड़ा, जो कि खिड़की की चौखट पर रखा था, लिया और हाथ धोये। जब वह हाथ धो चुका तो उसने कुल्हाड़ी के लोहे को धोना आरंभ किया, और तब लकड़ी के हत्थे को जो कि खून से खराब होगया था धाया।

रासकोल्नीकोव ने सम्हाल कर अपने हथियार को, कोट के अन्दर फन्दे में डाल कर छिपाया। उसके बाद उसने अपने कपड़ों का सूक्ष्म निरीक्षण किया। उसने कोट पतलून पर कोई भी दाग के चिन्ह नहीं पाये, लेकिन बूटों पर खून के दाग थे। उसने भीगे हुए कपड़े की मदद से उन्हें मिटाये। "हे! परमेश्वर! मुझे जाना चाहिये, एकदम बहुत दूर जाना

चाहिये !" वह बड़बड़ाया और पास के कमरे की ओर भागा जहाँ पर कि सबसे जबरदस्त भय उसके अनुभव के लिये उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

वह दरवाजा उस मकान का, जो कि बाहर की तरफ खुलता था, खुला पड़ा था। न तो उसमें ताला ही पड़ा था और न कुंडा ही लगा था। लेकिन उसके बाद उसने एलिजावेता को देखा था। यह क्या कि उसे अभी तक इसका ध्यान नहीं आया कि वह इस द्वार के द्वारा ही भीतर आई ! उसने दरवाजा बन्द किया और कुंडा लगाया। "लेकिन नहीं, यह मुझे नहीं करना चाहिये ! मुझे चला जाना चाहिये, जाना चाहिये" वह फिर कुंडे के पास आया, और, फिर द्वार खोलने के बाद खड़ा-खड़ा बाहर की आहट लेने लगा।

वह इस तरह अधिक देर तक खड़ा रहा। नीचे सड़क के दरवाजे पर दो जोर गुस्से की आवाजें आ रही थीं। "ये लोग कौन हैं ?" वह शांति पूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। अंत में आवाजें बन्द हुईं और वे लोग चले गये थे। वह नवयुवक भी वही करने जा रहा था, जब कि ठीक नीचे का द्वार आवाज करता हुआ खुला और कोई गुनगुनाता हुआ नीचे उतरा। 'यहाँ वे अब तक क्या कर रहे थे ?" रासकोल्नीकोव को आश्चर्य हुआ, और दरवाजा बंद करते हुए वह थोड़ी देर और रुका। फिर पहिले जैसी शांति होगई। लेकिन ज्योंही वह नीचे जाने की तैयारी कर रहा था, त्योंही वह नई आवाजों से सावधान हो गया, कुछ दूरी पर पदचाप, जो नीचे जीनों के सिरे पर थी—ऊपर कोई आ रहा है, इस चौथी मंजिल पर बुढ़िया के पास। वे कुछ भारी, सम्मुचित और जल्दी की जगह धीरे-धीरे थे। अब वह पहिली मंजिल पर आगया है वह फिर भी चढ़ रहा है। उसने तीसरी मंजिल चढ़ना प्रारंभ कर दिया है। और वह शीघ्र ही चौथी पर आ जायगा ' और एक दम जैसे रासकोल्नीकोव को लकुआ मार गया हो।

वह आजमनी अब चौथी मंजिल पर चढ़ रहा था। रासकोल्नीकोव जो कि अब तक बाहरी फर्श पर डर के मारे खड़ा था, अपनी ग्लानि को दूर कर दी, कमरे में फिर घुसा और दरवाजा बन्द कर लिया। और इस बात का ध्यान रखते हुए कि कम से कम ध्वनि हो उसने कुंडा लगा दिया। तब भी

अर्धेरा आन्तरिक प्रवृत्ति ने उसे ऐसा करने पर बाध्य किया। जब उसने यह काम कर लिया तो द्वार के पास खड़ा होगया, रोंगटे खड़े हुए। वह आगन्तुक अब द्वार पर आगया था। दोनों आदमियों को द्वार की मुटाई अलग किये थी। आगन्तुक ने जोर से घंटी बजाई। उसने एकदम अनुभव किया कि भीतर कोई वस्तु हिली। उसने ध्यानपूर्वक थोड़ी देर कुछ सुना, तब उसने फिर घंटी बजाई और अधीरता की एकदम पैर पटककर उसने द्वार के हैंडिल को, यथाशक्ति हिलाना प्रारंभ किया। रासकालनीकोव भयभीत होकर, सॉकिट में कुंडे का कॉपना देखता रहा, और द्वार पर इस जोर के धक्के लग रहे थे कि वह अन्दाजा कर रहा था कि किसी क्षण भी यह भीतर की ओर खुल सकता था।

"क्या वे दोनों सो गए हैं या किसी ने उनका गला घोंट दिया है?" आगन्तुक बड़बड़ाया। "ऐ! एलिना इवानोवना बूढ़ी डायन! एलिज़ावेथ इवानोवना और अवर्णनीय सुन्दरता! — खोलो! आह! चुड़ैलें! क्या व सो सकती हैं?"

उसी समय कुछ पदचापों की ध्वनि जोकि फुर्तीले और हल्के मालूम पड़ते थे ज़ीनों पर गूंजे। यह कोई दूसरा मनुष्य था जो चौथी मंज़िल पर आरहा था। रासकाल्नीकोव पहले तो इस नवागन्तुक का आना नहीं जान सका।

"क्या यह सम्भव है कि घर पर कोई न हो! बाद में आने वाले ने ऊँची आवाज़ में पहिले आगन्तुक से पूछा जोकि अभी भी घंटी को जारी खींच रहा था।" नमस्कार कोच!"

'स्वर का अनुमान लगाने से तो यह बिल्कुल नवयुवक ज्ञात होता है," रासकोल्नीकाव ने एक दम विचार किया।

"शैतान जाने! मैंने ताले को लगभग तोड़ डाला है," कोच ने उत्तर दिया। "लेकिन तुम मुझे कैसे जानते हो?"

'यह भी क्या प्रश्न है! ' मैं परसों तुम्हारे साथ बिलियर्ड्स् खेला था।"

"ओह!"

' अच्छा तो ये लोग घर पर नहीं हैं? अजीब बात है! बल्कि मैं यों कहूँ कि ये तो बिल्कुल बेतुकी बात है। वह बुढ़िया कहाँ जा सकती है? मुझे उससे बात करनी थी।"

और मुझे भी बन्धु! मैं भी उससे बात करना चाहता था।"

' अच्छा, तो अब क्या किया जाय? मेरी समझ में तो हम जहाँ से आये हैं वहीं वापिस चले जायें। उससे मैं कुछ धन उधार लेना चाहता था!" उस नवयुवक ने कहा।

' वास्तव में फिर तो हमें वापिस जाना पड़ेगा; फिर उसने हमें वचन क्यों दिया? उस बुढ़िया ने तो स्वयं ही मुझसे इस समय आने को कहा था। और जहाँ मैं रहता हूँ वह बड़ी दूर है। वह कहाँ हो सकती है? यह मेरी समझ में नहीं आता। वह पूरा वर्ष व्यतीत हो जाता है और घर से नहीं निकलती।"

"आज तो हम चौकीदार से पूछें।"

"किसलिये?"

"यह जानने के लिये कि वह कहाँ गई है और कब तक लौटेगी।"

हूँ! पूछेंगे! परन्तु वह बाहर कभी भी नहीं जाती।' और जब फिर उसने द्वार का हैण्डिल खींचा।

"ठहरो!' एक दम नवयुवक चिल्लाया। ' देखो। – क्या तुमने ध्यान दिया कि द्वार किस प्रकार बाधा देता है जब तुम उसे खींचते हो?"

"तो फिर?"

"क्यों? इसका मतलब यह है कि ताला नहीं लगा है, बल्कि कुंडा लगा है! सुनो कैसी आवाज होती है!"

"अच्छा?"

' क्या तुम नहीं समझे! इससे स्पष्ट रूपसे विदित है कि उनमें से एक घर पर ही है। यदि दोनों बाहर गयी होतीं तो उन्होंने अपने पीछे ताला लगाया होता और अन्दर से कुंडा नहीं लगाया होता। देखो, किसी को मकान में कुंडा लगाने के लिये मकान के भीतर ही होना चाहिये। इस-

लिये इसका अर्थ यह है कि वे अन्दर ही हैं, पर किसी न किसी कारण वश वे दरवाजा नहीं खोल रही हैं।"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो!" अचम्भित कोच ने कहा। "अच्छा तो वे यहीं हैं, हैं न?" और फिर जोर से द्वार धकेला।

"ठहरो" उस नवयुवक ने कहा; "इस प्रकार मत धकेलो। कुछ न कुछ अजीब बात अवश्य है। तुमने घंटी बजाई। तुमने अपनी यथाशक्ति द्वार को धक्का भी दिया, और उन्होंने कोई भी उत्तर नहीं दिया; इसलिये, या तो दोनों बेहोश हो गयी हैं, या—"

"क्या?"

"यह सब कुछ हमने किया। अब चौकीदार को ऊपर बुलायें, ताकि वह मालूम कर सके कि बात क्या है।"

"बुरा विचार तो नहीं है!"

वे दोनों नीचे उतरे।

"ठहरो! तुम यहीं रुको! मैं चौकीदार को लाता हूँ।"

"यहाँ क्यों रुकूँ?"

"अरे! कोई नहीं जानता कि क्या हो—"

"अच्छी बात है।"

"देखो! मैं शायद निरीक्षण करने वाले मजिस्ट्रेट के पास भी जाऊँ। यह सब एक विचित्र प्रकार की बात लगती है यह स्पष्ट है।" यह कहता हुआ वह जल्दी से नीचे उतर गया।

धकेला रह जाने पर, कोच ने फिर घंटी बजाई, लेकिन इस समय धीरे से; तब पसोपेश में पड़े हुए, वह द्वार के हैण्डिल के साथ खिलवाड़ करने लगा, पहिले एक बार घुमाकर, फिर दूसरी ओर, ताकि वह यह निश्चय करले कि दरवाजे की कुंजी ही लगी है।

समय अधिक बीत गया, फिर भी कोई नहीं आया। कोच धैर्य खो रहा था। "शैतान समझे इन्हें!" वह बड़बड़ाया, और, प्रतीक्षा करके थकने पर उसने घंटी देखी और नवयुवक को ढूंढने के लिये जाने लगा।

धीरे धीरे उसके भारी जूते नीचे जाते हुये ध्वनि करते हुए, सुनाई नहीं पड़ने लगे।

"हे परमात्मा ! अब मुझे क्या करना है ?"

रासकोल्नीकोव ने कुंडा खोला और थोड़ा सा द्वार खोला। शांतिपूर्ण वातावरण है ऐसा निश्चय करके, वह बाहर आया, और भली प्रकार से द्वार बंद करके वह जीनों की ओर मुड़ा। वह नीचे काफी जीने उतर चुका था, जब कि एक दम नीचे की मंजिल पर जोरों का शोरगुल सुनाई दिया। वह किधर छिप सकेगा ? छिपना असम्भव है इसलिये वह शीघ्र ही ऊपर चढ़ा।

एक बार फिर शान्ति छागई। लेकिन मुश्किल से यह खटका समाप्त हो पाया था कि एक नया आरंभ हुआ। कई व्यक्ति जोर-जोर से बात चीत करते हुए ऊपर आरहे थे। वे तीन या चार थे। रासकोल्नीकोव ने उस नव युवक की बोली पहिचान ली। 'ये वे लोग हैं।' अब बचने की कोई आशा न देख कर वह उन लोगों से धीरता पूर्वक मिलने के लिये आगे बढ़ा। "होने दो जो कुछ होता है।' उसने अपने आप कहा, 'यदि वे मुझे रोकते हैं तब तो सब कुछ समाप्त ही है, और यदि वे मुझे जाने देंगे, तब भी सब कुछ समाप्त समझो, वे मुझे जीनों के नीचे जाते याद रखेंगे।" वे उसको पकड़ने ही वाले थे, केवल एक मंजिल का ही अन्तर था—जबकि एक दम उसने अनुभव किया कि वह बच गया ! दाहिनी ओर, कुछ कदम चलकर, एक खाली स्थान था जिसका कि द्वार खुला था, यह दूसरी मंजिल पर वही स्थान था जहाँ कि पेन्टर लोगों को काम करते उसने देखा था, किन्तु, यह अवसर की बात थी कि उन्होंने उसे अभी हाल ही खाली किया था। निसन्देह वे ही लोग थे जोकि अभी जोरोंकी ध्वनि करते हुए गये थे। वहाँ फर्श पर रंग के ताजे निशान थे, कारीगरों ने अपना सामान कमरे के बीच में ही छोड़ दिया था। एक क्षण भर के भीतर ही वह उस खाली स्थान में खिसक गया, और भली प्रकार से अपने आपको दिवाल के सहारे खड़ा करके छिपा लिया। अधिक देर नहीं होने पाई थी कि उसके पीछा करने वाले उस फर्श पर आगये; वे वहाँ नहीं रुके, वरन् चौथी मंजिल पर चले गये, आपस में जोरों से बात चीत करते हुए। कुछ दूर हो जाने तक उसने उनकी प्रतीक्षा की, फिर उसने,

पंजों के बल, और जितनी भी शीघ्रतापूर्वक हो सका, वह कमरा छोड़ दिया। सीढ़ियों पर कोई भी नहीं था! और न ही सड़क के द्वार पर ही कोई था। वह शीघ्रतापूर्वक बाहर निकला, और एक बार सड़क पर आने पर, वह बाईं ओर मुड़ा।

वह अच्छी तरह जानता था कि वे जो उसे तलाश कर रहे थे, उस वक्त उस बुढ़िया के घर में थे, और आश्चर्य चकित थे कि दरवाज़ा, जो कि कुछ वक्त पहिले बंद था, अब खुला था। "शायद उन्हें यह भी शक हो सकता है उसने अपने आपको उस खाली स्थान में छिपाया हो, जब कि वे ऊपरी में ऊपर जारहे थे।" पर इन विचारों के होते हुए भी उसने अपनी चाल नहीं बढ़ाई। "अच्छा मान लो कि मैं, किसी दूर की सड़क के किसी द्वार में कुछ देर के लिये छिप जाऊँ, और कुछ देर प्रतीक्षा कर लूँ? नहीं, वह नहीं होगा! मैं अपनी कुल्हाड़ी को कहीं फेंक दूँ।" और अन्त में वह एक पतली गली में पहुँचा, उसने एक मृतक की भाँति उसमें प्रवेश किया। वह वहाँ पर सुरक्षित था, और इतना वह भी समझ सका। ऐसे स्थान पर मुश्किल से ही उस पर शक किया जा सकेगा। पर इन सब घटनाओं ने उसे इतना क्षीण कर दिया था कि कठिनता से वह खड़ा रह सके। पसीने की बड़ी बड़ी बूँदें उसके चेहरे पर बहने लगीं, उसका गला भीग गया। "मैं समझता हूँ तुम पूरी तरह से मस्त हो," ज्योंही वह नहर के किनारे पर पहुँचा, किसी ने शराबी समझ कर कहा।

उसे नहीं ज्ञात कि वह क्या कर रहा था; ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ता जारहा था, त्यों त्यों उसके विचार और शक्ति क्षीण होते जारहे थे। वह फिर गली की ओर मुड़ा। यद्यपि एक कदम चलना भी उसके लिये दूभर था फिर भी वह घर पहुँचने के लिये लम्बे मार्ग से चल रहा था। उसकी दिमागी हालत, घर के द्वार पर पहुँचने पर भी, मुश्किल से सुधर पाई थी। सीढ़ियों पर जाने के पहले कुल्हाड़ी का विचार उसके दिमाग में नहीं आया था। अभी भी वह प्रश्न जो उसके सामने हल करने को था, महत्वपूर्ण था। वह यह था कि कुल्हाड़ी को जहाँ से उठाया गया था वहीं पर रखना, और ऐसा करने में किसी का भी ध्यान आकर्षित न हो। यदि उस समय वह अपनी अवस्था को भली प्रकार

से समझने योग्य होता तो उसने यह समझ लिया होता कि कुल्हाड़ी को वापिस रखने के बजाय, किसी और के मकान के बाग़े में फेंक देना अधिक सुरक्षित होगा।

लेकिन कोई दुर्घटना नहीं हुई। चौकीदार वहाँ नहीं था, और उसने कुल्हाड़ी को बेंच के नीचे, जहाँ से उठाया था ठीक वहीं रख दिया। तब वह ऊपर गया और किसी से भेंट हुए बिना ही अपने कमरे में पहुँच गया। घर पहुँच कर, वह जैसा का तैसा ही बिस्तर पर लेट गया।

दूसरा भाग

१

रास्कलनीकोव सवेरे तक बिस्तर पर बैठा रहा। अर्धनिद्रित अवस्था में कभी कभी वह उचका सा मालूम पड़ता है और तब उसने यह अनुमान लगाया कि रात व्यतीत हो चुकी है लेकिन उठने का विचार उसके मस्तिष्क में नहीं आया। शीघ्र ही प्रातःकाल होने लगा और प्रातः होते ही वह अचम्भित हो गया। वह नींद के बाद चुपचाप पड़ा रहा। "दो बज गये।" और वह उठा जैसे किसी ने उसे बिस्तर से खींच लिया हो। "क्या! दो बज गये?" वह बिस्तर के किनारे पर बैठा और हर चीज को विस्मृत करने लगा जोकि एक क्षण में ही उसे ध्यान में आ गई थी। पहिले तो उसने विचार किया कि वह पागल होने वाला था और उसके शरीर में एक विचित्र प्रकार की कंपकंपी आ गई पर इस ज्वर के बाद जो उसे रात हो आया था, जाड़ा लगने लगा। उसके होंठ किटकिटाने लगे और सारा वह कांपने लगा। वह दरवाजे के पास गया और टोह ली, घर में पूर्ण शान्ति थी। फिर आश्चर्यचकित होकर उसने कमरे में चारों ओर देखा। वह खिड़की तक कैसे आया। द्वार में कुण्डी नहीं लगाई, और ज्यों की त्यों ही अपने को बिस्तर पर डाल दिया, न केवल कपड़े ही उतारे बल्कि सिर पर टोपी थी? "यदि कोई भीतर आया तो वह क्या विचार करेगा? यही कि मैं वास्तव में छिपे हुये हूँ।"

वह खिड़की के पास गया—काफी दिन निकल चुका था—तथा अपने आप को ऊपर से नीचे तक देखा, यह देखने के लिये कि कहीं कपड़ों पर कोई निशान तो नहीं थे। पर वह इस प्रकार के निरीक्षण पर विश्वास नहीं कर सका, इसलिये अभी तक कांपते हुए, अपने कपड़े उतारे और फिर से निरीक्षण किया, हर तरफ बड़े ध्यान से देखते हुए। उसे सिवाय कुछ खून के धब्बे के, जो पैंट के नीचे की ओर थे तथा जो धूमिल सी पड़ गये थे और कुछ नहीं

लिया। उसने चाकू लिया और बटन फ़ीतों को काट डाला। एक दम उसे याद आया कि वह बटुआ तथा और चीज़ें जो कि उसने बुढ़िया की छाती से निकाली थीं अभी भी उसकी जेबों में थीं। उसने उन्हें बाहर निकालने तथा छिपाने के बारे में कभी सोचा भी नहीं था। क्या यह सम्भव था? एक दम में ही उसने टेबल पर सब निकाल कर ढेर लगा दिया। वहीं पर दीवाल पर एक कागज़ लटक रहा था। वह नीचे झुका और सब चीज़ों को उठाकर कागज़ के पीछे एक छेद में छिपा दिया। एक दम वह डर के मारे काँपने लगा। "हे परमात्मा!" वह बड़बड़ाया, "मुझे क्या हो गया है? क्या ये सब छिप गईं? क्या वस्तुएँ छिपाने का यही ढंग है?"

वास्तव में इस प्रकार के माल के लिये उसने कोई आशा नहीं की। उसने तो केवल उस बुढ़िया के धन को ही लेना ही सोचा था, इसलिये वह इन जवाहिरातों को छिपाने के स्थान में रखने के लिए तैयार नहीं था, "अब मुझे आनन्द मनाने का कोई कारण नहीं है" उसने विचार किया। उसने अपनी तमाम चेतना शक्ति खो दी। पाँच मिनट भी व्यतीत नहीं हुये थे कि वह जोश में उठा और अपने कपड़ों के ऊपर गिर पड़ा। "मैं फिर कैसे सो सकता हूँ जबकि अभी कुछ भी नहीं हुआ है। अभी मैंने कुछ भी नहीं किया। फन्दा अभी भी वहीं लगा है जहाँ कि मैंने उसे सिया था। मैं उसके बारे में तो भूल ही गया।" उसने उसे उधेड़ डाला और टुकड़े टुकड़े करके तकिये के नीचे रख दिया। वह इस भावना से बुरी तरह परेशान था, हर वस्तु, उसकी स्मरण शक्ति भी उसका साथ छोड़ रही थी।

"क्या यह दण्ड का आरम्भ कहा जा सकता है? वास्तव में, वास्तव में यही है।"

तब उसे याद आया कि बटुए पर भी निशान होंगे, और उसके जेब खून से भीगे होंगे, "मैं शीघ्र ही ठीक हो जाऊँगा।" उसने अस्तर फाड़ डाला इस समय प्रातःकालीन किरणें आकर उसके बाँये जूते पर चमकीं। उस पर स्पष्ट चिन्ह थे। "अब मुझे क्या करना चाहिये? जूते, अस्तर इन्हें कहाँ जाना चाहिये!" उसने उनको लपेटा और कमरे के बीच में सोचता हुआ खड़ा ही गया। "ओह! स्टोव! हाँ इन्हें जला दो" बिस्तर पर बैठते हुए

भरते हुए खड़ा था। अपने आपको सुरक्षित समझने की प्रसन्नता, भयङ्कर भय से बच निकलने का सन्तोष—इस विचार ने ही उसके दिमाग को भरपूर कर दिया। कुछ समय के लिए तो भविष्य की तमाम चिन्ताएँ, तथा परेशानियाँ उससे मीलों दूर थीं। लेकिन ठीक उसी समय पुलिस-आफिस में एक तूफान सा फट पड़ा। वह लेफ्टीनेंट अभी उस व्यवहार से जो उसके साथ किया गया था सम्हला भी नहीं था और उसका घायल सम्मान किसी बदले की खोज में था। इस कारण एक दम उसने उस सम्भ्रांत नारी को असभ्यता पूर्वक पुकारा जो कि उसके भीतर आने के समय से ही, वह उसको देख रही थी और मूर्खों की भाँति हँस रही थी।

“और तुम निकम्मी!” उसने खूब चिल्लाकर कहा, “कल रात तुम्हारे मकान पर क्या घटना घटी? ऐं! तुम फिर सारे मुहल्ले के लिये बला बनी हुई हो। शराबियों की चिल्लपों और दिन-प्रतिदिन के झगड़े! क्या तुम किसी सुधारक संस्था में जाना चाहती हो? देखो मैंने तुम से कहा था कम से कम मैंने तुमको एक दर्जन बार चेतावनी दी थी कि अब की बार मैं अपना पाँव तोड़ दूँगा। लेकिन तुम सुधार से परे हो!”

रासकोल्नीकोव के हाथ से कागज गिर पड़ा और आश्चर्यचकित होकर वह उस फैशन वाली नारी की ओर, जिसके साथ असभ्यतापूर्ण व्यवहार हुआ था, देखने लगा। पर बहुत शीघ्र ही वह समझ गया कि मामला क्या है और यह गोलमाल उसे प्रसन्न करने लगा। वह प्रसन्नतापूर्वक सब कुछ सुनने लगा और खूब हँसना भी चाहता था।

“मेरे घर में न तो चिल्लपों हुई थी और न झगड़ा, श्रीमान!” उसने अवसर मिलते ही शीघ्र कह डाला। “कुछ भी तो गोलमाल नहीं था। वह आदमी शराब पिये हुए आया और बोतलें माँगी और वह फिर पियानो को पैरों से बजाने लगा यह एक सभ्य परिवार में न्याय सङ्गत नहीं है, और फिर उसने कई तारियों को भी तोड़ डाला। मैंने उसे बताया कि व्यवहार करने का यह तरीका नहीं है, इस पर उसने एक बोतल लेकर अपने चारों ओर घुमानी आरम्भ कर दी। मैंने शाम चौकीदार को बुलाया, उसको

उसकी आँख पर प्रहार किया और मुझे पाँच थप्पड़ लगाई। कप्तान सा० एक भले घर में इस प्रकार व्यवहार करना कितनी बुरी बात है।"

"ठीक! ठीक, बस करो मैं तुमसे कह चुका हूँ। मैं फिर कह रहा हूँ। जहाँ तक तुम्हारा सम्बन्ध है यह मेरी अन्तिम चेतावनी है" लेफ्टीनेंट ने कहा "अब भविष्य में यदि तुम्हारे घर पर कुछ भी गोलमाल हुआ तो मैं तुम्हें पिंजरे में बन्द कर दूँगा जैसा कि सभ्य समाज में कहा जाता है। तुम सुनती हो? अब तुम जा सकती हो, लेकिन मैं अपनी निगरानी तुम पर रखूँगा इसलिये सावधान!"

लुइसा इवानोवना एक दम प्रसन्न होकर चारों ओर देखने लगी, लेकिन ज्यों ही वह द्वार की ओर पीठ किये हुए आदरपूर्वक वापिस हुई कि वह एक सुन्दर अफसर से टकरा गई। यह निकोडीमस ढोमिच था जोकि हल्के का अधिकारी था। शीघ्र ही लुइसा इवानोवना भूमि पर कुछ झुकी और तब प्रसन्नतापूर्वक आफिस के बाहर हो गई।

"यहाँ क्या शोर मचा हुआ है!" उसने सरलता से, इलिया पीट्रोविच से पूछा "हम नीचे सब कुछ सुन सकते हैं।"

"यहाँ एक श्रीमान हैं, एक विद्यार्थी, नहीं—मतलब यह कि भूतकालीन-विद्यार्थी" उसने कहा 'वह अपने कर्ज अदा नहीं करता, और अपना कमरा खाली करने से इन्कार करता है, बराबर उसके खिलाफ शिकायतें हैं और तब भी उसने आपत्ति की क्योंकि मैंने उसके सामने एक सिगरेट जला ली। जरा उसकी ओर देखो आपत्ति करने के लिये वह कितना उपयुक्त है!"

"गरीबी कोई अपराध नहीं है" निकोडीमस ढोमिच ने कहा रास्कोल्नीकोव की ओर घूम कर जिसने कि विनम्र भाषा में एक दम कहना आरंभ किया।

"क्षमा करें श्रीमान! वह अधिकारी की ओर मुड़ा ' मैं क्षमा चाहता हूँ यदि मुझसे त्रुटि हो गई हो तो मैं एक गरीब विद्यार्थी हूँ बीमार हूँ और गरीबी का सताया हूँ। काम से कम मैं पहिले तो एक विद्यार्थी था ही, पर अब मैं उसे चला नहीं सकता। मेरे पास शीघ्र ही पैसा आ जायगा —

—के राज्य में मेरी माँ और एक बहिन है। वे मुझे धन भेजने वाले हैं और तब मैं अदा कर दूँगा। मेरी मकान मालकिन अच्छी महिला है, लेकिन वह नाराज हो गई है क्योंकि मेरा पढ़ाने का काम छूट गया और चार महीनों से मैं उसे कुछ भी नहीं दे पाया हूँ—और अब तो वह मुझे खाना आदि भी नहीं भेजती। मुझे नहीं मालूम कि बिल किस सम्बन्ध में है फिर भी क्या मैं उन्हें अभी अदा कर सकता हूँ? आप स्वयं विचार सकते हैं।'

"इससे हमें कोई मतलब नहीं" क्लर्क ने कहा।

'तुम्हें एक घोषणा पत्र लिखना है और वायदा करना है।'

"इतने कठोर मत बनो" हँसते हुए निकोदिमस फोमिच ने कहा।

"कृपा करके लिखो" क्लर्क ने रासकोल्नीकोव से कहा।

"क्या लिखूँ?" उसने असभ्यतापूर्वक पूछा।

"जो मैं बोलूँ।"

क्लर्क पास ही खड़ा हुआ और साधारण तौर पर एक घोषणा लिखवाई कि वह अदा करने के अयोग्य था और वह अपना माल बाहर नहीं निकलवायेगा, इत्यादि इत्यादि।

"तुम लिख नहीं सकते, तुम्हारा कलम उँगलियों में से गिर रहा है" क्लर्क ने कहा और उसकी ओर देखा। "क्या तुम बीमार हो!"

"हाँ मेरा सिर घिरा रहा है। बोलो"

'बस ठीक है। अब हस्ताक्षर करो।"

रासकोल्नीकोव ने कलम रख दिया और ऐसा मालूम पड़ा कि वह उठने को है लेकिन बजाय इसके उसने अपनी कोहनी टेबल पर टिका दी और हाथों से सिर थाम लिया। उसके दिमाग में एक नया विचार आया एक दम उठे और सीधा फोमिच के पास जाय और जो कुछ हुआ था सब कह दे और तब उसे अपने कमरे में ले जाय और वे तमाम वस्तुएँ जो दीवाल में कागज के पीछे छिपी थीं, बता दे। उसकी यह इच्छा इतनी प्रबल हुई कि वह उसे पूरा करने के लिये टेबल से उठा। इसी समय फोमिच इलिया पेत्रोविच के साथ किसी बात पर गर्मागरम बहस कर रहा था जिससे उसका
...र्षित हुआ। उसने सुना।

'यह नहीं हो सकता, वे दोनों छोड़ दिये जायेंगे। प्रथम तो वे सब विरोधाभासी हैं। सोचो! वे चौकीदार को क्यों बुलाते यदि यह उनका ही काम था अपने आपको बदनाम करने के लिये। बिल्कुल नहीं। इसके अलावा उस चौकीदार ने उस विद्यार्थी पेस्त्र्याकोव को ज्यादासी द्वार पर नहीं देखा था। ज्यों ही वह भीतर आया और वह वहाँ अपने साथ आये हुये दोनों मित्रों के साथ कुछ देर खड़ा भी रहा था और कोच क्या वह चाँदी के सामान बनाने वाले की दुकान पर उस बुढ़िया के पास पहुँचने के लगभग आधे घण्टे पहले तक नहीं था? अब विचार करो।"

"लेकिन देखो, क्या परस्पर विरोधी विचार उठते हैं। वे कहते हैं कि कुण्डा खटखटाया और द्वार बन्द पाया फिर तीन मिनट बाद जब कि वे चौकीदार के पास गये वह खुला था।"

"यह सत्य है। खूनी अन्दर था और उसने द्वार भीतर से बन्द कर लिया था और वास्तव में वह पकड़ लिया जाता यदि कोच मूर्खतावश चौकीदार के पास न चला गया होता। इस बीच में वह निःसन्देह निकल भागा। कोच ने यह समझाया कि यदि वह खड़ा रहा होता वह आदमी उस पर कूद कर उसे मार डालता।"

"क्या खूनी को किसी ने नहीं देखा?"

"वे किस प्रकार देख पाते" बालक ने जो ध्यानपूर्वक सुन रहा था कहा।

"बात बिल्कुल स्पष्ट है बिल्कुल!" जोसिम ने निश्चय पूर्वक कहा।

"बिल्कुल नहीं बिल्कुल नहीं!" उत्तर में पर्फिरी पीट्रोविच चिल्लाया।

रासकोल्नीकोव ने अपनी टोपी उठाई और द्वार की ओर बढ़ा लेकिन पहुँचा नहीं। जब वह होश में आया तो अपने आपको कुर्सी पर बैठे पाया उसके बाँये ओर एक आदमी खड़ा है और पीले गिलास में पीला पानी लिये है। जोसिम उसके सामने खड़ा है और निगाह गड़ा कर उसे देख रहा है। रासकोल्नीकोव उठा।

"यह क्या है? क्या तुम बीमार हो?" अफसर ने तेज़ी से पूछा।

"वह कलम को हस्ताक्षर करने के लिये मुश्किल से पकड़ सका।" क्लर्क ने बताया।

"क्या तुम बहुत दिनों से बीमार हो?" पीट्रोविच ने प्रश्न किया।

"कल से" रास्कोल्नीकोव बड़बड़ाया।

"कल तुम कहीं बाहर गये?"

"हाँ गया।"

"बीमार ही?"

"बीमार ही!"

"किस समय?"

"सन्ध्या समय आठ बजे।"

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप कहाँ गये?"

"सड़कों पर।"

" रास्कोल्नीकोव ने, लड़खड़ाती जुबान से, तेजी से कहा और उसका चेहरा कफ़न की तरह पीला पड़ गया।

"वह कठिनाई से अपने पैरों पर खड़ा रह सकता है। क्या और कुछ पूछना चाहते हो?" ज़ोमिव ने कहा।

"कुछ नहीं" पीट्रोविच ने उत्तर दिया।

ज़ोमिव वास्तव में कुछ कहना चाहता था, लेकिन क्लर्क की ओर मुड़कर, जिसने कि उसकी ओर भेद भरी दृष्टि से देखा, वह चुप हो गया। सब एक दम चुप होगये। यह विचित्र बात थी।

रास्कोल्नीकोव बाहर हो गया। ज्यों ही वह जीने से नीचे उतरा कि उसने सुना कि बहस फिर आरम्भ होगई है, इन सबसे परे ज़ोमिव की प्रश्न वाचक आवाज़। सड़क पर आजाने पर वह होश में आया।

"खोज! खोज!! वे खोज करने वाले हैं!" वह चिल्लाया। "वे बदमाश मुझ पर शक करते हैं!" पुराना भय फिर व्याप्त होगया—सिर से पैर तक।

२

यह उसका कमरा था। देखने से तो ऐसा ज्ञात होता था कि, सब ठीक ठाक है, किसीने उसे अस्तव्यस्त नहीं किया है—नास्तासिया ने भी। परन्तु, परमात्मा! वहाँ पर ये सब वस्तुएँ भी वह उन्हें वहाँ पर कैसे छोड़ गया था। वह कोने की ओर दौड़ा, कागज के भीतर अपने हाथ डाले, चीजें बाहर निकालीं, और उन्हें अपनी जेब के हवाले किया। तमाम समय उसने द्वार खुला ही रख छोड़ा था। पीछा किये जाने के डर से वह शीघ्रतापूर्वक बाहर निकला। शायद कुछ ही मिनटों में उसका पीछा करने की आज्ञा जारी कर दी जायगी, इसलिये उसे चोरी का सारा सामान छिपाना चाहिये। लेकिन उसे जाना कहाँ चाहिये!

यह तो बहुत पहले ही निश्चित कर लिया गया था। नहर में सब कुछ फेंक देना और सारे मामले का अन्त हो जायगा! लेकिन यह इतना आसान नहीं था। वह केथराइन नहर की ओर मुड़ा और लगभग आधे घंटे तक वहाँ इधर उधर करता रहा। तब, क्या वे ठीक से डूब जायेंगे? क्या वे तैरेंगी नहीं? नहीं यह ठीक नहीं। वह नीवा की ओर जायगा; वहाँ आदमी कम होंगे और स्थान अधिक, और वहां पर आसान भी होगा। उसने विचार किया कि पूरे आधे घंटे से वह घूम रहा है और वह भी भयानक स्थानों पर। उसे जल्दी करनी चाहिये। वह नदी की ओर गया। नीवा में क्यों? पानी में ही क्यों? जंगल में कहीं एकान्त स्थान में, या झाड़ियों के नीचे। गड्ढा खोद कर गाड़ दो। यह विचार सबसे उत्तम लगा।

यह विचार भी पूरा होने वाला नहीं था और इसके स्थान पर दूसरा आया। ज्यों ही वह व—प्रोस्पेक्ट की ओर से गुजरा उसने बाँयी ओर एक अहाते के भाग को देखा जो कि ऊँची दीवारों से घिरा था। यही वह स्थान है जिसके बारे में उसने विचार किया था, और चारों ओर देखने के बाद, वह अहाते में गया। द्वार के पीछे उसने एक बिना काम का बड़ा पत्थर देखा जो के लगभग पचास पौंड का था। कोई भी नहीं देख सकता था कि वह कहाँ खड़ा है। वह पत्थर पर झुका। काफी परिश्रम के बाद उसने उसे उठाया।

उसके नीचे उसे एक गहरी जगह मिली, उसने सब डिब्बे उसमें डाल दिये और पाउ में बटुआ भी। पत्थर अधिक ऊँचा नहीं लग रहा था, उसको हटाने के कुछ चिन्ह दिखाते थे। इसलिये अपने पैरों से पत्थर के किनारों की मिट्टी को दबाया और तब वह चल पड़ा।

सड़क पर आते ही वह प्रसन्नता से हँस पड़ा। सब चिन्ह गायब हो चुके, और वहाँ देखने की किसे चिन्ता पड़ी होगी। और यदि वे मिल भी गये तो उस पर कौन सन्देह करेगा? सब चिन्ह गायब हो चुके और वह फिर हँसा। वह एक दम नया और आवश्यक प्रश्न करने के लिये रुका। "क्या यह कार्य मैंने किसी निश्चित ध्येय की पूर्ति के लिये किया, या केवल मूर्खता-वश? क्या मैंने बटुए में यह भी देखा कि उसमें कितना है और मुझे क्या मिलता है? क्या ये कार्य मेरे डरपोकपन की प्रतिक्रिया है? क्या मैंने उन्हें पानी में फेंक देना नहीं चाहा और यह भी उन पर बिना एक दृष्टि डाले हुए? यह सब क्या था? मैं बुरी तरह से बीमार हूँ और यही कारण है कि इस प्रकार के विचार मेरे मन में आते हैं।"

वह चलता रहा अपना दिमाग इधर उधर भटकाता हुआ परन्तु यह निश्चित नहीं कर पाया कि क्या करना है। उस पर विरक्ति की भावना पहले से भी तीव्र होकर छाई—चिढ़ी तथा द्वेषपूर्ण नफरत हरएक के प्रति, और उसने निश्चय किया जो कोई भी उससे बोलेगा उसे डाल जायगा। जब वह छोटी नीवा के किनारे पर आया तो रुक गया। "वह यहीं तो रहता है उस घर में! कैसी अजीब बात है उस दिन मैंने कहा था कि मैं उस कार्य के बाद राजुमिखिन के पास जाऊँगा और आज मैं यहाँ से आ रहा हूँ।" वह पाँचवी मन्जिल पर गया। राजुमिखिन घर पर ही था अपने छोटे से कमरे में, लिखने में मस्त, और वह उठा और उसने द्वार खोला। अन्तिम बार चार माह पूर्व उन दोनों ने एक दूसरे को देखा था। राजुमिखिन फटे से ड्रेसिंग गाउन में आया नङ्गे पैरों में पुराने स्लीपर पहने, बाल बिखरे दाढ़ी बढ़ी हुई। वह अचम्भित था।

"क्या यह तुम हो?" वह चिल्लाया ज्यों ही उसने अपने पुराने कामरेड को ऊपर से नीचे तक देखा —तब उसने एक सीटी सी बजाई।

वह सन्ध्या समय घर पहुँचा—शायद आठ बजे—कैसे और किस मार्ग से उसे बिल्कुल याद नहीं—लेकिन शीघ्रतापूर्वक उसने कपड़े बदले और अपने बिस्तर पर काँपते घोड़े के समान पड़ गया और ऊपर से ओवर-कोट ओढ़ लिया और शीघ्र ही गहरी नींद में सो गया। बड़े प्रातः ही एक घोर गुल द्वारा उसकी आँख खुली। ईश्वर यह चीख पुकार क्या है! डर में वह उठा और बिस्तर पर बैठ गया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपनी मकान मालकिन की आवाज सुनी। वह चिल्ला रही है। साथ साथ वह किसी से अपने को पीटने को मना भी कर रही है। उसको मारने वाला का बहुत गुस्से में है जोर-जोर से चिल्ला भी रहा है। रासकोल्नीकोव पत्ते की भाँति काँपने लगा। उसने आवाज पहिचानी। वह इलिया पीत्रोविच की थी। 'वह यहाँ मकान मालकिन को पीट रहा है लाते मार रहा है? क्यों, किस लिये! असम्भव! यह स्वप्न होगा।" यह वास्तविकता थी। "परमात्मा! क्या ऐसा हो सकता है! वह यहाँ आ रहा है!" उसने अपना हाथ कुण्डे की ओर बढ़ाया फिर रह गया। वह फिर गिर पड़ा। अन्त में लगभग दस मिनट पश्चात् आवाजें कम हुईं।

इलिया पीत्रोविच की आवाज से घबराकर रासकोल्नीकोव अपने बिस्तर पर गिर पड़ा वह अपनी आँखें बन्द नहीं कर सका। एक दम द्वार खुला और नास्तासिया भीतर आई, हाथों में दिया, सूप, रोटी, नमक आदि लेकर। उसने उसकी ओर एक निगाह डाली और यह देखकर कि वह सो नहीं रहा है, दिये को टेबल पर रख कर खाने का सामान रखने लगी।

"कल से उसने कुछ नहीं खाया है और बुखार की हालत में वह सारे शहर में चीखता फिर रहा है।"

"नास्तासिया! मकान मालकिन को किसने पीटा!"

उसने बड़े गौर से उसकी ओर देखा और प्रश्न दुहराया।

"हाँ लगभग आधा घण्टा हुआ इलिया पीत्रोविच जीने पर था। उसने उसे क्यों मारा? यह सब कैसे हुआ!" नास्तासिया ने कहा कुछ भी नहीं पर वह उसकी ओर देखती रही इस प्रकार से देखते रहने पर वह नाराज

हो गया। "नास्तासिया ! तुम चुप क्यों हो ! " उसने क्रोध स्वर में चिल्ला कर कहा।

"खून के कारण" अन्त में उसने कहा चुपचाप जैसे अपने आप से कहा हो।

"खून ! कैसा खून ?" दीवाल की ओर करवट बदलते हुए वह बड़बड़ाया।

नास्तासिया ने उसे फिर घूरा। "उसे किसी ने नहीं मारा" अन्त में उसने कहा।

वह उसकी ओर घूमा। "मैंने उन्हें सुना, मैं कहता हूँ मैंने सब कुछ सुना। मैं सो नहीं रहा था। मैं बैठा था और सारे समय सुनता रहा। वह मुखिया पोत्रोविच था और सारे मकान वालों ने भी आकर सुना।"

"कुछ भी नहीं हुआ। यह केवल तुम्हारे रक्त के कारण है वह जम गया है और इस कारण तुम स्वप्न देखते हो। कुछ खाने को खाओ।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और नास्तासिया उसके पास खड़ी होकर फिर उसे देखने लगी। 'नास्तासिया मुझे कुछ पीने को दो।" वह नीचे गई और कुछ पानी लेकर लौटी। इसके बाद उसे कुछ भी याद नहीं रहा।

३

चलती हुई बीमारी के काल में, रासकोल्नीकोव का मस्तिष्क बिल्कुल शून्य नहीं था। उसे उसके बारे में काफी याद था। उसने ऐसा अनुभव किया कि वह कई आदमियों से चारों ओर से घिरा हुआ था जिन्हें वह पकड़ा हो उठा था तथा जो कि उसके बारे में अधिकाधिक पहल कर चुके थे और डरे थे। तब फिर, कभी उसके कमरे में कोई भी नहीं होता, सब भाग जाते थे-उससे डरकर, और कभी-कभी उसे देखने के लिये द्वार में से झांकते थे। तब उन्होंने उसे डराया, चिढ़ाया, और कभी-कभी उस पर हँसे। कभी कभी उसे ऐसा लगा कि उसे वहाँ पड़े एक माह हो गया था, और दूसरे पल उसे लगता कि एक ही दिन हुआ था। अन्त में वह होश में आया।

यह एक मास को दस बजे हुआ—जब कि मौसम स्वच्छ था। उसके बिस्तरे के पास नास्तासिया तथा एक आदमी जिसे वह नहीं जानता था, खड़े हुए। वह कारीगर-सा लगता था। आधे खुले द्वार में से मकान मालकिन झाँक रही थी। रासकोल्नीकोव कुछ उठा।

" नास्तासिया! यह कौन है!" उसने पूछा—उस आदमी की ओर इशारा करते हुए।

" देखो! यह जग गया है," नास्तासिया ने कहा।

" यह जग गया है! " उस आदमी की प्रतिध्वनि थी। यह विश्वास-पूर्वक देखकर कि रासकोल्नीकोव होश में आ गया था मकान मालकिन ने एक दम द्वार बन्द कर दिया और चली गई। वह हमेशा की डरपोक स्वभाव की थी और बातचीत से डरती थी। वह लगभग चालीस वर्ष की थी।

" तुम कौन हो! " कारीगर की ओर देखते हुए रासकोल्नीकोव ने पूछा। इसी समय द्वार खुला, और राजुमिखिन भीतर आया।

" यह भी क्या केबिन है! मेरा सिर हर बार टकराता है। ओह! भाता! तुम जग गये! मैंने पश्चिम्का से सुना।"

" यह अभी ही उठे हैं," नास्तासिया ने कहा।

" यह अभी ही उठे हैं, " मुस्कराते हुए, कारीगर ने दुहराया।

और तुम कौन हो सकते हो? " राजुमिखिन ने अन्तिम वाक्य की ओर मुड़कर पूछा।

"मैं शीपोलोव व्यापारी के पास से कुछ काम से आया हूँ, श्रीमान्!"

" कृपाकर के बैठो, मित्र! तुमने उठकर अच्छा किया, " उसने रासकोल्नीकोव की ओर मुड़ते हुए कहा। " तुमने चार दिन से कुछ नहीं खाया। यह सत्य है कि केवल कुछ चाय, चमचे से उन्होंने तुम्हें दी। मैं जोसीमोव को तुम्हारे पास दो बार लाया। तुम जोसीमोव को जानते हो! उसने तुम्हारा निरीक्षण ध्यानपूर्वक किया और कहा कि तुम्हारे मस्तिष्क में कई बेकार की बातें समा गई हैं। यह बुरे खुराक का प्रभाव है। तुम शीघ्र ही ठीक हो जाओगे। हमारा धर्म आपको रोकने का नहीं है," उसने कारीगर

से कहा, " कृपा कर समझाइये कि आपका कार्य क्या है ! रोदिया ! यहाँ पहिले भी कोई इनके दफ्तर से, इनके बुलाता आ चुका है । '

" हाँ श्रीमान् ! वह सेमेनोविच था, हमारे दफ्तर से, जो परसों आया था । हुवानोविच वक् चिन की आज्ञानुसार मुझे आपको साइमन सिमोनोविच से तीस रूबल देने हैं, जो आपकी माँ ने, पहले की भाँति, आप को भेजे हैं । मेरा अनुमान है कि आपने इसके बारे में सुना होगा ? "

' हाँ, मुझे याद है वक् चिन, " रासकोल्नीकोव ने उदासीनता-पूर्वक कहा ।

" क्या ! तुम वक् चिन को जानते हो ! " राजुमिखिन चिल्लाया, " तुम्हारा यहाँ क्या सम्बन्ध ? "

' निश्चय ! श्रीमान् ! "

" मुझे दो । अब रोदिया ! उठो और हस्ताक्षर करो, कलम पकड़ो । धन मानवता के लिये मधु है । "

" मुझे नहीं चाहिये !" कलम एक ओर करते हुए, रासकोल्नीकोव ने कहा ।

" नहीं चाहिये ! अरे आओ मित्र ! मैं तुम्हारी गवाही करूँगा । बड़ा सरल है । देखो, मैं तुम्हारा हाथ चलाता हूँ । बस ठीक । यह तुम्हारी रसीद । "

' धन्यवाद श्रीमान् ! "

" धन्यवाद ! और अब मेरे यार ! तुम्हें कुछ खाने को चाहिये । क्या होगा ? कुछ सूप ? "

" मेरे पास कल से कुछ पड़ा है, " नास्तासिया ने, जो सारे समय पास ही खड़ी थी कहा ।

" कुछ आलू और चावल के साथ, क्यों ? "

" हाँ, मैं कुछ लेती आऊँगी । "

रासकोल्नीकोव ने उन लोगों को बड़े आश्चर्य से तथा भय से देखा । उसने चुप रहने का तथा घटनाओं की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया । " मैं अब सन्निपात में नहीं हूँ, यह सत्य है । "

कुछ पल में नास्तासिया कुछ सूप लेकर लौटी और कहा कि शीघ्र ही चाय भी आती है। वह फिर कुछ नमक, काली मिर्च, दो चार चमचे व प्लेटें आदि लाई।

रासकोल्नीकोव ने बेवकूफों की भाँति देखना जारी रखा, और कुछ प्रयत्न करने पर रजुमिखिन उसके पास ही बिस्तरे पर बैठ गया। उसके सिर को अपने बाँये हाथ से सम्भाल कर खिलाना प्रारंभ किया। फिर उसने कहा कि जब तक जोसीमोव न आजाय उसे प्रतीक्षा करनी चाहिये।

" मैंने पिछले ही तीन दिनों से, रोदिया! यहीं खाना खाया। और तुम्हारी मकान-मालकिन ने मुझे खाना दिया। मैंने कोई आपत्ति नहीं की। यह नास्तासिया चाय ले आई।"

रजुमिखिन ने एक कप में चाय डाली, फिर दूसरे में, और फिर बिस्तर पर बैठ गया। लगभग एक दर्जन चम्मच पीकर रासकोल्नीकोव ने चम्मच को धक्का दे दिया और तकिये पर पड़ गया।

" अब रोदिया! अब मुझे बताना है कि मैंने तुमको कैसे ढूंढ निकाला। मैंने तुम्हारे पुराने स्थान पर पता लगाने का प्रयत्न किया, और असफल होने पर मैं और भी क्रोधित होगया। इसलिये मैं पता-दफ्तर गया और कुछ ही मिनिटों में उन्होंने तुम्हें ढूँढ निकाला। तुम यहाँ छिपे हुए थे।

" मैं "

" हाँ, यद्यपि वे मुझे यहाँ नहीं पायेंगे। ज्योंही मैं यहाँ पहुँचा कि मुझे सब बताया गया। मैं सब जानता हूँ, सब, मेरे दोस्त और मैंने, तोमिच, पुलिया पीट्रोविच, चौकीदार, और मि० जेमीटोव, पुलिस दफ्तर के क्लर्क से पहिचान करली है, और अन्त में तुम्हारा पाशेन्का वाला मामला भी जाना। मैं तुम्हें अधिक सताना नहीं चाहता। मेरी अंतिम विजय पाशेन्का स्वयं ही है, नास्तासिया से पूछो—"

" तुमने तो उसे बना दिया, " कुछ धमकाते हुए हँसकर नौकरानी बड़बड़ाई।

रासकोल्नीकोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने रजुमिखिन की ओर देखा, और बिना एक भी शब्द कहे, दीवार की ओर मुँह फेर लिया।

मेरे जूते ? वे सब चले गये। आह ! छुपा दिये गये। इसका मुझे विश्वास है। वह मेरा चोर रहा, मन भी, धन्य है परमात्मा ! मैं इसे लूँगा और दूसरे स्थान पर चला जाऊँगा जहाँ वे मुझे पा नहीं सकेंगे। लेकिन पता-दफ्तर, वे मुझे ढूँढ निकालेंगे। अच्छा हो दूर भागा जाय—अमेरिका। वे विचार करते हैं कि मैं बीमार हूँ और यह नहीं समझते कि मैं दूर भाग सकता हूँ। मुझे उनकी आँखों से भास हुआ, कि वे सब जानते हैं। यदि मैं केवल जीने के नीचे उतर सकता। शायद उन्होंने निगरानी के लिये पुलिस रखी हो। यह क्या है ? चाय ? बीयर की बोतल भी, ये मुझे ताजा बना देंगे।"

उसने बोतल उठाई, करीब एक गिलास के थी, वह उसे इस प्रकार पी गया जैसे गले में आग हो। अधिक देर न होने पाई कि उसने असर किया और तमाम शरीर में एक मस्ती का असर आ गया। वह बिस्तर पर वापिस आया अपने ऊपर कपड़े डाले, और हल्की और अच्छी नींद में सो गया। बाद में वह उठा, उसे ऐसा मालूम पड़ा कि कमरे में कोई है, आँख खुलने पर रज़ुमिखिन दिखाई पड़ा, जो द्वार पर खड़ा यह विचार कर रहा था कि भीतर आये या नहीं।

"ओह ! तुम जगे हो ! नास्तासिया ! बण्डल लाओ।"

"क्या बजा है !" चारों ओर देखते हुए रास्कोल्नीकोव ने पूछा।

"छः बजा है। तुम छः घंटे सोये हो।"

"हे भगवान ! मैं इतनी देर किस प्रकार सो सका ?"

"क्या बात है ? कोई जल्दी नहीं है। हमारे पास समय बहुत है। मैं यहाँ पर कई बार हो चुका हूँ पर तुम गहरी नींद में थे, दो बार जोसीमोव के यहाँ भी गया पर वह घर नहीं है। मैं आज दिन भर अपना सामान आदि उठाता रहा हूँ—चाचा और सब। मेरे साथ अब चाचा भी है। बण्डल मुझे दो नास्तासिया। अब मेरे दोस्त बताओ कि तुम कैसे हो ?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैं बीमार नहीं हूँ। क्या तुम काफी देर तक यहाँ रहे ?"

"मैंने तुम से कहा कि कुछ ही देर पहिले मैं यहाँ था।"

"हाँ, पर, उसके पहिले ।"

"पहिले कैसे ?"

"तुम पहिले-पहल यहाँ कब आये ?"

"क्यों, मैंने तुम्हें सब कुछ बताया न। क्या तुम भूल गये ?" रासकोल्नीकोव विचार करने लगा लेकिन सब गड़बड़ घोटाला। "ओह! तुम परिभ्रांत हो, लेकिन इस नींद से तुम्हें लाभ हुआ, और अब तुम पहिले से ठीक हो।" उसने नास्तासिया द्वारा लाये बण्डल की ओर देखा। "मैं भी इसी मामले में बड़ा व्यस्त रहा हूँ। सुनो, हमें तुम्हें आदमी बनाना चाहिये। तुम इसे देखते हो ?" हाथ में साधारण रूप से साफ लेकिन साथ ही साथ सस्ती और साधारण टोपी लेते हुए, "ज़रा हम इसे देखें।"

'अभी नहीं,' दूर करते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा।

'देखो तो, कृपा करके देर हो रही है और यदि मैं यह न देख लूँ कि यह कैसी रही तब तक मैं सो नहीं सकूँगा क्योंकि मैं इन्हें पसन्दगी के वायदे पर लाया हूँ। क्या तुम सोचते हो कि मैं इसका मूल्य चुका आया हूँ ?' रासकोल्नीकोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। राजुमिखिन नास्तासिया की ओर घूमा। "तुम्हारा क्या विचार है ?"

'मेरे ख्याल से बीस कोपेक।'

"बीस कोपेक! मूर्ख!' वह चिल्लाया। और राजुमिखिन ने, उसके सामने एक समर का पायजामा, जो अच्छी हालत में था—बिना दाग के, तथा एक वास्कट जो कुछ ढीली थी फैलाई।" कुछ ढीली है पर मेरे विचार से कोई विशेष फर्क नहीं पड़ेगा बल्कि आरामदेह ही होगी। अच्छा तो अब कीमत! तुम्हारा क्या विचार है ? सवा दो रूबल और पुराने कपड़े। यदि इस वर्ष फट जाते हैं तो वे तुम्हें अगले वर्ष नये देंगे। हम अब जूते देखते हैं। इसलिये दूतावास के सेक्रेटरी को अब इन की आवश्यकता थी, उसने बेच डाले। कीमत डेढ़ रूबल। भाग्यशाली था न मैं ?"

'लेकिन शायद वे फिट नहीं होंगे।' नास्तासिया ने कहा।

"फिट नहीं होंगे ?' राजुमिखिन ने कहा, "मुझे इसका ध्यान है।

मुझे ठीक नापका मिला। और यह तीन कमीज़ें। जहाँ तक मोजे आदि का सवाल है तुम स्वयं खरीद कर सकते हो।

"इन सब के लिये पैसे कहाँ से आये?" उसने पूछा।

"पैसे! तुम्हारे ही तो! क्या तुम्हारी माँ ने नहीं भेजे—तुम्हें याद नहीं?

"अब मुझे याद आया।" लम्बी खामोशी के बाद रास्कोलनिकोव ने कहा।

इसी समय द्वार खुला और एक कठिन लम्बा सा आदमी परिचित की भाँति भीतर आया, जैसे कि वह इस बीमार आदमी को देखने का आदी हो। "जोसीमोव!" प्रसन्नतापूर्वक राजुमिखिन चिल्लाया।

४

जोसीमोव लगभग सत्ताईस वर्ष का नवयुवक था। उसका व्यवहार शानदार था, लेकिन इसके साथ ही साथ अध्ययन पूर्ण रूप से सरल।

"मैं तुम्हारे यहाँ दो बार हो आया हूँ, मित्र," राजुमिखिन चिल्लाया। "तुम देखते हो न कि वह जाग गया है।"

"हाँ, मैं, देखता हूँ। अब तुम कैसे हो?" बीमार की ओर मुड़ कर तथा उसके बिस्तर पर उसके पैरों को सिकुड़ा कर बैठते हुए।

"वह अपने आपे में नहीं है। और जब हम उसके कपड़े बदलना चाहते थे तो चिल्ला पड़ा।" राजुमिखिन ने कहा।

"यदि उसकी इच्छा नहीं थी तो तुम बाद में बदल सकते थे। नाड़ी धीमी है। तुम्हारा सिर अब भी दर्द करता है? करता है न?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ, बिल्कुल," तेजी के साथ, बिस्तर से कुछ उठते हुए और प्रश्नकर्ता की ओर घूरते हुए, उसने कहा। वह प्रयत्न शायद उसके लिये बहुत था—वह फिर वैसा का वैसा गिर पड़ा, अपना मुँह दीवाल की ओर किये।

"बहुत अच्छा, वह ठीक हो रहा है। उसने कुछ खाया?" उससे कहा गया तथा पूछा गया कि उसे क्या देना चाहिये।

"ओह! कुछ भी—सूप, चाय। हाँ, ककड़ी, मुरब्बा (कुकुर मुत्ता) और गाय का माँस देने की आवश्यकता नहीं है। तथा पहिले ही की भाँति और अब मैं इन्हें कब देखूँगा। आज बड़ी काफी है, और—"

"कल शाम को मैं इसे घुमाने ले जाऊँगा।"

"मैं नहीं समझता हूँ कि कल तक वह इस योग्य होगा कि हिले भी। फिर भी अपन देखेंगे।'

"यह भी क्या है? मैं अपने नये मकान में कुछ चहल पहल करना चाहता था—ठीक कदम ही पर हम इसे वहाँ ले जा सकेंगे। यह हम दोनों के बीच वहाँ, बिस्तर पर लेट जायगा। तुम आओगे?"

"धन्यवाद! यदि सम्भव हो सका।"

"परफीरियस पीट्रोविच, जिले के निरीक्षक अब भी आने वाले हैं। और कुछ विद्यार्थी, अध्यापक, पाचक और एक अफसर जेमीटोव भी।"

"कृपा कर बताओ कि इन लोगों से तुम्हारी क्या समानता है, विशेष कर जेमीटोव से।"

"जेमीटोव एक असाधारण व्यक्ति है और फिर हम लोगों का एक सामान्य स्वार्थ का विषय भी है।"

"मैं यह जानना चाहूँगा कि—"

'यह एक मकान के पेन्टर के बारे में है। हम उसे छुड़वाने का प्रयत्न कर रहे हैं। सब ठीक ठाक होगया है। सब स्पष्ट ज्ञात होता है।'

'यह पेन्टर कौन है?'

"क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया? ओह! तुमने तो प्रारंभ ही सुना—एक बुढ़िया के खून के बारे में। एक पेन्टर साथ लिया गया है।'

'हाँ एक खून के बारे में मैंने सुना था, मैं उत्सुक हूँ, क्योंकि—मैंने अखबार में पढ़ा था।"

"हाँ, उन्होंने लिजावेता को भी मार डाला" नास्तासिया ने रासकोल्नीकोव की ओर देखते हुए कहा। वह द्वार पर खड़ी सुन रही थी।

"एलिज़ावेथ!" अस्पष्ट शब्दों में वह बड़बड़ाया।

"एलिज़ावेथ—आप उसे जानते हैं? वह कभी कभी आपकी कमीज़ों की मरम्मत किया करती थी।

रास्कोल्नीकोव हमेशा की भाँति, दीवार की ओर मुंह कर के देखता रहा।

"अच्छा पेन्टर के बारे में क्या?" जोसीमोव ने पूछा।

"उस पर खून का अपराध लगाया गया है," राजुमिखिन ने उत्तर दिया।

"सबूत क्या है?"

"सबूत! कुछ भी नहीं; जिन्हें वे सबूत समझते हैं वे सबूत नहीं हैं। अच्छा रोदिया! वैसे ही, ज़रा तुम बताओ तुमने इसके बारे में कुछ सुना? यह तुम्हारी बीमारी के पहिले ही हुआ है; जब तुम ऑफिस में थे, और बेहोश हो गये थे, तब वे इस पर ही बात कर रहे थे।"

जोसीमोव ने उत्सुक होकर रास्कोल्नीकोव की ओर देखा, जो हिला तक नहीं। "राजुमिखिन, मुझे तुम्हारी निगरानी करनी पड़ेगी। तुम ऐसे मामले में, जिससे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं, अधिक परेशानी उठा रहे हो" जोसीमोव ने कहा।

"उसकी चिंता मत करो। कानून के पंजों से हमें इस बेचारे व्यक्ति को छुड़ाना है," टेबल पर हाथ पटकते हुए राजुमिखिन चिल्लाया। "इससे अधिक क्या गोलमाल हो सकता है! वे बोलते ही बोलते जाते हैं, यह कल्पना करते हुए कि उनका बोलना सत्य की ओर ले जा रहा है। अब, उदाहरण के लिये, अफसर के दिमाग की भ्रांति देखो। द्वार बन्द पाया गया है; चौकीदार आते हैं, वह खुला है। कोच तथा पेस्त्राकोव ने ही, उस काम को किया होगा! यह उनका तर्क है।"

"तुम इसलिये आपे के बाहर मत हो। वे केवल हिरासत में ले लिये गये हैं—यह करना तो आवश्यक भी था। मुझे याद है एक बार मैं कोच से मिला था। वह अवधि निकले हुए बन्धकों को खरीदने का आदी था, था न?"

' हाँ और हस्तलिखित दस्तावेज को भी। निमन्त्रण कार्ड था। "

" और तुम समझते हो कि उसका पता किस प्रकार लगाया जाय ?"

" शायद—तुम्हें विस्तारपूर्वक मालूम है ? "

" मैं पेन्टर के इतिहास की अभी भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। "

" हाँ, ठीक है। अच्छा तो कहानी सुनो:—खून के तीन दिन बाद एक दम एक आकस्मिक सत्य प्रकाश में आया। एक किसान जिसका नाम दुश्किन था, जिसका कि उस मकान के सामने ही अपना शराब खाना भी है, दफ्तर में आया, जो कि अपने साथ जेवर का डिब्बा भी साथ लाया था जिसमें कि एक जोड़ सोने का ईयर रिंग था। उसकी कहानी इस प्रकार है:— ' परसों शाम को लगभग आठ बजे के बाद, मेरे पास एक पेन्टर आया जिसको कि मैं भली प्रकार जानता हूँ, उसका नाम निकोला है, और उसने इस चीज के बदले मुझसे दो रूबल पेशगी मांगे, और मेरे इस प्रश्न पर कि ये उसे कहाँ मिले ?— उसने उत्तर दिया कि वे उसे सड़क पर मिले थे। मैंने और कुछ नहीं पूछा और इस वस्तु की एवज़ में मैंने पेशगी एक रूबल दे दिया यह विचार कर कि यदि मैंने नहीं दिया तो कोई और दे देगा।

" ' उसने उसी वक्त दो गिलास पिये, कुछ पैसे वापिस लिये और चला गया। हमने दुमित्री को नहीं देखा। दूसरे दिन खून की बात सुन कर, मेरे दिमाग में आया कि ये ईयर रिंग तो उसी बुढ़िया के हैं, और यह कि उसने इस पर पेशगी धन भी लिया था। मैं एक दम जाँच पड़ताल के लिये चल पड़ा, और उसके मकान पर गया और पूछा, " निकोला कहाँ है ?" दुमित्री ने उत्तर दिया, " वह पीने करने के लिये कहीं बाहर गया है। दिन चढ़े घर आया, पिया, और दस मिनिट बाद फिर बाहर चला गया। लेकिन मैंने उसे देखा, और अकेला काम पर चला गया।" " मैं तब वापिस घर आया। " दुश्किन ने कहा, ' यह जानकारी जो मैं कर सकता था करने के बाद। दूसरे दिन प्रातः लगभग आठ बजे, निकोला मेरे यहाँ आया—अधिक पिये हुए नहीं और बात-चीत करने योग्य। वह एक बेंच पर चुप-चाप बैठ गया। मैंने पूछा, " तुम दुमित्री से मिले ? " "नहीं " उसने उत्तर दिया। " तुमने रात्री कहाँ बिताई ? " " बजरे पर। " " और

तुम्हें ईयर रिंग कहाँ मिले ?" मैंने पूछा। "सड़क पर।" "तुम्हें नहीं मालूम कि उस घर में क्या हुआ है ?" "नहीं, पर मैंने कुछ सुना है," उसने डरे की भाँति होकर कहा। मैंने सीधे उसकी ओर देखा, और वह टोपी हाथ में लेकर जाने को खड़ा हुआ। मैं उसे रोकना चाहता था और कहा, "कुछ देर रुको, मिकोल्का, एकाध ग्लास नहीं लोगे ?' मैंने लड़के को द्वार बन्द करने का इशारा किया और आगे बढ़ा—ठीक उसी समय उसे बाहर निकलते हुए देखने, और जब मैं द्वार पर पहुँचा तो वह लापता हो चुका था। वास्तव में मैं उसे अपराधी समझता हूँ।' "

' स्वाभाविक है !" जोसीमोव ने कहा।

"अंतिम भी सुनिये। मिकोल्का की हर स्थान पर तलाश की गई और उन लोगों ने दूश्किन, दमित्री को हिरासत में ले लिया—जब कि एक दिन उन लोगों ने उसे सराय में पकड़ा। वह वहाँ आया था, चाँदी के क्रॉस को उसने उतारा था, जिसके बदले में वह कुछ माँगी चाहता था। कुछ मिनिटों बाद, एक औरत ने जो कि गाय में दूध दुह रही थी उसको देखा जो कि रस्सी से लटक रहा था। उन्होंने उसे पकड़ा, उसने कहा, 'मुझे थाने ले चलो मैं पूर्ण रूप से स्वीकार करूँगा।' जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके साथ इस प्रकार जिरह की गई।

"प्रश्न: 'यह कैसे हो सकता है कि जब तुम दमित्री के साथ काम कर रहे थे तो तुमने अमुक समय जीनों पर किसी आदमी को नहीं देखा ?' उत्तर: 'मगर रूप से, वे आये, और हम लोगों ने उनको ओर ध्यान नहीं दिया।' 'क्या तुमने कोई शब्द नहीं सुना, या और कोई अस्वाभाविक बात ?' 'असाधारण कुछ नहीं।' 'क्या तुम्हें यह ज्ञात नहीं था कि उसी दिन उसी समय किसी विधवा और उसकी बहिन को लूट लिया गया और खून कर दिया गया था ?' 'मैंने सब से पहिले दो दिन एक सराय जाने में सुना।' 'ईयर रिंग तुम्हें कहाँ मिले ?' 'सड़क पर।' दूसरे दिन तुम दमित्री के साथ काम पर क्यों नहीं आये ?' 'क्योंकि मैंने छुट्टी ली थी।' 'कहाँ ?' 'इधर उधर।' 'तुम दूश्किन के यहाँ से क्यों भागे ?' 'मैं डर गया था।' 'किस से ?' 'कानून से।' 'तुम

डरे क्यों जबकि तुम जानते थे कि तुमने कुछ भी नहीं किया था ?' अब जोसीमोव विश्वास करो या न करो, लेकिन वे प्रश्न गम्भीरतापूर्वक रखे गये थे। मैं यह पक्की तौर पर जानता हूँ।'

'मैं समझता हूँ कि सबूत मौजूद है।

"मैं, अब, सबूत के बारे में नहीं कहता लेकिन इन प्रश्नों के तथा जिन्होंने ये प्रश्न किये थे उनके बारे में कहता हूँ। उन्होंने उसे परेशान किया कि वह स्वीकार करले। अन्त में 'सड़क पर नहीं।' उसने कहा, 'परन्तु कमरे में दमित्री के साथ, काम करता था। 'किस हालत में ? 'हम सारे दिन, आठ बजे तक साथ थे और जाने की तैयारी में थे, जब कि दमित्री ने एक ब्रुश उठाया और मेरे मुँह पर गुलाबी रंग पोत दिया फिर भाग गया, और मैं उसके पीछे गया नीचे सीढ़ियों से होता हुआ अहाते में और दरवाजे पर उसे पकड़ा। वहाँ चौकीदार कुछ भले आदमियों के साथ था। उसने हमें ऊधम मचाने के लिए डाँटा। हम भूमि पर थे और मैंने दमित्री को सिर के बालों से पकड़ा था, और वह मुझसे कुश्ती लड़ रहा था। लेकिन गुस्से में नहीं, मजाक में। अंत में दमित्री भाग गया सड़क पर। मैंने पकड़ना चाहा पर पकड़ नहीं पाया, तब उस कमरे में वापिस आया जहाँ हम काम कर रहे थे, ताकि हम सामान बाँध लें और दमित्री की वापसी तक प्रतीक्षा करें। मैं कमरे में प्रतीक्षा करते खड़ा रहा, जब कि एक दम मैंने देखा कि ब्रुश जमीन पर पड़ा है। मैंने उसे उठाया। वह भूमि पर द्वार के पास था।"

"द्वार के पास ? क्या उसने कहा कि द्वार के पास ?" एक दम रासकोल्नीकोव ने ऊँचे स्वर में राजुमिखिन की ओर नाराजी से देखते हुए पूछा—धीरे धीरे बिस्तर पर उठ कर हाथों से सिर थाम कर।

"हाँ। उससे तुमसे क्या मतलब ?" उधर घूम कर राजुमिखिन ने पूछा।

'कुछ नहीं,' रासकोल्नीकोव ने निर्बलतापूर्वक कहा, दीवाल की ओर फिर मुँह फेरते हुए। कुछ पलों के लिए सन्नाटा सा छा गया।

"वह अर्ध-निद्रा में है, मेरे ख्याल से" राजुमिखिन ने प्रश्न सूचक दृष्टि से जोसीमोव की ओर देखते हुए कहा, जिसने कि थोड़ा सा नकारात्मक

ढङ्ग से सिर हिलाया।

"अच्छा, आगे कहो," ज़ोसीमोव ने कहा, "फिर क्या हुआ ?"

"फिर क्या हुआ ? यही सारी कहानी है।"

"मैं समझता हूँ कि यह सुराग है।"

"और अब वे पेन्टर को खून का अपराधी समझते हैं। उन्हें कोई सन्देह नहीं है—"

"वाह ! तुम बड़े उत्तेजित हो रहे हो। ईयररिंग का क्या हुआ ? मेरे ख्याल से तुम यह मानते हो कि वह बुढ़िया के सन्दूक से मिलते और उसी दिन ?"

"बिचार ! डाक्टर ! तुम सबसे परे ख्याति और अंतश्चक्षु वाले व्यक्ति हो, जोकि मानव स्वभाव से परिचित होते हैं, क्या तुम कुछ नहीं समझते ? इतना भी नहीं समझ सकते कि यह कहानी सच्ची है, और यह कि ईयररिंग उसके हाथों से गिर पड़े जैसा कि वह कहता है ?"

"पर वह कहता है कि पहिले वह झूँठ बोला।"

"सुनो ध्यानपूर्वक सुनो। चौकीदार, कोच, चौकीदार की बीबी आदि सब लोग जो कि अहाते में थे, इस बात के गवाह हैं कि दमित्री और मिकोला में झगड़ा हुआ था, और यह कि वे सब लोग इसे पास के साथ देख रहे थे। तुम सुनते हो ? यदि उन्होंने या केवल मिकोला ने किसी का खून किया होता और सब स्थान को लूट लिया होता तब मैं आपसे केवल एक प्रश्न पूछता हूँ : तुम्हें ज्ञात है कि जब लाशें मिलीं थीं तो वे गर्म थीं, इसलिये खून दमित्री, और मिकोला के दौड़ते हुए सड़क पर आने के पाँच या दस मिनिट पहिले ही किया गया था; और मैं आपसे पूछता हूँ, क्या वे इस प्रकार बाहर आकर खेल सकते थे, जैसा कि उन्होंने किया, यह जानते हुए कि कुछ ही पल बोलेंगे जबकि अवलूल मालूम पड़ जायगी ! वे वहाँ बच्चों की भाँति खेल रहे थे और कई लोग साक्षी थे।

"बड़ी अजीब बात है, और यह असम्भव लगता है लेकिन—"

"इस मामले में कोई लेकिन नहीं है। वास्तव में, ईयररिंग का, मिकोला के हाथ में उसके इतनी जल्दी ही बाद में दिखना, उसके

में प्रमाण है, फिर भी इसे उसके पक्ष में प्रतिसन्तुलित करना चाहिये। दुर्भाग्य से, हमारे मजिस्ट्रेट लोग इन प्रश्नों को मनोवैज्ञानिक ढंग से देखने का विचार नहीं करते—वे केवल वास्तविकता के अतिरिक्त कुछ नहीं देखते और उससे मुझे सख्त घृणा है।"

'मैं भली प्रकार देख रहा हूँ कि तुम नाराज़ हो रहे हो। इसका कोई सबूत था कि वह ईयर रिंग वास्तव में उस बुढ़िया के थे?"

"यह साबित हो चुका—कोच के द्वारा। उसके असली मालिक ने अपना अधिकार घोषित कर दिया है।

"और निकोला को उस समय किसी ने नहीं देखा जब कि कोच और पेस्ट्र्याकोव सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे और क्या कहीं और होने का बहाना नहीं बन सकता?'

'नहीं," दुःखित होकर राजुमिखिन ने उत्तर दिया, "यहाँ तक कि कोच तथा पेस्ट्र्याकोव ने भी कोई ध्यान नहीं दिया जब कि वे निकोला के कमरे के सामने से निकले। उन्हें याद है कि द्वार खुला था, पर यह याद नहीं कि कोई कारीगर इधर-उधर था या नहीं।"

"अच्छा, इन तमाम तथ्यों को तुम किस प्रकार समझाते हो? क्या तुम कह सकते हो कि निकोला की कहानी सच्ची है?"

"समझा सकते हो? समझाने को है ही क्या? यह बात तो स्वयं सिद्ध है। ये ईयररिंग सब समझा देते हैं। असली खूनी ने इसे गिराया। जब कोच और उसके साथी ने खटखटाया तो खूनी ऊपर था, और वह द्वार पकड़े था। 'जब मूर्खतापूर्वक कोच चला गया तो वह उसके पीछे नीचे भागा। क्योंकि वह और कुछ कर नहीं सकता था। और न और कोई मार्ग ही था। सीढ़ियों पर उसने कोच तथा चौकीदार को आते सुना और वह खाली कमरे में घुस गया होगा। ठीक उसी वक्त जबकि दमित्री और निकोला सड़क पर दौड़ते हुए गये। उनके भागने ने बातों में हर एक को आकर्षित किया और इस प्रकार खूनी बिना दीखे निकल भागने में सफल रहा। ईयर-रिंग उसकी जेब में से गिर पड़े थे जबकि वह द्वार पर खड़ा हुआ था। यह स्पष्ट रूप से बताते हैं कि वह वहीं था और यही सारा रहस्य है।

"मुझे मालूम है, मुझे मालूम है!" रासकोलनीकोव चिल्लाया "तुम दुखी हो! हाँ मैं सब जानता हूँ। बस काफी है!'

पीटर गुस्से में पीला पड़ गया, पर चुप रहा। उस शांति में, जो इस घटना के बाद पड़ी, रासकोलनीकोव ने अपना पुराना धन्धा—आगन्तुक की ओर घूरना आरम्भ कर दिया, इस समय विशेष रूप से। कुछ देर इस प्रकार घूरने के पश्चात् रासकोलनीकोव मुँह सिकोड़ कर हँसा। फिर तकिये पर बैठ रहा, और पहिले की भाँति अपनी दृष्टि उस पर जमा ली।

लूजिन बोला "मुझे शोक है, बहुत शोक है कि तुम्हें इस हालत में देखा और यदि तुम्हारी बीमारी का मुझे पहिले पता चलता तो मैं तुम्हें पहिले ही देखने आता। लेकिन तुम मेरी कठिनाइयाँ भी समझ सकते हो। इसके साथ साथ मुझे सीनेट में भी बड़े कार्य हैं। तुम्हारी माँ और बहिन को मैं शब्दों में आशा कर रहा हूँ—" रासकोलनीकोव कुछ कहने को हुआ था कि पीटर ने रोक दिया। "हाँ मैंने उनके लिये मकान ले लिया है।"

"कहाँ?" कमज़ोरी से रासकोलनीकोव ने पूछा।

"यहाँ से अधिक दूर नहीं। बकालिव का मकान।"

"मैं जानता हूँ" रजुमिखिन ने कहा। "बड़ी भयावनी जगह है—गन्दी और मैली और संशयपूर्ण चरित्र के लोग व कार्य। शैतान ही जाने कि वहाँ कौन रहता है? फिर भी वह सस्ता है।"

"मुझे इन स्थानों का अधिक ज्ञान नहीं है—इस स्थान पर नया होने के कारण" पीटर ने उत्तर दिया। मैं यहीं पास में श्रीमती लिपरौक्स के यहाँ एक नवयुवक मित्र के साथ—जिसका नाम एन्ड्रेस सेमनोविच लेबी-ज्यातीकोव है, रहता हूँ।

"लेबीज्यातीकोव?" धीरे से रासकोलनीकोव ने दुहराया जैसे वह नाम उसे किसी बात की याद दिला रहा हो।

"हाँ वह सरकारी दफ्तर में है। क्या तुम उसे जानते हो?"

"हाँ—नहीं" रासकोलनीकोव का उत्तर।

"क्षमा करें तो एक प्रश्न पूछूँ।। मैं किसी समय उसका संरक्षक था—बड़ा प्यारा नौजवान है आधुनिक विचारों का। मैं नवयुवकों से मिलकर

हमेशा बुरा होता है, आदमी सोचता है कि उनमें नवीनता क्या है ?" पीटर ने चारों तरफ देखा ।

"आपका आशय किस भाव से है ?" राजुमिखिन ने पूछा ।

"अत्यन्त गम्भीर भाव से" प्रश्न से प्रसन्न होकर पीटर ने उत्तर दिया "मेरे विचार से तुम बिना नवयुवक समाज की सहायता से शीघ्र, कहीं नहीं सीख सकते ।"

"यह बिल्कुल सत्य है" जोसीमोव ने शीघ्र ही कहा ।

लूशिन ने जाना चाहा । "मैं विश्वास करता हूँ कि तुम्हें हमने के बहाने, हमारी जान-पहिचान," उसने रासकोल्नीकोव से कहा, "और अपने सम्बन्ध का ध्यान देते हुए, और गहरी होगी । विशेष रूप से तुम शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करो ।"

रासकोल्नीकोव ने उत्तर नहीं दिया, और लूशिन अपनी जगह से बढ़ा ।

"वह अपने किसी कर्जदार द्वारा ही मारी गई है," जोसीमोव कह रहा था ।

"ओह ! बिल्कुल ठीक । पोरफीरियस ने मुझे अपनी राय नहीं जाहिर की," विद्यार्थी ने उत्तर दिया, "लेकिन वह गिरवी रखने वालों की जाँच कर रहा है ।"

"गिरवी रखने वाले ?" एक दम रासकोल्नीकोव पूछ बैठा ।

"हाँ ! तब फिर ?"

"कुछ नहीं !"

"वह उन्हें कैसे जानता है ?" जोसीमोव ने पूछा ।

"कोच ने कुछ नाम दिये हैं, और कुछ बण्डलों में लिपटे कागजों पर लिखे थे, और बहुत से अपनी वस्तुओं के लिये आये ।"

"कितना चतुर और अनुभवी होना चाहिये उस बदमाश को ! उसकी हिम्मत ! ऐसा निश्चय !"

"यही तो है कि वह ऐसा नहीं था," राजुमिखिन चिल्लाया ।" यहीं तो आप सब करते हैं । इसके विपरीत, मेरा विश्वास है, कि वह न तो

के लिए और सहता रहा। मैं तुम्हें, तुम्हारी बीमारी की हालत में, क्षमा कर सकता था लेकिन अब—तुमसे—कभी नहीं—"

"मैं बीमार नहीं हूँ" वह चिल्लाया।

"तो अब तक—"

"जहन्नुम में जाओ।"

लेकिन लूजिन चला गया था।

"छोड़ दो मुझे! तुम सब मुझे छोड़ दो!" उत्तेजित होकर रास्कोल्निकोव चिल्लाया "छोड़ दो मुझे! तुम मुझे सताते हो। तुमसे मैं नहीं डरता। अब मैं किसी से नहीं डरता। मुझसे दूर हो जाओ! मुझे अकेला रहने दो। अकेला। अकेला।"

"आओ चलें" जोसीमोव ने कहा।

"बहुत अच्छा—यदि हम उसे छोड़ सकें?"

"आओ" बाहर जाते हुए और देखते हुए जोसीमोव ने कहा और उसका साथी उसके पीछे आया। "हमें उसे नाराज नहीं करना है।"

"उसको क्या हो गया है?" रास्ते में राजुमिखिन ने पूछा।

"उसके दिमाग में कुछ घूम रहा है, कुछ भी दिखता नहीं, उससे वह भारी है मुझे डर है।"

"तब इस पीटर के कहने का क्या अर्थ है! जैसा कि स्पष्ट है वह उसकी बहिन से विवाह करने वाला है और रास्कोल्निकोव को इसके बारे में एक पत्र मिला था।"

"तुमने ध्यान दिया कि वह केवल एक बात को छोड़ कर हर बात से विमुख सा था—मेरा आशय खून से है।"

"हाँ, हाँ" राजुमिखिन ने कहा "मुझे भी लगा इससे वह मनोरंजित होता सा लगता है—बड़े चौंक उठता है। इसी प्रकार का प्रभाव उस पर पुलिस में हुआ था जब वह बेहोश होगया था।"

"उस पर शाम को फिर विचार करेंगे। तब मैं शायद तुमसे कुछ कह सकूँ। मैं अभी आधे घन्टे में उसके बारे में पूछ, ताछ करने आऊँगा। अब तक के लिये हम इस विषय को स्थगित करते हैं।"

"ठीक है, धन्यवाद ! मैं पाशेन्का के पास जा रहा हूँ, और नास्तासिया द्वारा इसकी निगरानी करवाऊँगा।"

असन्तुष्ट होकर रास्कोल्नीकोव ने नास्तासिया की ओर देखा, जो सारे समय कमरे में ही थी।

"अब तुम चाय पीओगे ? उसने पूछा।

"थोड़ी देर बाद। मैं सोना चाहता हूँ। तुम जाओ !" वह दीवार की ओर घूमा और नास्तासिया चली गई।

६

नास्तासिया कमरे के बाहर निकली ही थी कि रास्कोल्नीकोव उठा, और, द्वार बन्द कर के, रजुमिखिन द्वारा लाये बण्डल में से कपड़े पहनना शुरू किया। कैसी विचित्रता है! उसका दिमाग शांत था—बुखार या सन्निपात का कोई चिन्ह तक नहीं; न कोई डर का भाव, जिसे उसने अनुभव किया था। उसके विचार स्पष्ट और संक्षिप्त थे। "आज! आज!" वह बड़बड़ाया। उसने विचार किया, फिर भी, कि वह कमजोर था लेकिन सड़क पर सम्हले रहने के लिये, उसने अपनी नवीन स्वच्छन्द इच्छा तथा आत्म विश्वास पर विश्वास किया। वह अब बिल्कुल नये कपड़े पहिन चुका था, और जाने के लिये तैयार खड़ा हुआ। टेबल पर पड़े पैसों की ओर उसका ध्यान गया—इन्हें उसने जेब में डाला। जल्दी से द्वार खोला, और सीढ़ियों से उतर कर, सड़क पर, बिना जाने पहुँच गया, यद्यपि नास्तासिया रसोई में काम कर रही थी।

आठ बजे थे और सूर्य छिप चुका था। असह्य गर्मी थी। लेकिन उसने बाहर की हवा, कसमसाते हुए ग्रहण की। और अब उसका दिमाग अपेक्षा कुछ करने लगा, और उसके पीले मुख पर शान्ति की अभिव्यक्ति झलकी। उसे ज्ञात नहीं, उसने विचार भी नहीं किया कि वह क्या करने जा रहा था। उसे केवल इतना ज्ञात था कि 'आज' सब कुछ समाप्त होने वाला था। या वह कभी भी घर नहीं लौटेगा क्योंकि उसे इस प्रकार जीने

की वावस्ता नहीं थी। कैसे समाप्त किया जाय ? किन साधनों द्वारा ? आवेग के अनुसार उसने पुराना मार्ग पकड़ा, और है मार्केट की ओर रवाना हुआ।

रासकोल्नीकोव चलता गया और उस स्थान पर, हे मार्केट में, पहुँचा जहाँ पर कि उसे वह व्यापारी अपनी बीवी के साथ तथा एलिजाबेथ के साथ मिले थे। इस समय वहाँ कोई नहीं था। वह रुका और एक लाल कमीज वाले युवक की ओर मुड़ा।

"क्यों एक आदमी अपनी बीवी के साथ इस कोने में, व्यापार करता है ?"

"यहाँ हर एक व्यापार करता है," प्रश्न कर्ता को सिर से पैर तक देखते हुए, उस लड़के ने कहा।

'वह किस नाम से पुकारा जाता है ?

"जो कुछ भी उसका नामकरण किया गया हो !"

"पर तुम जारिस्क के हो, हो न ? किस सरकार में ?"

लड़के ने रासकोल्नीकोव को देखा। "हमारे यहाँ गवर्नर नहीं है, हाईनेस ! जिले हैं। मैं घर पर ही रहता हूँ और इन सब के बारे में कुछ नहीं जानता, पर मेरा भाई जानता है; इसलिये मुझे क्षमा करें।

"क्या यह ढाबा है, उधर ?"

"यह भण्डारी है; वहाँ बिलियर्डस् का खेल है।"

रासकोल्नीकोव बाजार के उस ओर दूसरे कोने में गया, जहाँ पर कि लोगों की भीड़ थी—सब मौजिक थे। उसने सबसे बोलना चाहा, पर किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ देर खड़ा रहने के बाद वह दाईं ओर मुड़ा। अब वह—गली में था। उसके सामने एक बड़ा सा मकान था जिसमें खाने पीने की व्यवस्था थी। उसमें से हर एक अपने अपने पहिने नंगे सिर औरतें निकलती थीं। रासकोल्नीकोव औरतों को देखने खड़ा हो गया। कुछ पायदान की ओर कुछ मुश्किल से सवार थी, लेकिन सब के चेहरे शराब और आँसुओं में हल्के। "मुझे पीने के लिये कुछ दो।" एक ने कहा और रासकोल्नीकोव ने तीन पाँच कोपेक सिक्के—उसके हाथ में रखे, और, चलते हुए रुक कर सोचने लगा:

"केवल जियो ! जियो ! जियो—इससे कोई मतलब नहीं कि कैसे, केवल जियो ! यह कितना सत्य है ! ओ ! परमात्मा ! कितना सत्य ! ओ ! दुष्कीप मनुष्य जाति—और वह स्वयं भी दुष्कीप—"

वह दूसरी सड़क पर गया। "अह ! क्रिस्टल पैलेस ! रजुमिखिन ने इस पैलेस के बारे में कहा था। मैं क्या चाहता हूँ ? अरे हाँ ! पढ़ना ! जोसीमोव ने कहा था कि उसने अखबारों में पढ़ा था—"

वह एक झाड़ी से कमरे में घुसा। दूर के कमरे में कुछ लोग बैठे शेम्पेन पी रहे थे। रासकोल्नीकोव ने विचार किया कि उनमें से जेमीटोव को उसने पहिचान लिया है, लेकिन उसे पूर्ण विश्वास नहीं था।

"चाय दूँ, महाशय ?" बॉय ने पूछा।

"नहीं, चाय, और कुछ अखबार लाओ—पाँच दिन पहले के।"

चाय और अखबार आये। रासकोल्नीकोव बैठा, और तलाश किया, और अन्त में उसे जिसकी तलाश थी वह मिल गया। उसने पढ़ना आरंभ किया। शब्द उसकी आँखों के सामने नाचने लगे, और उसने अन्त तक पढ़ा, फिर और समाचार की ओर झुका। एक दम उसके पास आकर कोई बैठ गया। उसने ऊपर देखा, और वहाँ जेमीटोव था—वही जेमीटोव। वह खुश था और शेम्पेन के कारण उसका चेहरा लाल सा था, मुस्करा रहा था।

"अह, तुम यहाँ ?" उसने कहा, इस तरह जैसे वह रासकोल्नीकोव को वर्षों से जानता हो। "क्यों, रजुमिखिन ने कल मुझसे कहा था कि तुम बेहोश पड़े थे। कैसी विचित्र बात है ! तब मैं तुम्हारे घर गया—"

रासकोल्नीकोव ने अखबार रख दिया और जेमीटोव की ओर मुड़ा। उसके ओठों पर मुस्कराहट थी। "मैं जानता हूँ तुम गये थे। मैंने ऐसा सुना था। तुमने मेरे जूतों की तलाश की। किस भली चीज़ की तुमने तलाश की। तुम्हें शेम्पेन पीने को किसने दी ?"

"हम लोग साथ पी रहे थे। तुम्हारा इससे मतलब ?"

"कुछ नहीं लड़के, कुछ नहीं," जेमीटोव के कन्धे थपथपाते हुए, हँसते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा। "मैं तो केवल मजाक कर रहा हूँ, जैसे कि उस खून के मामले में तुम्हारे कारीगर ने दमित्री से लड़ते समय कहा था।"

"तुम उसके बारे में जानते हो ?"

"हाँ, और शायद तुमसे अधिक।"

"अजीब आदमी हो। यह बड़ी बुरी बात है कि तुम बाहर आ गये। तुम बीमार हो।"

"क्या मैं अजीब लगता हूँ।"

"हाँ, तुम क्या पढ़ रहे हो ?"

"अखबार।"

"आग के कई समाचार हैं।"

"मैं उनके बारे में नहीं पढ़ रहा हूँ।" उसने उत्सुक होकर जेमीतोव की ओर देखा, और एक कटु हास्य ने उसके मुँह को बिगाड़ा। "नहीं, आग मेरी लकीरों में नहीं है। अब मैं यह जानना चाहूँगा कि तुमको इससे क्या मतलब कि मैं क्या पढ़ता हूँ ?"

"बिल्कुल कुछ नहीं। मैंने केवल पूछा। शायद मैं—मैं—"

"सुनो। तुम सुसंस्कृत पुरुष हो—साहित्यिक, क्या तुम नहीं हो ?"

"मैं कॉलेज में छठे क्लास में था।" जेमीतोव ने शान के साथ कहा।

"छठा क्लास ! ओह, मेरे अच्छे मित्र ! ये अंगूठी ! यह बैग !—बड़े आदमी हो !" रासकोल्नीकोव जरा हँसा। जेमीटोव बड़ा खिसिया गया था और बड़ा आश्चर्यचकित था।

"तुम कितने विचित्र हो ! तुम्हें अब भी बुखार है,तुम बहक रहे हो।"

"क्या मैं, मेरे भले आदमी—मैं विचित्र हूँ ! हाँ, पर तुम्हारे लिये मैं क्या दिलचस्प हूँ,क्या नहीं हूँ ?"

"दिलचस्प ?"

"हाँ, तुमने पूछा कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ; मैं क्या देख रहा हूँ; और फिर मैं कई अखबार देख रहा हूँ। शक की बात नहीं है ! अच्छा, मैं तुम्हें समझाता हूँ या स्वीकार करूँगा— नहीं यह नहीं। अच्छा तो, मैं शपथ खाता हूँ कि मैं पढ़ रहा था, और यहाँ काम से आया था—"उस बुढ़िया के खून का हाल पढ़ने।" उसने कानाफूसी करते हुए कहा, जेमीतोव के चेहरे को देखते हुए।

"ओह ! तो तुम यह पढ़ रहे थे । उसमें क्या है ?"

"यह वही औरत है जिसके बारे में तुम बात चीत कर रहे थे जब मैं तुम्हारे दफ्तर में बेहोश हुआ था । तुम्हें याद है—तुम्हें बिल्कुल याद है ?" कानाफूसी करते हुए ज़ेमीटोव ने कहा ।

"याद है, क्या ?" डर कर ज़ेमीटोव ने पूछा ।

रासकोल्नीकोव के चेहरे का गम्भीर भाव एक क्षण में बदला और वह बरबस हँसी हँसने लगा । इसको उस क्षण की याद आई जब कि वह द्वार पर कुल्हाड़ी लिये खड़ा था । वह वहाँ था—कुण्डा पकड़े हुए, और वे लोग द्वार के साथ रस्सा खिंचाई कर रहे थे । "वाह ! वाह ! वाह !"

"क्या तुम पागल हो, या—" ज़ेमीटोव ने कहा, और तदुपरान्त चुप हो गया जैसे कोई विचार उसके दिमाग़ में एक दम आया हो ।

"या क्या ? अब क्या ? बताओ !"

"मूर्खतापूर्ण !" ज़ेमीटोव ने स्वयं कहा "यह नहीं हो सकता ।" दोनों चुप हो गये इस अट्टहास के पश्चात् रासकोल्नीकोव किसी विचार में खो गया और बड़ा चिन्तित नज़र आने लगा । वह कोहनी के सहारे टेबल पर झुक गया । काफ़ी देर तक शांति रही । "तुम अपनी चाय नहीं पीते, यह ठंडी हो रही है ।" ज़ेमीटोव ने कहा ।

"क्या ? चाय ? हाँ !" रासकोल्नीकोव ने ग्लास उठाया, रोटी का टुकड़ा मुँह में डाला, और तब ज़ेमीटोव की ओर देख कर, मालूम पड़ता था कि वह अपने आपे में आ गया है । उसके चेहरे पर पहिले की सी मुस्कान दौड़ गई, और वह चाय पीने लगा ।

"कितने बदमाश, हो गये हैं आज कल," ज़ेमीटोव ने कहा । "अधिक दिन नहीं हुए जब मैंने मास्को के अख़बारों में पढ़ा था, कि उन लोगों ने जाल साज़ों के एक गेंग को पकड़ा था ।"

"यह पुराना समाचार है, मैंने इसे एक माह हुआ तब पढ़ा था," लापरवाही से रासकोल्नीकोव ने कहा । "और तुम उन्हें बदमाश कहते हो ?" उसने मुस्कराते हुए कहा ।

"क्यों नहीं ?

"वास्तव में बदमाश ! वह भीतर जाता है, चेक लेता है, उनमें से कुछ गिनता है, अन्तिम भाग को विश्वास पर रखता है, सब जेब में रखता है और भाग जाता है।"

"यह कि उनके हाथ काँपने चाहिये !" जेमीटोव। 'नहीं, यह बिल्कुल सम्भव है। तुम्हारे नहीं काँपेंगे, मेरे विचार से ? जरा से सौ रूबल के वास्ते ऐसा काम करना ! और वह भी कहाँ ? बैंकर के दफ्तर, वह भी जाली नोटों के साथ ! मैं तो वास्तव में अपना सन्तुलन खो बैठूं । क्या तुम नहीं खो बैठो ?'

उसके शरीर में एक कँपकँपी दौड़ गई । "मुझे इतनी मूर्खतापूर्वक कार्य करते हुए, तुम नहीं पकड़ सकते," उसने कहा। "मैं इस प्रकार करूँगा पहिले हजार मैं बड़ी सावधानी से गिनूँगा शायद बार बार, अन्त तक, हर नोट को गौर से निरीक्षण करते हुए और तब दूसरे हजार को साधारण तौर पर इस मध्य के मध्य में गिनूँगा, एक नोट निकालूँगा, रोशनी में देख कर उलट पुलट कर फिर रोशनी का ओर, और कहूँगा, मुझे भय है कि यह जाली है। फिर तीसरा हजार गिनने होंगे।' 'अभी नहीं, कृपा करके, दूसरे हजार में कुछ गलती रह गई है।' नहीं ठीक है।' इस प्रकार मैं करूँगा जब तक कि सब न ले लूँगा। अन्त में जाने के लिये मुडूँगा, द्वार खोलूँगा—लेकिन नहीं ! फिर वापिस होकर कुछ प्रश्न करूँगा कुछ उत्तर लूँगा और तब सब समाप्त है।"

"क्या मजाक करते हो तुम !" जेमीटोव ने हँसते हुए कहा। "तुम सैद्धान्तिकता से तो ठीक कहते हो, पर प्रयत्न करना और देखना। देखो, जरा इरना के लिये, उस साहूकारिन के खून का मामला। वह बड़ा पक्का पाप था, जिसने दिन के प्रकाश में कुछ क्सर नहीं छोड़ी, और तब ही उसके हाथ हिल गये, क्यों !—और वह कुछ नहीं ले सका, भाग दौड़ गया। उस कार्य ने उसका सन्तुलन समाप्त कर दिया।'

"तुम ऐसा सोचते हो ! तब तुम उसे पकड़ो," उसे छेड़ते हुए रास्कोलनीकोव ने कहा।

"कोई बात नहीं, हम पकड़ेंगे !"

"तुम ! जाओ, तुम्हें उसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। तुम सब लोग जो खोजने का प्रयत्न करते हो वह यह है कि वह व्यक्ति धन नष्ट कर रहा है क्या, तब वह दोषी है।"

"यही तो वे करते हैं" जैमीतोव ने कहा "वे खून करते हैं, अपना जीवन जोखिम में डालते हैं तब शराबखानों में जाते हैं और पकड़े जाते हैं। उनकी फिजूलखर्ची उन्हें धोखा देती है। वे सब तुमसे चतुर नहीं होते जितने कि तुम हो। तुम तो नहीं भागोगे, मेरे ख्याल से!"

रासकोल्नीकोव ने ध्यान से जैमीतोव को देखा। "तुम यह जानने के बड़े उत्सुक हो रहे हो कि मैंने क्या किया होता!"

"मैं जानने को बड़ा उत्सुक हूँ," गम्भीरतापूर्वक उसने उत्तर दिया। वह वास्तव में बड़ा उत्सुक दिखा।

"बहुत अधिक?"

"बहुत अधिक।"

"अच्छा! मेरा ख्याल यह होता।" मैं धन व और जो कुछ मिलता लेता, और चल देता, किसी विशेष स्थान की ओर नहीं, बल्कि चलता ही जाता जब तक कि कोई चारों ओर से सुरक्षित स्थान नहीं आता, जहाँ पर कि चारों ओर कोई नहीं होता—किसी मार्केट का बाग या ऐसा ही कुछ और। फिर चारों ओर मैं किसी पत्थर की तलाश करता, यही चौथ सेर पौन वजन का जोकि पास ही पड़ा होता, एक कोने में, शायद मकान बनाने के काम में आया हुआ, मैं उसे उठाता और उसके नीचे एक गड्ढा होता। उसमें मैं सब कुछ रख देता, फिर पत्थर रख देता, अपने पाँव से दबा देता, और चल देता; लगभग एक वर्ष तक मैं उसे पड़ा रहने देता—दो वर्ष, तीन वर्ष। और अब ढूँढो उसे! वे कहाँ हैं?"

"तुम वास्तव में पागल हो" जैमीतोव ने दूसरी ओर मुँह करते हुए धीरे से कहा। रासकोल्नीकोव को ज्ञात था कि वह क्या कर रहा था, लेकिन अपने आप पर वश नहीं चला, वह उस अन्तःप्रेरणा से प्रेरित हो रहा था जैसे कि वह अन्ध द्वार पर खड़ा है, सामने आने के लिये और सब कुछ ज्ञात हो जाने के लिये।

"क्या हुआ यदि मैंने एलिओनोवा और उस बुढ़िया को मारा ?" से एक दम पूछा, और फिर—वह अपने आप में आया।

ज़ेमेतोव बिलकुल पीला पड़ गया, तब उसके चेहरे पर हँसी आई। "क्या ऐसा हो सकता है ?" वह अपने आप बड़बड़ाया।

रासकोलनीकोव ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा। "बोलो। तुम क्या सोचते हो ? हाँ ? ऐसा हो सकता है ?"

"कदापि नहीं। मैं पहिले की अपेक्षा अब बिलकुल कम विश्वास करता हूँ।" उसने जल्दी में उत्तर दिया।

"अन्त में पकड़े गये ! पकड़े गये, मेरे अच्छे मित्र ! लोग जिसे पहिले की अपेक्षा कम विश्वास करते हैं, उस पर उन्होंने एक बार तो विश्वास किया होगा, क्यों ?"

"कभी नहीं। तुम मुझे डराते हो कि मैं मान जाऊँ।" ज़ेमेतोव।

"तो तुम ऐसा नहीं सोचते ? तब ऑफिस में प्रश्न क्यों किये थे ?"

"वॉय !" अपनी थैली खड़खड़ाते हुए वह चिल्लाया। "मुझे कितना देना ?"

"तीस कोपेक, महाशय !" उसने उत्तर दिया।

"ठीक और बीस तुम्हारे लिये।"

वह बाहर चला गया किसी आवेश में कांपते हुए। उसके चेहरे से पता चलता था कि जैसे अभी किसी फिर से होश में आया है।

इधर कुछ देर ज़ेमेतोव रेस्त्रां में बैठा रहा विचारों में खोया हुआ, उन विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए जिन्हें रासकोलनीकोव ने रखा था। "एलिया पीट्रोविच तो मूर्ख है।" उसने अन्त में कहा।

रासकोलनीकोव ने ज्योंही सड़क का द्वार खोला, उसने अपने आपको राज़ुमिख़िन के सामने पाया, जो कि ऊपर आ रहा था। "तुम यहाँ क्या कर रहे हो ! तुम्हें बिस्तरे पर होना चाहिये। मैं तुम्हें ढूँढ रहा हूँ। रोडिया ! यह सब क्या है ? समझाओ, सुन रहे हो ?"

"मैं तुम सब से परेशान था। मैं अकेला रहना चाहता हूँ," शान्ति पूर्वक रासकोलनीकोव ने कहा।

"अकेले ! जब कि तुम कठिनता से हिल सकते हो, कागज़

तुम्हारा चेहरा हो रहा है और बड़ी कठिनता से ही तुम्हारे शरीर में श्वास बची होगी ! तुम क्रिस्टल पेलेस में क्या कर रहे थे ! अभी बताओ ।"

"दूर हटो ।" रासकोल्नीकोव ने धक्का देते हुए छुटकारा पाने का प्रयत्न किया । रासुमिखिन को इस पर ताव आगया और उसने रासकोल्नीकोव का कन्धा पकड़ा ।

"क्या तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मुझ से 'दूर हटो' कहो ! मैं बताता हूँ कि तुम्हारे साथ क्या करता हूँ । तुम्हें मैं कमर से उठाकर बण्डल बना कर, घर ले जाऊँगा, और ताले में बन्द कर दूँगा—यह करूँगा तुम्हारे साथ ।"

"सुनो" शांति पूर्वक रासकोल्नीकोव ने कहा । "क्या यह सम्भव है कि तुम यह नहीं देख रहे हो कि मुझे तुम्हारी दया की आवश्यकता नहीं है ? और उन लोगों पर दया दिखाने से क्या लाभ जो उसके बदले-उन पर थूकें ? मेरी बीमारी के प्रारम्भ में तुमने मुझे क्यों तलाश किया, जबकि मैं शायद मरना चाह रहा था । तुम्हें क्या अधिकार है कि तुम मुझे अकारण रोके रखो ? तुम देख रहे हो कि मैं गम्भीरतापूर्वक बात करता हूँ, करता हूँ न ? तब फिर मुझे अकेला छोड़ दो, और अपनी दया का अन्त करो । परमात्मा के लिये जाओ ! जाओ ! जाओ !"

रासुमिखिन खड़ा कुछ देर सोचता रहा । "अच्छा ! तब जाओ !"

"ठहरो," वह एक दम चिल्लाया । 'सुनो ! जिस प्रकार मुर्गी अपने अण्डों पर बैठती है उसी प्रकार तुम भी अपनी मुसीबत भोगो । तुम्हारे भीतर कोई भी चिन्ह जीवन का शेष नहीं है । तुम देख के बने हो तुम्हारी नसों में एक बूँद भी खून की नहीं है । तुम्हें मालूम है कि मेरे यहाँ कुछ लोग आने वाले हैं । वे अब आते ही होंगे । देखो यदि तुम इतने मूर्ख ! नितांत मूर्ख ! माने हुए मूर्ख ! नहीं होते तो तुम हम लोगों के साथ होते ! क्या तुम वहाँ आओगे ? जोसीमोव भी वहां होगा । आना !"

'नहीं ।"

"बेवकूफ ! तुम अपने लिये उत्तरदायी भी नहीं हो और ठीक उत्तर भी नहीं दे सकते । आना ! पता मत भूलना ।"

"मैं नहीं आऊँगा राजुमिखिन।"

"तुम्हें कसम है, आना। यदि नहीं आये तो मैं तुमसे मित्रता रखना नहीं चाहता क्या यहाँ जेमीटोव है?"

"हाँ!"

"उससे मिले?"

"हाँ।"

"उससे बोले?"

"हाँ।"

"किस सम्बन्ध में? तुम बोलते क्यों नहीं हो? कोई बात नहीं।"

रासकोल्नीकोव कोने की ओर चला और राजुमिखिन सोचता हुआ, एक क्षण तक खड़ा रहा। अन्त में उसने अपना सिर हिलाया, और मकान में घुसने के लिये बढ़ा। 'वह सभी प्रकार से बात चीत करता है—मानो कि—मैं ही मूर्ख हूँ। मुझे आश्चर्य है, कि वह किस उधेड़बुन में लगा है? शायद वह डूबना चाहता है।" वह रासकोल्नीकोव का पीछा करने के लिये नीचे भागा पर वहाँ तो उसका चिन्ह भी नहीं था, और राजुमिखिन क्रिस्टल पेलेस में जेमीटोव से बात करने लौट आया।

रासकोल्नीकोव सीधा—पुल की ओर गया। वहाँ खड़ा होने के लिये उसने अपने को बड़ा कमजोर महसूस किया। एक दम वह बड़ी जोर से काँपा। वह सावधान हो गया कि कोई पास खड़ा है बिल्कुल उसके पास, उसने घूम कर एक लड़की को सिर पर शॉल लपेटे देखा—एक लम्बी लड़की पीला पिचका हुआ मुँह और लाल डूबी आँखें। और तब, एक क्षण में ही, वह रेलिंग पर चढ़ी और पानी में कूद पड़ी। गंदा पानी उछला। लेकिन डूबती औरत पानी की सतह पर आगई—उसका सिर और टाँगे पानी में और कपड़े ऊपर तैरते हुए।

"नाव! नाव! भीड़ चिल्लाने लगी।"

नाव की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि एक पुलिस का आदमी, नीचे भागता हुआ पहुँचा, और उसे घसीट लाने में सफल हुआ। वह शीघ्र ही होश में आगई, और बैठी, अपनी आँखें मली, छींकी। उसने कहा कुछ भी नहीं।

है। वहाँ के चौकीदार से पूछना—वह मुझे जानता है" लापरवाही से रास्कोल्नीकोव ने कहा।

"तुम उन कमरों में क्या कर रहे थे?"

"उनको देख रहा था।"

"किस लिये? जाओ, बाहर निकलो!"

"अब मुझे क्या करना चाहिये?" रास्कोल्नीकोव ने विचार किया। वह पुल पर खड़ा था। एक दम लगभग दो सौ कदम के फासले पर, कुछ गपाड़ा सुनाई दिया और भीड़ इकट्ठा होने लगी। सड़क के बीच में वह एक गाड़ी देख सकता था, खड़ी हुई। क्या मामला है! रास्कोल्नीकोव उस भीड़ तक पहुँचा।

७

सड़क के बीच में एक गाड़ी खड़ी थी, उसमें एक जोड़ी भूरे रंग के तेज घोड़े जुते थे, वह खाली थी। कोचवान घोड़ों का मुँह पकड़े नीचे पास ही खड़ा हुआ था। पुलिस के सिपाही भी वहाँ थे, और चारों ओर कई आदमियों की भीड़ भी थी। एक लालटेन लिये था। जिसकी रोशनी सड़क पर, पहियों के पास पड़ी किसी वस्तु पर पड़ रही थी। रास्कोल्नीकोव भीड़ चीरता हुआ आगे आया। जमीन पर एक आदमी बेहोश पड़ा है, मुँह पर खून बह रहा है। वह घोड़ों के पावों से कुचल गया था, स्पष्ट था कि यह हँसने का मामला नहीं था।

मैं बड़े ध्यान से चला रहा था" कोचवान ने कहा "लेकिन इस पिये हुए आदमी ने मेरी रोशनी नहीं देखी। मैंने उसे सड़क पार करते हुए देखा और वह ज्यों ही घोड़े के पास आया उसने झूमना आरम्भ किया। मैं चिल्लाया, लेकिन बड़ी देर हो चुकी थी, वह घोड़ों के सामने गिर पड़ा। मैंने एक दम खींचा, लेकिन घोड़े तेज हैं और उन्होंने उसे कुचल दिया। इस प्रकार सब हुआ।"

भीड़ में से एक दो चिल्लाये, "बिल्कुल ठीक हम सबने देखा!" कोचवान अधिक डरा हुआ नहीं दीखता था, यह स्पष्ट था कि कोच किसी बड़े

आदमी की थी, जो कि वहीं उसके आने की प्रतीक्षा में था। पुलिस के लोगों ने भी वैसा ही किया और जख्मी को अस्पताल ले जाने की तैयारी की; किसी को उसका नाम मालूम नहीं था। थोड़ी सी देर में ही रासकोलनिकोव और पास आ पहुँचा, और तभी लालटेन की रोशनी उस अभागे के मुँह पर पड़ी उसने उसकी पहिचान लिया।

"मैं इसे जानता हूँ! मैं इसे जानता हूँ!" वह चिल्लाया। "यह नामधारी काउन्सिलर मारमेलादोव है; वह पास ही में रहता है, कोज़ेल में, शीघ्र ही एक डाक्टर को बुलाओ; मैं उसका खर्च दूँगा।" उसने पैसे निकाले और पुलिस वालों को बताये। "ऊपर घर है, केवल तीन मकान छोड़ कर। मैं इसे अच्छी तरह से जानता हूँ। यह शराबी है, इसके बीबी है बच्चे हैं, और एक लड़की भी उसे घर ले चलो अस्पताल नहीं; उसी घर में एक डाक्टर भी है।"

शीघ्र ही मददगार आ गये उन्होंने उसे उठाया और ले चले। मकान मुश्किल से तीस कदम पर था, उसके सिर को सहारा दिये हुए रासकोलनिकोव आगे चल रहा था।

"यहाँ है, यहाँ! सीधे सामने ऊपर ले चलो। मैं खर्च दूँगा। आपका धन्यवाद!"

कैथराइन इवानोव्ना, सामान्य रूप से, बीमार थी और इधर-उधर घूम रही थी—अपने आप बड़बड़ाते हुए तथा खाँसते हुये। कभी-कभी रुक कर, वह अपनी बड़ी लड़की—दस वर्षीय पोलेन्का से बात करती। उससे छोटी लड़की सो रही थी। बाहर का द्वार बन्द था जिससे कि तम्बाकू का धुँआ नीचे से न आ सके, जिससे कि उस क्षयग्रसित औरत को और खाँसी न आये। ऐसा लगता है कि इवानोव्ना का स्वास्थ्य इस हफ्ते और अधिक खराब था। गालों पर लाल लाल धब्बे और भी लाल हो गये थे।

"तुम नहीं सोच सकती, तुम कल्पना भी नहीं कर सकती, पोलेन्का कि हम नाना के साथ किस शान से रहते थे— पानी तैयार है? जल्दी! कमीज और स्टोकिंग दो।" (छोटी बच्ची की ओर मुड़कर) "मुझे आज रात को तुम्हारे कपड़े भी धोने चाहिये—ईश्वर! यह क्या है? फिर! क्या मामला

मारमीलाडोव ने उसे पहिचाना "पादरी!" उसने अस्फुट शब्दों में कहा।

केथराइन इवानोवना खिड़की की ओर फिरी और अपार दुःख के कारण रो पड़ी। 'ओह अभागे अस्तित्व!"

"पादरी!" मरते हुए आदमी ने दुहराया।

"हुआ-था! उसने उससे कहा। उसने उसकी आवाज सुनी, पहिचानी, और चुप हो गया। वह उसके तकिये के पास आई, और उसने कायरता से उसकी आँखों में देखा। वह बहुत देर तक चुप नहीं रहा, क्योंकि उसकी दृष्टि, उसकी छत से आकती बच्ची सोन्या पर पड़ी, उसके छोटे नेत्र अपने पिता पर जमे।

"वह —" उसने आह भरी, और बोलने का प्रयत्न किया।

"क्या है?" केथराइन इवानोवना ने पूछा।

"नंगे पैर।" अर्द्ध नग्नावस्था में बच्चे को देखकर वह बड़बड़ाया।

"चुप रहो", कांपते हुए उसने चिल्लाकर कहा। "तुम्हें मालूम होना चाहिये कि वह ऐसी क्यों है?'

'परमात्मा को धन्यवाद है!—डाक्टर आगया।" प्रसन्न होकर रासकोलनीकोव चिल्लाया।

डाक्टर आया—एक वृद्ध जर्मन महाशय, जिसने कि पत्नी की सहायता से पति की खूनी कमीज उतारी और गले और सीने को नंगा किया। उसकी बाईं ओर की पसलियां टूटी थीं। बाईं ओर हृदय के पास काला तथा पीला निशान था—निर्दयी खुरों के द्वारा।

"मैं इसके लिये कुछ नहीं कर सकता" डाक्टर ने रासकोलनीकोव से कहा।

"क्या मतलब आपका?

"वह मर रहा—है।'

"क्या कोई आशा नहीं है?"

"कोई नहीं। वह आखरी मंजिल के पास है। मैं खून रोक दूँ, लेकिन उसमें कुछ लाभ नहीं। पाँच मिनिट में वह मर जायगा।"

लोगों ने एक भूरे बाल वाले पादरी को मार्ग दिया, जो कमरे में गया। वह बराबर एक दम बढ़ा गया। सब पीछे हट गये। यह संस्कार ने भीतर उस समय किया और इस बात का शक था कि मरने वाला एक शब्द भी समझा। केवल एक मोमबत्ती मध्यम प्रकाश कर रही थी।

इस समय भीड़ ने पोलेन्का को आने के लिये मार्ग दिया, जो अपनी बहिन को बुलाने चली गई थी। उसने कहा, "वह आ रही है, मैं उससे सड़क पर मिली।" एक छोटी लड़की भीड़ के बीच में से, चुपचाप आई सोनिया भीतरी द्वार पर खड़ी रह गई, और इस प्रकार खड़ी देखती रही मानो गई जगह पर हो, और किसी को जानती नहीं हो। वह खड़ी रही—जल्दी में आने के कारण जल्दी जल्दी सांस लेते हुए—जब कि भीड़ में से कुछ काना-फूसी सुनाई पड़ी जो उसी से सम्बन्धित थी। उसने आँखें नीचे कीं और कमरे में घुसी। अंतिम क्रिया समाप्त हो चुकी थी और केथराइन इवानोवना मरते हुए व्यक्ति के पास गई। पादरी जाने को घूमा, और, जाने के पहिले, सान्त्वना के दो चार शब्द कहने को उसकी ओर मुड़ा।

"इनका क्या होगा?" बच्चों की ओर संकेत करते हुए उसने पूछा। "भगवान दयालु है, भद्रे! उस महान की शक्ति पर विश्वास रखो।"

"हम पर वह दयालु नहीं है।"

"तुम गलत कहती हो, भद्रे! बिलकुल असत्य," सिर हिलाते हुए पादरी ने कहा।

"क्या मैं गलत कहती हूँ? इधर देखो!" पति की ओर संकेत करते हुए उसने कहा।

"निस्सन्देह जो लोग अनिच्छापूर्वक इसके कारण हुए हैं वे उसकी क्षति पूर्ति के रूप में, तथा तुम्हें सहायता के रूप में हरजाना देंगे।

"आप मेरा मतलब नहीं समझे! हरजाना मुझे, उसके लिये? एक शराबी जो घोड़े के नीचे कुचल गया! और जहाँ तक सहायता का प्रश्न है, तो उसने मुझे सिवाय तकलीफ के मदद कभी भी नहीं की। वह सब कुछ पी गया। उसने पीने के लिये हमारी चोरी की और मेरा तथा मेरे बच्चों का जीवन शराब खाने में बरबाद किया गया। परमात्मा को धन्य है, कि वह मर रहा है, नुकसान कुछ नहीं है।"

"मृत्यु के समय इसे भूल जाना चाहिये । यह बुरी बात है भद्रे, महान पाप, इस प्रकार के विचार लाना ।"

केथराइन इवानोवना मरते हुए आदमी की ओर मुड़ी, और उसकी भौं पर से पसीना व खून की बूँदें पोंछी, पीने को पानी दिया, और तकिया ठीक किया ।

"ओह ! महाशय ! आपके तो केवल शब्द ही हैं । क्षमा, आप कहते हैं ?" उसने कहा । "यदि रोज की भाँति वह पिये हुए आता बजाय नहीं—तो मैंने कपड़े धोये होते, अपने बच्चों के साथ उसके भी सारी रात, और तब रातभर उनके सूखने की प्रतीक्षा की होती, प्रकाश होते ही उसे रफू व सिया होता—खिड़की पर बैठ कर । इस तरह मेरी रात्रि बीतती है । और फिर क्षमा की बात कहना !"

उसकी खाँसी ने उसे और कहने से रोक दिया, और एक हाथ से अपने गले को पकड़ने पर मजबूर हो गई, और दूसरे से उसने मुँह पर रूमाल रखा । खाँसी समाप्त होते ही उसने उसे मुँह पर से हटाया, और उसे पादरी को बताया । वह खून से भरा था । उसने अपना मुँह फेर लिया, कहा कुछ नहीं । अब मारमीलाडोव बड़े कष्ट में जग रहा था, और उसकी आँखें अपनी बीबी की ओर लगी थीं जो अब फिर उसके ऊपर झुक गई थी । वह स्पष्ट था कि कुछ कहना चाह रहा था उससे; उसके ओंठ हिले और अस्फुट सा शब्द निकला । केथराइन इवानोवना ने अनुमान लगाया कि वह क्षमा माँगना चाहता है और वह एक दम उस पर चिल्ला पड़ी ।

"चुप रहो ! हुश ! उसकी कोई आवश्यकता नहीं । मैं जानती हूँ तुम क्या कहना चाहते हो ।"

मरता हुआ पति चकित और चुप न कह सका, लेकिन उसकी घूमती हुई दृष्टि अब उसी क्षण उसकी लड़की, सोनियाँ के ऊपर पड़ी, जो कि द्वार पर खड़ी थी । पहिले पहल तो उसने उसे नहीं पहिचाना क्योंकि वह अँधेरे में खड़ी थी । "वह कौन है ?" उसने पूछा, मोटी तथा भर्राई हुई आवाज में ।

"अभी भी कुछ चाहते हो ?" केथराइन इवानोवना ।

लेकिन उसने अपनी पूर्ण शक्ति से अपने को ऊपर उठाने का प्रयत्न

लिया और अपनी आँखें अपनी पुत्री पर केन्द्रित कर दीं। वास्तव में वह उसे उन कपड़ों में पहिचान नहीं सका। एक दम उसने उसे पहिचाना क्योंकि उसके चेहरे से मुखड़े पर, गहरे दुःख के भाव अंकित हो रहे थे, जब वह वहाँ अभी मरते हुए पिता को अन्तिम प्रणाम करने की प्रतीक्षा में थी।

'सोनिया मेरी बच्ची! मुझे क्षमा करना!" वह चिल्लाया क्योंही उसने उसका हाथ पकड़ने का प्रयत्न किया, लेकिन उसकी शक्ति ने उसका साथ पूर्णरूप से छोड़ दिया, और वह वापिस गिर पड़ा, उसका सिर सोफा पर से जमीन पर लटक रहा था। उन लोगों ने उसे उठाया और फिर सोफा पर लिटाया लेकिन अन्त समय आ चुका था। सोनिया, एक चीख के साथ दौड़ी और उससे चिपट गई। उसकी बाहों में ही उसका प्राणान्त हो गया।

"वह चला गया!" अपने पति की लाश की ओर दौड़ते हुए केथराइन इवानोवना चिल्लाई। अब मैं क्या करूँ? इसे किस प्रकार दफनाऊँ? और इनके खाने का प्रबन्ध कैसे करूँ?'

रासकोल्नीकोव केथराइन इवानोवना के पास आया। 'केथराइन इवानोवना" उसने आरम्भ किया, "गये हफ्ते तुम्हारे पति ने अपने जीवन के इतिहास को तथा अपने तमाम हालात मुझे बताये थे। तुम विश्वास रखो कि उसने तुम्हारी बातें अत्यधिक आदर के साथ कही थीं। उसी क्षण, उसमें उस कमजोरी के होते हुए भी, हम मित्र हो गये। अब मुझे आज्ञा दो कि मैं अपने मित्र के काम आऊँ। ये बीस रूबल हैं यदि ये तुम्हारी आवश्यकता में काम आयें, तब—मैं—संक्षेप में, फिर आऊँगा, कल—कल अवश्य ही—आने कल—अवश्य नमस्कार!"

वह शीघ्र ही कमरे के बाहर हो गया। वहाँ उसे लोमिन मिला। उसने उसे एक दम पहिचान लिया।

"तुम यहाँ!" उसने पूछा।

"वह मर गया" रासकोल्नीकोव ने उत्तर दिया 'एक डाक्टर भी था और एक पादरी भी। सब विधिवत्। उस गरीब विधवा को मत सताना। उसकी मदद करो यदि कर सको तो। मैं जानता हूँ कि तुम दयालु आदमी हो।"

"तुम खून से सने हुए हो" उसने कहा।

"मैं बिलकुल खून से सना हूँ" विशेष मिजाज से देखते हुए रासकोल्निकोव ने कहा, और नीचे उतर गया।

वह बिना जल्दी किये नीचे उतरा। एक ऐसे आदमी की भाँति जिसे मौत की सजा मिली हुई हो और एक दम क्षमा का समाचार सुने। वह आधी सीढ़ी तक पहुँचा होगा कि उसे मालूम पड़ा कि उसके पीछे कोई आ रहा है। वह पोलेन्का, छोटी लड़की थी, जो उसके पीछे, "महाशय! महाशय!" चिल्ला रही थी।

उसने उस बच्ची की ओर घूम कर देखा। "महाशय! क्या आप मुझे अपना नाम बतायेंगे? और आप कहाँ रहते हैं, यह भी?"

उसने अपने दोनों हाथ उसके गले में डाल दिये, और उसकी ओर प्रसन्नता से देखा। "तुम्हें किसने भेजा?"

"मेरी बहिन, सोनिया ने," उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

"मैंने भी विचार किया कि तुम्हारी बहिन ने ही भेजा था।"

"मामा ने भी कहा था मुझसे; जब बहिन ने मुझ से कहा, तो मामा ने भी कहा कि। हाँ, पोलेन्का, जल्दी से।"

"तुम अपनी बहिन सोनिया को प्यार करती हो?"

"मैं सबसे अधिक उसे प्यार करती हूँ।"

"और तुम मुझे भी प्यार करोगी?"

उत्तर पाने के बजाय उसने देखा वह उसके और पास आई और उसके ओठ उसे चूमने के लिये आगे बढ़े थे। तब उसकी पतली सलाई सी बाँहें उसके चारों ओर लिपटीं और सिसकी भरते हुए उसने उसे कस कर पकड़ लिया। "बिचारे पापा" उसने कहा। कुछ देर बाद उसने आँसू पोंछ डाले।

"तुम्हारे पापा ने तुम्हें प्यार किया?"

"वह हम सब से अधिक लीदा से प्यार करते थे" उसने गम्भीर होते हुए कहा, "लेकिन वह मुझे व्याकरण और बाइबल पढ़ाते थे," उसने अहंकार के साथ कहा।

"और तुमने प्रार्थना करना भी सीखा?"

"अरे ! हाँ बहुत पहिले ही ।"

"पोलिया ! मेरा नाम पोलिया है; जब तुम प्रार्थना करो तो मेरे लिये भी करना अच्छा ! केवल पोलिया—और कुछ नहीं ।"

"सारे जीवन भर मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करूँगी," बच्ची ने निश्चय पूर्वक कहा । उसने अपनी बाहों में उसे एक बार फिर लपेटा ।

रासकोल्नीकाव ने अपना पता उसे दिया और वचन दिया कि कल वह अवश्य आयेगा । बच्ची चली गई । ज्योंही वह सड़क पर पहुँचा ग्यारह बजे ।

"यह काफी है ।" वह बड़बड़ाया । 'भय, दूर हो ! स्वप्न, दूर हो ! यह जीवन है । क्या, मैं जिन्दगी जी रहा हूँ ? उसके लिये स्वर्ग है और—बस उसके लिये शांति है । मैं बहुत कमज़ोर हूँ लेकिन ऐसा लगता है कि सारी बीमारी भाग गई है । राजुमिखिन का मकान देखूँ, दूर तो नहीं है-कुछ ही कदम पर । वहीं उसे अपनी इच्छानुसार प्रसन्न होने दो । यह सब कुछ नहीं ! शक्ति ! शक्ति आवश्यक है । इसे नहीं जानते,' उसने अहंभाव से कहा, जब कि उसने पुल पार किया । वह स्वर्ण-सम्मुख था । क्या परिवर्तन हो गया था ? उसने स्वप्न नहीं जाना कि अभी भी जीवन है और उसने उसे बुढ़िया के समान, बिदा नहीं किया है ।

वह बड़ी प्रसन्न मुद्रा में था ज्योंही उसने राजुमिखिन का मकान ढूँढा । उसे शीघ्र ही मकान मिल गया । दरवाजे खुले थे । रासकोल्नीकोव ने राजुमिखिन को बुलाया । वह एक दम भागता हुआ द्वार पर आया ।

"मैं तुमसे यह कहने आया हूँ कि तुम बाजी जीत गये । यद्यपि मैं, तुम्हारा साथ नहीं दे सकता । मैं इतना कमज़ोर हूँ कि, मैं फौरन ही गिर पड़ूँगा । बस नमस्कार ! कल मेरे यहाँ आना ।"

'तुम इतने कमज़ोर हो, मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँ ।'

'तुम अपने मेहमानों को देखो ! यह कौन इधर देख रहा है ?"

'यह ? मुझे नहीं मालूम । देखो तुम यहाँ अधिक रुक नहीं सकते ताकि तुम्हारा परिचय करा दिया जाय । और कोई बात नहीं, ठहर जाओ । मैं जोसीमोव को बुलाऊँगा ।"

तत्परतापूर्वक जोसीमोव बाहर आया और मरीज की ओर देख कर बोला "तुम्हें तुम्हें सोना चाहिये । मैं तुम्हें एक पाउडर देता हूँ तुम लोगे न ?"

सहित। "भगवान! उसको क्या हो गया है?" दोनों रो पड़ीं और इस आने वाली दरम्यान रहीं। रास्कोल्निकोव के देखते ही वे खुशी से चिल्ला पड़ीं। वे उसकी ओर दौड़ीं, पर वह पत्थर की भाँति खड़ा रहा। वह एक कदम आगे बढ़ा, डगमगाया, और जमीन पर गिर पड़ा। राजुमिखिन जो पास ही खड़ा था, वह दौड़कर एक दम झपटा और बेहोश होते हुए को अपनी सबल बाहुओं में भर कर बिस्तर पर सुला दिया।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं,।" उसने उन्हें बताया, "यह केवल बेहोशी का फिट है। डाक्टर ने यही बताया।"

माँ और बहिन ने उसकी ओर कृतज्ञतापूर्ण नेत्रों से देखा, जैसे कि ईश्वर का भेजा हुआ हो।

तीसरा भाग

१

रास्कोल्नीकोव अधमरा होकर कोच पर बैठ गया। उसने माँ और बहिन की बाँहें पकड़ीं। उसके चेहरे पर दुःख और परेशानी के भाव थे। पुल्खेरिया—अलेक्सान्द्रोवना इसे देख कर डर गई और रोने लगी। अव्दोत्या रोमानोवना पीली पड़ गई और भाई के हाथ में उसका हाथ काँपने लगा।

"आप लोग अपने निवास स्थान चले जायें—इसके साथ" उसने टूटी हुई आवाज़ में राजुमिखिन की ओर इशारा करते हुए कहा। "कल तक के लिये चले जाय और तब——। लेकिन तुम लोग आये कब ?"

"हम अभी ही आये हैं, रोदिया !" पुल्खेरिया अलेक्सान्द्रोवना ने उत्तर दिया "रोदिया। मैं अब तुम्हें कभी भी छोड़ नहीं सकती ! मैं सारी रात यहीं ठहर कर तुम्हारी देखरेख करूँगी—'

"मुझे परेशान न करो।" झुंझलाते हुए उसने कहा।

"मैं इसके पास रहूँगा।" राजुमिखिन ने संक्षेप में कहा।

"मैं कैसे आपको पूर्ण रूप से धन्यवाद दूँ !" पुल्खेरिया।

"मैं ऐसा नहीं चाहता, नहीं चाहता," उसने कुपित स्वर में कहा, "मुझे मत सताये जाओ! एक दम चले जाओ! मैं यह सहन नहीं कर सकता !"

"मामा! अपन चलें," दूनिया ने कानाफूँसी की, "अभी तो किसी भी तरह इसके पास से चले चलो, हमारी उपस्थिति से इसको परेशानी होती है।"

"और हम तीन वर्षों के बिछुड़ने के पश्चात् क्या मैं कुछ मिनिट भी इसके साथ नहीं व्यतीत कर सकती ?"

"जरा ठहरो," रास्कोल्नीकोव ने कहा, "तुम हमेशा बाधा देती हो और मैं भूल जाता हूँ कि मैं क्या कहने वाला था। क्या तुम लूज़िन से मिलीं ?"

यह बातचीत मकान मालकिन के द्वार के सामने ही हुई। बाहरी सीने पर नास्तासिया लैम्प लिये खड़ी थी। राजुमिखिन इस समय काफी उत्तेजित था। उसने दोनों नारियों का हाथ पकड़ रखा था।

"तुम्हें मकान मालकिन से ऐसी बात पूछने का विचार भी नहीं करना चाहिये, यह तो सबसे ऊँचे किस्म का पागलपन होगा। तुम रोदिया की माँ हो सकती हो, पर यदि तुम यहाँ रहीं तो इससे उसे और गुस्सा छूटेगी और तब परमात्मा ही जाने कि क्या होगा। अब सुनो कि मैं क्या राय देना चाहता हूँ। इस वक्त नास्तासिया उसकी देख-रेख करती है। अब तक मैं तुम दोनों को घर पहुँचा आऊँ, क्योंकि सेंट पीटर्सबर्ग में रात्रि के समय इस प्रकार की औरतें अकेले जाने का साहस नहीं करेंगी। तुम लोगों को घर पहुँचा कर मैं फिर यहाँ भागा हुआ आऊँगा, और पन्द्रह मिनटों में ही, मैं वायदा करता हूँ कि उसका हाल तुम्हारे पास सुना जाऊँगा कि वह सो गया है या नहीं! अच्छा, तब सुनो! दूसरी बात मैं अपने घर जाऊँगा—और मैं जोसीमोव—डाक्टर को लाऊँगा ताकि इसका इलाज कर रहा है। मैं उसे अपने मरीज के पास लाकर फिर तुम्हारे पास आऊँगा, ताकि एक घन्टे में तुम्हें अपने पुत्र के दो समाचार मिल जायेंगे—पहिली मेरी और दूसरी डाक्टर की जो और भी अधिक महत्व की है। यदि तुम्हारे बेटे की हालत खराब होगी, मैं वायदा करता हूँ कि तुमको फिर वापिस ले आऊँगा, यदि वह अच्छा होगा तो तुम लोग सो जाना। मैं सारी रात यहीं, कोरीडोर में, व्यतीत करूँगा ताकि उसे कुछ भी ज्ञात न हो, और मैं मकान मालकिन से जोसीमोव के लिये सोने की व्यवस्था कर लूँगा, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह काम आ सके। क्या तुम मुझपर विश्वास करोगी? बताओ?"

"आओ अपन चलें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपना वचन निभायेगा। क्या मेरे भाई का जीवन इसकी फिकर पर आश्रित नहीं है और यदि डाक्टर रात भर यहाँ रहने को तैयार हो जाय तो इससे अधिक हम और क्या चाह सकते हैं?

"आओ तुम समझ गई मेरा आशय, तुम देवी हो!" जोश में आक

राजुमिखिन ने कहा ' चलो चलें ! नास्तासिया, लैम्प लेकर एक दम ऊपर आओ और उसके पास ही ठहरना मैं पन्द्रह मिनिट में आता ।"

पुलचेरिया अलेक्सेन्द्रोवना को यद्यपि पूर्ण रूप से सन्तोष नहीं हुआ पर उसने कोई आपत्ति नहीं की। राजुमिखिन ने दोनों की बाहें पकड़ीं और घसीटता सा सीढ़ियों के नीचे ले गया।

"मैं रात को एक झपकी लेने भी नहीं छोड़ूँगा। जोसीमोव ने अभी कहा था कि उसे डर है कि कहीं वह पागल न हो जाय—इसी वजह से उसे अधिक उत्तेजित होने से बचाना है।"

"तुम क्या कह रहे हो ?" माँ चिल्लाई ।

"क्या यह सम्भव है कि डाक्टर ऐसा कह सकता है ?" बहिन ने पूछा।

"उसने कहा है, पर वह गलती पर है, मेरी भूल। उसने रोडिया को कुछ दवा दी—पाउडर—जिसे मैंने देखा, और अभी तुम लोग आये। कितना अच्छा हुआ होता यदि तुम लोगों ने कल तक और प्रतीक्षा कर ली होती। इसने हर तरह अच्छा ही किया। एक घण्टे में जोसीमोव स्वयं आकर उसके हाल के बारे में बतायेगा।"

"यह तुम लोगों का निवास स्थान आ गया और पोटर वास्तव में रासकोलनीकोव के द्वारा अपमानित होने के ही योग्य था, क्योंकि उसने तुम्हें ऐसे स्थान पर रखा। उसने हिम्मत कैसे की तुम्हें यहाँ ठहराने की ?—यह बदनाम है। जिस किस्म के लोग यहाँ रहते हैं उन्हें जानती हो ? और तुम्हारा उसके साथ सम्बन्ध स्थापित हुआ है क्या ?"

"मेरी बात सुनो, श्री राजुमिखिन, आप भूल रहे हैं—" पुलचेरिया ने आरम्भ किया।

"हाँ, हाँ, तुम ठीक कह रही हो मैं भूल गया, मैं उसके लिये शर्मिन्दा हूँ। अच्छा चलो चलें। मैं इस लोटोकोर को जानता हूँ, मैं पहिले भी आया हूँ, यहाँ नम्बर तीन में कुछ गोलमाल था। आपका कमरा कौन सा है ? नम्बर ८ ? ठीक, तब आप इस रात्रि में इसी भीतर से बन्द कर लीजिये और किसी को भी अन्दर मत आने देना। अच्छा नमस्कार।"

"हे ! परमात्मा !! दुनेच्का ! क्या होने जा रहा है ?' पुलचेरिया अलेक्जेण्ड्रोवना ने अपनी लड़की से, उत्सुक होकर उससे पूछा।

"घबराओ मत, मामा" दूनिया ने टोपी और चोगा उतारते हुए जवाब दिया। "परमात्मा ने इस आदमी को हमारी सहायता के वास्ते भेजा है। मुझे विश्वास है कि हम इस पर निर्भर रह सकते हैं।"

"ओह ! परमात्मा ही जाने कि क्या वह कभी वापिस आयेगा ! मैं रोडिया को अकेले छोड़ने का निश्चय ही कैसे कर सकी ? उसने हमारा किस तरह स्वागत किया !"

'यह बात नहीं है, मामा। तुम उसे अच्छी तरह देख नहीं सकीं क्यों कि तुम तो सारे समय रो रही थीं। इस भयङ्कर बीमारी से वह काफी खिन्न हो चुका है, और इन सब का कारण यही है।"

'ओह ! यह बीमारी ! इसका अन्त क्या होगा ? और, दूनिया ! किस विचित्र प्रकार से वह तुम से बोला। "अपनी लड़की की आँखों को पढ़ते हुए माँ ने "मुझे पूर्ण आशा है कि कल वह अपना निश्चय बदल देगा।' उसको सचेत करते हुए उसने फिर कहा।

"जब कि मुझे विश्वास है कि वह अपनी राय पर कायम रहेगा—उस विषय पर" पुल्चेरिया रोमनावना ने कहा।

विषय बड़ा नाजुक था। दूनिया ने माँ को चूमा, जिसने कि कुछ नहीं कहा, लेकिन उसे कस कर चिपटा लिया, और तब, राजुमिखिन के आने की प्रतीक्षा में बैठ गई। उसकी आँखें लड़की पर जमीं, जोकि कमरे में इधर उधर हाथ बाँधे घूम रही थी— विचारों में विभोर। ऐसे समय माँ ने उसे उस पर ही छोड़ देना ठीक समझा।

वह लम्बी और सुन्दर थी सुडौल भी थी, और हर प्रकार आत्म विश्वास की झलक दीखती थी। नाक नक्शे में वह अपने भाई के समान थी तब भी वह सुन्दर कही जा सकती थी। उसकी चमकती हुई काली आँखों में घमण्ड का बोध होता था, या कि कभी कभी आनन्द मधुरता में परिणित हो जाती थीं। वह पीली थी लेकिन बीमार नहीं, इसके विपरीत उसका चेहरा तन्दुरुस्त और ताजा लगता था। मुँह तनिक सा चेरी के रङ्ग जैसा नीचे का ओंठ

भोला सा था। उसके चेहरे का भाव गम्भीर और शोकपूर्ण। राजुमिखिन ने ऐसा कभी भी नहीं देखा था कोई, वह विश्वसनीय, ईमानदार, और स्पष्टवादी तथा शराब से दूर—था।

माँ के चेहरे पर विगत सुन्दरता की झलक अवशेष थी, यद्यपि वह अब तैंतालीस वर्ष की थी; वह अपनी आयु की नहीं लगती थी, जैसा कि अक्सर उन औरतों के साथ होता है जो कि अपनी स्फुट भाव शक्ति (Lucid Faculty) को, विक्षोभ-ज्ञानशक्ति, तथा निर्मल, ईमानदार और सच्चे हृदय को, अन्त तक बनाये रखती हैं। पुलचेरिया अलेक्जैन्ड्रोवना स्वभाव से स्नेही तथा सुकुमार थी, यद्यपि कमजोर नहीं; हालाँकि डरपोक और झुकने वाली थी पर ध्येय, ईमानदारी तथा विचारों पर आँच आने पर टिकने वाली।

राजुमिखिन के जाने के बीस मिनिट पश्चात द्वार पर दो बार खट खट सुनाई पड़ा। वह फिर वापिस आया था "मैं भीतर नहीं आ रहा हूँ। मेरे पास समय नहीं है," उसने द्वार खुलने पर शीघ्रतापूर्वक घोषित किया। "वह मेमने की भाँति सो रहा है और लगभग दस घंटे तक सोने की आशा है। नास्तासिया उसके साथ है और जब तक मैं न आऊँ उसे नहीं हटने की आज्ञा है। अब मैं जोसीमोव की तलाश में जाता हूँ। वह उसकी रिपोर्ट तुम्हारे पास लायगा और तब तुम्हें सोना चाहिये, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग कितने थके हो।" मुश्किल से ये शब्द कहते हुए वह गायब हो गया।

"कितना फुर्तीला और चतुर नवयुवक है!" प्रसन्नता से माँ ने कहा।

"वह वास्तव में अत्यन्त दयालु मालूम पड़ता है।" दूनिया रोमनोवना ने कहा और फिर कमरे में इधर से उधर टहलने लगी।

लगभग एक घंटे के पश्चात कोरीडार में सीढ़ियों पर खटपट हुई और फिर द्वार पर थपकी। इस समय दोनों औरतें, राजुमिखिन के दिये हुए वायदे का विश्वास के साथ इन्तजार कर रही थीं। और वह जोसीमोव के साथ वापिस आया। इन दस मिनिटों में, जब कि जोसीमोव वहाँ रहा, उसने पुलचेरिया अलेक्जैन्ड्रोवना के दुःख को कम किया। उसने अपने मरीज में

अधिक रुचि बतलाई। यद्यपि उसने एक ही दृष्टि में अव्दोतिया रोमानोव्ना के सौन्दर्य को देख लिया था, तथापि उसने उसपर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। उसने सारी बातें पुल्खेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना की ओर मुँह करके ही कहीं।

उसने घोषित किया कि अब रास्कोल्नीकोव अत्यंत सन्तोषजनक हालत में है। उसने अपने मरीज की बीमारी का कारण अधिकतर ही खराब भौतिक परिस्थिति बताया जिसमें कि वह गत कई माह से रह रहा है, लेकिन, उसके कुछ मानसिक कारण हैं। "लेकिन हमें यह ध्यान रखना है," उसने कहा, "कि आज तक मेरा मरीज लगातार सन्निपात में रहा, और यह कि उसके आने वाले मित्र उसका ध्यान बटाये रख सकें, जो कि उसे शक्ति प्राप्त करने में सहायक है तथा लाभकारी प्रभाव करता है—अर्थात्, यदि हम उसे कोई नये सदमे से सुरक्षित रख सकें।' तब वह उठा और नम्रतापूर्वक झुका और धन्यवाद तथा आशीर्वादों के बीच विदा हुआ।

"हम सारी बातें कल मालूम करेंगे, अब एक दम सो जाओ, अब आप लोगों के आराम करने का समय है," राजुमिखिन ने जोसीमोव के साथ बाहर जाते हुए कहा। "मैं प्रातःकाल सूचना लाऊँगा।'

वे चुपचाप बिना कहे चलते रहे और जब कि रास्कोल्नीकोव के स्थान पर पहुँच गये तो राजुमिखिन जो कि विचारमग्न था, बोला।

'मैं रसोई घर में सोऊँगा और तुम मकान मालकिन के कमरे में सोना। तुम्हें अवसर मिलेगा कि तुम उससे जान-पहिचान कर लो।"

"मैं तो ऐसी कोई बात नहीं कर रहा हूँ।"

"मित्र, वह बड़ी शरीफ औरत है—चुप और डरपोक, पवित्र और बड़ी स्नेही! मुझे परमात्मा के लिये उससे छुटकारा दिलवाओ। वह मेरा इतना ध्यान रखती है कि मैं परेशान हूँ।"

जोसीमोव बड़ी जोर से हँसा। " स्पष्ट है कि तुमने अपनी निगरानी नहीं की, तुम जो कुछ कहना चाहते हो उससे अधिक जानते हो! लेकिन मैं उसे प्यार क्यों करने लगूँ!'

"मैं विश्वास दिलाता हूँ, कि उसे मोहने में तुम्हें तनिक भी कठिनाई नहीं होगी; तुम्हें केवल कुछ गप लगाते रहना है। एक कुर्सी उसके पास

उसका बैठ जाओ और बात करते जाओ। और, फिर तुम डाक्टर हो, उसकी छोटी-मोटी बीमारी को भी अच्छा कर सकते हो। मुझे विश्वास है कि तुम कभी भी पछताओगे नहीं।"

"लेकिन इन सब बातों से होगा क्या है?"

"क्या मैं आप समझाने में असफल रहा? तुम्हें नहीं मालूम क्या कि तुम दोनों एक दूसरे को खूब चाहोगे? लेकिन अब हम काफी बातचीत कर चुके; अब चलें सोयें। सुनो। मैं कभी कभी रात में जागता हूँ, और यदि मैं जागा तो मैं यह देखने जाऊँगा कि रोगिणी कैसी है, तो मुझे जाते देख कर डर मत जाना।"

२

दूसरे दिन प्रातः काल, सात बजे के बाद, राजुमिखिन सोकर उठा—ऐसी चिन्ताओं से ग्रसित जो उसे कभी भी नहीं हुई थी। पीटर पीत्रोविच को, इतनी स्वतन्त्रता से बोलने का उसे क्या अधिकार था? उसकी राय किसने पूछी थी। इसके अलावा क्या यह कभी भी संभव था दूनेचिका रासकोल्निकोवा सरीखी कोई उससे, केवल मौखिक बात के कारण, विवाह करेगी? पीटर में कोई न कोई योग्यता तो होनी ही चाहिये।

"खैर," वह बड़बड़ाया "अब सब कुछ हो गया, और अब अपने बुरे कामों को धोने का विचार करना भी बेकार है। उसका तो विचार भी छोड़ देना चाहिये, और बिना कुछ कहे उनके सामने मुझे जाना चाहिये——केवल अपना काम सम्पादित करूँगा। मैं एक शब्द भी नहीं कहूँगा—अब तो बहुत देर हो गई अभी तो हो ही चुकी।"

विशेष ध्यानपूर्वक उसने कपड़े पहिने। और नास्तासिया से सूप के लिये कह कर, वह हाथ मुँह धोने चला गया।

उसके उस नाश्ते—एक मुर्गी—नास्त्या को जोसीमोव के आने से बाधा पहुँची। वह मकान मालकिन के घर में रात्रि व्यतीत करके, कुछ देर के लिये अपने घर चला गया था। और अब वह अपना मरीज देखने आया था। राजुमिखिन ने उसे सूचित किया कि रासकोल्निकोव चूहे की भाँति सो रहा है। जोसीमोव ने आज्ञा दी कि उसे जगाना नहीं है; और दस और ग्यारह

"मैं क्या कहूँ ! गत अठारह माह से मैं उसे जानता हूँ । वह उदास दुःखी, जिद्दी और घमण्डी है । अब वह शक्की भी हो गया है । वह दयालु तथा उदार है, लेकिन अपने भावों का प्रदर्शन नहीं कर सकता, इसलिये शीघ्र ही उदारता के स्थान पर कुछ रूखापन लगेगा ! कोई भी कह सकता है कि उसमें दो प्रकृतियों का सामञ्जस्य है, जो कि बारी बारी से प्रकट हो जाती हैं । वह कभी इस बात की चिन्ता नहीं करता कि दूसरे उससे क्या कहते हैं । उसे अपनी योग्यता पर बड़ा विश्वास है । मैं और क्या कहूँ ? आपका आना तो शायद अनिवार्यनीय प्रभाव डालने वाला सा लगता है ।"

"परमात्मा ऐसा ही करे ।"

रजुमिखिन ने शीघ्र ही, कई बातों से यह जान लिया कि दोनों महिलायें काफी गरीब थीं ।

"तुमने मेरे भाई के चरित्र के बारे में बड़ी अजीब बातें बताईं—और वह भी निष्पक्ष भाव से । बिल्कुल ठीक ही है, मैंने विचार किया था कि तुम उसके, केवल प्रशंसक ही हो । मेरे विचार से किसी नारी ने उसके जीवन को प्रभावित किया है ।"

"मैंने ऐसा कभी नहीं कहा; शायद तुम ठीक ही कहती हो, लेकिन—"

"क्या ?"

"वह किसी को प्यार नहीं करता और न ही वह कभी करेगा ही ।"

"तुम्हारा आशय है कि वह प्रेम के अयोग्य है ?"

"तुम जानती हो क्या पुल्खेरिया रोमानोवना । कि तुम किस बुरी तरह से अपने भाई के समान हो—हर प्रकार से ?" पुल्खेरिया रोमानोवना ने उसकी ओर देखा, और मुस्कराये बिना न रह सकी ।

"तुम दोनों रोदिया के चरित्र के बारे में भूल करते हो । दूनेच्का, मैं आजकल की नहीं कहती । इस पत्र में पीटर क्या लिखता है, और हम तुम जो विचार करते हैं, वह सत्य नहीं हो, लेकिन तुम विचार कर सकते हो, इसीलिये मेरी चिंता कि वह कितना सनकी हो गया है । बहुत दूर बरसों बाद हो अभी लगभग अठारह माह पहिले, उसके, अपनी मकान मालकिन की लड़की से विवाह करने के निश्चय ने, मेरा दिल तोड़ दिया था । जैसा कि तुमने भी सुना हो ।

"क्या तुम्हें सारा हाल ज्ञात है ?" पुल्केरिया रोमनोवना ने पूछा।

"क्या तुमने ऐसा नहीं विचार किया कि वह मेरे आँसुओं के सामने झुक जायेगा और अपनी कठिनाइयों और मेरी बीमारी का ध्यान देगा ? बल्कि इसके विपरीत उसने अपनी इच्छा की पूर्ति की होती—बिना किसी विचार को ध्यान में लाये हुए। फिर भी ऐसी बात नहीं है कि वह हमें प्यार नहीं करता।"

"इस विषय पर उसने मुझसे कभी कुछ नहीं कहा। लेकिन इसके बारे में मैंने कुछ सुना है।"

"अच्छा तुमने क्या सुना।" दोनों महिलाओं ने पूछा।

"ओह ! कोई विशेष मजेदार बात नहीं ! यही कि यह शादी, जो कि सब कुछ तय हो गई थी, और लगभग होने ही वाली थी जब कि लड़की मर गई, श्रीमती जारनीतज को पसन्द नहीं थी। कुछ लोग कहते हैं कि उस लड़की की सूरत शकल अच्छी नहीं थी—वास्तव में वह बहुत सादी थी। फिर भी कुछ न कुछ आकर्षण तो उसमें रहा ही होगा था—'

"मेरे विचार से निसन्देह ही उसमें कुछ अच्छाई रही होगी।" पुल्केरिया रोमनोवना ने कहा।

'मैं उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर प्रसन्न हूँ, इस कारण परमात्मा मुझे क्षमा करे ! फिर भी, मैं नहीं जानती कि विवाह इन दोनों में से किसके लिये अधिक घातक होता।' माँ ने कहा। उसने फिर राजुमिखिन से बीते हुए दिन के उस दृश्य के बारे में पूछा जो लूशिन तथा रासकोल्नीकोव के बीच घटित हुआ था। नवयुवक ने जो कुछ देखा था सारा हाल सुनाया, लेकिन अन्त में उसने कहा कि उसके विचार से रासकोल्नीकोव ने जानबूझ कर पीटर पीट्रोविच की बेइज्जती की।

"उसने इसका निश्चय बीमार पड़ने के पहिले ही कर लिया होगा।" उसने कहा।

"मेरा भी यही विचार है", पुल्केरिया अलेक्सेन्ड्रोवना ने कहा। लेकिन अब उसे इस पर अचरज हो रहा था कि राजुमिखिन पीटर के लिये बड़े *सम्मानजनक शब्दों में बोल रहा था। यह बात पुल्केरिया रोमनोवना को* भी लगी।

"देखा, दमित्री प्रोकोफिच—"उसने आरम्भ किया ।' मैं दमित्री प्रोकोफिच के साथ खुलकर बातें कर सकती हूँ न, दूनेच्का ?"

"निस्सन्देह, मामा," अधिकार पूर्ण शब्दों में लड़की ने कहा ।

"बात इस प्रकार है; आज सुबह एक पत्र पीटर के यहाँ से; हमारे उस पत्र के उत्तर में आया जो हमने यहाँ आने पर उसे भेजा था । और देखो, उसने कल हमें स्टेशन पर आकर मिलने का वचन दिया था, लेकिन उसके स्थान पर आया एक नौकर जो हमें यहाँ ले आया । उसने कहा कि उसका मालिक दूसरे दिन आयेगा । और अब उसने आने के बजाय ये पत्र भेजा । तुम स्वयं ही इसे पढ़ो इसमें जो लिखा है उससे मुझे बड़ी चिन्ता हो गई है—तुम देखोगे कि क्या लिखा है—और तब कृपा कर अपनी स्पष्ट सलाह दो । तुम रोदिया के चरित्र को सब से अच्छी तरह जानते हो और तुम से अच्छा और कोई सलाहकार नहीं हो सकता ।

रजुमिखिन ने पत्र खोला, जो इस प्रकार था; "श्रीमती पुल्चेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना—मैं आपको सूचित करते हुए सम्मानित होता हूँ, कि कल एक अनहोनी घटना ने मुझे स्टेशन पर नहीं आने दिया, लेकिन इसके बदले एक विश्वासपात्र व्यक्ति भेजा था । सीनेट के कार्य मुझे फिर आज सुबह आपके पास आने से रोकेंगे, और शायद मैं माँ का बेटे से मिलन में बाधा डालना चाहता और शायद एवदोत्या रोमानोवना का अपने भाई से । परिणाम स्वरूप, लगभग ८ बजे शाम तक मैं आपसे मिलने का सौभाग्य, आपके ही स्थान पर पा सकूँगा । इस बीच में मैं विशेष रूप से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि रोडियों रोमनोविच अलग ही रखा जाय, क्योंकि जब कल मैं उसके बीमार—कमरे में, उससे मिलने गया था तो उसने मेरी बड़ी बेइज्जती की थी । मैं इस विषय में आपको, पहिले ही चेतावनी भी देना चाहता हूँ कि यदि मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे रोडियों रोमनोविच आपके साथ मिला, तो मैं एक दम वापस हो जाने पर मजबूर हो जाऊँगा इसका उत्तरदायित्व आप पर रहेगा । अब मैंने अपनी आँखों से, वास्तव में, उसे एक शराबी के घर पर देखा जो कि गाड़ी द्वारा कुचल गया था; और उसकी क्रिया कर्म के वास्ते उसने पच्चीस रुपये दे दिये—उस शराबी की लड़की को, जो कि बदचलन है । इस पर मुझे बड़ा

आश्चर्य हुआ, यह जानकर विशेष रूप से कि उस धन को प्राप्त करने में आपको कितनी कठिनाई हुई थी। यह प्रार्थना करते हुए कि आप अपनी पुत्री को मेरा प्रणाम कहियेगा, मैं समाप्त करता हूँ, आदर भक्ति सहित आपका, प. लूज़िन।"

"मैं अब क्या करूँ, दमित्री प्रोकोफिच ?" उसाँसें लेते हुए माँ ने पूछा। "मैं रोदिया से कैसे कहूँ कि वह न आये? कल उसने बुरी तरह ज़ोर देते हुए पीटर से निकल जाने को कहा था, और अब स्वयं उसे आने न दिया जाय!"

"अव्दोत्या रोमानोवना की सलाह लीजिए।" एक पल रुक कर शान्त होकर राज़ुमिखिन ने कहा।

"लेकिन वह कहती है—परमात्मा जाने कि वह क्या कहती है, वह उस कहने का कोई तर्क नहीं देती। उसके कहे अनुसार, यह नितान्त आवश्यक है कि रोदिया को ठीक आठ बजे यहाँ आकर पीटर से मिलना चाहिये। मैं चाहूँगी कि पत्र उसे न बताया जाय, और उसे यहाँ आने से रोका जाय, और मैं तुम्हारी मदद चाहती हूँ। मैं नहीं जान सकी कि उसने इस शराबी की लड़की का इस पत्र में क्यों ज़िक्र किया; रोदिया कभी भी अपना धन उस व्यक्ति को नहीं दे सकता जिसे कि—'

"कई यत्नों के पश्चात् तुमने पाया, मामा!"

'वह कल तमाम दिन आप में नहीं था। यदि आपको यह ज्ञात हो कि किस प्रकार उसने कल कलारी में अपना जी बहलाया! यह नहीं कि उसको बुरी लत पड़ गई हो! वह वास्तव में कल एक मृतक व्यक्ति और एक लड़की के बारे में बात कर रहा था जब कि मैं उसे घर ले जा रहा था लेकिन मैं कुछ समझा नहीं। कल, मैं—स्वयं—"

'मामा! सबसे ठीक तो यही होगा कि हम उसके पास चलें और फिर हमें मालूम पड़ जायगा कि क्या करना है? समय हो रहा है—दस बज चुका है।" अपनी कीमती सोने की घड़ी को निकालते हुए अव्दोत्या रोमानोवना ने कहा।

"वह उसकी भेंट होगी।" राज़ुमिखिन ने विचारा।

'हाँ, चलने का समय हो गया! काफ़ी समय! दूनेच्का! हम

विचार कर सकता है कि कल को उसके स्वागत करने के ढङ्ग पर हम नाराज हैं—यदि हमें और देर हो गई तो।" दूनिचका जाने को तैयारी कर रही थी। "हे परमात्मा!" पुलचेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना चिल्लाई "मुझे डर लगता है, दमित्री प्रोकोफिच!" उसकी ओर देखते हुए उसने कहा।

"डरो मत मामा, उस पर विश्वास रखो। मुझे रोदिया पर विश्वास है।"

"वह तो मुझे भी है, पर गत रात्रि बड़ी बेचैनी से बीती। मैंने रात स्वप्न में स्वर्गीय मार्फा पीट्रोवना को देखा। वह श्वेत वस्त्र धारण किये थी। ओह! दमित्री प्रोकोफिच क्या तुमने मार्फा पीट्रोवना की मृत्यु के बारे में नहीं सुना?'

"नहीं, मैंने नहीं। कौन मार्फा पीट्रोवना?"

"उसकी अचानक मृत्यु हो गई, और जरा विचार—"

"मामा! फिर कभी। इसे यह भी नहीं मालूम कि मार्फा पीट्रोवना है कौन जिसके बारे में तुम बात कर रही हो।"

"ओह! क्या तुम्हें नहीं मालूम? मैं समझी थी कि मैंने तुम्हें बता दिया था। क्षमा करना, दमित्री प्रोकोफिच, इन दो दिनों में मैं बड़ी व्यग्र रही हूँ। मैं तुम्हें अपना सगा ही समझती हूँ, बुरा न मानना। अरे! तुम्हारे हाथ में क्या हो गया? क्या कहीं चोट लग गई?"

"हाँ मुझे चोट लग गई।"

"ओह! मैं भी क्या हूँ! अरे! वह भी क्या गुफा सी है जिसमें वह रहता है। मुझे आशा है कि हम उसे जगा पायेंगे। वह मकान मालकिन उसे कमरा कैसे कहती है? मैं उसके साथ कैसा व्यवहार करूँ? तुम देख ही रहे हो कि मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ?"

"उससे कोई प्रश्न मत करना। उससे स्वास्थ्य के बारे में मत पूछना, क्योंकि उससे उसे नफरत है।"

"ओह! मामा। तुम पीली पड़ रही हो। अपनी हालत ठीक करो।"

"ठहरो। पहिले मुझे देखने दो यदि वह जागा है या।'

दोनों महिलायें धीरे धीरे रज़ुमिखिन के पीछे पीछे चलीं।

३

"यह बिल्कुल ठीक ठाक है ।" जोसीमोव ने सूचना दी—ज्योंही महिलायें भीतर आईं । डाक्टर वहाँ लगभग दस मिनिट से बैठा था । और सोफा की दूसरी ओर रासकोल्नीकोव कपड़े पहिने बैठा था । उसने हाथ मुँह भी धोने का कष्ट किया था और बालों को कन्घा भी—जिसे कि उसने कई दिनों से ऐसे ही छोड़ रखा था । कमरा भर चुका था । नास्ताशिया भी चुपचाप पीछे से आकर खड़ी हो गई थी और बातचीत सुनने खड़ी हो गई । रासकोल्नीकोव गत रात्रि को अपेक्षा अधिक स्वस्थ था, पर पीला पड़ रहा था । बातचीत आरम्भ हो जाने के बाद, डाक्टर ने अनुभव किया कि हर शब्द कुछ दुःख व्यक्त कर रहा था, पर इसके साथ ही यह देख कर आश्चर्य हुआ कि मरीज का संयत (self control) अधिक हो गया है, पिछले दिन का बना हुआ एकांकी-पागलपन कुछ संयमित हो गया है ।

'हाँ अब मैं देख सकता हूँ कि मैं, बिल्कुल ठीक हूँ । और मैं कल की भाँति बातचीत अब नहीं करने वाला हूँ ।' उसने माँ और बहिन से गले मिलते हुए, और रासुमिखिन की ओर देखते हुए और हाथ दबाते हुए कहा ।

"मुझे स्वयं आश्चर्य है कि यह आज बिल्कुल ठीक कैसे हो गया ?" जोसीमोव ने कहा । "यदि इसी प्रकार प्रगति हुई, तो तीन या चार दिनों में यह बिल्कुल ठीक हो जायगा । देखो न, तुम स्वयं भी तो अनुभव कर सकते हो," डाक्टर ने समाप्त करते हुए कहा ।

"हाँ, ऐसा हो सकता है," रासकोल्नीकोव ने शान्त भाव से कहा,

"अब मैं तुम से बात-चीत आरम्भ कर सकता हूँ । मैं तुम्हें यह विश्वास दिला देने का बड़ा उत्सुक हूँ कि तुम्हें इस बीमारी की जड़ को—जिसने इसे इतना बढ़ाया, निर्मूल कर दोः यदि तुम यह कर सके। तुम स्वस्थ हो जाओगे, नहीं तो बीमारी फिर जड़ पकड़ लेगी । मैं इसके मूल कारण से सर्वथा अनभिज्ञ हूँ, पर तुम्हें तो विदित होगी ही । मेरा विश्वास

मैं यह नहीं समझ सकता कि मैंने क्यों कहा था किया था मैं अमुक-अमुक स्थान पर क्यों गया।"

'यह तो एक प्रसिद्ध सिद्धांत है।" जोसीमोव ने कहा। "कोई भी काम अक्सर एकनिष्ठ निपुणता तथा योग्यता से किया जाता है, लेकिन वह सिद्धांत जिसके कारण वह काम होता है, अस्वस्थ दिमाग में परिवर्तित हो जाता है।" 'अस्वस्थ दिमाग' मुहावरे ने वहाँ बैठे लोगों में एक कंपकंपी पैदा की। रासकोल्नीकोव ने, जो अपने ही विचारों में मस्त था डाक्टर के शब्दों को सुना नहीं। उसके होठों पर एक विचित्र मुस्कान फैल रही थी।

'अच्छा, तो वह मनुष्य जो कुचल गया था उसका क्या हुआ! मैंने अभी तुम्हें बीच में टोक दिया।" रजुमिखिन ने जल्दी से पूछा।

"क्या?' जैसे एक दम जाग कर रासकोल्नीकोव ने पूछा। "अरे हाँ मैं उसे खींच कर घर ले गया था इससे खून में तर हो गया था। मामा! कल मैंने अक्षम्य अपराध कर डाला। वास्तव में मैं अपने आप में नहीं रहा हूँगा। वह सारा धन, जो तुमने भेजा था मैंने उस विधवा को दे दिया—क्रिया कर्म के लिये। वह बिचारी औरत दया की पात्र है—वह क्षय रोगी है—और बिना किसी सहारे के वह तीन बच्चों के साथ है, वहाँ एक पुत्री भी है। शायद तुमने भी वही किया होता जो मैंने किया—यदि तुमने उसकी मुसीबत देखी होती। मैं भली प्रकार जानता हूँ कि ऐसा करने का मुझे कोई अधिकार नहीं था जैसा कि मैंने किया, और विशेष रूप से तब, जबकि मुझे मालूम है कि उस धन को भेजने में तुम्हें कितनी कठिनाई पड़ी थी।"

"कोई बात नहीं, रोदिया! इसमें कोई शक नहीं कि तुम हमेशा भला ही काम करते हो।'

"इतना विश्वास नहीं करो।' उसने हँसते हुए कहा।

"क्या तुम्हें मार्फा पीट्रोवना की मृत्यु के बारे में कुछ ज्ञात है, रोदिया?' एकाएक माँ ने पूछा।

'मार्फा पीट्रोवना कौन है?"

"क्यों, मार्फा पीट्रोवना स्वीड्रीगैलोव! मैंने अपने पिछले पत्र में इतना कुछ उसके बारे में लिखा था।"

"ओह हाँ! अब याद आया। और वह मर गई; सच! किस प्रकार मरी?"

"यों ही गिरी और मर गई। जहाँ तक हम कह सकते हैं वह भयंकर आदमी उसकी मृत्यु का कारण था। कुछ का कहना है कि उसने मार कर उसे आधा मौसा कर दिया।"

"क्या उसके घर में कभी ऐसी घटनायें घटीं?" बहिन से रासकोल्नीकोव ने पूछा।

"इसके विपरीत, उसने हमेशा बड़ा धैर्य दिखलाया, और इस प्रकार लगभग सात वर्ष तक चलता रहा और तब एक बार उसने सारा धैर्य खो दिया।"

'तब यदि उसने सात वर्ष धैर्य दिखलाया तो वह इतना खराब नहीं हो सकता। दुनेचका, तुम स्वयं ही उसको बुरा बता रही हो।'

"ओ! वह बड़ा भयंकर आदमी है।"

"यह घटना आज सवेरे घटी थी," पुलकेरिया ने आरम्भ किया, "तब उसने एक दम घोड़े जुतवाने के लिये आज्ञा दी क्योंकि उसका इरादा खाना खाने के बाद कस्बे में जाने का था, जैसा कि अक्सर वह ऐसे अवसर पर करती थी। उसने खूब डट कर खाना खाया, वे लोग कहते हैं—"

"जब कि वह इस बुरी तरह से पीटी गई थी कि काफी बीमार हो गई थी?"

'यह उसकी आदत थी। तब ज्योंही वह टेबल से उठी, उसने नहाने के लिये तैयारी की ताकि वह जाने को एक दम तैयार हो जावे। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि उसका इलाज चल रहा था। उसके पड़ौस में एक झरना है, और वह रोज उसमें नहाती थी। वह मुश्किल से पानी के भीतर गई थी जब कि उसे पक्षाघात (Apoplexy) का फिर आ गया।"

"कोई ताज्जुब नहीं। जोसीमोव।

"और उसके पति ने उसे बुरी तरह पीटा था?"

"इससे उसका क्या सम्बन्ध है?" पुलकेरिया ऐलेक्जेण्ड्रोवना ने कहा।

"पर मामा! मैं नहीं समझ सका कि ऐसी वाहियात कहानी तुम मुझे क्यों सुना रही हो," कुछ भल्लाते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा।

"तुम्हारा निवासस्थान कितना भयानक है रोडिया!" उस दुःख दायी शांति को भंग करने के लिये, पुलचेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना ने कहा।

"यह कमरा? हाँ, मैंने भी यही सोचा था—काश तुम जानती माता! कि तुम्हारे शब्दों का अर्थ क्या है।" उसने एक दम कहा। रासकोल्नीकोव मुश्किल से माँ और बहिन की उपस्थिति सहन कर सका था-जिससे कि लगभग तीन साल से बिछुड़ा था, तो भी उनसे बातचीत करना उसके लिये असम्भव हो गया। "मुझे जो कुछ कहना है उसे सुनो दूनिया! हमारे बीच में जो कुछ बात हुई उसके लिये मैं क्षमा माँगने के लिये तैयार हूँ, लेकिन यह बता देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि तुम्हें लूजिन और मुझ में से एक को चुनना होगा। मैं बदनाम हो सकता हूँ, लेकिन कोई कारण नहीं है कि तुम भी हो। एक ही पर्याप्त है। इसलिये यदि तुम उससे विवाह करो तो उसी क्षण से मैं तुम्हारा भाई नहीं रहूँगा।"

"रोडिया! रोडिया!! तुम फिर कल की तरह बोलने लगे। तुम अपने आपको बदनाम क्यों कहते जा रहे हो? मैं इसे सहन नहीं कर सकती। ये ही शब्द तुमने कल कहे थे।"

'भाई! हमारे तुम्हारे बीच की गलत-फहमी एक ऐसी गलती पर निर्भर है जिसमें तुम फंस गये हो। तुम समझते हो कि मैं किसी और के लिये त्याग कर रही हूँ। इसमें तुम गलती पर हो मैं अपनी इच्छा से विवाह कर रही हूँ।

"वह झूठ बोल रही है।" रासकोल्नीकोव ने सोचा। 'उसे बड़ा घमंड हो गया है कि वह मेरा उपकार करती है!

"संक्षेप में," दूनिया ने कहा "मैं पीटर से विवाह करने वाली हूँ—क्योंकि दो बुराइयों में से, कम वाली मैंने पसन्द की है। वह जो कुछ मुझसे आशा करता है, मैं उसमें निष्ठावान रहना चाहती हूँ और इस प्रकार वह अपनी पत्नि से धोखा नहीं खा सकेगा। तुम अभी हँसे क्यों?" वह लाल हो गई और उसकी आँखें गुस्से में चमकने लगी।

"वह जो कुछ आशा रखता है?" उसने प्रतिध्वनि की—कड़वी हँसी

"कुछ हद तक। वह अपने बारे में बड़े ऊँचे विचार रखता हो, पर मैं आशा करती हूँ कि वह मुझे भी पसन्द करे। तुम फिर क्यों हँस रही हो?"

"और तुम शरमा क्यों रही हो? तुम झूँठी हो, बहिन! तुम लूशिन में कोई रुचि नहीं रख सकती, मैंने उसे देखा और सुन रखा है।"

"वह बिल्कुल झूँठ है मैं झूँठ नहीं बोल रही हूँ। मैं उससे तब तक विवाह नहीं करूँगी जब तक कि मैं उसमें रुचि न पैदा कर लूँ।" उसने चिढ़ते हुए कहा। 'यह विवाह कुत्सित नहीं है, जैसा कि तुमने घोषित किया। वह अत्याचार और तानाशाही के सिवाय कुछ नहीं है। यदि मैं किसी को नुकसान पहुँचा रही हूँ तो वह केवल मैं स्वयं हूँ—मैं किसी वस्तु के लिये दोषी नहीं हूँ! तुम इतनी बुरी तरह मेरी ओर क्यों देख रहे हो ? तुम पीले क्यों पड़ते जा रहे हो? रोडिया! प्यारे रोडिया!!—

हे परमात्मा! वह बेहोश हो रहा है और यह सब तुम्हारे कारण हो रहा है।" पुल्चेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना चिल्लाई

'नहीं यह कुछ नहीं है—केवल कमजोरी है। हाँ तो तुम यह किस प्रकार निश्चय करने वाली हो कि—आज ही कि—लूशिन तुम्हारी रुचि के योग्य है और वह तुम्हें चाहता है?"

"मामा! पीटर का पत्र भाई को बताओ।"

रामकोस्नीकोव ने उसे दोबारा पढ़ा, बहुत संभल के।

"मैं इसे नहीं समझ सकता। वह वकील है फिर भी व्यापारी जैसा पत्र लिखता है। अगर व्यापारियों के समान नहीं भी है, तो भी व्यापारी आदमी के समान है।"

"पीटर पेट्रोविच कभी भी घमण्ड नहीं करता कि वह बहुत पढ़ा लिखा है, उसे घमण्ड है कि वह स्वयं-बना हुआ व्यक्ति है,' भाई के तरीके से जरा विचलित होते हुए दूनिया ने कहा।

हाँ इसके लिये घमण्ड करने के लिये, उसके पास कारण हैं मैं उस पर आपत्ति नहीं करता। इसके विपरीत, मेरा कहना तो उसकी शैली पर है।"

"नहीं मेरे ख्याल से उसने अपने विचार बड़ी सरलता से व्यक्त किये

है—और यह कि उसमें शैली की प्रतिभा नहीं—तुम्हारा कथन न्याय सङ्गत हो सकता है," दूनेच्का ने कहा।

"इस सब में, मैं केवल यही बात देख पाता हूँ कि वह मुझे तुम्हारी नज़रों में गिरा दे और मुझे तुम से अलग कर दे। वह बुद्धिमान है पर, विवेक कुछ और चाहता है। यह सब बतलाता है कि वह कैसा व्यक्ति है, और न मैं तुम्हारे प्रति ही कोई भाव उसमें पाता हूँ। यह मैं तुम्हारे लिये ही कहता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ।" दूनेच्का ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह शाम की प्रतीक्षा में थी।

"अच्छा रोदिया! तुमने क्या तय किया?" मां ने पूछा।

"क्या मतलब?"

तुमने देखा कि पीटर ने क्या लिखा है। इसीलिये मैं पूछती हूँ कि तुम क्या करना चाहते हो।"

"मेरे निश्चय करने से कोई लाभ नहीं। यह दूनिया और तुम्हारे लिये है।" उसने तटस्थ होकर कहा।

"दूनेच्का ने तो निश्चय कर लिया है और मैं उससे सहमत हूँ—बिलकुल।" मां ने कहा।

"मैं इस मीटिंग में तुम्हारा होना नितान्त आवश्यक समझती हूँ, रोदिया और तुम से याचना करती हूँ कि अवश्य आना। आओगे न?" दूनिया ने कहा।

"हाँ।"

"मैं बड़ी आभारी हूँगी," रज़ुमिखिन से कहा "मामा, मैं दमित्री प्रोकोफिच से भी आने को कह रही हूँ।

"बिलकुल ठीक। पीटर पीट्रोविच को भले ही बुरा लगे।" पुलचेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना ने कहा।

४

इसी समय द्वार बिना शब्द हुए खुला, एक लड़की घुसी, भय से चारों ओर देखती हुई। रास्कोलनीकोव ने पहले तो उसे नहीं पहचाना। यह

सोफिया सेमेनोवना मारमेलादोव थी। इस समय वह एक नेक लड़की, मामूली कपड़ों में और संकुचित चेहरे की लग रही थी। इस अवसर को देख कर—जिसकी कि उसे आशा नहीं थी वह इतनी घबरा गई कि वापिस होने को हुई।

"आह! तुम हो क्या?" रास्कोल्निकोव।

उसे लूज़िन का पत्र ध्यान में आया जिसे माँ और बहिन ने पढ़ा था, जिसमें कि किसी 'बदनाम व्यक्ति' का ज़िक्र था।

"मैंने वास्तव में तुम्हारी आशा नहीं की थी।" विचारों में उसे बुलाते हुए और बैठने के लिये इशारे से उसने कहा। 'कृपा कर बैठो। तुम मेरे [illegible] से कैथराइन इवानोवना के पास से आ रही हो? क्षमा करना वहाँ नहीं यहाँ पर।"

सोफिया के आने पर राजुमिखिन जो कि द्वार के पास बैठा था खड़ा हो गया और उस लड़की को रास्ता दिया। रास्कोल्निकोव ने उसे राजुमिखिन की कुर्सी की ओर इशारा किया।

"तुम यहाँ आओ।" उसने मित्र से कहा कोच पर उस स्थान पर बैठने को जिसे डाक्टर ने अभी खाली किया था।

सोफिया बैठ गई काँपती हुई डरते हुए दोनों महिलाओं की ओर देखते हुए, कुछ विचारों से परेशान होती हुई वह एक दम खड़ी हो गई, और रास्कोल्निकोव से कहा। "म—मैं—थोड़ी देर के लिये ही आई हूँ। आपको व्यथा पहुँचाई इसके लिये क्षमा चाहती हूँ। कैथराइन इवानोवना ने मुझे भेजा है। पास कोई और आदमी न होने के कारण, उसने आपसे प्रार्थना की है कि आप कृपा करके कल प्रातः क्रियाकर्म के लिए सेंट [illegible], आयेंगे—और उसके बाद हमारे यहाँ—मेरा मतलब उसके यहाँ—कुछ जलपान के लिये उन्हें आशा है कि आप अवश्य कृपा करेंगे।"

"मैं अवश्य कोशिश करूँगा। अवश्य ही। कृपा कर तुम बैठ जाओ। तुम्हें कोई जल्दी तो नहीं है? मैं तुम से बात करने को उत्सुक हूँ।" सोफिया ने आज्ञा पालन की।

उसका चेहरा खिल गया, वह पीला पड़ गया, उसकी आँखों से आग निकलने लगी। "माँ, यह सोफिया सेमेनोव्ना मारमीलाडोव है, श्री मारमीलाडोव की पुत्री जो कि कल घायल हुआ था, और जिसके बारे में मैंने कहा था।

माँ ने उसकी ओर देखा और शांतिपूर्वक नेत्रों को बन्द कर लिया। दूनेचका ने उसकी ओर देखा और उसका निरीक्षण आरम्भ किया।

"मैं तुम से पूछने वाला था कि तुम्हारे यहाँ आज क्या विशेष बरबा-दी। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हें सताया तो नहीं गया न, पुलिस आदि द्वारा ?"

"नहीं, असाधारण तो कुछ भी नहीं हुआ, सिवाय इसके कि पड़ोसी अप्रसन्न हैं।"

"यह क्यों ?"

"वे कहते हैं कि शरीर अधिक देर तक रखा गया है—अब गर्मी के दिन हैं। इसलिये आज रात को चेपल में ले जाई जायगी। पहिले तो केथराइन इवानोव्ना ने आपत्ति की, पर बाद में स्वीकार किया कि इसे रखा नहीं जा सकता।"

"तो आज ही शरीर हटाया जायगा ?"

"केथराइन आशा करती है कि कल आप दफन के समय आने का कष्ट करेंगे, और फिर उसके बाद भोजन पर।"

"क्या ! क्या वह ऐसा फैलाव कर रही है !"

"हाँ मामूली सा। उसने मुझे आपको उस सहायता के लिये धन्यवाद देने को भी कहा है। आपके बिना हम कोई भी खर्च नहीं कर सकते थे।"

लड़की के चेहरे पर निचले भाग में एक दम कंप-कंपी छागई। पर उसने अपने आपको संयत किया, और एक बार फिर नीचे की ओर देखा। वह अपनी अवस्था से कहीं अधिक कम दिखती थी। यद्यपि अठारह वर्ष की थी पर बच्ची ही लगती थी।

"पर क्या यह संभव है कि इतने से धन से केथराइन इवानोव्ना सब कुछ कर लेगी, और फिर यह एक भोज भी देना चाहती है ?"

"कफ़न तो बड़ा साधारण सा होगा, और हर काम बड़े मामूली ढंग से होगा। सब कुछ खर्च होने पर भी काफी बच रहेगा।

मैं समझा—समझा—ठीक ही तो—मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे कमरे को देख रही हो? मेरी माँ कहती है कि यह कब्र की भाँति है।"

"कल आपने अपना सब कुछ हम लोगों को दे डाला!" उसकी ठुड्डी और ओठ फिर काँप कर रह गये। जाने के साथ ही उसने अनुभव किया था कि रस्कोल्निकोव कितना गरीब है और यह शब्द उसके मुँह से एकदम निकल पड़े थे। फिर शान्ति हो गई थी। दूनिया और पुल्चेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना ने सोनिया की ओर सम्भ्रम देखा।

"रोदिया तो यह समझ जाय कि हम साथ ही खाना खायेंगे।" माँ ने कहा "दूनेच्का, चलो चलें। रोदिया! मुझे भय है कि हमने तुम्हें थका दिया है।"

"हाँ हाँ मैं आऊँगा, इसके अलावा मुझे सम्मिलित भी तो होना है।" उठते हुए उसने कहा।

"मैं समझता हूँ कि तुम अकेले ही खाने नहीं जा रहे हो? तुम नहीं जा सकते?" रजुमिखिन ने कहा।

"नहीं नहीं, मैं अवश्य आऊँगा। पर तुम एक मिनिट ठहरो। माँ तुम्हें इसकी अभी तो आवश्यकता नहीं है?"

"बिल्कुल नहीं! और मैं आशा करती हूँ दमित्री प्रोकोफिच, कि तुम आकर खाना खाने का अवश्य कष्ट करोगे?" माँ ने कहा।

"अच्छा आना, कृपा करके!" दूनिया ने बोला।

नमस्कार रोदिया! नमस्कार [illegible]।"

पुल्चेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना ने सोनिया से भी नमस्कार करना चाहा, पर ठीक निश्चय नहीं कर सकी और जल्दी से बाहर निकल गई। जब माँ के पीछे दूनिया चली तो सोनिया के सामने से जाते हुए वह उसके सामने एकदम झुकी। लड़की भी उत्तर में झुकी।

"अरे दूनिया! तुम अपना हाथ तो मिलाओ।"

कभी अनुभव नहीं हुआ था। एक अजीब सी अनजानी दुनिया उसके सामने अस्पष्ट सी झलकने लगी। इसे एक दम याद आया कि रास्कोल्नीकोव ने अपने आप ही उसके यहाँ आने को कहा है, वह शायद मातम-पुरसी के लिए सिखे में आज या अभी भी आ जाये!"

'परमात्मा के लिये वह आज न आये! है परमात्मा मेरे घर पर—उस कमरे में—वह देखेगा—परमात्मा!"

वह इस बात को देख कर बड़ी विस्मित हो गई कि घर छोड़ने पर वह किसी अजनबी के द्वारा पीछा की जा रही थी। उसने छिप कर इन दोनों बात करने वालों को देखा विशेष रूप से रास्कोल्नीकोव को जिससे कि लड़की ने बात की थी। वह महाशय फिर धीरे धीरे चले गये, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रहे थे। वह सोनिया की प्रतीक्षा कर रहा था, उसने एक दम उसको, दोन्या से नमस्कार करके अपने घर की ओर जाता हुआ देखा।

'कहाँ कहाँ रह सकती है? मैं कोशिश करूँगा और पता लगाऊँगा। उसने विचार किया।

जब वह सड़क के कोने पर पहुँच गया था तो वह सामने के पेवमेंट पर गया, घूमा, और लड़की को देखा कि उसी ओर आ रही थी, उसने यद्यपि कुछ भी ध्यान नहीं दिया। अब उसने उसका पीछा किया। पचास गज जाने के बाद उसने पेवमेंट फिर पार किया, और जल्दी जल्दी आगे बढ़ कर कुछ ही कदम की दूरी पर उसके पीछे हो लिया। वह लगभग पचास वर्ष का साधारण कद का आदमी था। उसके हाथ में बेंत था जिससे वह सड़क पर ठिक ठिक करता हुआ चल रहा था। हर प्रकार से वह भला लग रहा था। लेकिन वह सेंटपीटर्सबर्ग का नहीं लगता था। उसकी घनी और लम्बी दाढ़ी उसके सिर के बालों से हलके रङ्ग की थी। उसकी नीली आँखें निश्चल थीं। अपने घर पहुँचकर वह भीतर घुसी जबकि वह आदमी उसके पीछे चल रहा था। अहाते में घुसने के बाद, सोनिया ने दाईं ओर का जीना पकड़ा—जो उसके रहने के स्थान पर जाता था। "वाह!" महाशय ने अपने आप, उसी जीने पर चढ़ते हुए कहा। तब प्रथम बार सोनिया ने उसके वहाँ होने का अनुभव किया। उसने नौ नम्बर पर घण्टी बजाई। वहाँ पर चाक मिट्टी से,

'कैपरनाउमोव दर्जी, लिखा था। "वाह!' उस अजनबी ने फिर कहा मानो नम्बर की घण्टी बजाते हुए।

"क्या तुम कैपरनाउमोव के यहाँ रहती हो?" उसने सोनिया से पूछा। मैं यहीं पड़ोस में श्रीमती रेसलिच के यहाँ रहता हूँ—गरट्रूड कारलोवना के कमरों में।' सोनिया ने उसे ध्यानपूर्वक देखा।" मैं यहाँ परसों ही आया हूँ। सोनिया ने कोई उत्तर नहीं दिया। द्वार खुला और वह शीघ्रतापूर्वक घुस गई। वह डर गई थी।

× × ×

राजुमिखिन प्रसन्न मुद्रा में अपने मित्र के साथ पोरफीरियस के यहाँ जा रहा था।

"मैं नहीं जानता था कि तुम भी उस बुढ़िया को वस्तुएँ बन्धक में रखा करते थे। क्या बहुत पुरानी बात थी यह? मेरा मतलब है कि क्या बड़े दिनों से तुम वहाँ जाया करते थे?

'तुम्हारा कहाँ से मतलब है? मैं वहाँ उसकी मृत्यु के दो दिन पहिले गया था' उसने अपनी स्मरण शक्ति पर जोर देते हुए कहा। 'मैं बन्धक से वस्तुएं वापस लेने का अभी इच्छुक नहीं हूँ।' उसने शीघ्रता से कहा।

'ओह तब यही कारण था कि जब तुम मुझे लगा था 'क्या तुम जानते हो कि तुम जब सन्निपात की अवस्था में थे तो सिवाय अँगूठी और घड़ी की चेन के और कुछ नहीं कहते थे। अब मुझे सब बातें स्पष्ट हो गईं।"

'लेकिन क्या वह घर पर होगा?" रासकोलनिकोव ने कहा।

"हाँ हम उसे घर ही पायेंगे। वह बड़ा विचित्र व्यक्ति है जैसा कि तुम भी देखोगे। कुछ बेतुका है, तहजीब की आवश्यकता है उसे। लेकिन वह मूर्ख नहीं है इसके विपरीत यह बड़ा कुशाग्र बुद्धि है उसकी दिमाग की सूझ बड़ी विचित्र है। इसके साथ ही साथ वह पुरानी परिपाटी पर विश्वास करता है। मतलब यह कि वह भौतिक प्रमाणों पर विश्वास नहीं करता। वह अपना काम जानता है। वह तुम से मिलने को भी बड़ा इच्छुक है।"

'मुझ से मिलने को क्यों?"

"ओह ! क्यों कि—। इस बीच में हम अक्सर तुम्हारे बारे में बातें किया करते थे।

वे दोनों चुप हो गये।

'यह मकान आ गया,' राजुमिखिन ने कहा।

"प्रधान बात तो जानने की है" रास्कोल्निकोव ने विचारा, "वह यह कि क्या उसे मेरा कल उस डायन के यहाँ जाना और खून के बारे में पूछना ज्ञात है या नहीं। मुझे सबसे पहिले उसकी आँखें माँपनी हैं, और निश्चित करना है, नहीं तो अपने आपको उसके सामने खोल दूँगा, यद्यपि इसमें मेरा जीवन भी खतरे में हो सकता है।"

रास्कोल्नीकोव एक दम ज़ोर से हँस पड़ा, और उसका अट्टहास जो बेकाबू था, तब तक जारी रहा जब तक कि दोनों पोरफीरियस के घर पर नहीं पहुँच गये। आगन्तुकों की हँसी भीतर सुनाई दे सकती थी।

५

रास्कोल्नीकोव मजिस्ट्रेट के मकान में इस भावना के साथ घुसा कि वह अपने आपको स्वस्थ बनाये है पर इसे सफल बनाये रखने में उसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। रास्कोल्नीकोव ने मकान के मालिक से हाथ मिलाये, और अपने हँसने के मूड को नियंत्रित करने के लिये उसने काफ़ी ज़ोर लगाया और शिष्टाचार के प्रश्नों का उत्तर दिया। लेकिन ज्योंही वह ठीक-ठाक हुआ कि, परिचय के दौरान में उसकी आँखें राजुमिखिन से जा टकराईं।

"अभागे।" राजुमिखिन चिल्लाया, बड़ी ज़ोर से अपने हाथ को उठाते हुए।

इस सकितिक हाव भाव के परिणाम स्वरूप एक सफ़ेद-टेबल उलट पुलट हो गया जहाँ पर कि चाय एक बरतन में रखी थी।

'आपसे प्रार्थना है श्रीमान् लोगो फ़रनीचर क्यों नष्ट करते हैं ! तुम राज्य का नुकसान कर रहे हो।" पोरफीरियस पीट्रोविच ने कहा।

रास्कोल्नीकोव ने दूसरी बार का अन्दाज़ लगाया कि कुछ देर के लिये

जो उसका हाथ मजिस्ट्रेट के हाथ में दबा रहा। पोरफ़ीरियस बनावटपूर्वक हँसा। ज़ेमीतोव एक कोने में बैठा था, आगन्तुकों के आने पर, वह कुछ उठा, और मुस्कराया।

"यहाँ एक बात और विचारणीय है,' उसने विचारा।

ओह क्षमा करना" उसने कहा, "राजुमिखिन तो—'

"बस ठीक है, तुम्हारे भीतर आने के तरीके ने मुझे बड़ा प्रसन्न किया। मैं समझता हूँ कि अब वह यह भी नहीं कहेगा कि 'तुम कैसे हो?' ', राजुमिखिन की ओर इशारा करते हुए पोरफ़ीरियस पीट्रोविच ने कहा।

"मैं नहीं जानता वास्तव में, कि वह मुझसे नाराज क्यों है। मैंने तो उससे यही कहा, जब कि हम आ रहे थे, कि वह रोमियो के समान लगता है—और मैंने यह साबित भी कर दिया।"

"बेशर्म!" राजुमिखिन चिल्लाया।

"ऐसे बुरे समय में तुमसे मजाक करने के लिये उसके पास कोई अच्छा कारण होगा," हँसते हुए पोरफ़ीरियस ने कहा।

"वह बात कहो मजिस्ट्रेट।" राजुमिखिन ने उत्तर दिया जो अब स्वयं भी हँसने लगा था।

"अब मजाक बन्द। काम की बात करें! मुझे इजाजत दो कि मैं अपने मित्र रोडियो रोमनोविच रासकोल्नीकोव से तुम्हारा परिचय कराऊँ, जिसने कि तुम्हारे बारे में काफी सुन रखा है, और जो तुमसे जान-पहिचान के लिए उत्सुक है, अभी तुमसे कुछ परामर्श लेना है। हलो! ज़ेमीतोव, तुम यहाँ कैसे? तो तुम्हारी जान पहिचान है, कब से?"

"इसका क्या मतलब है?" रासकोल्नीकोव ने परेशानी के साथ विचार किया।

पोरफ़ीरियस प्रातःकालीन वस्त्र धारण किया हुआ था। वह लगभग पैंतीस वर्ष का था।

ज्योंही पोरफ़ीरियस ने सुना कि रासकोल्नीकोव को कुछ बात कहनी है, उसने उसे अपनी बगल में ही, सोफा पर बिठा लिया। रासकोल्नीकोव ने, संक्षेप में, अपने पूरे से मामले के सब पहलुओं को बता दिया।

"तुम्हें मामला पुलिस के हाथ में देना चाहिये। तुम्हें बताना चाहिये कि—तुम उस केस से सम्बन्धित मजिस्ट्रेट को सूचना देना चाहते हो कि कुछ माल तुम्हारा भी है। क्या तुम लिखकर दे सकते हो?" पोरफीरियस ने कहा।

"दुर्भाग्य से, अभी मेरे पास पैसा नहीं है। मैं केवल यही लिखना चाहता हूँ कि ये चीजें मेरी हैं,और ज्यों ही सम्भव—'

"कोई बात नहीं। तुम अगर चाहो तो सीधे मुझे लिख सकते हो।"

"क्या मैं बिना टिकट वाले कागज पर लिख सकता हूँ?"

"किसी भी कागज पर।' पोरफीरियस ने लापरवाही से उसकी ओर देखते हुए कहा। रासकोल्नीकोव ने, अन्त में, अपने आप कहा, "वह जानता है।"

"इस तनिक सी बात के लिये आपको कष्ट दिया, इसके लिये क्षमा चाहता हूँ।'

"क्या तुम्हारी माँ तुमसे मिलने आई?" पोरफीरियस ने पूछा।

"हाँ।"

'कब आई?"

"गत रात्रि।'

मजिस्ट्रेट कुछ देर चुप रहा; वह विचार मग्न था। "किसी भी हालत में तुम्हारी चीजें खो नहीं सकती।' उसका शांत उत्तर था। "तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

"तुम उसके यहाँ आने की सोच रहे थे? पर तुम्हें कैसे मालूम कि उसने बन्धक की कुछ वस्तुएँ यहाँ रखी हैं।" रजुमिखिन ने पूछा।

"तुम्हारी चीजें, एक कागज के टुकड़े में लिपटी थीं जिस पर तुम्हारा नाम लिखा था, तारीख भी उस पर उस दिन की पड़ी थी जिस दिन उसने उन्हें लिया था।" पोरफीरियस पीट्रोविच ने रासकोल्नीकोव से कहा।

"तुम्हारी स्मरण शक्ति भी कितनी तेज होनी चाहिये!" जबरदस्ती हँसते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा। "मैं इसलिये कहता हूँ कि बन्धकों के मालिक भी बहुत होंगे।

"लेकिन, करीब सब लोग वहाँ हो चुके हैं। तुम ही नहीं आये थे।"

"मैं अस्वस्थ था।"

"मैंने सुना था। मुझे पता चला कि तुम बड़े कष्ट में हो। तुम अभी भी पीले हो।"

"बिलकुल नहीं। मैं पीला नहीं हूँ। इसके विपरीत मैं बिलकुल ठीक हूँ।" उसने ऐसी आवाज में कहा जो एक दम कठोर सी हो गई थी। "गुस्से में मैं कुछ मूर्खता कर जाऊँगा।" उसने सोचा।

"वह अस्वस्थ सा था, ऐसी सुन्दर अभिव्यक्ति, ठीक है।" राजुमिखिन चिल्लाया। "वह कल तक बिलकुल सुध खोये सा था। कल जब कि वह मुश्किल से खड़ा हो पाता था, न जाने क्यों कहाँ, आधीरात तक, पागलपन में भटकता रहा। क्या ऐसी बात की आप आशा कर सकते हैं?"

"वास्तव में! वह भी पागलपन की अवस्था में?"

"बकवास! एक शब्द पर भी विश्वास मत करना," उत्तेजित होकर रास्कोल्निकोव ने धीरे से अपने आप कहा।

"तुम बाहर ही कैसे जा सकते यदि सन्निपात में नहीं थे तो?" राजुमिखिन ने नाराज होते हुए कहा।

"मैं कल बहुत नाराज होगया था, और उन लोगों से छुटकारा पाने के लिये बाहर चला गया था। श्री जेमीतोव कह सकते हैं कि कल मैं अपने विवेक में था या सन्निपात में।"

"मेरी राय में तुम कल बड़ी अच्छी तरह बात कर रहे थे, केवल कुछ चिड़चिड़ाहट का अनुभव किया था मैंने," जेमीतोव ने कहा।

"अभी, निकोडीमस फोमिच ने कहा था वह तुम्हें बहुत रात गये मिला था, उस आदमी के यहाँ जो कि कुचल गया था—"

"बिलकुल ठीक। यह मेरी भी बात को सिद्ध करता है। तुम उसके यहाँ एक पागल की भाँति व्यवहार नहीं कर रहे थे? जब कि तुमने अपना सब कुछ दे डाला था उसे।" राजुमिखिन।

"पर तुम्हें क्या पता कि मुझे खजाना नहीं मिल गया है?" पोर-फीरियस की ओर, "तुम बड़े भले हो मेरे विचार से?"

"क्या कहते हो ! बिल्कुल उल्टा। मुझे तो बड़ा आनन्द आ रहा है तुम्हारी बातें सुनने में।"

"अपन लोग कुछ चाय पीलें। हम मक्खियों के समान सूख रहे हैं।" राजुमिखिन।

"अच्छा विचार है, पर साथ में तुम और भी कुछ लोगोगे।"

पोरफीरियस पीट्रोविच चाय के लिये बाहर चला गया। "वे लोग उड़ने का नाम नहीं लेते। चूँकि पोरफीरियस कुछ भी नहीं जानता, तब वह क्यों जोसिम से बोला ? अच्छा जो जी में आये करो, पर मेरे साथ इस प्रकार मत खेलो जैसे बिल्ली चूहे के साथ। मान लो मुझे ही धोखा हो गया था ! उनके शब्द तो असाधारण नहीं लगते हैं, हां दूसरा अर्थ निकल सकता है। जेमीतोव ने क्यों अनुभव किया कि मैं अच्छी प्रकार से बात कर रहा था ! लेकिन मुझे फिर बुखार सा लगता है।'

"जेमीतोव का व्यवहार भी अपमानजनक है। पोरफीरियस उसको अजनबी नहीं समझता। वे दोनों गहरे मित्र हो गये और मुझे विश्वास है कि मेरे ही कारण उनकी घनिष्ठता है। और मेरे दिमाग की हालत के बारे में मजिस्ट्रेट कोई विशेष बात जानने को उत्सुक नजर नहीं आता। अभी तक तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है, केवल अनुमान। मेरा तब तक जाने का इरादा नहीं है जब तक कि मुझे पक्का विश्वास न हो जाय। मैं आया ही क्यों हूँ आखिर ?"

विद्युत की भांति ये सब विचार उसके दिमाग में उठे। थोड़ी देर बाद पोरफीरियस वापिस आ गया।

"रोडिया ! कल रात की बहस एक प्रश्न पर होगई, 'क्या अपराध का अस्तित्व है ? हाँ या ना' और इस विषय पर बकवास बकी गई।"

"इस प्रश्न में असाधारणता क्या है ? यह बिना विशेषता के एक सामाजिक प्रश्न है," रास्कोलनीकोव ने अन्यमनस्क उत्तर दे डाला।

"प्रश्न उस प्रकार नहीं रखा गया था।" पोरफीरियस।

"मैं मानता हूँ इस प्रकार नहीं। सुनो रोडिया ! और अपनी राय दो। कल इन समाजवादियों ने एक सिद्धांत हवा में छोड़ा—अपराध सामा-

जिक कुव्यवस्था के खिलाफ एक विरोध (protest) है। और वे अपराधों के वास्ते कोई और कारण नहीं मानते, उनकी ही राय में, मनुष्य अपने असहनीय वातावरण के परिणाम स्वरूप अपराध करता है, और कुछ नहीं।" रजुमिखिन।

"अपराध और वातावरण की बात करते हैं," पोरफीरियस ने रासकोल्नीकोव से बात करते हुए कहा, "मुझे तुम्हारा एक लेख याद है जिसने मुझे प्रभावित किया—"अपराध" शायद शीर्षक याद नहीं है। दो माह पूर्व मैंने (Periodical Word) में पढ़ा था।"

"मेरा लेख! पीरियोडिकल वर्ड में?" अचम्भित होकर रासकोल्नीकोव ने पूछा। "यह ठीक है कि मैंने लिखा था एक लेख, छः माह पूर्व, जब कि मैंने विश्वविद्यालय छोड़ा था लेकिन उसे मैंने Hebdomadal Word में भेजा था, पीरियोडिकल वर्ड में नहीं।"

"बिलकुल ठीक वह अखबार बन्द हो गया था, और इसीलिये २ माह बाद दूसरे में तुम्हारा लेख निकला। क्या तुम्हें नहीं मालूम?"

उसको मालूम नहीं था।

"तब जाओ और अपना पैसा मांग लो। कैसे सन्यासी की तरह रहते हो?"

"शाबाश, रोडिया! यार मुझे भी इसके बारे में कुछ नहीं बताया?" रजुमिखिन।

"लेकिन आपको कैसे मालूम कि लेख मेरा था, मैंने तो संक्षिप्त नाम दिया था।"

"मुझे बाद में पता लगा। उसका सम्पादक मेरा मित्र है, उसी ने बताया कि तुम लेखक हो। उस लेख से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ।"

"मुझे याद आता कि उस समय मैं अपराधियों उनके कार्य करते समय की मनोवैज्ञानिक हालत का विश्लेषण कर रहा था।"

"हाँ और तुमने यह सिद्ध किया कि अपराधी ऐसे समय हमेशा, मानसिक दृष्टि में, थोड़ा बहुत अस्थिर रहता है। लेकिन इस भाग ने मुझे प्रभावित नहीं किया। उसके अन्तिम भाग से मैं प्रभावित हुआ जिसे कि, दुर्भाग्य से,

"क्या ? हाँ, कुछ के साथ तो ऐसा होता है और तब—"

"वे ही वे लोग हैं, मेरे विचार से, जो दूसरों को नयी सत्ता से छोड़ देते हैं ?"

"हाँ, और मैं आपको बताऊँ कि यह अक्सर होता है। साधारण दृष्टिकोण से तुम्हारा विचार ठीक है।"

"धन्यवाद ! लेकिन बताओ कि असाधारण और साधारण मनुष्यों में किस प्रकार अन्तर देखा जाय ? क्योंकि यदि कुछ गड़बड़ हो, और पहिले वर्ग के आदमी को दूसरे वर्ग का समझ लिया जाय और—"

"हाँ ऐसा अक्सर होता है।

"धन्यवाद !"

"ऐसा न कहो ! लेकिन याद रखो ऐसा अक्सर उन लोगों के साथ होता है जिन्हें मैंने शायद 'साधारण' कहा है। लेकिन मेरी राय में, ऐसी कोई भय की बात नहीं है, क्यों कि वे कुछ नहीं करते।'

"कृपया बताओ कि क्या इस प्रकार के असाधारण व्यक्ति संख्या में अधिक हैं जिन्हें कि दूसरों को समाप्त करने का अधिकार है ?" पोरफीरियस ने पूछा।

"इस तरह के विचारों से आप घबरायें मत। अधिकतर ऐसे व्यक्ति जो नवीन विचार लिये होते हैं, कम ही होते हैं।" रासकोल्नीकोव ने कहा।

'मैं वास्तव में यह सोचता हूँ कि तुम दोनों मजाक कर रहे हो। तुम लोग गम्भीरता-पूर्वक बात नहीं कर रहे हो, रोडिया !" आखिरकार राजुमिखिन ने कहा।

रासकोल्नीकोव ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाया।

"मेरे प्यारे मित्र ! यदि तुम वास्तव में गम्भीर हो, निस्सन्देह तुम कह सकते हो कि तुम्हारा कथन नवीन नहीं है, लेकिन, मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि, तुम्हारा विचित्र स्वभाव भी निकला कि, खून करने का नैतिक अधिकार है—तुम इसकी रक्षा भी करते हो। यही वास्तव में तुम्हारे लेख की जान है। मेरे विचार से, *मारने का नैतिक अधिकार, कानूनन अधिकार* से कहीं भयंकर है।" राजुमिखिन।

"बिल्कुल ठीक। यह वास्तव में बड़ा भयानक है।' पोरफीरियस।

"इस प्रकार की तो कोई भी चीज मेरे लेख में नहीं है।" रासकोल्नीकोव।

"हाँ, हाँ अब मैं तुम्हारे अपराध को देखने की दृष्टि का समझा, लेकिन क्षमा करना, यदि कोई नवयुवक यह समझे कि वह भविष्य का सोलन या नेपोलियन है तो वास्तव में उसका पहिला कदम यह होगा कि वह अपने मार्ग के कंटक को पददलित कर दे।" पोरफीरियस ने कहा।

"वह स्वयं विचारेगा 'मैं एक महान कार्य करने जा रहा हूँ, और इसके लिये धन की आवश्यकता होगी।' और तब वह पहुँच धन प्राप्त करेगा ही। काम सकते हो कैसे ?" एक दम जेमीतोव ने चौंका। रासकोल्नीकोव ने उस ओर नहीं देखा और कहा "मैं मानता हूँ, अक्सर ऐसा होता है, नवयुवक अक्सर इसके शिकार होते हैं।"

"तुम समझे इसे, क्यों ?

"क्या ? हँसते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा, इसमें क्या मेरा दोष है, इस प्रकार की बातें तो रोज ही होती हैं।" उसने राजुमिखिन की ओर देखते हुए कहा, "अभी, इसने मुझे अभी बताया। तो उससे क्या ? क्या समाज जजों, जेलों और कानून द्वारा सुरक्षित नहीं है ? फिर घबराहट क्यों ? पहले अपना चोर पकड़ो।"

"और यदि हम उसे पकड़ लेते हैं।"

'तो उसके लिये बड़ी बुरी बात है वास्तव में।"

"फिर भी, तुम तार्किक हो। लेकिन उसका विवेक तुम से क्या वेगा ?"

'उससे तुम्हें क्या ?

'यह मानवता से सम्बन्धित प्रश्न है।"

"जिस मनुष्य में विवेक है, वह पाप को स्वीकार करते हुए कष्ट पाता यही उसका दण्ड है।—"

'तब मेरे विचार से, प्रतिभाशाली व्यक्ति, जिन्हें कि किसी को मार का अधिकार है, उन्हें ऐसा करते समय क्रोध भी नहीं हो सकता ?"

'सच्चा शब्द् वहाँ क्यों लाते हो ! कष्ट सहन करना तो उनके लिये न तो मना है और न स्वीकृत। वे कष्ट सहें यदि अपने शिकार पर उन्हें दया आती है। एक व्यक्ति जो वास्तव में महान है, मेरे ख्याल से उसे सहना चाहिये।' रासकोल्नीकोव ने दुःखी सा होकर कहा। फिर वह उस ओर अचम्भित आँखों से देख कर हँसा। वह बड़ा शांत था। सब चौंक उठे। एक बार फिर पोरफ़ीरियस ने पुरानी बात छेड़ी।

'एक बात, भले ही तुम नाराज हो जाओ—एक छोटा सा प्रश्न पूछता हूँ—"

"अच्छी बात है—अपना छोटा सा विचार जाहिर करो।"

"मैं—मैं—मेरा—विचार मनोवैज्ञानिक है। तुमको इस लेख के दृष्टिकोण से देखते हुए—तुम अपने को—'असाधारण' व्यक्तियों में से समझते हो। ठीक कहता—हूँ न मैं ?"

"बहुत मुमकिन हो सकता है।" रासकोल्नीकोव ने कहा। रज़ुमिखिन चकमे को हुआ।

"यदि मैं ठीक सोचता हूँ—तो क्या तुम इससे प्रोत्साहित नहीं होते कि—या तो भौतिक बाधाओं पर विजय प्राप्त की जाय, या मानवता की उन्नति के लिये सहायता की जाय ? उदाहरण के लिये मारना या लूटना ?" वह बाईं आँख दबाते हुए मुस्कराया।

"अगर मैं प्रोत्साहित हुआ होता तो तुमसे कभी नहीं कहूँगा।"

"मैं तुम्हारे लेख का वास्तविक अर्थ जानना चाहता था।"

"कैसा विचित्र वाक्य है ! कितना मूढ़ है।" उसने विचार किया। 'मैं अपने आप को न तो मोहम्मद समझता हूँ और नाहीं नेपोलियन; परिणाम स्वरूप मैं इस पर कोई प्रकाश नहीं डाल सकता कि यदि मैं वह हुआ होता, तो क्या करता।'

"आज कल, इस देश में, ऐसा कौन है जो अपने आपको नेपोलियन नहीं समझता ?" उसने बड़ी आत्मीयता से कहा।

"क्या किसी भविष्य के नेपोलियन ने गये सप्ताह में, अलिना इवानो-

पना का काम समाप्त तो नहीं किया ?' अचानक ज़ोसीमोव ने कोने में से कहा।

बिना एक शब्द भी कहे, रासकोल्नीकोव ने अपनी निगाह पोरफीरि यस की ओर लगा दी। उसे कुछ देर से कुछ शक हो रहा था। चारों ओर थोड़ी देर के लिये सन्नाटा छा गया। रासकोल्नीकोव ने जाने की तैयारी की।

"मैं तुम से मिल कर बड़ा प्रसन्न हुआ। और जहाँ तक प्रार्थना पत्र का सवाल है उसके लिये कोई घबराने की बात नहीं है। मैंने जैसा कहा वैसे लिख देना। चाहो तो कल आना। मैं ग्यारह बजे यहीं पर रहूँगा। और चूँकि तुम 'वहाँ' जाने वालों में अन्तिम थे, इसलिये शायद कुछ समाचार तुम दे सको।' उसने आत्मीयता से हँसते हुए कहा।

"क्या तुम मेरा निरीक्षण करना चाहते हो, वैसे ही।" घबराते हुए सा उसने पूछा।

"मैं क्यों करूँ ! तुम मुझे गलत समझे। मुझे तुम से कहना चाहिये कि मैं तो हर चीज से लाभ उठाना चाहता हूँ। मैंने हर सम्पर्क रखने वाले से कुछ न कुछ बात की है—कई ने मुझे अच्छे समाचार भी दिये हैं।—अरे मैं तो भूले ही जा रहा था। तुम क्या मिकोला के बारे में बात कर रहे थे। मुझे उसकी निर्दोषता का निश्चय है। लेकिन क्या किया जा सकता था ! हाँ, जो मैं पूछना चाहता था वह यह है कि क्या तुम सात या आठ बजे के बीच जीने चढ़े थे ?"

"हाँ।" उसका उत्तर था। लेकिन एक दम उसे अहसास हुआ कि ऐसे प्रश्न को टालना था।

"अच्छा, और आठ बजे के बीच, ऊपर जाते हुए—दूसरी मंजिल पर के कमरों में से एक के दरवाजे खुले थे—याद है !— तुमने दो पेन्टर नहीं देखे ? वे कमरे पोत रहे थे, मेरे ख्याल से तुमने उन्हें जरूर ही देखा। उनके लिये यह मामला बड़े महत्व का है।"

"पेन्टर, तुम कहते हो ? मैंने कोई नहीं देखा," अपनी स्मरण शक्ति की ओर देते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा। फौरन ही उसने यह जानने की कोशिश की कि इस प्रश्न में कौन सा जाल छिपा है। 'नहीं, मैंने किसी को भी नहीं

देखा, मैंने कोई खुला कमरा ही नहीं देखा", बात को समझते हुए वह कहता गया। "लेकिन चौथी मंजिल के उसी फर्श पर जहाँ एलिना इवानोवना रहती थी, मैंने एक आदमी को देखा जो जाने की तैयारी में था। मुझे अच्छी तरह याद है कि कुछ चौकीदार सोफा आदि ले जा रहे थे; लेकिन पेन्टरों को–मुझे याद नहीं पड़ता कि एक को भी देखा हो।'

"लेकिन तुम क्या कह रहे हो? जिस दिन खून हुआ उसी दिन तो पेन्टर लोग रंग कर रहे थे, जब कि यह तो दो दिन पहिले ही वहाँ गया था," राजुमिखिन ने, जो कि बड़े ध्यान से सुन रहा था, अचानक बोल पड़ा। "तुम यह प्रश्न क्यों पूछ रहे हो?"

"ठीक, मैं, तारीखों में गड़बड़ा गया।" अपना सिर हिलाते हुए पोरफीरियस ने कहा। "भाड़ में जाय! इस काम ने तो मेरा सर चकरा दिया। यह बहुत ही आवश्यक है कि हम किसी ऐसे आदमी का पता लगायें जिसने कि उन लोगों को सात और आठ बजे के बीच में देखा हो। मैंने सोचा कि यह समाचार शायद तुम से मिल जाय—बिना और कुछ सोचे विचारे। दिनों में गड़बड़ा गया था।"

"तुम्हें अधिक सचेत होना चाहिये!" बाहर निकलते हुए राजुमिखिन ने कहा। रासकोल्नीकोव ने ऐसे साँस ली जैसे कि कोई कड़ परीक्षा से निकला हो।

६

"मैं विश्वास नहीं कर सकता! मैं नहीं मानता!" रासकोल्नीकोव के किये गये निश्चय को झूठा करते हुए, राजुमिखिन ने कहा। बहस करते-करते कभी कभी सड़क पर राजुमिखिन खड़ा हो जाता।

"मत विश्वास करो अगर तुम चाहते हो। स्वभावतः तुमने कुछ ध्यान नहीं दिया, पर मैंने हर शब्द को तोला है।" हँसते हुए रासकोल्नीकोव ने कहा।

"तुम तो अविश्वासी हो—तभी तो तुम हर स्थान पर कुछ न कुछ

मनोगत भाव ढूँढ़ निकालते हो। मैं मानता हूँ कि पोरफ़ीरियस की भाषा
मज़ीब सी और ख़ास तौर पर उस बदमाश—ज़मोतोव की।"

"वह कल अपना विचार बदल देगा।"

"तुम बिल्कुल भ्रम में हो। यदि उन्हें इतना मूलभूत संदेह होता
तो धोखा देने का प्रयत्न किया होता, और उन्होंने अपने आपको छिपा लिया
होता और ठीक समय की प्रतीक्षा की होती।

"यदि उनके पास प्रमाण होते—पक्के सबूत—तो मुझ से और अधिक
बातें निकालने के लिये उन्होंने अपने आपको छिपा लिया होता। लेकिन उनके
पास प्रमाण नहीं है—केवल से अनुमान है—। शायद इस मामले में हमें
इसलिये डरना चाहिये कि, पोरफ़ीरियस के पास कुछ सबूत नहीं है। उसके
कुछ अन्यथा इरादे हो सकते हैं—क्योंकि आदमी चतुर है। वह मुझे डराना
चाहता हो, क्योंकि उसके अपने अलग तरीके हैं, इसके अलावा ऐसे मामले
ते ख़ुर होते हैं। अब इसे समाप्त किया जाय।"

"यह बड़ी घृणास्पद बात है! बड़ी घृणापूर्ण!

"और ऐसा सब उन्हें किस प्रकार हुआ! एक विद्यार्थी गरीब सा है,
मार से अपने कमरे में बिना किसी व्यक्ति से मिले पड़ा है, हम उसे पड़े
r, बिना माने पूछे के किसी पुलिस अधिकारी के सामने देखते हैं, यहाँ
लोगों से भरी है—गर्मी अधिक है नये रंग की महक से वातावरण
भारी सा हो गया है। वह अभागा आदमी— जिसने कि अभी अपना ख़ून
भी नहीं खाया है, उसके ख़ून हो जाने की बात सुनता है जिसके यहाँ वह
एक दिन पहले गया था। ऐसी हालत में वह बेहोशी कैसे रोक सकता है?
बेहोशी के फिर पर सब कुछ निर्भर हो गया। लेकिन रोडिया! यदि मैं तुम्हारे
स्थान पर होता तो मैं नफ़रत से हँसा होता। और यही मैं उन लोगों के साथ
करूँगा। बड़ी अपमाननीय बात है।"

"यह कहना बड़ा अपमान है कि सारी बात बड़ी अपमाननीय है, लेकिन
अब यह दूसरी परीक्षा! क्या मैं इतने निम्न स्तर पर आ जाऊँ कि उनके
रूप में सब खुलासा हूँ? ज़मीतोव से बात करने की स्वीकृति देकर मैं स्वयं
पछताया।"

"ओह ! मैं कल स्वयं पोरफ़ीरियस के पास जाऊँगा । वह मेरा सम्बन्धी है । मैं उसे सब कुछ मान लेने पर मजबूर करूँगा । लेकिन ज़ेमीतोव—"

"अन्तोमम ने अन्त में ले लिया ।" रासकोलनीकोव ने मन ही मन में कहा ।

'ठहरो ! तुम असली बात से हट रहे हो, मुझे पूरा विश्वास हो गया । तुम्हारे विचार से क्या फ़िकर है ? तुम्हारा मतलब है कि पेन्टर वाला प्रश्न जाल था ? अच्छा थोड़ी देर के लिये विचार करो। मान लो तुमने ही 'यह' किया, तब क्या तुम इतने मूर्ख हो कि कहोगे कि तुमने वहाँ आदमी काम करते देखे थे ? इसके विपरीत यदि तुमने देखे भी होते तो तुम नहीं कहोगे ।"

' यदि मैंने 'यह' किया भी होता तो मैं यह कहता कभी नहीं निश्चय होता कि मैंने पेन्टरों को देखा था ।"

'जो अपने खिलाफ़ पड़े ऐसा कथन क्यों करता !"

'कम स कम पोरफ़ीरियस ने ऐसा अन्दाज़ लगाया होगा कि मैं इस प्रकार उत्तर दूँगा । उसने सोचा कि मैं अपने कथन को और प्रमाणित बनाने के लिये, स्वीकार कर लूँगा कि मैंने उन लोगों को देखा— बिना अपने बारे में सोच विचार किये ।"

"लेकिन तब उसने एक दम उत्तर दिया होता कि उस घटना के दो दिन पूर्व से पेन्टर वहाँ नहीं हो सकते, और परिणाम स्वरूप, तुम्हें कत्ल वाले दिन, सात और आठ बजे के बीच, उस मकान में होना चाहिये । इस प्रकार उसने तुम्हें पकड़ा होता ।"

"लेकिन उन्होंने कैसे सोचा कि मेरे पास विचार करने के लिये समय नहीं है ।"

"लेकिन ऐसी भूल कैसे ! '

"बड़ा आसान है । उत्तर देने में अक्सर ऐसी भूलें हो जाती हैं । पोरफ़ीरियस यह भली प्रकार जानता है—वह इतना मूर्ख नहीं है जितना दीखता है ।"

"अगर यही उसका तरीका है तब तो बड़ा खूब है।"

रासकोल्नीकोव हँस पड़ा। 'लेकिन क्या ऐसे प्रश्न मुझे पसन्द हैं ?' उसने विचार किया। वह एक दम परेशान सा हो गया। दोनों पुलखेरिया अलेक्सान्द्रोवना के यहाँ पहुँच चुके थे।

"तुम भीतर जाओ। मैं अभी आता।" रासकोल्नीकोव ने जल्दी में कहा।

"तुम कहाँ जा रहे हो ? अपना यहाँ है।"

"मुझे पहिले एक जरूरी काम करना है। मैं आध घण्टे में वापस आ जाऊँगा। तुम उन से कह देना"

"अच्छा, तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा!"

"क्या तुमने इस भलेमानस के अन्त तक मेरा पीछा करने की कसम खाली है ?"

बात इस तरह से कही गई कि रजुमिखिन जोर नहीं दे सका। अन्त में, वह महिलाओं के कमरे में घुसा। जब रासकोल्नीकोव घर पहुँचा तो वह पसीने से तर हो रहा था और उसने साँस लेने में कष्ट का अनुभव किया। वह कमरे में घुसा जो खुला ही था। तब वह डरते हुए छिपाने के स्थान पर गया, और दीवाल पर कागज के पीछे अपना हाथ डाला और उस छिद्र में इधर-उधर हाथ चलाता। जब उसमें कुछ भी न मिला तो एक जेब की खोज की उसने। जब वह पुलखेरिया अलेक्सान्द्रोवना तक पहुँचा तो। उसे ऐसा भ्रम हुआ कि उन चोरी की वस्तुओं में से अवश्य किसी दरार में गिर पड़ी थी। साथ ही उसने विचार किया था, यदि किसी को कभी कुछ यहाँ मिल जाय—तो वह कितना भयङ्कर प्रमाण बन सकता था। वह इस विचार में लीन हो गया तब उसे हल्की सी हँसी आई, उसने टोपी उठाई और कमरे के बाहर निकला और उतर कर बाहर के फाटक पर पहुँचा।

"लो ! वह यहीं है।" एक भारी सी आवाज आई उसने निगाह उठाई। अन्न द्वार से, खड़े सन्तरी ने रासकोल्नीकोव की ओर इशारा करते हुए एक आदमी ने कहा। उसका सिर एक रेशमिया टोपी से ढ़का था, जो बासी था पुरानी थी। लगभग पचास का रहा होगा।

दिल पर एक सुराख हो जायगा। हा! हा! हा! मेरे मन से भी और कोई भयानक चीज है? लेकिन फिर भी मैं उस बुढ़िया को कभी क्षमा नहीं करूँगा।'

उसके हाथ पसीने से तर हो गये, उसकी निगाह छत पर टिक गई। "मैंने अपनी माँ और बहिन को कितना प्यार किया! और अब मैं नफरत क्यों करता हूँ, उन्हें? मैं उन्हें अपने पास भी सहन नहीं कर सकता! माँ का चुम्बन करते हुए, वह सोच रहा था कि कहीं वह जाने—अब मुझे उस बुढ़िया से कितनी घृणा है! मुझे विश्वास है कि यदि वह फिर जीवित होकर आये, तो मैं उसे पहिले की भाँति फिर मार डालूँगा। अभागी एलिज़ावेता! अवसर उसे वहाँ क्यों ले आया? एलिज़ावेता! सोनिया!! बिचारी, शरीफ प्राणी। वे लोग रो क्यों नहीं रहे हैं? अपने को भाग्यों पर छोड़ कर उन्होंने सब कुछ स्वीकार कर लिया है, चुपचाप हो। सोनिया! सोनिया! मधुर सोनिया!!!"

वह बेहोश हो गया। उसने एक भयंकर स्वप्न देखा। कुर्सी पर एक औरत बैठी है, सिर नीचा किये। चेहरा नहीं दिख रहा है। उसने पहिचाना वह एलिना इवानोवना थी। 'मेरे भय से शायद डरी हुई।' उसने सोचा। उसने उसकी खोपड़ी पर, कुल्हाड़ी से दो बार वार किया। लेकिन वह बैठी रही, एक मूर्ति की भाँति। वह उसे देखने लगा। वह बुढ़िया हँसी—खामोशी से। उसे ख्याल आया कि कमरा खुला है, हँसी और काना-फूँसी की आवाजें भी आ रही थीं। और उसने वार किया। और वार किया। और वार किया! हँसी और बढ़ गई। उसने भाग जाना चाहा—लेकिन यहाँ, वहाँ, चारों ओर भीड़ थी, कमरा भर गया था। उसने चिल्लाने का प्रयत्न किया और वह जग पड़ा।

उसने मुश्किल से साँस ली, लेकिन ख्याल किया कि अभी भी वह स्वप्न देख रहा है। उसने देखा कि उसका द्वार खुला है और एक आदमी जिसे कि उसने कभी भी नहीं देखा था, खड़ा उसे देख रहा है। रास्कोल्नीकोव ने अभी भी अपनी आँखें पूर्ण रूप से नहीं खोली थीं कि फिर बन्द कर लीं। "क्या मैं फिर स्वप्न देख रहा हूँ?" उसने सोचा, और पलकें ऊपर

उठाकर उस अजनबी की ओर डरते हुए देखा। एक दम वह भीतर घुसा, धीरे से द्वार बन्द किये, मेज तक पहुँचा, कोच के पास वाली कुर्सी पर आ बैठा। सारे समय वह रास्कोल्नीकाव की ओर दृष्टि किये रहा। जैसा कि रास्कोल्नीकोव ने उचटती नजर से देखा वह अजनबी जवान नहीं था; वह मजबूत था, और दाढ़ी थी।

इस प्रकार लगभग दस मिनिट बीत गये। कमरे में शांति का साम्राज्य था। रास्कोल्नीकोव इसे सहन नहीं कर सका और एक दम उठ बैठा।

"तुम बोलते क्यों नहीं! क्या चाहते हो?"

"मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम्हारी नींद ढोंग था," मुस्कराते हुए उसने कहा। "मेरा परिचय आरकाडियस इवानोविच स्विद्रिगेलाव है।

चौथा भाग

१

"क्या मैं वास्तव में जगा हूँ ?" रासकोल्नीकोव ने मन में कहा, और उस अप्रत्याशित आगन्तुक की ओर अविश्वसनीय निगाहों से देखता रहा। "स्विद्रिगेलोव! बेवकूफ! असम्भव!" उसने अन्त में कहा।

'मैं आपके पास दो कारणों से आया हूँ। पहिला, तो मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से परिचय प्राप्त करना चाहता था क्योंकि पहिले मैंने तुम्हारे बारे में सुना था, और दूसरे, मुझे विश्वास है कि तुम, अपनी बहिन के एक काम में, मेरी मदद करने से इनकार नहीं करोगे। चूँकि वह मेरे लिये कुछ सशंकित हो गई है, पर तुम्हारे द्वारा परिचय से, मुझे आशा है कि बात बन जायगी।'

'तुम मुझ पर विश्वास करके गलती पर हो।" रासकोल्नीकोव।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि वे महिलायें कब आगई हैं?" कोई उत्तर नहीं। "मुझे मालूम है कि वे कब आगई हैं। मैं स्वयं भी तो परसों आया। अब, मैं तुमसे यह बात कहना चाहता हूँ, रोडियो रोमनोविच! कि—"

रासकोल्नीकोव ने उसका चुपचाप निरीक्षण किया।

"शायद तुम मुझसे यह कहने वाले हो कि मैंने अपने मकान में, एक अरक्षित लड़की को कष्ट पहुँचाया, जिसका कि अनादर मैंने असभ्यतापूर्ण प्रस्ताव रख कर किया? मैं मानता हूँ। लेकिन याद रखो कि मैं आदमी हूँ—केवल मनुष्य—अर्थात् मैं भी प्रेम में पड़ सकता हूँ ऐसी बात जो हमारी इच्छा के बाहर है। प्रश्न सीधा है। क्या मैं राक्षस हूँ? जब मैंने उसके सामने अमेरिका या स्विट्ज़रलैंड भाग चलने का इरादा रखा, तो मेरे मन में उसके प्रति श्रद्धा थी, और मैंने केवल हम दोनों के सुख का ख्याल किया था। तर्क, काम का दास है, और मैंने अपने ऊपर वार किया।"

"प्रश्न इस बात का नहीं है कि तुम सही हो या गलत तुम मुझे कुत्सित लगते हो। मैं तुम्हें जानना भी नहीं चाहता, और मैं हार दिखाता हूँ। दूर हो!"

स्विद्रिगेलोव हँस पड़ा। "तुमको समझ नहीं रहा हूँ।"

'क्यों, इसी समय तो समझाने का प्रयत्न कर रहे हो।"

"फिर भी मेरी चतुरता ऐसी हालत में बिल्कुल स्पष्ट है। लेकिन तुमने मुझे अब तक तो कहने ही नहीं दिया। मार्फा पीट्रोवना—"

'अरे! लोग कहते हैं तुमने मार्फा पीट्रोवना को मार डाला।"

"तुम्हें इतना भी बता दिया गया है? मैं कैसे उत्तर दूँ। ऐसा विश्वास मत करो कि मैंने यह किया। यह सिद्ध हो चुका है कि अधिक पी जाने के कारण रक्तापित्त के आ जाने के कारण स्नान करते हुए वह मर गई। नहीं इससे मैं परेशान नहीं हूँ।'

रासकोल्नीकोव ने हँसते हुए, "तुम अब क्या सोच रहे हो?"

और तुम हँस क्यों रहे हो? मैंने उसे कोड़े के दो हल्के से चाबुक मारे थे। वे ही निशानी के समान हो गये, सारे कस्बे में।"

रासकोल्नीकोव इस मुलाकात को समाप्त करना चाहता था। लेकिन एक क्षण उत्सुकतावश वह और रुका।"तुम कोड़े के चाबुक के शौकीन हो?'

"कोई खास नहीं। मार्फा पीट्रोव्ना के साथ मेरा कभी ही झगड़ा हुआ हो शायद हम बड़े आनन्द से रहे वह अपने पति से बड़ी सन्तुष्ट थी। तुम मुझे सूअर के सिर वाला राक्षस समझे हो!"

रासकोल्नीकोव की नजर में यह बड़ा ही चालाक लगा। "तुमने कई दिन शायद बिना बोले बिताये हैं!"

"तुम्हारा अनुमान आंशिक रूप से सत्य है। मुझे इतने अच्छे स्वभाव का देख कर तुम्हें आश्चर्य होता है न!"

"मेरी यह राय है कि तुम बहुत अच्छे हो।"

क्योंकि मैंने तुम्हारे प्रश्न का बुरा नहीं माना। क्यों मानूँ बुरा? जिस प्रकार तुमने प्रश्न किया उसी प्रकार मैंने उत्तर दिया। इस समय मेरा ध्यान किसी तरफ नहीं है। तुम इस प्रकार सोच सकते हो कि मैं तुम्हें प्रसन्न

करना चाहता हूँ—किसी विशेष बात के लिये। रोडियो रोमनोविच ! नाराज मत होना, लेकिन तुम मुझे स्वयं मशीन से लग रहे हो। अच्छा, नाराज मत हो, मैं कुछ नहीं कहूँगा अब।

'नहीं तुम बड़े अच्छे कामकाजी आदमी हो।"

"मैं किसी की राय की ज़रा भी चिन्ता नहीं करता," कुछ दुःखित होते हुए उसने कहा।

रासकोलनीकोव ने उसकी ओर देखा, "मैंने सुना है कि तुम यहाँ पर कई लोगों को जानते हो? अगर ऐसा है तो तुम यहाँ क्या कर रहे हो—तुम्हारा इरादा क्या है?"

'बिलकुल सत्य है, मेरे यहाँ 'मित्र' हैं। तीन दिनों से मैं राजधानी में घूम रहा हूँ, मैं कई मित्रों से मिला। फिर भी मैं मित्रता को ताज़ा करना नहीं चाहता, क्यों कि वह मुझे असह्य थी। सम्मान और सोसाइटी भी बिना चल सकती है। और पत्ते खेलने में क्या धरा है?"

"ओह! तुम्हें इसकी भी आदत थी?"

"हाँ थी! आठ वर्ष पूर्व हम लोगों का एक गुट था—पूँजीपति तथा विद्वान जो कि हमारा समय पत्ते खेलने में व्यतीत करते थे। क्या तुमने देखा है कि रूस में बहुत से अच्छे आदमी जेब काटते हैं? इन्हीं दिनों एक तेज खिलाड़ी ने जिसका मुझे सत्तर हजार रूबल देने थे, जेल में बन्द करवा दिया। ऐसे समय मार्फा पीट्रोवना मेरी मदद को आई। तीस हजार रूबल देकर उसने मुझे मुक्त करवाया। हमारा विवाह हुआ। वह मुझ से पाँच साल बड़ी थी, और मुझे बेहद पसन्द थी। पूरे सात वर्ष हम अपने गाँव से हिले भी नहीं। उसने मुझे अपने वश में करने के लिये वह बिल कठोर बन्धन के रूप रख छोड़ा था। अगर मैं उसे मारने का प्रयत्न करता तो वह मुझे उसी समय बन्द करवा देती। हाँ बावजूद उस स्नेह के जो उसका मेरे प्रति था, वह कभी नहीं चूकती। औरतें बड़ी विरोधाभास होती हैं।'

"मेरे विचार से यदि यह बन्धन तुम्हारे ऊपर लटका न होता तो तुमने उसे कहीं का भी न छोड़ा होता।'

"मैं क्या उत्तर दूँ?"

"वास्तव में वह किस प्रकार का आदमी हो सकता है ?" रास्कोल्नी कोव ने विचार किया।

"यह चिह्न उसने मुझे मेरी साल गिरह के अवसर पर वापिस कर दिया था।"

"ऐसा लगता है कि मार्फा पीट्रोवना की मृत्यु ने भारी कमी ला दी ?"

"शायद, ऐसा हो सकता है, बिल्कुल सम्भव ! हाँ क्या तुम हवाओं में विश्वास करते हो ?"

"कैसी हवायें ?"

"हवायें सीधे सादे शब्दों में।"

"क्या तुम उनमें विश्वास रखते हो ?"

"हाँ—नहीं, और तो भी—"

"क्या कभी किसी को देखा ?"

"स्विद्रिगेलोव ने रास्कोल्नीकोव की ओर देखा। "मार्फा पीट्रोवना मुझे दिखती है।"

"क्या वास्तव में तुम्हारा कहने का अर्थ है कि वह तुम्हें दिखती है ?"

"हाँ वह तीन बार दीखी है। पहिले पहल तो मुझे दफनाने के बाद ही दीखी जब मैं कब्र से वापिस आया। फिर मैंने उसी सफर में देखा, वह अन्तिम बार दो दिन पूर्व दीखी, मेरे मकान के एक कमरे में मैं अकेला था।'

"क्या तुम बिल्कुल जागे थे ?"

"बिल्कुल ! मैं हर समय जागा हुआ था। वह आती है बात करती है और द्वार से चली जाती है। हमेशा द्वार से ही। मैं उसके पदचाप भी सुनता हूँ।"

"मैंने अक्सर कहा है कि इस प्रकार की बातें अवसर होती हैं।" रास्कोल्नीकोव चिल्लाया। दूसरे ही क्षण उसे अपने कथन पर आश्चर्य हुआ।

"तुमने अक्सर कहा है? क्या यह सम्भव है?" स्विद्रिगेलोव ने आश्चर्य से पूछा।

"तुमने इस प्रकार की कभी कोई ऐसी बात नहीं कही?" चिढ़ते हुए रासकोल्नीकोव ने पूछा।

"नहीं मैंने नहीं कहा।"

"कभी नहीं?"

"अभी भीतर आते हुए और तुम्हें सोने का बहाना करते देखते हुए मैंने यह विचार किया, 'यह वही आदमी होना चाहिये।'"

"वही आदमी! इस कथन से तुम्हारा तात्पर्य? तुम किस ओर संकेत कर रहे हो?" रासकोल्नीकोव चिल्लाया।

"मैं किस ओर संकेत कर रहा हूँ? वास्तव में मैं क्या जानूँ!" थोड़ी देर तक दोनों एक दूसरे को घूरते रहे।

"यह सब प्रश्न से अलग बात है!" क्रोधित होकर रासकोल्नीकोव ने कहा, "जब वह तुम्हें दिखती है तो क्या कहती है?"

"वह क्या कहती है? बकवास करती है। जब पहिले दिखी थी तो मैं थका था—दफनाने के कार्य से मुझे साँस लेने को फुरसत नहीं थी। मैं विचार करता हुआ अपने अध्ययन के कमरे में सिगार पी रहा था, जब मैंने उसे द्वार से भीतर आते देखा। 'आरकेदियस इवानोविच, आज, काम की धमक के कारण, तुम खाने के कमरे की घड़ी में चाबी देना भूल गये हो।'
२ दिन में सेंट पीटर्सबर्ग के लिये रवाना हुआ दिन निकलने पर एक स्टेशन पर उतर कर बार में गया। एक कप काफी के लिये कहा—एक दम मैंने देखा मार्फा पीट्रोवना मेरे पास बैठी है। वह हाथों में कुछ ताश के पत्ते लिये थी। 'क्या मैं बताऊँ कि यात्रा में तुम्हारे साथ क्या होगा?' उसने पूछा। आज ही खाना खाने के बाद ज्यों ही मैंने सिगार जलाया कि मार्फा पीट्रोवना सामने दीखी। इस समय उसने सज धज कर कपड़े पहने थे। नया रेशम का गाउन पहिने थी। 'नमस्कार! मेरे गाउन के बारे में क्या ख्याल है? अभिस्का भी ऐसा गाउन नहीं बना सकती।'"

"और तुमने पहिले कभी कोई छाया नहीं देखी?"

"हाँ, दो साल पहले एक बार ऐसा हुआ था। फिल्का नामका मेरा एक नौकर था; उसे हाल में ही दफनाया गया था। भूल से मैंने उसे पुकारा, 'फिल्का! मेरा पाइप तो लाना।' वह भीतर आया, कप बोर्ड की ओर गया। 'तुमने मेरे सामने, मेरी हाथ आने की हिम्मत कैसे की? चले जाओ बदमाश।' वह घूमा, और चला गया, और फिर कभी नहीं दिखा।"

"जाओ और किसी डाक्टर को दिखाओ।"

"तुम्हारी सलाह बेकार है। मैं भली प्रकार जानता हूँ कि मैं बीमार हूँ—पर फिर भी सत्य तो यह है कि मुझे नहीं मालूम कि बात क्या है! याद करो मैंने यह नहीं पूछा था, 'क्या तुम्हारे विचार हैं कि लोग छायायें देखते हैं?' मेरा प्रश्न था, 'क्या तुम विचार करते हो कि छायायें होती हैं?' "

"वास्तव में मैं ऐसा कुछ नहीं सोचता।" रासकाल्नीकोव ने नाराज होते हुए कहा।

"इस विषय पर लोग क्या कहते हैं? लोग तुमसे कहेंगे, 'तुम बीमार हो, इसलिये तुम्हें जो कुछ दिखता है वह सन्निपात का प्रभाव है।' मैं मानता हूँ कि छायायें बीमार को ही दिखती हैं, लेकिन इससे यह सिद्ध हुआ कि उन्हें देखने के लिये आदमी को बीमार होना चाहिये।"

"मुझे विश्वास है कि उनका अस्तित्व ही नहीं होता।"

स्विद्रिगेलोव ने उसकी ओर देखा। "तुम्हारी राय है कि उनका अस्तित्व नहीं है? एक स्वस्थ पुरुष उन्हें देखने का कोई कारण नहीं रख सकता। लेकिन उसे बीमार होने दो, उसके साधारण स्वास्थ्य गठन को कमजोर होने दो, तब इसके बाद वह दूसरी दुनिया के पास होने लगता है, और बीमारी के बढ़ने के साथ-साथ, उसका सम्बन्ध उस दुनिया से निकट का होता जाता है, यहाँ तक कि मौत उसे ले जाती है। यह तर्क मैं बहुत दिनों से मानते हुए हूँ, और यदि तुम दूसरे जीवन में विश्वास रखते हो, तो तुम्हें इसे मानने से कोई रोक नहीं सकता।

"मैं दूसरे जीवन में विश्वास नहीं करता।' रासकोल्नीकोव ने उत्तर दिया।

"मानलो हमें वहाँ सिवाय मकड़ियों के और कुछ नहीं मिलता ?" एक दम उसने पूछा।

"यह आदमी पागल है।" रासकाल्नीकोव ने सोचा।

"मनुष्य हमेशा अनन्त को अचिन्त्य विचार समझते हैं, बड़ा विशाल, विशाल सा ! लेकिन ऐसा क्यों ? इसके विपरीत एक छोटे से कमरे की कल्पना कीजिये—धुएँ से काला चारों ओर मकड़ियाँ ही मकड़ियाँ। उसको अनन्त माना जाय ! मैं अक्सर ऐसा ही विचार करता हूँ।"

"क्या तुम्हारा तात्पर्य यह है कि तुम्हारे पास अनन्त के बारे में इस से अधिक सन्तोषजनक उत्तर नहीं है ?" रासकोल्नीकोव ने कहा।

"इससे अधिक सन्तोष जनक ? कौन जाने ? यह दृष्टिकोण शायद सत्य है, और यदि मेरा बस चलता तो सत्य हो गया होता।" मुस्कराते हुए उसने कहा।

"क्षमा करना !" परेशान-सा होकर रासकोल्नीकोव ने उत्तर दिया, "साफ साफ बात बताओ, क्यों इधर उधर की बातें कर रहे हो, तुम्हारे आने का मतलब क्या है ? मैं जल्दी में हूँ—मुझे बाहर जाना है।

"बहुत अच्छा। क्या यह सच है कि तुम्हारी बहिन श्री लूशिन से विवाह करने वाली है ?"

"मैं कहता हूँ तुम मेरी बहिन को अकेला छोड़ दो, और उसका नाम न लेना। यदि तुम वास्तव में स्विद्रिगेलोव हो तो तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी उसका नाम मेरे सामने लेने की !"

"लेकिन चूँकि सिर्फ उसी के बारे में बात करने मैं आया हूँ, इसलिये उसका नाम मैंने लिया।

"बहुत अच्छा। तब कहो लेकिन ज़रा जल्दी।"

"श्री लूशिन, विवाह के द्वारा मेरे भी सम्बन्धी हैं। यदि तुमने उसे आधा घन्टा भी देखा हो तो मुझे पता है तुमने उसे भाँप लिया होगा। वह एवडोत्या रोमनोवना के लिये योग्य वर नहीं है। मेरे विचार से वह यह त्याग अपने घर के लिये कर रही है। मेरा अनुमान है कि तुम इस विवाह के न होने पर, कम से कम अपनी बहिन की भलाई के लिये, प्रसन्न होगे।"

"यह तुमको बिलकुल स्पष्ट है—नहीं कुछ मित्रभावपूर्ण भी।" रासकोल्नीकोव ने उत्तर दिया।

"इसके विपरीत दूसरे शब्दों में तुम मुझे स्वार्थी सिद्ध कर रहे हो। यदि मैंने अपने बारे में सोचा होता तो—खैर, अभी तो तुम्हारी बहिन को प्यार किया इसकी क्षमा चाहता हूँ। लेकिन इस समय मुझे उससे कोई स्नेह नहीं है।" उदासीनता से कहा।

"तुम्हारी तो केवल एक पापी आदमी की चंचलता है।" बीच में रासकोल्नीकोव ने टोका।

"मैं मानता हूँ कि मैं आलसी पापी मनुष्य हूँ। लेकिन तुम्हारी बहिन मुझ सरीखे आदमी को भी रिझा सकी। लेकिन मुझे अब विश्वास हो गया कि यह सब बनावटी था।"

"कितने दिन हुए इस धारणा को?"

"कल सेंट पीटर्सबर्ग आकर तो मैंने बिलकुल निश्चित कर लिया। पहिले जब मास्को में था तो लूशिन का प्रतिद्वंदी बनने की ठान ली थी।"

"बीच में टोकने के लिए क्षमा करना लेकिन क्या कुछ संक्षिप्त करके आप अपने आने का ध्येय बता सकते हो। मुझे जरा जल्दी है।"

"खुशी से। मेरे बच्चे अपनी मामी के साथ रहते हैं। वे मालदार हैं और मुझ से स्वतंत्र। इसके अलावा मैं अपने साथ वही धन लाया हूँ जो कि मार्था ने मुझे एक वर्ष हुए जब दिया था। क्षमा करना, अब मैं अपने मतलब पर आता हूँ। रवाना होने के पहिले मैं लूशिन को निबटाना चाहता हूँ इसलिये नहीं कि मैं उसे नफरत करता हूँ कि मेरी पत्नि से झगड़े का कारण वही था, लेकिन इसलिये कि उसी ने इस विवाह के सम्पन्न करने में सहायता दी—। मैं तुम से प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे दूनाशिया से मिला दो और यदि तुम ठीक समझो तो मिलते समय तुम भी रहना। मैं उसे इस विवाह से जितनी असुविधाएँ होंगी, उन सब से अवगत कराऊँगा। फिर, मेरे कारण जो वह नाराज हो गई है मैं उन से क्षमा माँगूगा, और इसके साथ ही साथ उससे दस हजार रूबल स्वीकार करने के लिये प्रार्थना करूँगा।"

"तुम पागल हो, निसन्देह पागल हो। तुम यह कहने की हिम्मत कैसे कर रहे हो?" और अधिक आश्चर्यचकित होते हुए नाराज होकर रासकोल्नीकोव चिल्लाया।

"मैं जानता हूँ कि तुम विरोध करोगे। लेकिन यदि यूदोशिया रोम मोवना ने इसे स्वीकार नहीं किया, तो परमात्मा जाने कि इस धन का क्या होगा। मैं जानता हूँ कि मैंने तुम्हारी बहिन के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया है मैं इसके लिये शर्मिंदा हूँ।—और संक्षेप में, यदि वह कुमिन की पत्नि बन ही जाये, तो भी उसे यह धन मिल जायेगा, लेकिन दूसरे के द्वारा। पर कृपा कर नाराज मत हो। ध्यानपूर्वक और ठण्डे दिमाग से विचार करो।"

"कृपया चुप हो जाओ। यह प्रस्ताव बड़ा निर्लज्जतापूर्ण है।"

"नहीं बिल्कुल नहीं। तब तुम्हारा अर्थ तो यह हुआ कि यदि इस संसार में कोई मनुष्य किसी को सताता है तो उसे कोई अधिकार नहीं है कि वह उसका फिर कभी भला भी करे? बेकार की बात! मान लो कि मैं मर रहा हूँ और यह धन तुम्हारी बहिन के नाम कर दूँ, तो क्या वह इनकार करेगी?"

"शायद करे!"

"तब हम कुछ भी बात नहीं करते इस बात पर। फिर भी मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी याचना यूदोशिया रोमनावना तक पहुँचा दो।"

"मैं इस प्रकार की कोई बात नहीं करूँगा।"

"तब, रोडियो रोमनोविच! मैं उससे आमना-सामना मिलूँगा।"

"और यदि तुम्हारा प्रस्ताव उसे सुना दिया जाय, तब भी क्या तुम उससे चुपचाप मिलने से रुकोगे?'

"मैं क्या बताऊँ? मैं केवल एक बार उससे मिलना चाहूँगा।"

"ऐसी आशा करना बेकार है।"

"बहुत बुरा होगा तब तो। फिर भी तुम, मुझे नहीं जानते। शायद हम दोनों की मित्रता और अधिक हो जाए।"

"क्या तुम ऐसा सोचते हो?"

"क्यों नहीं ? मैं तुम पर बराबर आँखें ही रखता हूँ । जब मैं सुबह जा रहा था तो तुम्हें देखा—"

"तुमने सुबह मुझे कहाँ देखा ?" रास्कोल्नीकोव ने घबराकर पूछा ।

'केवल संयोगवश तुम्हें देखा । ऐसा मालूम पड़ता है कि हम और तुम एक ही ढाँचों से ढले गये हैं ।'

'बस काफी है ! क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम शीघ्र ही जाने वाले हो ?"

"किस यात्रा पर ?"

"जिसका कि तुमने अभी ज़िक्र किया था ।"

"क्या ! मैंने किसी यात्रा का कहा था ? अरे हाँ याद आया । काश तुम्हें ज्ञान होता कि यात्रा से मेरा अर्थ है शादी करने का । मेरे मित्र पुनः सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्न में हूँ ।"

"सही ?"

"हाँ ।"

'यहाँ आने के बाद तुमने अधिक समय का उपयोग किया है ।"

'अच्छा मैं जाता हूँ । मैं कुछ भूल रहा था । अपनी बहिन से कहना मार्फा पेत्रोव्ना ने अपनी वसीयत में तीन हजार रूबल उसे दिये हैं । वह तीन हफ्ते में उसे दे देंगे ।"

"वास्तव में ?"

"हाँ वास्तव में । अच्छा अब चलता ! नमस्कार ! तुम्हारे पास ही रहता हूँ ।" वह बाहर चला गया ।

२

"अरे बताओ तो !" रजुमिखिन ने पूछा, जब कि वे सड़क पर आ गये, "...ीन आदमी बाहर निकला था जब कि मैं भीतर तुम्हारे घर में आ...

"वह स्विड्रिगेलोव था जिसके यहाँ, एक बार मेरी बहिन दाई के रूप में रही थी, और जिसका मकान वह छोड़ने पर इसलिये मजबूर हुई थी कि इसने उससे प्रेम आरम्भ किया था। इसकी बीबी ने उसे बदनाम किया था, फिर बाद में मार्फा पीट्रोवना ने माफी भी माँगी थी। अभी हाल ही वह मरी है। पता नहीं क्यों, मुझे इस आदमी से बड़ा डर लगता है। दुनिया को उससे बचाना चाहिये। यही मैं तुमसे कहना चाहता था।"

"उसे बचाना! वह उसका क्या कर सकता है? घबराओ मत हम उसे बचायेंगे! वह कहाँ रहता है?"

"मैं कुछ नहीं जानता।'

"तुमने पूछा क्यों नहीं?"

"क्या तुमने उसे देखा?' कुछ देर की शान्ति के बाद रासकोल्नीकोव ने पूछा।

"हाँ और बड़े ध्यान से।"

"तुम्हें पूर्ण विश्वास है?"

"पूर्ण विश्वास है, मुझे उसका चेहरा याद है और उसे पहिचान लूँगा—हजारों में।"

वे एक बार फिर चुप हो गये।

"कौन जाने मैं ही पागल हूँ। और पिछले दिनों की घटनाएँ केवल मेरी कल्पना में ही हुई हों।"

"रोडिया! कुछ न कुछ बात तुम्हें सता रही है। लेकिन जरा बताना वह क्या बात कर रहा था? वह आया ही क्यों?" रासकोल्नीकोव चुप रहा—राजुमिखिन ने कुछ देर विचार किया।

"मेरी बात सुनो। तुम्हारे यहाँ आने पर पता चला कि तुम सोये थे। बाद में, हमने खाना खाया। फिर मैं पोरफीरियस के यहाँ गया। जेमीतोव भी वहीं था। मैं शुरू करना चाहता था पर, आरम्भ में ही गड़बड़ा गया। फिर भी बिना हिचकिचाये, मैं पोरफीरियस को एक खिड़की के पास ले गया। और बिना अधिक सफलता पाये ही उससे बातें करना आरम्भ कर दिया। वह एक ओर देख रहा था, मैं दूसरी ओर। मैंने कहा जो कुछ मुझे कहना था। बेवकूफी

ी, तुम नहीं करोगे । सेमीओनोव से एक शब्द भी नहीं बोला । नीचे उतरते हुए मैंने सोचा, 'अपने आपको इस तरह कष्ट देना कहाँ तक ठीक है ! यदि तुम्हें किसी प्रकार का भय है तब तो बात दूसरी है । लेकिन इस हालत में डर किसका ? तुम दोषी नहीं हो । बाद में उनकी मूर्खता पर अपन हँसेंगे । ऐसी त्रुटि करना भी उनके लिये कितनी मूर्खता की बात है ! बाद में हम उन्ह खेद करेंगे । लेकिन इस समय तो केवल अपन हँस सकते हैं—उनकी मूर्खता पर ।"

"बिल्कुल ठीक ।' उसने उत्तर दिया । 'लेकिन अब तुम क्या कर सकते हो ?" उसने विचार किया । 'रासुमिखिन तब क्या करेगा जब कि उसे ज्ञात होगा कि मैं अपराधी हूँ ?' इस विचार के आते ही वह उसकी ओर मुड़ने लगा । पोरफ़ीरियस के यहाँ जाना उसे अच्छा न लगा ।

रास्ते में लूशिन उन्हें मिला । वे तीनों एक दूसरे को देखे बिना ही भीतर चले गये । वे दोनों पहिले दिखे । पुलचेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना लूशिन की ओर गई । दूनिया और राज्कोल्नीकोव ने आपस में नमस्ते की । पीटर ने भीतर आकर महिलाओं को नमस्कार किया । पुलचेरिया ने उससे समोवार के आसपास बैठने की प्रार्थना की ।

कुछ देर के लिये शांति थी ।

'मुझे आशा है आपका सफ़र ठीक रहा ?" उसने पुलचेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना से पूछा ।

'परमात्मा को धन्यवाद है, बड़े मजे का रहा ।"

"मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । और एवडोकिया रोमानोवना भी, आशा है अधिक नहीं थकी होगी ?'

"मैं जवान और स्वस्थ हूँ, और थकी नहीं । पर माँ के लिये यह यात्रा बड़ी कष्टप्रद रही ।"

"और क्या आशा की जा सकती है ? राज्य मार्ग पर लम्बे हैं । बहुत चाहते हुए भी मैं कल स्टेशन पर लेने न आ सका था । मैं आशा करता हूँ कि आप लोगों को अधिक कष्ट नहीं हुआ होगा ?"

"इसके बिलकुल विपरीत, पीटर ! हम बड़ी आफत में पड़ गये। और यदि ईश्वर ने दमित्री प्रोकोफिच को नहीं भेज दिया होता, तो न जाने क्या होता कल। हाँ, मैं दमित्री प्रोकोफिच से तुम्हारा परिचय कराऊँ।" उसने कहा।

"क्यों—मुझे कल सौभाग्य प्राप्त हुआ था—!"

"क्या तुम्हें ज्ञात है कि मार्फा पीट्रोवना का देहावसान हो गया था ?" बात बदलते हुए उसने कहा।

"वास्तव में ! मैंने एक दम सुना, और मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि पत्नि को दफनाने के एक दम बाद वह सेंट पीटर्सबर्ग के लिये रवाना हो गया।"

"पीटर्सबर्ग को ? अर्थात् यहीं ?" दूनिया ने घबरा कर पूछा अपनी माँ से नजरें मिलाते हुए।

"बिलकुल ! और हम मान सकते हैं कि बिना काम के वह नहीं आया है।"

"ओ ईश्वर ! क्या यह हो सकता है कि दूनिया का उसने यहाँ तक पीछा किया हो ?"

"ऐसा लगता है कि कोई भी आप में से, यह नहीं चाहता कि वह सेंट पीटर्सबर्ग में हो। मैं पता लगाऊँगा कि वह कहाँ रहता है ?"

'आह ! पीटर तुमने मुझे कितना डरा दिया ! मुझे पूरा विश्वास है कि मार्फा की मृत्यु का वही कारण था।"

"जो बातें मैंने सुनी हैं उससे तो यह निष्कर्ष नहीं निकलता। लेकिन साधारणतया जहाँ तक उसके चरित्र का प्रश्न है, मैं पूर्ण रूप से सहमत हूँ। एक बात पक्की है, कि सेंट पीटर्सबर्ग में होते हुए, वह शीघ्र ही पुरानी आदतों पर आ जायगा, यदि उसके पास आर्थिक साधन हुए तो। वह बड़ा नीच आदमी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मार्फा पीट्रोवना, जो कि अत्यधिक मूर्ख थी, और जिसने कि आठ वर्ष पूर्व उसके कर्ज चुकाये थे, इसके अलावा, उसके और भी काम आई। अपनी चतुरता और त्याग के बल पर उसने, उस पर एक खून के लगे मामले को रफा-दफा करवा दिया था, नहीं

गो जिसके द्वारा स्विद्रिगेलोव साइबेरिया भेज दिया जाता।"

"ओ परमात्मा!" पुल्खेरिया चिल्लाई। रास्कोल्निकोव ने ध्यानपूर्वक सुना।

"किसी विशेष समाचार के आधार पर, तुम कह रहे हो न, मेरे विचार से?" दूनिया ने सख्त आवाज से पूछा।

"मैंने जो मार्फा पीत्रोव्ना से सुना वही दुहरा दिया। उस कस्बे के मगर वहीं एक औरत—जो अभी भी शायद रहती है— रेसलिख नाम की रहती थी। वह एक विदेशी थी। जो धन उधार दिया करती थी। इन दोनों में, कुछ अर्से तक विचित्र सम्बन्ध स्थापित रहा। उसके साथ एक दूर की रिश्ते की लड़की रहती थी चौदह, पन्द्रह वर्ष की जो कि बहिरी और गूँगी थी। वह उससे नफरत करती थी और उसे पीटती थी। एक दिन वह लड़की रस्सी से लटकी पाई गई और आत्म-हत्या का मामला समझ कर रफा-दफा कर दिया गया जब कि एक दिन पुलिस को समाचार मिला कि स्विद्रिगेलोव के द्वारा वह कत्ल हुई थी। लेकिन मुकदमा नहीं चला।"

"ओह कृपा करके पीतर! अब उसके बारे में बातचीत मत करो।" दूनिया ने कहा।

"वह मेरे पास अभी आया था" तेजी के साथ, रास्कोल्निकोव ने कहा जो कि अभी तक एक शब्द भी नहीं बोला था।

सब लोग एक दम उसकी ओर मुड़ गये। पीतर भी कुछ इच्छुक लगा।

"आधा घण्टा हुए जब कि मैं सो रहा था, वह मेरे कमरे में आया, मुझे उठाया, और अपना नाम बताया। वह मेरा मित्र बनने का बड़ा उत्सुक था, और बातों के साथ-साथ वह तुमसे मिलने का बड़ा उत्सुक था दूनिया! और इसके लिये उसने मुझे दुआ दी, और प्रार्थना की। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि मृत्यु के एक दिन पहिले मार्फा पीत्रोव्ना, तुम्हारे लिये तीन हजार रूबल छोड़ गई है, जिसे तुम कुछ समय के बाद निकाल सकती हो।"

"परमात्मा धन्य है! उसके लिये प्रार्थना करो! दूनिया, प्रार्थना करो।" क्रास का चिन्ह बनाते हुए पुल्खेरिया अलेक्जान्द्रोवना ने कहा।

"क्या यह वास्तव में सत्य है।" रज़ुमिन बिना पूछे न रह सका।

"इससे अधिक और क्या ?" दूनिया ने उत्सुकतापूर्वक कहा।

"उसने यह भी कहा था कि वह अभी मेरे पास ही रह रहा है—मैं पूछना भी भूल गया।"

"और वह दूनिया से क्या कहना चाहता है ?" माँ ने पूछा। "उसने तुम्हें बताया ?"

"हाँ बताया।"

"क्या था ?"

"बाद में ज्ञात हो जायगा।" यह कहकर रासकोल्निकोव ने चाय पीनी आरम्भ की।

पीटर पैट्रोविच ने अपनी घड़ी की ओर देखा। "एक ज़रूरी काम से मुझे जाना है। इसलिये, अब मैं आप लोगों का हर्ज नहीं करूँगा।" यह कह कर वह उठा।

"ठहरो पीटर पैट्रोविच! तुम्हारा विचार तो सारी शाम यहीं बिताने का था। इसके अलावा, स्वयं तुमने लिखा था कि तुम अम्मा से किसी प्रकार की सफ़ाई चाहते हो।" दूनिया ने कहा।

"बिल्कुल ठीक कहती हो, एवडोत्यिया रोमनोवना," प्रभावपूर्ण भाषा में कहते हुए, उसने बैठने का प्रयत्न किया। "निस्सन्देह मैं तुमसे और तुम्हारी आदरणीय माँ से कुछ गम्भीर विषयों पर स्पष्टीकरण चाहता था। लेकिन चूँकि तुम्हारे भाई श्री रास्कोल्निकोव के कुछ प्रस्तावों को मेरे सामने नहीं रख सकते इसलिये मैं न तो इस योग्य हूँ और न उत्सुक ही हूँ कि तीसरी पार्टी के सामने कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सफ़ाई दूँ।"

"मैं जानती हूँ कि हमारे मिलने के समय मेरे भाई को यहाँ नहीं होना चाहिए था। तुमने लिखा था कि मेरे भाई ने आपका अनादर किया है, और मेरे विचार से तुम दोनों के बीच किसी प्रकार की गलतफ़हमी नहीं रहनी चाहिये। यदि रोडिया वास्तव में दोषी है तो वह क्षमाप्रार्थी होगा।"

"चाहे कुछ भी हो आप एवडोत्यिया रोमनोवना! इस दुनिया में कुछ

अनादर को भूलना असम्भव है हर बात की सीमा होती है और उसे लाँघना खतरनाक होता है और लाँघ जब तो वापिस होना असम्भव है।"

'इस भाउन्या को एक बार उसी पीटर पैट्रोविच। मैंने तुम्हें एक पवित्र वचन दिया है, मुझ पर विश्वास करो कि मैं निश्चित भाव से निर्णय दूँगी जब तुम्हारे पत्र आने पर मैंने जब उसे यहाँ अवश्य आने के लिये आग्रह किया, तो अपना इरादा उसे नहीं बताया। विश्वास रखो कि यदि तुम समझौते के लिये तैयार नहीं होगे तो मैं किसी एक के पक्ष में निर्णय देने र मजबूर हो जाऊँगी और दूसरे से सम्बन्ध तोड़ने के लिये। मगर इस प्रकार क्य होगा। मैं, न तो चाहती हूँ, और न भाग्य तुम्हारा होना ही चाहिये। यदि तुम्हारे पक्ष में अपने भाई से सम्बन्ध तोड़ डालूँ, और उसके पक्ष में तुम से। मुझे जानना पड़ेगा कि रोडिया में मेरा भाग्य है या तुम में पतित, या मुझे इतना जानना है।'

"दूनिआशा रोमानोवना! परवाह सा होता हुआ वह बोला' तुम्हारी भाषा में कई प्रकार की व्याख्या मिलती है, नहीं—वास्तविक अनेक भी हैं, क्यों कि मुझे तुमने अपने भाई के स्तर पर रख दिया है। तुम उसे स्वीकार करती हुई सी लगती हो कि हमारे विवाह के सम्बन्ध विपरीत होने की सम्भावना है तुम कहती हो कि तुमको मुझ में से और अपने भाई में से एक को चुनना चाहिये। इससे स्पष्ट होता है कि मैं तुम्हारी निगाह में ...क्या हैं हूँ। मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।"

'क्या?' दाम से काँप पड़ती हुई दूनिया चिल्लाई, "मुझे अपने जीवन में जो सबसे अधिक प्यारा है मैं तुमको उससे तौल रही हूँ, और तुम शिकायत करते हो कि मेरी निगाह में तुम तुच्छ हो।"

रस्कोल्नीकोव हँसा—व्यंग्यपूर्वक, लेकिन लड़की के उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुआ जो कि और भी उत्तेजित हुआ सा लगने लगा।

"पति के लिये प्रेम—जो कि तुम्हारे आगामी जीवन का साथी होने वाला है उसको तुम्हारे भाई के प्रेम से अधिक होना चाहिये। और कम भी ...ी मुझे उस स्तर पर नहीं रखा जा सकता चाहिये। यद्यपि मैंने अभी ...ि तुम्हारे भाई के सामने किसी प्रकार की अपमान रैंगा नहीं चाहता, पर ...

बड़ी महत्वपूर्ण है मेरे साथ, जिसे तुम्हारी माँ के सामने स्पष्ट कर देना ही, इस समय मैं चाहता हूँ। तुम्हारे पुत्र ने, 'माँ की ओर संकेत करते हुए,' कल मेरी बेइज्जत की है—श्री राज़ुमिखिन के सामने। मैंने कहा था कि, एक लड़की जिसे कि गरीबी का अनुभव है, मेरी राय में, वह अपने पति को जीवन में अधिक सुख दे सकती है, बजाय उसके जो हमेशा अमीरी में पली हो। तुम्हारे पुत्र ने जानबूझ कर इसका उल्टा अर्थ लगाया, मेरे विचार से इसके लिये आपका जो पत्र व्यवहार हुआ था वह भी जिम्मेदार है। यदि आप मेरी त्रुटि बतावें तो मैं आपका बड़ा अनुग्रही होऊँगा। बताइये! कि मेरे कथन का आपने अपने पत्र में किस प्रकार का रूप दिया——जो कि रोडिया को लिखा गया था।"

"मुझे याद नहीं पर जैसा मैंने समझा वैसा लिख दिया। मुझे नहीं मालूम कि रोडिया ने तुमसे किस प्रकार कहा। उसने शब्दों पर जोर दिया होगा।'

"वह तुम्हारे लिखने के ढंग पर ही जोर दे सकता है।"

"पीटर पीट्रोविच! बड़ी शान के साथ माँ ने कहा "इसका सबूत कि मैंने और दूनिया ने तुम्हारे शब्दों का अर्थ गलत नहीं लगाया है, यह है कि हम लोग आज यहाँ हैं।"

"बहुत अच्छा कहा, माँ!' लड़की बोली।

"तो क्या मैं गलती पर हूँ?" लूझिन चिल्लाया।

'मैं बताऊँ पीटर! कि तुमने अपने अंतिम पत्र में रोडिया पर कुछ दोषारोपण लगाया है।" माँ ने लड़की की बात से उत्साहित होकर कहा।

"कुछ असत्य लिखा गया है ऐसा मुझे याद नहीं है।'

"तुम्हारे पत्र के अनुसार," रस्कोल्नीकोव ने घोषित किया, बिना उसकी ओर देखे, "मैंने किसी एक लड़की को, जिसे पहिली ही बार देखा था, वह धन दे डाला जो मुझे उस विधवा को देना था जिसका पति कि हाल ही में कुचला गया था। तुमने इसलिये लिखा कि मैं अपने परिवार में बदनाम हो जाऊँ और अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये, उस लड़की के चालचलन पर भी आक्षेप किया जिसे कि तुमने पहिले ही बार देखा था। वह नीच प्रकार की बदनामी है।"

"क्षमा करना श्रीमान !" क्रोध में काँपते हुए लूज़िन ने कहा "यदि मैंने अपने पत्र में तुम्हारे मामले को तूल दिया तो इसलिये कि तुम्हारी माँ और बहिन ने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हारा वैसा ही वर्णन करूँ जैसा कि मैंने तुम्हें देखा हो और जो कुछ उसका मुझ पर प्रभाव पड़ा हो। तुमने अपना पैसा बरबाद किया, इससे क्या तुम्हें इन्कार है? और क्या उस परिवार के ..स सदस्यों के बारे में तुम आदरपूर्वक कुछ भी कह सकते हो?"

"मेरे विचार से, तुम्हारे समस्त आदर का ध्यान रखते हुए, उस परिवार की छोटी महिला, जिसे तुमने बदनाम किया है, की छोटी उँगली के बराबर भी तुम नहीं हो।"

"और क्या तुम्हारे कहने का तात्पर्य यह है कि तुम उसका परिचय अपनी माँ और बहिन से कराने में तनिक भी नहीं हिचकोगे?"

"मैं ऐसा कर चुका हूँ—यदि तुम जानना चाहो तो। मैंने आज उसे ... और बहिन के पास बैठने के लिये बुलाया था।"

"रोदिया! माँ चिल्लाईं। बहिन शरमाई, रज़ुमिखिन ने भौं सिकोड़ी, और लूज़िन के होंठों पर हल्की मुस्कराहट खेल गई।

"अब तुम्हीं विचार करो, दूनिया!" लूज़िन ने कहा, "कि हम लोगों की मित्रता सम्भव है? अब मैं जाता हूँ।" वह उठा और टोपी उठाई, "लेकिन जाने के पहले तुम्हें बताता हूँ कि भविष्य में, मैं इस प्रकार का मिलन नहीं चाहूँगा।"

पुलकेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना ने कुछ उद्विग्न होते हुए कहा, "तुम अपने ...सको यहाँ पर, पूर्ण रूप से मालिक समझते हो, पीटर पीट्रोविच! दूनिया ...े बताया कि तुम्हारी इच्छा पूर्ति क्यों न हो पाई, यद्यपि उसका इरादा ...च्छा नेक था। लेकिन मैं भी तुम्हें बता दूँ—कि तुम्हारा लिखने का ढंग ...ा हुक्मनामा था। क्या हमें तुम्हारी आज्ञाओं और समस्त इच्छाओं की ...ँ ही करना है? तुम्हें बताऊँ कि सब बातों से ऊपर ऐसी हालत में, ... हमारे साथ लिहाज करना चाहिए क्योंकि हमारा तुममें विश्वास ही ...ुछ छोड़कर यहाँ लाया है, अब हम तुम्हारी दया पर निर्भर हैं।"

"यह बिल्कुल सत्य नहीं है, पुलकेरिया अलेक्जेन्ड्रोवना! विशेष

ग्म से तब जबकि तुम्हें ज्ञात हो गया है कि मार्फा पीत्रोवना ने तुम्हारी पुत्री के लिये तीन हजार रूबल छोड़े हैं।" कटुता से लूजिन बोला।

"इस कथन का मतलब तो यह हुआ कि तुम अभी तक हमारी गरीबी की ओर ही ध्यान लगाये थे!' दूनिया ने डंक मारा।

"अभी तो इस बारे में मैं कुछ भी नहीं कर सकता, खास कर जब कि मैं तुम्हें स्विद्रिगेलोव के गुप्त सन्देश को सुनने से रोकना नहीं चाहता, जो कि तुम्हारे भाई द्वारा आया है। मुझे ऐसा लगता है कि वे मसले, तुम्हारे लिये, लाभप्रद होंगे।"

'परमात्मा!" पुल्खेरिया चिल्लाई। राजुमिखिन कुर्सी पर हिल गया।

"शरमाओ बहिन! क्या तुम्हें अब भी लज्जा का अनुभव नहीं होता!" रास्कोल्नीकोव ने पूछा।

"मैं शर्मिंदा हूँ। रोदिया!" उसने कहा। 'पीत्र! तुम कमरे के बाहर निकल जाव।' गुस्से में भर कर उसने लूजिन से कहा।

उसने ऐसी आशा नहीं की थी। उसे अपनी शक्ति पर अधिक भरोसा था, और उन लोगों के असहायपन पर। तो भी उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "दूनीथिया रोमनोवना! यदि मैं जाता हूँ तो फिर कभी लौट कर नहीं आऊँगा! सोच लो कि तुम क्या कह रही हो! जो कुछ मैं कहता हूँ वही मेरा अभिप्राय भी है।"

"बदतमीज आदमी! मैं कभी भी तुम्हारा चेहरा अब देखना नहीं चाहती, यहाँ पर।"

"क्या? सचमुच ही!" लूजिन ने अन्तिम क्षणों में इस प्रकार की बात की कभी सम्भावना भी नहीं की थी। 'और यह हवा का रुख है! लेकिन, दूनीथिया, मैं इस हालत में हूँ कि इसका विरोध कर सकूँ।"

"तुम्हें इस प्रकार बोलने का क्या अधिकार है?" माँ ने कहा, 'तुम्हें विरोध करने का क्या अधिकार है! तुम सोचते होगे कि तुम सरीखे आदमी को मैं दूनिया को सुपुर्द कर दूँगी? दूर हो! और हमें शांतिपूर्वक रहने दो! मैंने इस प्रकार की असभ्यता की बात को होने दिया, यही गलती की।"

"और तो भी, दुसचरिया ! तुमने मेरे साथ कुछ वादा किया है, जिसे पूरा करने से तुम इन्कार कर रही हो, और इसमें मेरा नाश हुआ है।"

यह अन्तिम बात लूजिन के चरित्र को स्पष्ट करती थी, लेकिन इसके बावजूद भी रासकोल्नीकोव अपनी हँसी न रोक सका।

'दाव !" पुलचेरिया अलेक्जेन्द्रोवना ने कहा, "तुम्हारा मतलब उस गाड़ी से है जो तुमने भेजी थी ? लेकिन उसका इन्तजाम तो मुफ्त में किया गया था। हे राम ! तुम कहते हो कि हमने तुम्हें वायदे में बाँध रखा है ! इस तरह से मामला उलट रहे हो। इस तरह कहो कि हम तुम्हारी दया के पात्र थे, पीटर ! तुम हमारी दया के पात्र नहीं।'

"बस, बहुत हो गया मामा। पीटर पेत्रोविच के यहाँ से चले जाएं।'

"मैं जा रहा हूँ, लेकिन एक बात और। तुम्हारी मामा शायद भूल रही हैं कि मैंने तुमसे विवाह करना उस समय स्वीकार किया था जब कि तुम्हारे लिये बुरी बेतुकी बातें उड़ रही थीं मैंने सोचा था कि तुम आभारी होगी वास्तव में। पर मेरी आँखें खुल गईं, और मैंने जनमानस के मत का न मानकर भूल की।'

"ऐसा लगता है कि यह आदमी अपना सिर कुचलवाना चाहता है !" रजुमिखिन चिल्लाया, जो उस समय देने के लिये तैयार था।

"तुम नीच ! बुरे आदमी हो।" दूनिया चिल्लाई।

"फिर दूसरा शब्द नहीं ! ' रासकोल्नीकोव ने कहा—रजुमिखिन को, मना करते हुए, और लूजिन के पास पहुँच कर धीमे फिर भी स्पष्ट रूप से कहा, "अभी प्रकार यहाँ से चल जाओ एक शब्द भी नहीं——'

पीटर, काँपता हुआ गुस्से में चला गया—अपने हृदय में रासकोल्नीकोव के लिये घृणा भरे हुए। लेकिन, नीचे पहुँच कर दूसरे ही क्षण उसने सोचा कि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है और उन महिलाओं के साथ समझौते की गुँजाइश है।

३

कुछ मिनिटों के लिए सब लोग बड़े प्रसन्न नजर आये—सन्तोष हँसी से प्रकट हुआ। कभी कभी दूनिया कुछ चिन्तित सी नजर आई। लेकिन

इस से तब जबकि तुम्हें ज्ञात हो गया है कि मार्फा पीट्रोवना ने तुम्हारी पुत्री के लिये तीन हजार रूबल छोड़े हैं।" कटुता से लूशिन बोला।

"इस कथन का आशय तो यह हुआ कि तुम अभी तक हमारी गरीबी की ओर ही ध्यान लगाये थे!" दूनिया ने डंक मारा।

"अभी तो इस बारे में मैं कुछ भी नहीं कर सकता, खास कर जब कि मैं तुम्हें स्विद्रिगेलोव के गुप्त सन्देश को सुनने से रोकना नहीं चाहता, जो कि तुम्हारे भाई द्वारा आया है। मुझे ऐसा लगता है कि ये मसले, तुम्हारे लिये, लाभप्रद होंगे।"

"परमात्मा।" पुल्चेरिया चिल्लाई। राजुमिखिन कुर्सी पर हिल गया।

"बताओ, बहिन! क्या तुम्हें अब भी लज्जा का अनुभव नहीं होता?" रासकोल्नीकोव ने पूछा।

"मैं शर्मिंदा हूँ। रोडिया!" उसने कहा। "पीतर! तुम कमरे के बाहर निकल जाव।" गुस्से में भर कर उसने लूशिन से कहा।

उसने ऐसी आशा नहीं की थी। उसे अपनी शक्ति पर अधिक भरोसा था, और उन लोगों के असहायपन पर। तो भी उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। "एवडोशिया रोमनोवना! यदि मैं जाता हूँ तो फिर कभी लौट कर नहीं आऊँगा! सोच लो कि तुम क्या कह रही हो! जो कुछ मैं कहता हूँ वही मेरा अर्थ भी है।"

'बदतमीज आदमी! मैं कभी भी तुम्हारा चेहरा अब देखना नहीं चाहती, यहाँ पर।"

"क्या? सचमुच ही!" लूशिन ने अन्तिम क्षणों में इस प्रकार की बात की कभी सम्भावना भी नहीं की थी। "और यह हवा का रुख है? लेकिन, एवडोशिया, मैं इस हालत में हूँ कि इसका विरोध कर सकूँ।"

'तुम्हें इस प्रकार बोलने का क्या अधिकार है?" माँ ने कहा, 'तुम्हें विरोध करने का क्या अधिकार है? तुम सोचते होगे कि तुम सरीखे आदमी को मैं दूनिया को सुपुर्द कर दूँगी? दूर हो? और हमें शांतिपूर्वक रहने दो! मैंने इस प्रकार की असभ्यता की बात को होने दिया, यही गलती की।"

"और लो भी, पुलकेरिया ! तुमने मेरे साथ कुछ वादा किया है, जिसे पूरा करने से तुम इन्कार कर रही हो और इसमें मेरा क्या दोष हुआ है।"

यह अन्तिम बात लूजिन के चरित्र को स्पष्ट करती थी, लेकिन इसके बावजूद भी रासकोल्नीकोव अपनी हँसी न रोक सका।

"क्या !" पुलकेरिया अलेक्जेन्द्रोवना ने कहा, "तुम्हारा मतलब उस बात से है जो तुमने भेजी थी ? लेकिन उसका इन्तजाम तो मुफ्त में किया गया था। हे राम ! तुम कहते हो कि हमने तुम्हें वायदे में बांध रखा है ! इस तरह से मामला उलट रहे हो। इस तरह कहो कि हम तुम्हारी दया के पात्र हैं, पीटर ! तुम हमारी दया के पात्र नहीं।

"बस, बहुत हो गया, मामा। पीटर कृपाकर के यहाँ से चला जाय।"

"मैं जा रहा हूँ, लेकिन एक बात और। तुम्हारी मामा शायद भूल रही हैं कि मैंने तुमसे विवाह करना उस समय स्वीकार किया था जब कि तुम्हारे लिये बुरी बेहूदी बातें चल रही थीं, मैंने सोचा था कि तुम मासूम होगी वास्तव में। अब मेरी आँखें खुल गईं और मैंने जनसाधारण के मत का न मानकर भूल की।"

"ऐसा लगता है कि यह आदमी अपना सिर फुड़वाना चाहता है !" अधिक जोर से रासुमिखिन चिल्लाया, जो उसे सबक देने के लिये निकला था।

'तुम नीच ! बुरे आदमी हो।' दूनिया चिल्लाई।

"फिर दूसरा शब्द नहीं !" रासकोल्नीकोव ने कहा—रासुमिखिन को, मना करते हुए, और लूजिनके पास पहुँच कर धीमे, फिर भी स्पष्ट रूपसे कहा, 'भली प्रकार यहाँ से चले जाओ एक शब्द भी नहीं——"

पीटर, पीला हुआ गुस्से में चला गया—उसके हृदय में रासकोल्नीकोव के लिये घृणा भरे हुए। लेकिन, नीचे पहुँच कर दूसरे ही क्षण उसने सोचा कि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, और उन महिलाओं के साथ समझौते की गुंजाइश है।

3

कुछ मिनिटों के लिये सब लोग बड़े प्रसन्न नजर आये—[illegible] हँसी से प्रसन्न हुआ। कभी कभी दूनिया कुछ चिन्तित सी नजर आई। लेकिन

रासुमिखिन अधिक उल्लसित था। वह अब उन दोनों महिलाओं की सेवा कर सकता था। फिर भी उन भावनाओं को उसने अपने हृदय में रखा। जहाँ तक रासकोल्नीकोव का प्रश्न है उसका ध्यान कहीं और था। दूनिया से इस मिलन को देख कर प्रसन्न होने वाला वही ऐसा था कि मिलन हो जाने पर उसे कम से कम प्रसन्नता हुई। दूनिया और पुलचेरिया—दोनों—उसे ध्यानपूर्वक देख रहे थे।

"बताओ कि स्विद्रिगेलोव तुमसे क्या कह रहा है?" दूनिया ने पूछा।

"हाँ बताओ तो कृपा करके।" माँ ने पूछा।

रासकोल्नीकोव ने ऊपर देखा। "क्यों? वह तुम्हें दस हजार रूबल की भेंट करना चाहता है तुमसे एक बार, मेरे सामने, मिलना चाहता है।"

"इसे देखना चाहता है! कभी नहीं! और उसने उसके (मार्फा) पत्र को भेंट करने की हिम्मत कैसे की!"

इस पर रासकोल्नीकोव ने थोड़ी बहुत स्विद्रिगेलोव के साथ बातों भेंट का वर्णन किया। सुनकर दूनिया बड़ी देर तक विचारमग्न रही। "उसके कुछ दूषित इरादे हैं," वह बड़बड़ाई।

रासकोल्नीकोव ने उसके भय को देखा, "मैं समझता हूँ कि उससे अभी और मिलने का मुझे अवसर आयेगा।"

"हम उसके बारे में मालूम कर लेंगे। मैं उसको किसी से योग्य नहीं होने दूँगा। मुझे रोदिया की आज्ञा है, मेरी बहिन की रक्षा करना, क्या तुम्हारी भी आज्ञा है?' रासुमिखिन ने क्रोध में कहा।

दूनिया हँसी और उसने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। थोड़ी देर में सब लोग बातचीत में व्यस्त हो गये।

'और, मैं पूछ सकता हूँ कि, इस स्थान को क्यों छोड़ा जाय। अपनी इस छोटी सी जगह में तुम लोग क्या करोगे? यह न भूलिये कि आप लोग एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते। फिर मुझे भी अपना ही मित्र समझो।

"हम लोग कुछ दिन यहीं रहना भी चाहते हैं।" माँ ने बेटे की ओर देखते हुए कहा।

"लेकिन तुम किधर चले रोदिया?"

'अरे ! तुम तो जा रहे हो वास्तव में ।' माँ ने पूछा ।

"और ऐसे समय !" रज़ुमिखिन चिल्लाया । दूनिया ने भाई की ओर अविश्वास और अचम्भे से देखा । उसने टोपी उठाई, और जाने को तैयार हुआ ।

"हाँ कोई शायद कहे कि यह अवश्य विद्रोह का अवसर है । तुमने मुझे अभी तक दफ़ना क्यों नहीं दिया ! अजीब तरह से उसने कहा । यह हँसी पर कैसी हँसी ! शायद यह अन्तिम बार ही हो कि हम एक दूसरे के साथ हों । कौन जाने !" अनायास ही उसके ओठों से यह शब्द निकल पड़े ।

"आखिर बात क्या है तुम्हारे साथ ! माँ ने हताश होकर पूछा ।

'कहाँ जा रहे हो रोदिया ?' बहिन ने ज़ोर देते हुए पूछा ।

"मुझे जाना चाहिये । मैं तुम लोगों से कहने आया था कि यदि कुछ दिनों को हम अलग हो जाँय तो अच्छा हो । मैं ठीक नहीं हूँ—कुछ आराम चाहता हूँ यदि आ सका तो मैं आऊँगा—मैं तुम दोनों को भूल नहीं सकता और हमेशा प्यार करूँगा । छोड़ दो । मुझे अकेला छोड़ दो ! मैं शायद स्वयं आऊँ या तुम्हें बुलाऊँ । शायद अब सब ठीकठाक हो जाय । नमस्कार ।"

"हे परमात्मा ! रोदिया ! रोदिया !!' बिचारी माँ चिल्लाई ।

धीरे धीरे वह द्वार की ओर गया । दूनिया भी उसके पास पहुँच गई । "ओह ! भाई ! तुम माँ के साथ ऐसा कैसे व्यवहार करते हो ?' वह चिल्लाई ।

उसने उसकी ओर देखा । "कोई बात नहीं है । मैं वापिस आऊँगा ।" वह बेहोशी की हालत में होकर सा बोला । और कमरे के बाहर हो गया ।

"स्वार्थी कठोर निर्दयी !" दूनिया ने कहा ।

'वह स्वार्थी नहीं है पागल है पागल ! मैं कहता हूँ । क्या तुम्हें नहीं दीख रहा है !' उस लड़की का हाथ पकड़ते हुए ज़ोर से रज़ुमिखिन ने कहा ।

"मैं अभी आता हूँ । उसने पुलचेरिया से कहा । और वह द्वार की ओर दौड़ा ।

रस्कोल्निकोव उसकी प्रतीक्षा बाहर कर रहा था । "मैं जानता था

'जब तुम अपने माँ बाप के साथ थीं तब भी ?"

"हाँ।"

"ठीक है !" एक दम उसके चेहरे का भाव परिवर्तित हुआ। "यो तुम कोपरनाउमोव के साथ रहती हो ?"

"हाँ !"

"वे लोग इस द्वार के उस ओर रहते हैं ?"

"हाँ, उन लोगों का कमरा पास वाला ही है।"

'और तुम्हारे पास केवल एक ही कमरा है ?"

बस।"

"यदि मैं ऐसे कमरे में रहूँ तो रात में मुझे डर लगे।"

"मेरे पास रहने वाले बड़े भले हैं ये फरनीचर वगैरा सब उनका ही है—हर वस्तु उनकी है। उनके बच्चे अक्सर आते हैं।'

"वे लोग हकलाते हैं न ?' रासकोल्नीकोव।

"हाँ, लेकिन तुम्हें यह सब कैसे ज्ञात हुआ ?"

"तुम्हारे पिता ने मुझसे एक बार कहा था सब कुछ। तुम्हारी सारी कहानी भी उसने कही थी। उसने कहा था कि एकबार तुम छः बजे गईं थीं और आठ बजे वापिस हुईं थीं और केथराइन इवानोवना ने तुम्हारे पास घुटने टेक कर प्रार्थना की थी।"

सोनिया आश्चर्यान्वित हो उठी। 'मैंने आज उन्हें देखा था।" उसने हिचकते हुए कहा।

"किसे ?"

"मेरे पिता को। मैं उन्हें केथराइन की हालत भी बताना चाहती थी।"

"क्या तुम चल रही थी ?"

'हाँ।"

"क्या केथराइन इवानोवना तुम्हें मारा भी करती थी जब कि तुम अपने पिता के साथ रहती थीं ?'

"नहीं तो। तुम ऐसी बात कैसे कहते हो ! नहीं !'

"तो तुम्हें वह अच्छी लगती है?"

"वह? बिल्कुल! क्या तुम? यदि तुम उसे जानते। वह बिल्कुल बच्चे की भाँति है। लेकिन उसकी प्रतिभा, सफाई, उदारता के बारे में—तुम कुछ नहीं जानते!"

उसने प्रत्येक शब्द पर जोर देकर कहा। वह भावपूर्ण हो गई। उसके पीले गालों पर फिर रक्त आ गया, उसकी आँखों में वेदना झलकती थी।

"उसने मुझे मारा! तुम क्या कह रहे हो! ओह बड़ी दुखी है। और बीमार थी। वह न्याय चाहती है। उसकी ऐसी धारणा नहीं है कि पाप संसार से उठ गया है।"

"और तुम्हारा अब—तुम्हारा क्या होने वाला है? वे तुम्हारे आश्रित हैं! और अब क्या होने वाला है?" रासकालनीकोव ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम।" सोनिया ने दुःखित होकर उत्तर दिया।

"क्या वे लोग वहीं रहेंगे?"

"मुझे नहीं मालूम। वे उस मकान मालकिन के कर्जदार हैं और ऐसा मालूम पड़ता है कि उसने उन लोगों का आज ही मकान खाली करने के लिये कह दिया है।"

"मेरे विचार से वह तुम पर आश्रित है?"

"ऐसा मत कहो। हम सब आश्रित हैं। हमारे बाल भी आश्रित हैं। इसके अलावा वह बिचारी कर ही क्या सकती है! वह रोती है अपना सिर धुनती है, और तब अपने आपको तसल्ली दे लेती है कि तुम पर उसकी आस्था है। कुछ उधार लेकर वह मुझे लेकर अपने गाँव जाने की बात करती है।—एक दुकानदार के सामने, जब कि वह चीजें खरीद रही थी, रो दी! ओह! कितना हृदयविदारक दृश्य था!"

"मैं समझा, कि तुम इस प्रकार से क्यों रहती हो।" फीकी हँसी से रासकालनीकोव ने कहा।

"ओह क्या तुम्हें उस पर दया नहीं आती? मैं जानती हूँ कि तुमने अपनी अंतिम पाई उनको दे डाली। आह! कितनी बार मैं उसके आँसुओं का कारण बनी हूँ! कितनी दफे!"

"तुम्हारा कहने का तात्पर्य यह है कि तुम उसके साथ कठोरता करती हो ?"

"हाँ, मैं—मैं । मैं उन लोगों को देखने गई थी । मेरे पिता ने कहा था 'सोनिया कुछ पढ़ो, मेरे सिर में दर्द है ।' 'मुझे जाना चाहिये ।' क्योंकि मेरी पढ़ने की इच्छा नहीं हो रही थी । एलिजावेथ मेरे लिये कफ और कॉलर लाई थी मैंने उन्हें सस्ता ही खरीदा था । केथराइन इवानोवना को वह बड़े पसन्द आये । 'यह मुझे दे दे सोनिया,' उसने कहा । हालाँकि वे उसके विशेष काम के न थे । तुम इसका क्या करोगी ?' मैंने उससे पूछा था, वास्तव में । मुझे इस प्रकार न कहना चाहिये था । उसने दुःखी होकर मेरी ओर देखा । मुझे अब वह सब याद आता है ! हा !'

"क्या तुम इस एलिजावेथ को जानती थीं ?"

"हाँ । क्या तुम भी जानते थे ?" कुछ आश्चर्य से सोनिया ने कहा ।

केथराइन इवानोवना का क्षय का अन्तिम चरण है, वह शीघ्र ही मर जायगी ।" उसके प्रश्न का उत्तर दिये बिना उसने कहा ।

"ओह ! नहीं, नहीं, नहीं !" सोनिया ने कहा, और बिना समझे कि वह क्या कर रही है उसने रास्कोल्नीकोव के दोनों हाथ पकड़ लिये जैसे केथराइन का भाग्य उसके हाथों में है ।

' लेकिन अच्छा ही हो यदि वह मर जाय ।'

"यह मत कहो कि अच्छा ही हो, किसी तरह भी नहीं ।"

"और बच्चे ? तुमने उनके बारे में क्या सोचा है क्योंकि वे तुम्हारे पास तो रहते नहीं हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम ।" जैसे यह विचार उसके दिमाग में भी आया हो ।

"यह मानते हुए कि केथराइन इवानोवना अभी कुछ दिन और जीवित रहती है, और तुम स्वयं बीमार पड़ जाओ, तब क्या होगा ?'

"ऐसा कहो, मत ! मत कहो ! ऐसा होना असम्भव है ।" भयभीत होकर सोनिया ने कहा ।

' असम्भव कैसे ?' उसने व्यंग से हँसते हुए कहा, "मेरी समझ में

तुम भी बीमारी से बची नहीं हो ? ऐसी हालत में परिवार का क्या होगा ! सड़कों पर मारे मारे फिरेंगे । ऐसी हालत में केपरनाउम पर आये और तब बच्चों का क्या होगा !"

"नहीं परमात्मा ऐसा नहीं कर सकता ।" सूखते गले से सोनिया ने कहा । रासकोलनीकोव उठकर इधर उधर कमरे में टहलने लगा । सोनिया के दोनों हाथ जुड़ गये मानों प्रार्थना में लीन हो उसका सिर नीचे की ओर झुका था—वह डरी थी ।

"उसे बचाना—भी तो सम्भव, नहीं ।"

नहीं ।" सोनिया ने उत्तर दिया ।

"बिल्कुल नहीं लेकिन क्या तुमने प्रयत्न किया ?" उसने कुछ व्यंग से प्रश्न किया ।

"मैंने प्रयत्न किया है ।"

"और तुम असफल रहीं ? ऐसा ही लगता है ! क्या तुम हर दिन कुछ नहीं कमातीं ।

इस प्रश्न पर सोनिया और भी घबरा गई । शर्म से उस के गाल लाल हो गये । "नहीं," उसका दुःखपूर्ण उत्तर था ।

"और पोलेचका ?"

"असम्भव ! नहीं असम्भव !!" जैसे छुरे से काट डाला हो "परमात्मा ऐसा कभी न होने देगा ।'

"परन्तु यह इससे भी अधिक कष्टदाता है !'

"नहीं, मैं कहती हूँ, नहीं, परमात्मा उसकी रक्षा करेगा ।"

"तुम सब जानती हो ! शायद परमात्मा है ही नहीं ।' कटुता से कहते हुए रासकोलनीकोव फीका मुस्कराया ।

एक परिवर्तन सोनिया के चेहरे पर आया । वह अधीर सी लगी । रोते हुए उसने अपना मुँह ढक लिया ।

कई मिनिट व्यतीत हो गये । एक दम वह उसके पास गया । उसकी आँखें चमक उठीं, उसके होंठ काँपे और दोनों हाथों को उसके कन्धों पर रखते हुए उसने कठोर दृष्टि उसके भीगे हुए चेहरे पर डाली । एक क्षण में ही

वह झुका और उसके पैर चूम लिये। वह डर कर पीछे हट गई। उस समय रासकोल्नीकोव पागल सा लग रहा था।

"तुम क्या कर रहे हो? और मेरे?" दुःखित हृदय से सोनिया ने कहा।

वह उठा। "मैं तुम्हारे सामने नहीं झुका, लेकिन तुम्हारे व्यक्ति में समस्त मानवता की वेदना के आगे झुका," अजीब तरह से उसने कहा। "सुनो! मैंने एक गुस्ताख आदमी से कहा कि वह तुम्हारे घर्मे के बराबर भी नहीं है और यह कि मैंने अपनी माँ को, तुमसे मिलाते हुए, सम्मानित किया।"

"और तुम ऐसा कैसे कह सके? और मुझसे मिलाकर सम्मानित किया? मैं जोकि इतनी नीच हूँ। कैसे कह सके तुम? कैसे?" उसने विचार करते हुए कहा।

"मैंने जब कहा, तो न तो उस समय मुझे तुम्हारे अपमान का ध्यान था और न कमजोरियों का। मैंने केवल तुम्हारे दुःख का ध्यान किया था। निःसन्देह तुमने था गलती की, वह त्याग, किसी विशेष प्रयोजन से नहीं। ऐसा त्याग जिससे किसी को लाभ नहीं। लेकिन यह बताओ, कि तुम अपनी पवित्र आत्मा के सहित इतनी निलज्ज कैसे हुई? इससे नहीं अच्छा डूब जाना था—एक पल में समाप्त कर देना था।

"और उन के वास्ते? उनका क्या होगा?" सोनिया ने बलिदानी की निगाह से देखते हुए कहा। रासकोल्नीकोव कुछ अचरज से उसकी ओर देखने लगा।

उसकी ताकत ने सब कुछ कह दिया। उसके मन में भी यह विचार उठ रहे थे। वह सोच रहा था कि सोनिया के ऐसे विचार और शिक्षा होते हुए, उसने आत्म हत्या ही, या पागलपन ही उसके हृदय पर क्यों न आकर लिया। तब क्या चीज है जिसे उसने बचाये रखा। क्या बदचलनी का असर ठीक था? कभी नहीं! बुरी बातों ने उसके चरित्र पर प्रभाव नहीं डाला था। रासकोल्नीकोव ने इसे समझा। उसने लड़की के हृदय को पुस्तक की भाँति पढ़ा।

"उसका भविष्य निश्चित है।' उसने विचारा," अथ समाधि, पागल

-जाता या बाहरी जीवन ! क्या यह सम्भव है कि यह जीव, जिसका कि मस्तिष्क इतना स्पष्ट है अपना इस प्रकार अन्त करे ? क्या अभी तक वह इस जीवन की आदी नहीं बन पाई ? असम्भव ! "नहीं, जिसने उसे अभी तक पानी में कूद पड़ने से बचाया है वह पाप का भय है, तथा उसका दण्ड । क्या वह पागल नहीं है ? कौन कहे कि वह नहीं है ? क्या उसके सारे ज्ञान तन्तु स्वस्थ हैं ?"

"और तुम—तुम अक्सर परमात्मा से प्रार्थना करती हो, सोनिया ?"

कोई उत्तर नहीं। उसने उत्तर की प्रतीक्षा की। "परमात्मा के बिना तब मैं क्या होगई होती, क्या हुई होती।" वह धीमी आवाज में बोली। उसने रास्कालनीकोव का हाथ थाम लिया।

"ठीक, मैं गलत नहीं था।" उसने विचार किया और परमात्मा तुम्हारे लिये क्या करता है ?" उसने अपना सन्देह दूर करने के लिये पूछा।

काफी समय तक लड़की शांत रही। मानो प्रश्न ने उसका हृदय भारी कर दिया। "ठहरो ! मुझसे प्रश्न मत करो। तुम्हें इस प्रकार का कोई अधिकार नहीं है।" एक दम नाराज सी होकर उसने कहा।

"इसी की मुझे आशा थी।" रास्कालनीकोव ने विचार किया।

"मेरे लिये परमात्मा सब कुछ करता है।"

"तो अन्त में समाधान हो गया मेरा।" उसने उसकी ओर देखते हुए सोचा।

इस नीली पड़ी लड़की को दमकते देखते उसने एक नया और अनोखा अनुभव किया। "पागल ! इसे पागल होना चाहिये।" वह बुदबुदाया। उसने टेबल पर पड़ी एक किताब देखी। उसने उसे उठाया और देखा। वह बाईबिल का रूसी अनुवाद था।

"यह कहाँ से आई ?" उसने सोनिया से मालूम किया।

लड़की अभी भी दो तीन कदम की दूरी पर टेबल से—खड़ी थी।

"यह मुझे उधार दी गई है।"

"किसने उधार दी है ?"

"एलिजावेथ—मैंने उससे कहा था।"

"एलजारेथ ? कैसी अजीब बात है ?" उसने विचार किया। उसने किताब उठा ली और पन्ने पलटने लगा। "लाजरस का कहाँ ज़िक्र किया गया है ? सोनिया, उस स्थान को तो खोज निकालो जहाँ लाजरस के पुनर्जीवित होने का लेखा है ?"

प्रश्नकर्ता की ओर उसने देखा।

"वह हिस्सा ढूंढ निकालो और पढ़ो।" कहते हुए वह बैठ गया और कोहनी को मेज़ पर टिका दिया ! और सिर को हाथों में थाम कर सुनने को तैयार हुआ।

सोनिया पहिले तो टेबल के पास आने में झिझकी। क्योंकि रास्कोल्नीकोव के कथन में सत्यता का अंश कम नज़र आया। "क्या तुमने वह हिस्सा कभी पढ़ा है ?" उसने आँखों के कोनों से देखते हुए पूछा।

"बहुत दिन हुए। मेरे बचपन में। पढ़ो।"

"चर्च में कभी पढ़ते हुए सुना ?'

"मैं—मैं वहाँ कभी नहीं जाता। क्या तुम वहाँ अक्सर जाती हो ?"

'नहीं।" हड़बड़ाती सी सोनिया बोली।

रास्कोल्नीकोव मुसकराया। अब मैं समझा कि तुम कल अपने पिता की दफ़न क्रिया में, चर्च जाकर, सम्मिलित नहीं होगी ?"

'ओह ! हाँ ! गये हफ्ते मैं चर्च गई थी। एक अन्तिम क्रिया संस्कार में मैं वहाँ थी।

'किसकी ?"

"एलिज़ावेथ की। वह एक कुल्हाड़ी द्वारा मारी गई थी।" रास्कोल्नीकोव का मानस-धनुक्रम अत्यन्त क्षीण हो चला। "क्या तुम उसकी मित्र थीं ?"

"हाँ। वह कभी कभी यहाँ आती थी। वह ईश्वर भक्त है।"

रास्कोल्नीकोव चिंतित हो गया। "इन दो मूर्खाओं का इस प्रकार आपस में मिलने का क्या अर्थ हो सकता है ? मैं यहाँ पागल हो जाऊँगा। इस वातावरण में ही कुछ पागलपन लगता है।" उसने अपने आप विचार किया। "पढ़ो !" वह एक दम चिल्लाया।

उसका हृदय कम्पित हो रहा था। वह पढ़ने में डर रही थी। "इसमें तुम्हें क्या आनन्द आ सकता है जब कि इसपर तुम्हारा विश्वास ही नहीं है।" उसने रुद्ध कण्ठ से कहा।

"पढ़ो! मैं कहता हूँ।"

सोनिया ने किताब खोली।

"अब एक आदमी जिसका नाम लाजरस था, बीमार था।" रास कोल्नीकोव की आँखों के सामने सोनिया के विगत जीवन का चित्र अङ्कित हो गया। वह उसे पढ़ कर सुनाना चाह रही थी भले ही परिणाम कुछ भी हो। सोनिया ने अपने हृदय पर काबू पाया और इस प्रकार उन्नीसवीं कविता पर आगई।

"और कई यहूदी मार्था और मेरी के पास आये, उसके भाई की मृत्यु पर सान्त्वना देने। मार्था ने ज्योंही सुना कि जीसस आ रहा है, वह उससे मिलने बाहर आई; लेकिन मेरी घर में बैठी रही। तब मार्था ने जीसस से कहा, महापुरुष! यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरा न होता। लेकिन अब भी मैं जानती हूँ, जो कुछ भी तू परमात्मा से इच्छा करेगा, परमात्मा तुझे वही देगा।"

यहाँ वह चुप होगई और उसका स्वर मावावेश के कारण काँप गया। "जीसस ने उससे कहा, तेरा भाई फिर जी उठेगा। मार्था ने उससे कहा, मैं जानती हूँ क्यामत के दिन वह पुनर्जीवित हो जायगा। जीसस ने कहा; मैं पुनर्जीवन हूँ। मैं जीवन हूँ। वह जो मुझ में विश्वास रखता है, भले ही मर जाये, पर जीवित रहेगा; और जो मेरे भरोसे जीता है तथा विश्वास रखता है वह कभी नहीं मरेगा। इसे सत्य जान। उसने कहा— यद्यपि उसे बोलने में कष्ट हो रहा था फिर भी उसने अपनी आवाज ऊँची की, मानो वह अपनी ही बात कह रही हो—"ठीक महापुरुष! मुझे विश्वास है कि तू ईसामसीह है परमात्मा का पुत्र, जो पृथ्वी पर आया है।"

वह रुकी, उसने शीघ्रता पूर्वक रासकोल्नीकोव पर आँखें उठाईं, लेकिन फिर, फिर किताब पर लगाईं और पढ़ने लगी। रासकोल्नीकोव एकाग्र चित्त हो—बिना हिले डुले-सुनता रहा।

"तब, जब मेरी वहाँ आई जहाँ जीसस खड़ा था, और उसे देखा, वह उसके पैरों पर पड़ गई, यह कहते हुए उससे कि यदि तू यहाँ हुआ होता तो मेरा भाई नहीं मरता, उसके पैरों पर गिर पड़ी। जब जीसस ने उसको तथा अन्य आये हुए यहूदियों को रोते देखा, तो उसकी आत्मा को भी गहरी ठेस लगी, उसने कहा, तुम लोगों ने उसे कहाँ छिपाया है? उन लोगों ने कहा, महापुरुष! आओ और देखो। जीसस रो पड़ा। तब यहूदियों ने कहा, देखो, ईश्वर उसे कितना चाहता है। उनमें से कुछ लोगों ने कहा, क्या यह आदमी, जिसने अन्धे की आँखें खोल दीं, ऐसा नहीं कर सकता कि यह आदमी भी न मरता?" रासकोल्नीकोव ने उसकी ओर मुड़ कर देखा। वह काँप रही थी।

"इसलिये जीसस, मन स्तुति करने के बाद, कब्र के पास गया। उस पर एक पत्थर रखा था। जीसस ने कहा, पत्थर हटा दो। मृतक की बहिन मार्था ने कहा, महापुरुष! इस समय तक वह बौना रह गया होगा। उसे मरे चार दिन हो गये। जीसस ने उससे कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा कि यदि तू विश्वास रखे तो ईश्वर के चमत्कार को देखना? तब उन्होंने पत्थर उठाया। जीसस ने आँखें उठाई और कहा, पिता! तुझे धन्य है कि तूने मेरी सुनी! और मुझे विश्वास है कि तू हमेशा ही सुनता है, लेकिन ये लोग जो मेरे आस पास खड़े हैं तुम पर विश्वास कर सकें कि तूने मुझे भेजा है इसलिये मैंने कहा। और जब वह इस प्रकार कह चुका तो उसने ज़ोर की आवाज़ लगाई, लाज़रस! इधर आओ। और वह जो मर चुका था सामने आया।

उससे फिर नहीं पढ़ा—अब पढ़ना उसके लिये असम्भव हो गया। किताब बन्द करके, उठकर बिना आदमी की ओर देखे उसने कहा "यह लाज़रस के पुनर्जीवन के बारे में है।" बुझती हुई मोमबत्ती कमरे में प्रकाश भर रही थी—उस में जहाँ एक खूनी और पवित्र आत्मा ने यहाँ ग्रन्थ को अभी पढ़ा था। लगभग पाँच मिनट व्यतीत हो गये।

रासकोल्नीकोव ने उठकर सोनिया के पास जाकर, एक दम कहा, "मैं एक बात कहने तुम्हारे पास आया हूँ।" उस नवयुवती ने अपनी आँखें धीरे धीरे उस पर उठाईं और देखा कि उसके चेहरे पर कोई निश्चय भयानक

रहा है। "अब भविष्य में मैंने अपनी बहिन और माँ से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। अब मैं उनके पास नहीं जाऊँगा।'

"पर क्यों?" भयभीत होकर सोनिया ने पूछा।

"अभी तो तुम ही मेरी सब कुछ, बाकी बची हो। हम साथ चलें। मैं यही कहने आया हूँ। हम दोनों ही भाग्य के सताये हैं, हम दोनों साथ ही चल दें।'

"वह इस प्रकार बोल रहा है जैसे पागल हो गया हो।" सोनिया ने विचार किया। "और कहाँ?" उसने भयभीत होकर कहा।

"मैं कैसे कहूँ? मैं तो जानता हूँ कि हमारा तुम्हारा एक ही ध्येय है।" उसने उसकी ओर बिना समझे देखा। "उनमें से कोई भी तुम्हें नहीं समझ सकता, लेकिन, मैं—मैंने तुम्हें समझ लिया है। तुम मेरे लिये आवश्यक हो—इसलिये मैं आया हूँ।"

"मैं कुछ नहीं समझी।" सोनिया बड़बड़ाई।

"तुम बाद में समझ जाओगी। तुमने भी वही नहीं किया जो मैंने किया?—तुम—ने भी—। तुमने उसके लिये—। तुमने स्वयं अपना घात किया—एक जीवन बरबाद किया—अपना खुद का जीवन। तुम अपनी योग्यता द्वारा रह रही हो—और तुम्हारी मृत्यु किसी सार्वजनिक स्थान पर हो जायगी। लेकिन ऐसा विचार तुम सहन नहीं कर सकती, और, यदि तुम अकेली रहीं तो तुम इसी प्रकार तंग करोगी जैसे मैं करता हूँ। तुम अभी भी कुछ विक्षिप्त सी हो। इसलिये एक ही मार्ग पर साथ चलें। हम चलें।"

'क्यों? क्यों ऐसा कहते हो?" उसकी भाषा से परेशान होकर सोनिया ने कहा।

"क्यों? तुम पूछती हो? क्योंकि तुम अकेली नहीं रह सकतीं! मैं पूछता हूँ कि यदि तुमको कल अस्पताल ले जाया गया? कैथराइन इवानोवना शीघ्र ही मरने वाली है। और उन बच्चों का क्या होगा? और तब पोलेचका का पतन भी सम्भव नहीं है?'

'क्या किया जाय! और क्या किया जाय।' सोनिया फूट-फूटकर रोने लगी।

"तुम अब रही हो, क्या करना चाहिये ? आगे बढ़ो। समझीं ! बाद में समझोगी स्वतन्त्रता और शान्ति ! लेकिन सबसे ऊँची शान्ति ! याद रखो यही ध्येय है। मैं अन्तिम बार तुम से कह रहा हूँ। यदि मैं कल नहीं आया तो तुम्हें ज्ञात हो जायगा। कुछ वर्षों के अनुभव के बाद तुम समझोगी कि इसका अर्थ क्या है। यदि मैं कल आया तो तुम्हें ज्ञात होगा कि एलिज़ावेथ का खूनी कौन है। नमस्कार।"

सोनिया काँप गई। "क्या वास्तव में तुम्हें ज्ञात है कि उसे किसने मारा है ?"

"मुझे ज्ञात है—मैं तुमसे कहूँगा—लेकिन केवल तुम से। मैंने तुम्हें ही चुना है। नमस्कार ! हाथ मत मिलाना। कल तक !"

वह आप सोचते हुए कि वह पागल है वह बाहर चला गया। "हे ईश्वर ! यह कैसे जान सकता है कि किसने एलिज़ावेथ को मारा है ? वह बड़ा दुःखी है। माँ, बहिन को छोड़ दिया ! क्यों उसने मेरा पाँव चूमा—और कहा कि मेरे बिना वह जीवित नहीं रह सकता। हे परमात्मा !"

उसके आगे द्वार के पीछे कमरा था। सोनिया को ज्ञात था कि वहाँ कोई नहीं रहता लेकिन, इस सब वार्ता के समय, स्विड्रिगेलोव, द्वार के पीछे छिपा, सारी बातों को सुने बिना न रह सका। जब वह बाहर चला गया तो उसने कुछ विचार किया, और अपने कमरे में लौट आया।

५

प्रातः लगभग ग्यारह बजे, रासकोल्निकोव मजिस्ट्रेट से मिलने गया। बाहर के कमरे में जहाँ कि वह प्रतीक्षा कर रहा था, कई लोग आये गये, बिना उसकी ओर ध्यान दिये। पास के कमरे में जो कि ऑफ़िस सा लगता था, कई क्लर्क बैठे थे, लेकिन ऐसा ज्ञात हो रहा था कि उनको यह विचार तक नहीं है कि रासकोल्निकोव है कौन। उसे शक हुआ कि उस पर जासूसी हो रही है। लेकिन धीरे धीरे उसको विश्राम होने लगा। "यदि उन्हें सब कुछ मालूम

होता तो ये लोग मुझे इस प्रकार क्यों रहने देते ? क्या इन्होंने मुझे गिरफ्तार नहीं कर लिया होता ? इसलिये शायद इसे अभी कुछ भी मालूम नहीं हुआ है।" वह विचार करता रहा।

ऐसा विचार करते करते उसने अनुभव किया कि वह कांप रहा है वह इस विचार से बड़ा खिन्न हुआ कि यह, पोरफीरियस से भेंट करने के भय का परिणाम है वह पूरी तरह भेजस से नफरत करता है। उसकी खिन्नता इतनी तीव्र हुई कि उसका कांपना बन्द हो गया। इसलिये वह तैयार हो गया कि मिलने पर कम से कम बात करेगा। इसी बीच में उसका परिचय पोरफीरियस पेत्रो-विच से कराया गया। वह कमरे में अकेला था। ज्योंही रस्कोल्नीकोव भीतर घुसा कि पास जाकर पोरफीरियस ने उस द्वार को भीतर से बन्द कर दिया। वे दोनों सामने सामने खड़े थे। उसने उसका बड़े तपाक से स्वागत किया।

"अच्छा मेरे आदरणीय दोस्त ! तुम आ गये—कृपा कर बैठ जाओ न, बबुआ ! लेकिन शायद तुम्हें आदरणीय शब्द अच्छा न लगे—इसलिये केवल बबुआ इत्मीनान से कुर्सी पर बैठ जाओ न !"

रस्कोल्नीकोव बैठ गया, बिना इधर उधर देखे। दोनों ने एक दूसरे को देखा।

'मैं इस प्रार्थना पत्र को—लाया हूँ। कृपा कर देख लीजिये कि वह ठीक है, या कि दूसरा भरना पड़ेगा ?"

"क्या कैसा कागज ? ओह हाँ ! यह बिल्कुल ठीक है।' और उसे टेबल पर रख दिया।

"कल तुम मेरा निरीक्षण करना चाहते थे, मेरे स्वभाव से—इस खून के सम्बन्ध में—मेरा ऐसा अनुमान है।"

"क्यों क्या दर्द है ?" रस्कोल्नीकोव ने विचार किया कि उसका मुँह कुछ लटकता गया है।" यह बुरी बात है। बहुत बुरी।" उसने सोचा।

"बिल्कुल ठीक ! लेकिन तुम घबराओ नहीं, काफी समय है" पेत्रो-विच ने धीरे से कहा, वह कमरे में विचार मग्न इधर से उधर टहल रहा था। कभी वह रस्कोल्नीकोव के सन्देह को दूर करता था। कभी वह उसको

चेहरे को देखने लगता था। "कोई जल्दी नहीं, कोई जल्दी नहीं है। लेकिन तुम सिगरेट पीते हो यह सिगरेट रही। तुम यह ही रहे हो कि यद्यपि मैं तुमसे यहीं मिल रहा हूँ पर मेरा घर उधर पीछे है। राज्य के द्वारा दिये गये हैं। तुम्हें ज्ञात है कि जो घर राज्य द्वारा रहने को मिलते हैं उन्हें हीन नहीं समझना चाहिये ?"

'मैं तुम पर विश्वास करता हूँ।"

"किसी भी तरह हीन नहीं समझना चाहिये" जिसका कि दिमाग किसी विचार में लीन सा था, 'हीन नहीं समझना चाहिये।'

रासकोल्नीकोव अप्रसन्न हो उठा। पोरफीरियस ने उसकी ओर अजीब सी चिढ़ाई हुई निगाहों से देखा। 'क्या यह सत्य है कि, यह कोई न्यायी सिद्धांत है जो कि तमाम वकीलों द्वारा प्रतिपादित होता है, कि मामूली बातों का 'इम्तहान' अक्सर बड़ी गम्भीर बातों से आरम्भ होता है—जिसका कि सम्बन्ध असल बात से कुछ भी नहीं होता, जिससे कि किसी बात का इस प्रकार का शक न होने पाये कि जिसका निरीक्षण हो रहा है उसे किसी प्रकार का संशय हो—उसे धोखे में डालने के लिए—और तब एकदम उस मुख्य प्रश्न से दबोच लिया जाय—ठीक जैसे कि तुम किसी आदमी का एक दम आँखों के ठीक बीच में घूँसा जड़ दो ?"

"ऐसी प्रथा का मेरे ख्याल में, आपके वर्गों में धार्मिक विधा से साथ पालन किया जाता है, है न ?"

"तब तुम्हारा आशय यह है कि जब मैंने यह कहा कि वह घर तो राज्य द्वारा, मैंने भी वैसा ही किया—।" ऐसा कहते हुए पोरफीरियस की छोटी आँखें और भी छोटी होगईं, और आकृति सिकुड़ीं, और रासकोल्नीकोव की ओर देखते हुए वह जोर से हँस पड़ा जिससे वह सिर से पैर तक हिल गया। नवयुवक भी हँसा, लेकिन पोरफीरियस के अट्टहास के प्रभाव से प्रभावित होकर रासकोल्नीकोव का चेहरा हास्यपूर्ण होगया। इस समय एक दम रासकोल्नीकोव का हृदय ग्लानिग्रस्त हो गया और वह तमाम सतर्कता भूल गया; उसका हँसना बन्द हो गया, और जब कि पोरफीरियस अट्टहास कर रहा था, तो उसने उसकी ओर नफरत से निगाह जमाली। पोरफीरियस

वास्तव में, इस समय अपने आगन्तुक पर हँस रहा था। उसे रास्कोल्नीकोव के डर होने की चिन्ता नहीं थी। रास्कोल्नीकोव ने सोचा कि वह जाल में फँस गया। जाल में पलीता लग चुका था किसी भी समय विस्फोट होने की सम्भावना थी।

वह सीधे प्रश्न पर आजाने के लिये, हाथ में टोपी उठा कर, खड़ा हुआ। "पोरफीरियस पीट्रोविच! कल तुमने यह इच्छा प्रगट की कि तुम्हें मेरा न्यायी तरीके से निरीक्षण करना है। मैं तुम्हारे बुलाने पर आया, यदि कुछ पूछना है तो पूछो, यदि नहीं तो जाने की इजाजत दो। मैं अधिक यहाँ बरबाद नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे और भी काम हैं। मुझे अन्तिम क्रिया आदि के सम्बन्ध में जाना है।" अधिक क्रोधित होते हुए उसने कहना आरम्भ किया। "मैं तुम्हें बता दूँ कि यह सब मुझे परेशान किये हैं। कई दिनों से यह मेरे सिर पर खड़ा है। इसी कारण मैं बीमार हो गया हूँ।' वह और भी उत्तेजित हो गया क्योंकि उसका बीमारी का कथन यहाँ व्यर्थ था। "संक्षेप में यदि प्रश्न करना चाहते हो तो प्रश्न करो, या इसी वक्त मुझे जाने दो।"

"हे राम! तुम क्या बात कर रहे हो? प्रश्न तुम से! किस पर?" एकदम हँसना बन्द करके मजिस्ट्रेट ने कहा। 'परेशान मत हो।" उसने रास्कोल्नीकोव से बैठने का अनुरोध किया। 'समय है, काफी समय है। मामला भी तो कोई महत्व का नहीं है। इसके विपरीत मैं तो तुम्हारे आने से बड़ा प्रसन्न हूँ। और यहाँ तक बन्धु! मेरे इस हँसने के ढंग का मतलब है, तुम्हें क्षमा माँगनी चाहिए। मैं 'नरवस' व्यक्ति हूँ। मैं हँसने का शौकीन हूँ। लेकिन कृपा करके बैठ जाओ, तो क्यों खड़े हो? मैं समझा करता हूँ, बन्धु! नहीं तो मैं समझूँगा कि तुम असभ्य हो।"

रास्कोल्नीकोव ने चुप साध ली, और बैठ गया।

"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, बन्धु मैं तुम्हें बतला दूँ जिससे तुम्हें मेरे बारे में बातें ज्ञात होंगी।" कहते हुए पोरफीरियस ने कहा। मैं अकेला रहता हूँ। ... आता। मैं लगभग चालीस का हूँ। ... यहाँ ... में ... है ...

या विवेकशील व्यक्ति मिलते हैं तो लगभग आधे घण्टे तक यह नहीं जान पाते कि किस प्रकार बातचीत आरम्भ की जाय। वे सकते की हालत में आ जाते हैं। हर एक के पास कुछ न कुछ बात करने को होता है—महिलाओं के पास उदाहरणार्थ या समाज में कुछ न कुछ बातचीत करने को होती है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति—हम, तुम सरीखे अवाक् से हो जाते हैं। यह कैसे होता है, भलुका? क्या हमारे सामाजिक सम्बन्ध नहीं है? तुम कृपा करके अपनी टोपी उतार दो।"

उसने टोपी उतार दी। उसने पोरफ़ीरियस की गप को मर्वे सिकोड़ कर सुना। "यह मेरा ध्यान बटाने के लिये ऐसी बातें कर रहा है।" उसने विचार किया।

"मैं तुम्हें कॉफ़ी नहीं पिला रहा हूँ, क्योंकि यह स्थान इसके लिये उचित नहीं है, लेकिन क्या तुम किसी मित्र के साथ कुछ समय व्यतीत नहीं कर सकते? परेशान न हो, भलुका! यदि तुम मुझे इस प्रकार व्यवहार करते देखो, तो मुझे आशा है कि तुम मुझे क्षमा कर दोगे; इस प्रकार के निरीक्षण कभी कभी मजिस्ट्रेट के दिमाग के लिये, उस व्यक्ति से अधिक परेशान करने वाले हो जाते हैं जिन पर शङ्का की जाती है। यदि दोनों के तार टूट जाँय तो बड़ी गड़बड़ी हो जाती है। लेकिन जहाँ तक न्यायी प्रथा का प्रश्न उपस्थित होगा, मैं तुम्हारी राय से पूर्ण रूप से सहमत हूँ। जब कि, उदाहरण के लिये यदि कोई शक में आता है तो, कौन नहीं जानता कि वह भले ही किसी प्रकार के जड़ दिमाग का हो, मजिस्ट्रेट तो उससे किन्हीं के प्रश्न करता ही है ताकि उसे पता न चल पाये। हाँ, हा! हा! और तुम [illegible] है कि [illegible] राज्य के द्वारा घर का बयान किया हो याद हो! [illegible] हो किसी निश्चित परिणाम को निकाल [illegible]

[illegible] रुका। [illegible] अकस्मात् [illegible]

[illegible] जानो कि

हूँ कि

अमुक महाशय अपराधी हैं। क्या तुम कानून नहीं पढ़ रहे थे, रोदिया ?"

"हाँ, कुछ दिन पढ़ा था।"

"यहाँ एक उदाहरण दे रहा हूँ, जो शायद बाद में तुम्हारे काम आये। कहीं यह मत विचार करने लगना कि मैं तुम्हारा सिखाने वाला हूँ—परमात्मा जाने मैं भला उस आदमी को क्या सिखा सकता हूँ जो स्वयं अपराध के प्रश्नों के लेख अखबार में देता हो। मैं एक छोटा सा तथ्य एक उदाहरण के तौर पर दे रहा हूँ। मुझे विश्वास हो जाता है कि कोई आदमी अपराधी है, तो, मैं उसे पहिले से ही क्यों डरा दूँ ? क्यों न उसे और बढ़ जाने दूँ ! शायद तुम ठीक नहीं समझ रहे हो ? मैं और अधिक स्पष्टता से तुमको समझाने का प्रयत्न करूँगा ! मान लो कि तुम्हें अपने सबूतों का पूरा विश्वास है, लेकिन सबूत तो—जैसा कि तुम जानते ही हो—दोनों तरफ कट सकते हैं और मैं मजिस्ट्रेट होने के नाते गलती भी कर सकता हूँ।

"मैं, अब, अपनी खोज को गणित का रूप देना चाहता हूँ—अपने निष्कर्ष बिल्कुल स्पष्ट हों। मान लो मैं इस व्यक्ति को अवसर से पहिले ही गिरफ्तार करता हूँ, यद्यपि मुझे विश्वास है कि यह वही आदमी है, पर फिर भी भविष्य में उसके अपराध को साबित करने के सारे साधनों से मैं वंचित रह जाऊँगा। क्योंकि वह जानता है, कि वह कैदी है, और बस। यदि, इसके विपरीत, जिसको मैं अपराधी समझता हूँ, उस पर कोई ध्यान नहीं देता, मैं उसको पकड़ता भी नहीं, मैं उसकी निगरानी भी नहीं करता, लेकिन उसे ज्ञात हो जाय कि मैं सब कुछ जानता हूँ, कि दिन रात मैं छाया की भाँति उसके पीछे लगा हूँ—ऐसी हालत में तुम्हारे विचार से वह क्या करेगा ? वह आत्म संयम को खो बैठेगा, वह अपने आप मेरे पास चला आयेगा, और स्वयं अपने विरुद्ध काफी सबूत पेश कर देगा।"

"यदि ऐसा किसी असभ्य के साथ किया जाय तो उससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। क्योंकि मेरे मित्र ! मुख्य बात तो यह है जानने की कि वह मनुष्य किस तरह पला है। और फिर, ऐसा व्यक्ति यदि एक स्वतन्त्रता से विचरण भी करता है तो मेरा क्या ! उसे आराम से घूमने दो—वह मेरा शिकार है ही, और वह बच नहीं सकता ! वह कहाँ जा सकेगा ? तुम कह सकते हो कि

विशेष । कोई पोक तो ऐसा कर सकता है, मेरा व्यक्ति कभी नहीं । क्या वह अपने ही देश में कहीं छिप सकता है ? नहीं । मेरा पका किसान मित्र तो जेल जाना अधिक पसन्द करेगा । तुम क्या कहते हो, प्राकृतिक नियमों के अनुसार वह भागेगा नहीं । क्या कभी दिये के पास पतङ्ग देखा है । मेरा आदमी भी मेरे चारों ओर इसी प्रकार चक्कर लगायगा । स्वतन्त्रता में उसे कोई रुचि नहीं होगी । मुझे उसको समय देने दो और वह अपने अपराध को स्वयं स्पष्ट रूप से—दो और दो चार की *भाँति–साबित कर देगा* । हाँ, वह मेरे चारों ओर चक्कर लगायगा । और अन्त में समाप्त ! वह मेरी मुट्ठियों में है, और मैंने उसे पा लिया । क्या तुम ऐसा नहीं सोचते ? शायद ।"

रासकोल्नीकोव, खामोश रहा । पीला और हिलने में असमर्थ, वह पोरफीरियस का चेहरा गौर से देखता रहा । "वह बड़ा अच्छा पाठ है !" उसने विचार किया । "वह मुझसे केवल मन बहलाव के लिये ही इस प्रकार नहीं बोल रहा है, वह बड़ा तेज है । उसके दिमाग में कुछ और है वह क्या हो सकता है ? अच्छा, मित्र ! जो भी कुछ तुम कहते हो केवल डराने के लिये । तुम्हारे पास कोई *प्रमाण नहीं है । तुम मुझे* धोखा देना चाहते हो ताकि मैं तुम्हें तुम्हारे अंतिम दाव के योग्य बना दूँ । तुम्हारी सारी मेहनत बेकार होगी ।"

और वह सम्भाव्य आपत्ति के लिये तैयार हुआ । कभी उसके हृदय में यह विचार उत्पन्न होता कि वह पोरफीरियस पर झपट कर उसका फैसला ही कर दे । आखिर में सुनते ही वह इस बात से डर रहा था कि कहीं उसका क्रोध न आ जाय । इसलिये उसने चुप रहने का निश्चय किया, क्यों कि इसी तरह वह अपने शत्रु की शान्ति को नाप सकेगा, यही रासकोल्नीकोव की आशा थी ।

"मैं देख रहा हूँ कि तुम विश्वास नहीं कर रहे हो तुम समझते हो कि मैं मजाक कर रहा हूँ । तुम ठीक भी हो सकते हो । लेकिन, अपने मुख्य मामले पर वापिस आयें जिसके बारे में अभी वार्ता हो रही थी । हमें वास्तविकता के आधार पर ही *कार्य करना है । यह बड़ी मजबूत वस्तु होती है*, और इसमें कभी कभी बड़ी कुशलता छिपी रहती है । लेकिन, मस्तिष्क का बारीक

पन, मेरी राय में, बड़ी लाभप्रद होती है। वह एक प्रकार से जीवन की सान्त्वना है जिसके द्वारा एक बिचारा मजिस्ट्रेट बड़ी आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है जोकि बिचारा स्वयं अपनी कल्पना से ही गुमराह हो सकता है, क्योंकि आखिर वह भी तो आदमी ही है।

"और अब उस मुख्य मामले में यह अपराधी, जब यह देख लेगा कि जो कुछ भी उसने किया है वह उसे पुरस्कार स्वरूप मिल जायगा—उसके अपने कर्मों के लिये—तो यह वहीं समाप्त हो जायगा जहाँ पर कि उसके इरादों का विश्लेषण होगा। वह भी मान लिया जाय अपनी बीमारी आदि के बहाने से उसे छिपाने का प्रयत्न करे तो निःसन्देह वह अपने लिये सन्देह को और जाग्रत करता है। यहीं पर ही धोखा है। फिर एक व्यक्ति जिसकी निगरानी नहीं हो रही है उनको धोखे में डाल सकता है, जो उस पर सन्देह करते हैं, और जान बूझ कर अपने आपको अपराधी बनने का स्वांग करते हैं। इस तरह थोड़ी देर के लिये भले ही बातचीत करने वाला धोखे में आजाय लेकिन चूँकि वह मूर्ख नहीं होता इसलिये दूसरी बार वह तर्क द्वारा उसे समझ लेगा। तब हमारा मित्र अधिकाधिक समझौते पर आमादा हो जायेगा। वह स्वयं बिना बुलाये आ जायेगा और बेकार के शब्दों, वाक्यों का प्रयोग करेगा, जिसका कि अर्थ सब को विदित ही होगा। वह आकर अक्सर यह भी कहेगा कि उसे गिरफ्तार क्यों नहीं कर लिया गया। ऐसा अवसर अधिक कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति के साथ होता है। प्रकृति बड़ी ही पारदर्शक शीशा है, मेरे मित्र! लेकिन तुम पीले क्यों पड़ रहे हो, रोदिया? शायद तुम्हें गर्मी लग रही है! क्या खिड़की खोलूँ?

"बिल्कुल नहीं, मैं माफ़ी चाहता हूँ।" रासकोल्नीकोव ने हँसते हुए प्यार से कहा। "मेरी चिन्ता न करो!" पोरफीरियस रुक गया, फिर वह भी हँसने लगा। रास्कोल्नीकोव की प्रसन्नता एक दम समाप्त हो गई, वह रुका। "पोरफीरियस!" वह तेज आवाज में उठ कर बोला यद्यपि काँपती हुई टाँगों पर खड़ा रहना कठिन हो रहा था "अब मैं बिल्कुल सन्देह नहीं कर सकता कि तुम मुझ पर, उस बुढ़िया तथा लिज़ावेता के खून करने के अपराध में, सन्देह कर रहे हो। यदि तुम यह सोचते हो कि तुम्हें इस तरह व्यवहार

करने का अधिकार है, और गिरफ्तार करोगे, तो क्यों न गिरफ्तार ? तुम्हें इस तरह मुझको परेशान नहीं करना चाहिये। मैं कभी इसको सहन नहीं कर सकता।" उसने टेबल पर घूंसा मारते हुए कहा।

"लेकिन, परमात्मा भला करे, क्या बात है ?" कुछ परेशान सा होते हुए, जज ने पूछा। "बचुआ ! रोदियो रोमनोविच ! मेरे अच्छे मित्र ! तुमको क्या हो गया है ?"

"मैं कभी यह सह नहीं सकता।' रासकोल्नीकोव ने फिर कहा।

"बचुआ ! इस तरह मत चिल्लाओ प्रार्थना करता हूँ। कोई सुन लेगा, कोई आ जाय, फिर हम क्या करेंगे ?" पोरफीरियस बड़बड़ाया।

"मैं कभी यह सह नहीं सकता ! मैं कभी यह सह नहीं सकता।" पत्र की भाँति, पर धीरे धीरे रासकोल्नीकोव ने कहा।

पोरफीरियस ने खिड़की खोली। "कुछ हवा आने दो कमरे में ! मित्र ! कुछ पानी पिओगे ? तुम 'फिट' में आ गये थे।" वह पानी के लिये, आज्ञा देने बाहर जाने वाला था जब कि उसने कोने में पानी की बोतल देखी।" लो पियो, बचुआ ! इससे कुछ लाभ हो सकता है।"

पोरफीरियस स्वाभाविक रूप से इतना डर गया था कि रासकोल्नीकोव चुपचाप उसका निरीक्षण करने लगा। उसने पानी पीने से इन्कार कर दिया।

रोदियो रोमनोविच ! मेरे मित्र ! मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा ही चलता रहा तो तुम पागल हो जाओगे। थोड़ा पानी पी लो।" उसने जबरदस्ती ही गिलास रासकोल्नीकोव के हाथ में रख दिया। उसने ओठ तक उसे उठाया पर फिर मुँह बनाकर रख दिया। "हाँ हाँ, तुम फिट में आ गये थे। क्या यह भी सम्भव है कि लोग अपना इतना कम ध्यान रखते हैं ? दमित्री प्रोकोफिच, जो कल यहाँ आया था उसके साथ भी यही हुआ। वह खाना खाते समय बातें ही बातें करता चला गया ! तुमने उसे भेजा था, बचुआ ?"

"वास्तव में मैंने नहीं भेजा—यद्यपि, मैं जानता था कि वह गया था। आने में उसका उद्देश्य था।"

"क्या वास्तव में तुम्हें मालूम है कि वह क्यों आया था।"

"मुझे मालूम है। तुमने क्या निष्कर्ष निकाला ?"

"मैंने बन्धु ! तुम्हारे बारे में कई बातों की जानकारी प्राप्त की। ल्म्बार में मैं सब कुछ जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम रात को मकान तलाश करने गये थे। मुझे ज्ञात हुआ कि तुमने घंटी बजाई। तुमने खून के निशानों के बारे में भी पूछ ताछ की। मैं जानता हूँ कि उस समय तुम्हारा मूड' क्या था। इस प्रकार की उत्तेजना, मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हें पागल बना देगी। तुम्हारे दिमाग में कुछ है या कभी भाग्य को कोसती है कभी पुलिस के गुर्गों को। तुम इधर उधर मारे मारे फिरते रहते हो जिससे उनका सन्देह पक्का हो जाय। यह जो मूर्खता चल रही है उससे तुम्हें नफरत है और तुम इसका एकदम अन्त करना चाहते हो। ठीक कहता हूँ न ? इस लिये बैठ जाओ और अपनी चित्त को शांत करो।"

एक बार फिर रास्कोल्नीकोव बैठ गया। कुछ ज्वर सा हो आया उसे। उसे मजिस्ट्रेट की बातों पर विश्वास नहीं हुआ यद्यपि वह इस पर विचार कर रहा था। मकान तलाश करने वाली बात वह जान गया है इस पर उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था।

"हमारे अदालती जीवन में, एक मनोवैज्ञानिक मामला चल रहा है, यदि तुम चाहोगे तो। एक व्यक्ति अपने आपको उस खून का अपराधी समझता है जिसके बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं स्वाभाविक है कि वह अपने आपको अपराधी साबित करता है, और उसका बयान इतना सजीव है, वास्तविक रूप से इतना मिलता जुलता, कि इन्कार नहीं किया जा सकता। इसे हम कैसे सुलझायें ? स्वयं की ओर से कुछ भी कसूर न करते हुए भी वह व्यक्ति अपने आपको खूनी समझता है, वही अदालत ने निर्णय दिया है कि वह बेकसूर है। लेकिन, यदि ऐसा नहीं हुआ होता तो उसका काम तमाम था। ऐसी की तुम भी आशा कर सकते हो, बन्धु। आदमी कभी जब रात में मारे मारे घूमते हैं और खून के या खून के निशानों के बारे में प्रश्न करते हैं तो मामला उलट जाता है। मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हूँ कि मेरे पेशे में, मुझे ऐसे मनोविज्ञान का अध्ययन करने का खूब अवसर मिला है। लेकिन, रोदिया ! तुम बीमार हो, तुमने अपनी बीमारी को प्रारंभ से ही टाला।

दूसरा घूँसा टेबल पर मारते हुए, रासकोल्नीकोव बिजली की तरह भड़का।

"इतने जोर से नहीं! इतने जोर से नहीं! कोई सुनेगा। मैं तुम्हें राय देता हूँ कि अपना बचाव करो।" पोरफीरियस बड़बड़ाया।

"मैं इस तरह से बरदाश्त करना सहन नहीं करूँगा। मुझे गिरफ्तार करो, मेरी तलाशी लो, अपनी जाँच आरम्भ करो, लेकिन वैधानिक रीति से इस प्रकार मेरा मजाक मत बनाओ। तुम इतना करने की हिम्मत—"

"मैं प्रार्थना करता हूँ, कि तुम अपने आपको, कानून के लिये इतना परेशान मत करो।" चालाकी से भरी आवाज में पोरफीरियस ने कहा। "केवल भाई-चारे के नाते मैंने तुम से यहाँ आने के लिये प्रार्थना की थी।"

"मुझे तुम्हारी इतनी अजीब मित्रता से कोई सरोकार नहीं। सुनते हो! मैं जाता हूँ। तुम्हारा इरादा मुझे गिरफ्तार करने का है?"

ज्योंही वह द्वार के पास गया कि पोरफीरियस ने हाथ पकड़ कर कहा, "क्या तुम एक अचम्भा देखना पसन्द नहीं करोगे!"

"कैसा अचम्भा? तुम्हारा क्या मतलब है?"

"एक छोटा सा अचम्भा यहाँ, जिसे मैंने रखा है। हाँ! हाँ!"—वह द्वार की ओर संकेत करते हुए उसने कहा। 'मैंने उसे ताले में इसलिये बन्द किया है कि वह भाग न जाय।"

"है कैसा वह?" द्वार की ओर जाकर रासकोल्नीकोव ने उसे बस एक प्रयत्न किया खोलने का।

"ताला लगा है। चाबी यह रही।" चाबी जेब से निकाल कर देते हुए।

"मैं सब समझता हूँ। तुम झूठ बोल रहे हो। और मुझसे स्वीकार करवाना चाह रहे हो।" रासकोल्नीकोव ने कहा।

"लेकिन यहाँ तुम्हारे स्वीकार करने के लिये कुछ भी नहीं है, बबुआ! देखो तो तुम्हारी हालत क्या है! चिल्लाओ मत, नहीं तो मैं मदद के लिये पुकारूँगा!"

"झूठे! तुम कुछ नहीं करोगे। तुम जानते थे कि मैं बीमार था, और तुम चाहते थे कि मुझे किसी प्रकार परेशान करवाकर,मुझसे किसी प्रकार

की स्वीकारोक्ति निकल जाय। तुम्हारे पास सबूत कुछ भी नहीं है। तुम्हारे पास केवल अनुमान है या जैमीतोव के कोरे अनुमान। तुम इनकी ही आशा करते हो, तो आओ न। कहाँ हैं वे ?"

"आखिर क्या अर्थ है इस तरह बात करने का बन्धु ! तुम्हारे ही शब्दों में, कानून इस तरह की कोई बात की आज्ञा नहीं देता। मेरे प्यारे मित्र ! तुम्हें हमारे कार्य करने के ढंग अभी तक भलीभाँति ज्ञात नहीं हुए हैं।" पोरफीरियस बड़बड़ाया। द्वार पर एक दूसरे कमरे से कुछ शोरगुल की आवाज आती सुनाई दी।

"क्या वे आ रहे हैं !" रासकोल्नीकोव चिल्लाया। तो तुम उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे अब तक। आखिर मेरे लिये उन्हें बुला—मैं बिल्कुल तैयार हूँ।"

और तब साधारण रीति से एक घटना घटी जिसकी आशा न तो रासकोल्नीकोव ने की थी और न पोरफीरियस पाह्रोविच ने।

६

रासकोल्नीकोव के दिमाग पर इसकी छाप इस प्रकार बैठी। शोरगुल बढ़ता गया और तब एक दम द्वार खुला। "क्या बात है !" पोरफीरियस गुस्से में चिल्लाया। "मैंने आज्ञा दी थी कि—"

कोई उत्तर नहीं, लेकिन शोरगुल का कारण स्पष्ट दिख रहा था। कोई भीतर घुसने का प्रयत्न कर रहा था, और उसे रोका जारहा था।

"क्या बात है, आखिर ?" एक बार फिर पोरफीरियस चिल्लाया।

"वह निकोला पैंटी है जो लाया गया है।' उत्तर था।

"मैंने उसे नहीं बुलाया। मैं उससे मिलना नहीं चाहता। ले जाओ उसे। लेकिन ठहरो ! वह आदमी यहाँ क्यों लाया गया ? कैसा बेहूदापन है ?" वह भन्नाया।

"लेकिन यह ही—" रुकते हुए दिया किसी ने।

"भाग जाओ। तुम समय से पहिले आये हो। जब तक बुलाया नहीं जाए, प्रतीक्षा करो। वह आदमी इतनी जल्दी ही यहाँ क्यों लाया गया ?"

पोरफीरियस गुस्से पर काबू में आकर रुक गया। लेकिन दूसरे ही क्षण मिकोला अपने घुटनों के बल बैठ गया।

"तुम क्या कर रहे हो, व्यक्ति!" कहते हुए आश्चर्य के साथ, मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"क्षमा करो! मैं अपराधी हूँ। मैं खूनी हूँ।" मिकोला ने जोर से कहा। कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया।

"तुम क्या कहते हो?" पोरफीरियस ने पूछा।

"मैं खूनी हूँ।" एक क्षण की चुप्पी के पश्चात मिकोला ने उत्तर दिया।

"क्या? तुम? खूनी? कब किया खून तुमने?"

"मैंने—एलिना इवानोवना को तथा उसकी—बहिन एलिजावेथ को—कुल्हाड़ी से मारा। मैं पागल था।" उसने एकदम कहा, और चुप हो गया।

इस उत्तर को सुनने के बाद, पोरफीरियस ने कुछ विचार किया। कुछ देर तक वह रासकोलनीकोव, और मिकोला की ओर देखता रहा। अन्त में उसने मिकोला से प्रश्न किया।

"जब तक मैं न पूछूँ तुम चुप रहो—यह कहने को कि तुम पागल थे।" उसने नाराज होकर कहा। "अभी तक तुमसे ऐसा कोई प्रश्न नहीं किया गया। अब बताओ तुम कहते हो कि तुम खून के अपराधी हो?"

"मैं स्वीकार करता हूँ, मैं खूनी हूँ।" मिकोला ने उत्तर दिया।"

"बहुत अच्छा? तुमने किस से खून किया?"

"कुल्हाड़ी से, जो मैं इसी काम के लिए लाया था।"

"इतनी जल्दी मत करो! यह काम तुमने अकेले ही किया?" मिकोला इस प्रश्न को समझा नहीं।

"क्या तुम्हारे और कोई साथी थे?"

"कोई नहीं।"

"इतनी जल्दी में न उत्तर दो। लेकिन चौकीदार ने तुम्हें किसी के पीछे भागते देखा।"

"मैं काम से इसीलिये पीछे भागा था। शायद न हो इसके लिये केवल धोखा था।" निकोला ने उत्तर दिया।

"ठीक है। बस।" वह चिल्लाया। "यह सत्य नहीं मालूम होता है।" वह मन में बड़बड़ाया। एक दम उसने रासकोल्नीकोव को देखा, जिसकी उपस्थिति वह निकोला का निरीक्षण करते समय भूल गया था। उसके देखते ही वह कुछ परेशान सी अनुभव करने लगा। वह एक दम उसके पास गया। 'रोडियो! बबुआ! क्षमा करना। क्योंकि अब तुम्हारा कोई काम शेष नहीं है। मैं स्वयं—तुमने तमाशा देखा। इसलिये अब—" वह हाथ पकड़ कर उसे द्वार की ओर ले गया।

"लेकिन तुमने इसकी आशा तो नहीं की थी, कैसे!" रासकोल्नीकोव ने आक्षेप किया। वास्तव में जो कुछ हुआ उसकी उसने भी आशा नहीं की थी।

"और न तुमने ही की होगी बबुआ। देखो तुम्हारे हाथ कांप रहे हैं।"

"तुम भी तो कांप रहे हो, पोरफीरियस!"

"तुम ठीक कह रहे हो, मैंने भी इसकी आशा नहीं की।" मजिस्ट्रेट उससे पीछा छुड़ाने की फिक्र में था।

"और क्या तुम वह अपना छोटा सा तमाशा नहीं दिखाओगे?" कुछ शरारत करते हुए उसने पूछा।

"क्यों, तुम अपनी अवस्था पर फिर आ गये और अब व्यंग कस रहे हो। हा! हा! तुम बड़े तेज हो! नमस्कार!"

बाहर के दफ्तर से जाते हुए उसने अनुभव किया कि लोग उसको बड़ी निगाह से देख रहे हैं। उस भीड़ में उसने उस मकान के दो चौकीदारों को भी देखा। लेकिन ज्योंही वह नीचे पहुंचा, उसने फिर पोरफीरियस की आवाज अपने पीछे सुनी। वह पीछे मुड़ा, और देखा कि मजिस्ट्रेट उसके पीछे भागा आ रहा है।

"केवल एक शब्द, रोडियन! यह मामला यदि ईश्वर चाहेगा तो अच्छी प्रकार ही समाप्त होगा, लेकिन फिर भी, शायद तुम से [illegible]

और प्रश्न पूछने पड़े । इसलिये निश्चित रहा कि हम लोग फिर मिलेंगे।" और यह कह कर वह उसके सामने खड़ा हो गया। "तो निश्चित !" उसने ...कर कहा। कोई भी कह सकता था कि वह कुछ और कहना चाह रहा था। ...किन नहीं कहा।

"इस समय मेरा बेतुका व्यवहार क्षमा करना, पोरफीरियस पेत्रो...विच । मैं जल्दी में था।" रासकोल्नीकोव ने कहा, अब तक उसने अपने पर आत्म-संयम कर लिया था।

"ऐसा मत कहो, वह कोई बात नहीं थी" बड़े खुश होते हुए पोरफीरियस ने कहा। "मैं स्वयं भी—मेरा व्यवहार, मैं मानता हूँ, बड़ा अप्रिय था। लेकिन हम फिर मिलेंगे। परमात्मा ने चाहा तो हम अवसर मिला करेंगे।"

"और सम्भवतः हम घनिष्ट हो जाँय ?" रासकोल्नीकोव ने कहा।

"सम्भवतः हम घनिष्ट हो जाँय ।" पोरफीरियस ने दुहराया, और दूसरे ही क्षण उसने अपने प्रश्नकर्ता की ओर गम्भीरता से देखा। "तुम जाना कहाँ जा रहे हो ?"

"अन्त्येष्टि क्रिया आदि में, तुम्हारा मतलब है ?"

' अरे ! हां ! देखो ' अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।"

"और मैं, मैं तुम्हारे लिये क्या इच्छा करूँ ?" कहते हुये रासकोल्नीकोव नीचे पहुँचा ही होगा कि मुड़कर एक दम उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे तुम्हारे कार्यमें आज से भी अधिक सफलता मिले, यही कामना करूँ तुम्हारे कार्य बड़े ही परिहासपूर्ण होते हैं।'

मजिस्ट्रेट जो कमरे में वापिस जारहा था, रुक गया, "इसमें परिहास पूर्ण क्या है ?"

"क्यों, देखो न उस बिचारे निकोला को। तुमने उस बिचारे को कितना सताया होगा कि उसने स्वीकार करवा लिया। निःसन्देह तुम रात दिन उससे कहते रहते होगे, तुम खूनी हो—तुम खूनी हो ! तुमने अपनी मनोवैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार उसे बुरी तरह से थकेरा होगा। अब वह अपना अपराध स्वीकार करता है। तुम उससे यह कहना आरम्भ करो। तुम

मूर्ख हो, तुम खूनी नहीं हो—तुम हो नहीं सकते।' क्यों यह सब बात तुम्हारे, क्या मैं परिहास पूर्ण नहीं समझूं ?"

"हा ! हा ! हा ! तब तुमने इसे देखा कि मैंने निकोला का बताया कि वह सत्य नहीं बोल रहा है।

"मैं आखिर कैसे न ध्यान देता ?"

'तुम्हारा बड़ा चतुर मस्तिष्क है—कोई बात तुमसे बच नहीं सकती। तुम बड़े परिहासी हो। अच्छा तो, कल मिलने तक—।

'कल मिलने तक !"

नवयुवक इसके बाद घर चला गया। वहाँ जाकर कोच पर पड़ गया, और लगभग पन्द्रह मिनिट तक वह अपने उसकी बातों को सुलझाता रहा। उस आदमी का कथन शीघ्र ही झूठा साबित हो जायगा, और तब एक बार फिर उसका—। लेकिन अब तक के लिये वह स्वतन्त्र था, और आने वाले सम्भाव्य भय से कोई बचने का मार्ग मिलना ही चाहिये। पोरफीरियस के इरादों को जानना कठिन होगा, लेकिन उसने जो अनुमान लगाया था उसके अनुसार वह बड़े भयङ्कर भय से अभी बचा था। जाल सा और बुना होता और सब कुछ समाप्त ! यद्यपि अभी तक कोई प्रमाण उपस्थित नहीं हो पाये थे, पर रासकोल्नीकाफ समझौते पर उतर आया था। क्या वह इस प्रकार विचार करके ठीक कर रहा था ? पोरफीरियस का ध्येय इसमें क्या था ?

एकदम उसने प्रसन्नता का अनुभव किया—उसने सोचा कि तुरन्त ही उसे कम्परनूम इवानोवना के यहाँ जाना चाहिये। यद्यपि बड़ी देर हो चुकी थी फिर भी उसे आशा थी कि वहाँ सोनिया मिलेगी—उसके ओठों पर हास्य की क्षीण रेखा दौड़ गई। ज्योंही जाने के लिये उसने द्वार खोला कि वही पाजी आदमी—ज़मीन में से जो पैदा हो गया था—फिर दिखा। वह कमरे में आया। उसने एक आह भरी।

"तुम क्या चाहते हो ? तुम कौन हो ?" मृत्यु की भांति पीला पड़ते हुए, डर, क्रोध में रासकोल्नीकोव ने पूछा।

"मैं तुमसे क्षमा मांगता हूँ।" धीरे से उसने कहा।

"किस लिये ?"

पाँचवाँ भाग

१

उस सांघातिक दिन के एक दिन बाद, जबकि पीटर पोट्रोविच ने रासकोलनीकोव महिलाओं से मुलाकात की थी, उसके विचार स्पष्ट हो गये थे और अत्यन्त खेद के साथ, उसे यह स्वीकार करना पड़ा था कि—वह विच्छेद—जिस पर कि उसने एक दिन पूर्व विश्वास भी नहीं किया था—वास्तव में एक निर्विवाद—सत्य बन गया। आहत—अहङ्कार के सर्प ने उसके हृदय को रात भर डसा। उठ कर, पहिला विचार पीटर पीट्रोविच का शीशा देखना था—अचानक। अपने पीले चेहरे का निरीक्षण करते हुये, वह इस विचार से सन्तुष्ट हो गया कि उसके लिये दुलहिन को बदल देना कोई कठिन काम नहीं होगा, और कौन—जाने शायद लाभप्रद ही हो। शीघ्र ही उसने इस काल्पनिक आशा को छोड़ा और अपना गला साफ किया, और अपने मित्र व सोने के कमरे के साथी—एन्ड्रूस सेमनोविच लेबीज्यात्नीकोव की खातिर—अपने चेहरे पर व्यङ्गपूर्ण हास्य प्रस्थापित किया। उसे इस बात के ध्यान आते ही क्रोध आ गया कि उसे अपनी उस घटना के बारे में इस मित्र से कुछ भी नहीं कहना चाहिये था।

प्रातः काल से ही बुरी तकदीर ने उसका पीछा पकड़ लिया था। सबसे अधिक परेशानी जो उसको हो रही थी वह यही थी कि वह अपने मकान मालिक को यह विश्वास नहीं दिला पाया था कि उसने जो और कमरे लिये हैं वह अपने विवाह के लिये हैं। वह किसी प्रकार के समझौते के लिये तैयार नहीं था, और इस बात पर जोर दे रहा था कि शर्त के अनुसार वह एक एक पाई वसूल कर लेगा, यद्यपि पीटर पीट्रोविच ने उन कमरों की पूर्ण रूप से मरम्मत करवाई थी। और न उन कमरों को सजाने वाला ही कुछ कम सख्ती से व्यवहार कर रहा था। "क्या हम केवल कुर्सियों के लिये विवाह

करना नितांत आवश्यक हो गया है!" उसने विचार किया। इस विचार के आते ही उसे आशा की अन्तिम किरण चमकती सी लगी। "क्या मामला वास्तव में बहुत अधिक बिगड़ गई है? क्या कुछ भी प्रयत्न नहीं हो सकता?" दूनेचका का सौन्दर्य उसके हृदय में काँटे की भाँति चुभ गया था। यदि उसका वश चलता तो रासकोल्नीकोव को नष्ट कर देता।

"दूसरी मेरी गलती यह रही कि मैंने कुछ भी धन नहीं दिया। यह गलत अन्दाज था। अस्थाई रूप से उन्हें परेशानियों में रख कर मैंने यह अनुमान लगाया कि बाद में वे लोग मुझे अपना परमात्मा समझेंगे। जब कि अब वे लोग मेरे हाथ से बिल्कुल निकल गये। मान लो कि यदि मैंने उन्हें पन्द्रह सौ रूबल दे दिये होते कुछ भेंट भी आदि होती तो यह कार्य उदारता का समझा जाता। उन्होंने फिर मेरी इतनी आसानी से अवहेलना न की होती।"

एक बार फिर पीटर ने अपने दाँत पीसे और अपने आपको नितान्त मूर्ख समझा। इस निश्चय पर पहुँच कर वह निवास स्थान की ओर गया। उसकी उत्सुकता, केथराइन इवानोवना के यहाँ की दावत की तैयारी की धूम सुन कर बढ़ गई। उसे याद आया कि वह भी निमन्त्रित था। मकान मालकिन से बातचीत के दौरान में पता चला कि पूरे खाने की व्यवस्था है और सब लोगों को निमन्त्रित किया गया है, जो उस मकान में रहते हैं। लेबीजियात्नीकोव को भी बुलाया गया है—इसका ध्यान न देते हुए कि उसका झगड़ा केथराइन इवानोवना से हो गया था।

"केथराइन इवानोवना ने इस समय सब झगड़े भुला कर मकान मालकिन को भी आमन्त्रित किया और वह इससे प्रसन्न भी थी। इन सब बातों का समाचार पाकर पीटर को एक विचार आया। और यह सोचते हुए कमरे में लौटा क्योंकि उसे यह भी पता चला था कि रासकोल्नीकोव भी आने वाला है।

"ऐसा लगता है कि उस विधवा के यहाँ अन्तिम क्रिया—भोज की तैयारी हो रही है?" लूजिन ने लेबीज्यातनीकोव से पूछा।

"तुम्हारा मतलब यह है कि तुम इस बारे में कुछ भी नहीं जानते?

"किसी भी हालत में नहीं, बिल्कुल इसके विपरीत !"

"बिल्कुल विपरीत !" रजुमिखिन हँसता है।

"तुम विश्वास करो या न करो, मैं तुमसे क्यों छिपाऊँ ? इसके विपरीत उसमें कुछ भावी-गाम्भीर्य है।"

"मान लो कुछ देर के लिये कि तुम उसकी प्रशंसा कर रहे हो। तब तुम्हारा तात्पर्य यह है कि उसका भावी-गाम्भीर्य मूर्खता है !"

"किसी भी हालत में नहीं ! क्या मूर्खता ! एवं अब तुम 'प्रशंसा' लगा रहे हो। तुम तो कुछ भी नहीं समझते। हम नारी की स्वतंत्रता चाहते हैं, और तुम सोचते हो बस लड़की का जो गाम्भीर्य है, उसे मैं समझ सकता हूँ। यदि अपनी इच्छा से वह कहती है मेरे हो जाओ, तो बड़ा प्रसन्न होऊँगा, क्योंकि वह लड़की मुझे अच्छी लगती है। लेकिन मौजूदा हालत में मुझ से अधिक उसके साथ कोई भी भद्र नहीं रहा, किसी ने भी उसके साथ न्याय नहीं किया। मैं प्रतीक्षा में हूँ और आशा लगाये हूँ। और बस।"

"इसके बजाय, मैं तुमको सलाह दूँगा कि तुम उसे कुछ भेंट में दो।"

"तुम कुछ भी नहीं समझते जैसा कि मैंने कहा। उसकी दशा, तुम्हें व्यंग का अधिकार देती है, निस्सन्देह। तुम उसके स्वभाव को बिल्कुल नहीं जानते।"

"अच्छा बताओ, क्या तुम उसे एक क्षण के लिये यहाँ ला सकते हो ? वे सब कब्रस्थान से लौट आये होंगे। मैंने उन्हें ऊपर जाते हुए सुना। मैं उससे एक क्षण भर के लिये मिलना चाहता हूँ।"

"क्यों ?"

"मुझे उससे बात करनी है। मैं एक या दो दिन में यहाँ से चला जाऊँगा, मुझे उससे कुछ कहना है। इसके अतिरिक्त, तुम भी, मिलने के समय उपस्थित रहना, नहीं तो परमात्मा जाने तुम न जाने क्या विचार करो।"

"मैं कुछ विचार नहीं करूँगा। यदि तुम्हें उससे कुछ काम है तो उसका लाना बड़ा सरल है। मैं उसके पास एक दम जाऊँगा, और बाद में तुम जाओ, मैं तुम्हें परेशान नहीं करूँगा।"

पाँच मिनिट बाद सोनेचका को लिये वह कमरे में आया। वह बड़ी

उत्सुक और आश्चर्यचकित सी भीतर आई। ऐसी हालत में वह हर समय डर जाती थी। पीटर ने नम्रता और कृपा दिखाई। उसने उसे कुर्सी बैठने को दी। वह बैठ गई, उसकी निगाह लेबीज्यात्नीकोव फिर टेबल पर पड़े पैसों पर गई और तब एक दम, उसकी आँखें पीटर पर पड़ीं। लेबीज्यात्नीकोव द्वार की ओर बढ़ा। लूशिन उठा और उसे रोका।

"क्या रासकोल्नीकोव आ गया वहाँ ?" उसने चुपचाप पूछा।

"रासकोल्नीकोव ? हाँ, वह वहाँ है, वह अभी ही आया है, मैंने उसे देखा। तब फिर ?"

"तुम हालत में तुमको यहीं रहने को, मैं प्रार्थना करता हूँ, तथा मुझे इस महिला के साथ अकेला मत छोड़ो। मामला कुछ भी नहीं है, लेकिन परमात्मा जाने क्या से क्या बात बनादी जाय। मैं नहीं चाहता कि रासकोल्नीकोव वहाँ जाकर कुछ कहे—तुम मेरा मतलब समझे ?"

"मैं समझा ! मैं समझा—" लेबीज्यात्नीकोव ने कहा, "तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। जैसा कि तुम चाहते हो। मैं यहीं रहूँगा।"

पीटर एक बार फिर आया और सोनिया के सामने कुर्सी पर बैठ गया।

"अच्छा तो, सोफिया सेमनोवना कृपा करके, अपनी आदरणीय माँता जी से मेरी ओर से क्षमा माँग लेना। मैं ठीक कहता हूँ न ? कैथराइन इवा-नोवना तुम्हारी माँ हैं न ?" उसने गम्भीरता से यद्यपि मृदु भाषी होकर पूछा।

"हाँ आप ठीक कहते हैं, वह मेरी माँ ही हैं।" बिचारी सोनिया ने शीघ्र उत्तर दिया।

"अच्छा, तो, कृपा करके उनसे कहना कि मुझे, इच्छा होते हुए भी परिस्थितियों के कारण उनका निमन्त्रण स्वीकार नहीं कर सकता।"

"मैं कह दूँगी। और वह उठी।

"लेकिन अभी सब समाप्त थोड़े ही हुआ।" लड़की का भोलापन देख कर और सांसारिक व्यवहार से उसकी अनभिज्ञता देखकर, पीटर ने मुस्कराते हुए कहा। "तुम मुझे नहीं जानतीं, सोफिया। मैंने तुम्हें किसी और काम से कष्ट दिया है।"

उसके इशारा करने पर सोनिया फिर बैठ गई। उसकी निगाह टेबल पर पड़े धन की ओर गई, परन्तु शीघ्र ही, इसे बुरा समझकर—विशेष कर उस जैसी परिस्थिति वाली को—उसने ऊपर से नजर हटा ली। कुछ देर की शांति के बाद।

"मैंने केथराइन से कल दो चार बातें की थीं—वैसे ही। वही इसको स्पष्ट करता था कि वह—वास्तव अप्राकृतिक हालत में है।"

"हाँ, अप्राकृतिक हालत में।" धीरे से सोनिया ने कहा।

"बिल्कुल ठीक। अब, मानवता के दृष्टिकोण से—और—और—यदि मैं ऐसा कहूँ कि—मैं अपनी तरफ से—ऐसा चाहता हूँ कि उसके काम आ सकूँ—। ऐसा लगता है कि अब इस परिवार को केवल तुम्हारा ही सहारा है।"

सोनिया एक दम उठी। "क्या मैं पूछ सकती हूँ, श्रीमान! कि क्या आपने उनसे यह नहीं कहा कि उन्हें पेन्शन मिल सकती है? कल ही तो ऐसा उन्होंने मुझ से कहा था।"

"किसी भी प्रकार नहीं। मैंने तो केवल यह बताया था कि यदि वह ऐसे अफसर की विधवा है जो नौकरी पर मरा हो तो उसको पेन्शन मिल सकती है। लेकिन ऐसा नहीं है। और क्या वह पेन्शन का स्वप्न देख रही थी? वह अच्छी महिला हर बात को सत्य समझ लेती है।"

"हाँ वह पेन्शन का स्वप्न देख रही थी। उसका अच्छा स्वभाव हर बात को स्वीकार कर लेता है।" सोनिया ने कहा, और फिर जाने के लिये उठी।

"केवल एक शब्द! तुमने अभी सारी बातें नहीं सुनीं।"

"मैंने अभी सारी बातें नहीं सुनीं!"

"संक्षेप में। कृपा कर बैठ जाओ, एक बार और। वह वास्तव ऐसी हालत में—और छोटे बच्चों का साथ है, मैं चाहता हूँ—जैसा कि मैंने पहिले कहा था कि अपनी सामर्थ्य के भीतर कुछ सहायता—और कुछ नहीं! ऐसा तो हो सकता है।"

"यह तो बड़ी कृपा है वास्तव में ! परमात्मा—" सोनिया लड़खड़ा गई।

"ऐसा सम्भव हो सकता है—लेकिन इसके बारे में हम फिर बात करेंगे। फिर भी आज ही कुछ न कुछ कर डालना है। हम रात को फिर मिलेंगे—लगभग सात बजे। लेकिन एक बात ध्यान में रखी जाय जिस कारण मैंने तुमको कुछ देने की स्वतन्त्रता मांग ली। मेरी राय में कोई पैसा, कैथराइन के हाथों में नहीं देना चाहिये। वास्तव में वह ठीक न होगा, ममत्व के रूप में आज का भोज। वह बिना जूते और मोजों के है पर अमरीका की 'रम' और मेडिरा की कॉफी खरीदी गई है। ये बड़ी बुरी बात है। कल, सम्भव हो सकता है कि सारे परिवार का भार तुम्हारे ऊपर आवे। इसलिये—यह सहायता इस बिचारी विधवा को अवगत न कराई जाय—और केवल तुम इसका इन्तजाम करो। मेरे इस विचार के लिये तुम्हारी क्या राय है ?"

"मैं क्या कहूँ, इसके लिये। यही कहा जा सकता है कि वह ऐसी ही है—ऐसी बात भी जो जीवन में एक बार ही होती है। वह अपने स्वर्गीय पति के प्रति अपनी आदर भावना प्रदर्शित करना चाहती थी—लेकिन वह बड़ी बुद्धिमान है। लेकिन जैसी आपकी इच्छा, मैं बहुत बहुत—वे सब बहुत—और परमात्मा—और बिचारे बच्चे—।" सोनिया आगे कुछ न कह सकी और फूट-फूट कर रोने लगी।

"तब यह ठीक रहा। अपने सम्बन्धियों के लिये यह रकम स्वीकार करो। लेकिन मेरा नाम इस मामले में न लिया जाय।"

यह कह कर पीटर ने सोनिया को दस रुबल का एक नोट—ठीक से खोल कर उसे दे दिया। लड़की ने शर्माते हुए उसे स्वीकार किया, और जाने की जल्दी की। पीटर उसे द्वार तक पहुँचाने गया। अन्त में वह कमरे के बाहर हुई और कैथराइन इवानोवना के पास पहुँची। इस सारे समय इन लोगों को मिलने में कोई दखल न हो, इससे लेबीज्यातनीकोव खिड़की के पास ही खड़ा था या कमरे में इधर उधर घूम रहा था।

"मैंने सब देखा और सुना।" उसने विशेष प्रकार से शब्दों पर जोर देकर कहा। "तुम्हारा व्यवहार शालीनतापूर्ण रहा—नहीं—मानवी। मैंने देखा कि तुम धन्यवाद से बचना चाहते थे। और यद्यपि मैं, वास्तव में, सिद्धान्त रूप से, गुप्त दान के खिलाफ हूँ, जो कि कमजोरियों के बजाय समाप्त करने के और बढ़ावा देती है फिर भी मैंने तुम्हारा कार्य प्रसन्नतापूर्वक देखा-हाँ, वास्तविक प्रसन्नता से।"

"यह कोई विशेष महत्व का नहीं है।" अजीब तरह से उसकी ओर देखते हुए सुस्लिन बड़बड़ाया।

"नहीं, नहीं यह बात नहीं है; तुम्हारे समान व्यक्ति जो हाल में ही सताया गया है, अभी भी इस योग्य तो है कि दूसरों के दुःख दर्द में सहानुभूति रखे, नहीं तो ऐसे अवसर आर्थिक व्यवस्था के विपरीत ही कार्य करते हैं, इस बात की आशा, मैंने तुमसे नहीं की थी, पीटर! और वैवाहिक विवाह सम्बन्ध में ही अपने आपको क्यों बाँधा जाय? मैं इस विचार से ही प्रसन्न हूँ कि तुम अब भी स्वतन्त्र हो।"

"मैं वैवाहिक-विवाह के पक्ष में इसलिये हूँ कि बेकार दूसरों के बच्चों को क्यों पाला जाय—जैसा कि तुम्हारे स्वतन्त्र विवाहों में होता है," सिर्फ कहने के लिये उसने कहा, क्योंकि इस समय वह कुछ विचार कर रहा था, और अपने मित्र की बातें अनसुनी सी सुन रहा था।

"बच्चे? तुम बच्चों के बारे में कहते हो? ओरे। कई लोग तो अक्सर इनको भूल ही जाते हैं। इस सम्बन्ध में फिर कभी बातें करेंगे।"

इससे पीटर प्रसन्न नहीं हो सका। उसकी विचार धारा किसी और धार बह रही थी; उसने अपने हाथ मले। बाद में उसके मित्र ने ध्यान दिया कि उसका दिमाग कहीं और था।

२

यह कहना कठिन है कि केथराइन इवानोवना के दिमाग में इस दावत का क्याल किस प्रकार आया। फिर भी उसने रासकोल्नीकोव से जो धन पाया था, उसका आधा भाग उसने इसमें व्यय कर डाला था। शायद यह

और लोगों को—जो उसी मकान में रह रहे थे—यह बात बताना चाहती थी कि उसका पति इतना ही भला था जितने कि और लोग। या शायद वह 'निर्धन के अहंकार' विचार की दास सी हो गई थी। हम यह भी मान सकते हैं कि केथराइन इवानोवना यह बताना चाहती थी—उन सब 'निर्धन व्यक्तियों को' कि वह न केवल 'कैसे रहा जाता है' यह जानती थी, बल्कि यह कि वह कर्नल की लड़की—किस प्रकार कुलीन वातावरण में पली थी भी जानती थी।

शराब की बोतलें, यहाँ कई प्रकार की नहीं थीं, बढ़िया प्रकार की होने पर भी संख्या में अधिक थीं। 'समावार' भी उन लोगों के लिये तैयार रखा गया था जो चाय पीना चाहते थे या जो खाने के बाद 'पंच' (Punch) लेना चाहते थे।

अमेलिया इवानोव्ना—मकान मालकिन—भी इस समय उसके लिये आदर की वस्तु बन गई थी। इसका कारण शायद यह था कि मकान मालकिन ने दावत का सारा इन्तजाम—टेबल लगाना प्लेटें जुटाना और कुछ चीजें बनाना आदि की चिंता से उसे मुक्त कर दिया था। खाने के सामान भी टेबल पर सुन्दरता से सजाये गये थे। यद्यपि सारी वस्तुएँ पड़ोस के रहने वालों से कुछ देर के लिये ले ली गईं थीं, पर हर वस्तु टेबल पर सिलसिले वार रखी थी। सारा इन्तजाम हो जाने पर मकान मालकिन ने एक अच्छा सा 'मातमी गाऊन' पहिना। यह सही, मकान मालकिन का यद्यपि उचित था, पर इससे केथराइन इवानोवना प्रसन्न नहीं हुई। "जैसे कि डिनर का सारा प्रबन्ध अमेलिया इवानोवना के बिना असम्भव ही था।" टोपी पर का नया रिबन भी उसे अच्छा नहीं लगा। लगभग चालीस आदमियों के खाने का प्रबन्ध था। उस समय केथराइन इवानोवना अपने विचार व्यक्त करना नहीं चाहती थी पर उसने निश्चय किया कि ठीक समय पर वह उसे देख लेगी।

दूसरी बात जिससे केथराइन इवानोवना चिढ़ रही थी वह यह थी कि कब्रस्थान जाते समय सुरिक्स से, सिवाय उस 'पोल' के और कोई था। लेकिन जब टेबल पर बैठने का समय आया तो अच्छी खासी भीड़ थी—बिना बुलाये भी थे। पीटर वहाँ पर उपस्थित नहीं था। इसके लिये, शाम से ही

कैथराइन ने बड़े अच्छे शब्दों में, हर एक से, तारीफ़ की थी। उसके कथनानुसार वह अपने पति के अच्छे मित्रों में से भी था, और कभी-कभी उसके पिता के यहाँ भी आया करता था।

पीटर के पास लैबीज्यातनीकोव था जो नहीं आया था। वह आदमी अपने आपको क्या समझता है! कैथराइन इवानोवना बड़े उदार व्यक्तित्व की थी और उसने उसे केवल इसलिये बुलाया था कि पीटर उसके साथ रहता था।

आये हुए मेहमानों में से एक कैथराइन को बिना नमस्ते किये ही पेटुकपन से टेबल पर बैठ गया। दूसरे महाशय, ठीक कपड़े न होने के कारण ड्रेसिंग-गाउन में ही आ गये। इन्हें अमेलिया इवानोवना ने पोल की सहायता से बाहर निकाला। दो ऐसे महाशयों का भी परिचय कराया गया जिन्हें कोई भी नहीं जानता था और ना ही वे वहाँ रहते ही थे। यह विचार करके कि कमरा छोटा पड़ जायगा बच्चों का प्रबन्ध अलग किया गया था। ऐसी हालत में, कैथराइन इवानोवना अपने मेहमानों का क्रोधित होकर ही स्वागत कर रही थी। न आने वालों, पर प्रमुख अतिथियों के न आने का कारण अमेलिया इवानोवना पर डाल कर, कैथराइन इवानोवना ने एक दम उसके प्रति कटु शब्दों का प्रयोग कर डाला। इस प्रकार डिनर का आरम्भ बड़े ही कटु वातावरण में आरम्भ हुआ। सब लोग बैठ चुके थे।

रासकालनीकोव, कब्रस्तान से लौटने के तुरन्त बाद ही, उपस्थित हुआ। कैथराइन इवानोवना उसे देख कर आह्लादित हुई—प्रथम, तो वह उन सब में अधिक संस्कृत लगा; दूसरे, उसने अत्यन्त नम्र शब्दों में, दफ़न के समय, उसके प्रयत्न करने पर भी उपस्थित न होने के कारण क्षमा माँगी थी। उसने उससे अनुरोध किया कि वह उसके बाईं ओर बैठे, दाहिनी ओर अमेलिया इवानोवना बैठी थी। इधर अधिक खाँसी हो जाने के कारण उसके सीने में कड़ी हुई था, वह अधिक परेशान थी और कोई भी वाक्य पूर्णरूप से बोल नहीं सकती थी, पर फिर भी प्रसन्न थी कि वह किसी को तो अपना दुःख में साथी पा रही थी। किन्तु सहसा उसका कोप, मकान मालकिन के प्रति अधिक होने के रूप पर—भड़का।

"यह इसी मूर्ख नारी के कारण हुआ। तुम जानते हो न मैं किनके

बारे में कह रही हूँ।' और केथराइन ने मकान मालकिन की ओर संकेत किया। "देखो तो उसे! वह अपनी आँखें इस तरह फाड़े हुए देख रही है जैसे हम उसी के बारे में बातचीत कर रहे हों। आह! हँसी का गोलगप्पा! हा! हा! हा! हि! हि! हा! वह यह दिखाना चाहती है कि मेरे टेबल पर बैठ कर मुझे अनुगृहीत कर रही है! मैंने उससे कहा था कि भले आदमियों को बुलाना! और देखो कैसे बदतमीज लोगों का जमघट इकट्ठा हुआ है। उस जानवर को देखो! कोई भी उससे परिचित नजर नहीं आता? मैं भी इन लोगों को पहिले ही पहिल देख रही हूँ। मैं तुम से कह रही हूँ—तुम!' उसने एक ओर इशारा किया। "कुछ लीजिये न? बीयर न सूझता या थोड़ी लीजी? देखो! देखो! वह उठ रहा है!—एक बात तो ठीक है हम लोगों के साथ कि ये लोग शोर नहीं मचा रहे हैं।—मैं तो केवल मकान-मालकिन की चीट से डरती हूँ। अमेलिया इवानोवना।'—उसने जोर से पुकारा 'यदि तुम्हारे चम्मचे कहीं चोरी चले गए तो मैं जिम्मेदार नहीं।'

उसने रासकोल्नीकोव की ओर घूम कर फिर आरम्भ किया। 'हा! हा! हा! यह समझ नहीं पाई! कभी नहीं समझती। देखो कैसी उल्लू सी लगती है।" उसे एक दम खाँसी आ गई। उसने रूमाल मुँह से लगाया। फिर चुपचाप उसे रासकोल्नीकोव को दिखाया। वह खून से भरा था। फिर भी उसका हँसी-मजाक चलता रहा। 'पर मेरी समझ में नहीं आता कि पीटर पीत्रोविच क्यों नहीं आया? अरे! सोनिया कहाँ है। उसको क्या हो गया? ओह! वह आ रही है। रादियाँ रोमनोविच उसे अपनी बगल में बैठने दो। यही है तुम्हारा स्थान सोनिया! अब आरम्भ करो। मेरे कबाब से बच्चे ला रहे हैं न?"

सोनिया ने, जरा जोर से, पीटर के न आने के कारण उसका क्षमा माँगना, केथराइन इवानोवना को सुनाया। वह रासकोल्नीकोव के बगल में ही बैठ गई उसे सुनते हुए।

कपड़ों की कमी के कारण दोनों महिलाएँ मातमी कपड़ों में नहीं थीं। उसने रासकोल्नीकोव को बताया कि पीटर सरीखे सुसभ्य व्यक्ति का ऐसे समाज में आना भी ठीक नहीं था इसीलिये वह नहीं आया।

तुम भी तो, मेरे पति के साथ मित्रता निभाने के खातिर ही, यहाँ आये हो न ?" उसने रास्कोलनीकोव की ओर देखा और उसका हास परिहास फिर आरम्भ हो गया ।

"उसे भी तो शराब की आदत थी ।" एक आदमी ने अपना बारहवाँ गिलास समाप्त करते हुए कहा ।

कैथराइन इवानोवना इस कुसमय के व्यंग पर क्रोधित हो गई । "मैं मानती हूँ कि वह इसका शौकीन था । पर वह अपने परिवार को बहुत चाहता था—अगर उसमें बुराई थी तो यह कि बहुत दयालु था और परमात्मा जाने किस किस ने उसके साथ बैठ कर शराब नहीं पी ।"

कह कर उसने एक ठंडी आह भरी । "औरों की भाँति तुम भी यह सोचते हो कि मैं उस के साथ सख्ती का व्यवहार करती थी ।" उसने रास्कोलनीकोव से कहा "लेकिन यह असत्य था । वह मेरी बड़ी इज्जत करता था । उसका हृदय बड़ा पवित्र था । उसकी आदतों को छुड़ाने का केवल यही उपाय था कि उसके साथ नम्रतापूर्वक सख्ती की जाय ।' उसके गाल लाल हो गये और उसकी छाती जोर से ऊपर नीचे होने लगी ।

रास्कोलनीकोव चुपचाप सुनता रहा । वह उसका केवल मन रखने के लिये प्लेट में से कुछ उठाकर खा रहा था । सारे समय वह सोनिया पर अपनी निगाहें लगाये रहा । सोनिया ने, इस समय यह अनुमान लगाया कि कैथराइन इस समय केवल उसके ही बारे में सोच रही है—क्योंकि वह उसके मृतक पति की निशानी है । इसी समय एक अतिथि ने जो टेबल के दूसरे कोने पर बैठा था दो दिल काट कर प्लेट में सोनिया की तरफ सरकाये । कैथराइन इवानोवना क्रोध में भर कर चिल्लाई "शरारती सुअर ।"

इसके उपरांत कैथराइन ने यह घोषित किया कि वह अपने गाँव चली जायगी और सोनिया को भी अपने साथ ले जायगी । इस पर, टेबल पर बैठे किसी व्यक्ति ने जोर का कहकहा लगाया । कैथराइन ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा कि वह उसके आगामी कार्यक्रम में बड़ी सहायता पहुँचायेगी । और यह कह कर उसने उसका चुम्बन लिया । सोनिया इस पर शर्मा गई । कैथराइन बकती ही रही ।

"मेरा मन एक दम खराब हो जाता है और अब मैं काफी थक गई हूँ और चूँकि अब सब समाप्त हो गया है इसलिये आओ चलें चाय पीवें।" कुछ क्षमा माँगते हुए केथराइन ने कहा।

अमेलिया इवानोवना बड़ी रुष्ट सी हो रही थी क्योंकि अभी तक इस बातचीत के सिलसिले में उसे एक शब्द कहने का भी अवसर नहीं मिला था। उसने उस भविष्य में होने वाली स्कूल मास्टरनी (केथराइन इवानोवना) से कहा, कि उसे ध्यान रखना पड़ेगा कि, उसके विद्यार्थी बिस्तर में उपन्यास आदि न पढ़ें। थकी होने के कारण केथराइन ने इस सलाह को बुरी दृष्टि से देखा और संक्षेप में उससे जबान बंद रखने के लिये कहा गया। इस बात को मानने के बजाय वह और जोर से चिल्ला कर कहने लगी कि वह 'ध्याय संगत बात कर रही थी—और यह कि अभी तक केथराइन ने एक पैसा भी नहीं दिया है। उसका पिता बर्लिन का बड़ा प्रमुख व्यक्ति था—उसका नाम जोहन था और वह 'बैलिफ' (Bailiff) था, जो कि केथराइन इवानोवना का पिता कभी नहीं बन पाया। इस पर विधवा उठी और बड़े ऊँचे स्वर में, चीखी।

"यदि तुमने मेरे पापा के स्तर पर अपने अभागे पिता को रखा तो मैं तुम्हारी टोपी सिर से उतार कर अपने पैरों से रौंद डालूँगी।

इस पर अमेलिया कमरे में इधर-उधर दौड़ने लगी—यह साबित करते हुए कि वह मकान मालकिन थी, और केथराइन इवानोवना को मकान खाली, उसी समय करना पड़ेगा, फिर वह टेबल पर से और उठाने लगी। भगदड़ मच गई। भार सोनिया अपनी सौतेली माँ की ओर भागी ताकि मार पीट न हो जाय दोनों में। लेकिन एकदम अमेलिया ने पीले-टिकट की बात याद दिलाई जिससे केथराइन ने लड़की को पकड़ कर एक ओर कर दिया और मकान मालकिन का सामना करने आगे बढ़ी। ठीक इसी समय द्वार खुला और सामने पीटर पीट्रोविच दिखा। केथराइन इवानोवना उसकी ओर दौड़ी।

३

"पीटर पीट्रोविच!" वह चिल्लाई। "आप! और मुझे बचाओ।

इस मूर्ख नारी को समझाओ कि उसे एक सभ्य कुल की महिला से इस प्रकार नहीं बोलना चाहिये। मैं गवर्नर जनरल से शिकायत करूँगी। उस सद्व्यवहार की याद में, जो तुमको मेरे पिता के यहाँ प्राप्त हुआ था, आओ और इन अनाथों की रक्षा करो।"

"मुझे जाने दो! मादाम! मुझे तो जाने दो। मुझे तुम्हारे पापा से मिलने का सौभाग्य कभी भी प्राप्त नहीं हुआ—जैसा कि तुम भी जानती हो। और मेरा इरादा इस समय आपका और अमेलिया इवानोवना के झगड़े में बोलने का भी नहीं है। इस समय मैं एक व्यक्तिगत कार्य से आया हूँ मैं तुम्हारी सौतेली लड़की सोफिया से एक बयान तलब करने का बड़ा इच्छुक हूँ। इसलिये मुझे भीतर आने की आज्ञा दीजिये। केथराइन इवानोवना को वह वहीं छोड़ कर, कमरे में वहाँ सानिया भी वहाँ गया।

केथराइन इवानोवना एक दम स्तम्भित हो गई। इस समय उसको लूजिन की जिद्दी और धमकाती हुई आवाज़ उरकी। उसके आने से शांति तो अवश्य हो गई थी। सब लोग किसी अनहोनी बात की आशा करने लगे। रासकोल्निकोव सोनिया की बगल में ही था, उसने पीटर को आने का रास्ता दिया। लेबीज्यतनीकोव भी दूसरे ही क्षण आ गया लेकिन भीतर आने की बजाय वह द्वार पर ही खड़ा रहा, और वह सुनता रहा कि क्या होने जा रहा था।

"आप लोगों की पार्टी में दखल डालने के लिये मुझे क्षमा करेंगे। लेकिन, इतने बड़े समुदाय में, बयान तलब करने के लिये आने पर, मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ। सोफिया इवानोवना! मुझे मालूम पड़ा—ज्यों ही तुम मुझसे मिल कर गईं कि—मेरा टेबल पर से एक सौ रूबल का नोट गायब है। यदि तुम्हें ज्ञात है कि इस नोट का क्या हुआ तो मैं तुम्हें इन सब लोगों के सामने वचन देता हूँ कि मामला आगे नहीं बढ़ेगा। नहीं तो मुझे सख्त कार्यवाही करने पर मजबूर होना पड़ेगा—उसके लिये केवल तुम ही जिम्मेदार होगी।

इन शब्दों के उपरांत सबत्र शांति छा गई। सानिया कुछ भी उत्तर देने में सर्वथा असमर्थ-लूजिन की ओर देखने लगी। "क्या उत्तर देती हो", लड़की की ओर देखते हुए लूजिन ने कहा।

'मुझे कुछ मालूम — मुझे कुछ नहीं मालूम'' उसने क्षीण स्वर में उसने कहा।

'नहीं ? तुम नहीं जानती ? सोन्या, कुमारी मैं तुम्हें समय देता हूँ। यदि मुझे पूर्ण विश्वास नहीं हुआ होता तो मैंने यहाँ तुम्हें इस मामूली सी बात के लिये अभियोग लगाया ही नहीं होता। यह तब हुआ जब कि तुम को मैंने मिलने के लिये बुलाया था और तुमने तीन बार जाने की कोशिश की थी यद्यपि हमारी मुलाकात समाप्त नहीं हो पाई थी। लेबीज्यात्नीकोव इसे साबित कर सकता है।

"तुम इन्कार नहीं कर सकतीं कि मैंने लेबीज्यात्नीकोव के द्वारा तुम्हें बुलवाया और हमारा मुख्य उद्देश्य बातचीत का, केवल तुम्हारे घर की दुःखद परिस्थिति के बारे में विचार करना था तथा केतराइन इवानोवना को किसी प्रकार की सहायता देने का था। तब मैंने दस रूबल का एक नोट टेबल पर ... [illegible] ...या और तुम्हारे हाथ पर अस्थाई सहायता के रूप में रखा था। लेबीज्या... [illegible] ...कोव इसका गवाह है। और तब मैं तुम्हें द्वार तक पहुँचाने आया।

'तुम्हारे जाने के बाद मैंने लेबीज्यात्नीकोव से दस मिनट बात की और ... टेबल पर आया और क्या देखा कि एक सौ रूबल का नोट गायब है अब ... [illegible] ...र करो कि मैं लेबीज्यात्नीकोव पर किस प्रकार शक कर सकता हूँ ? और ... गिनने में भी कोई गलती की। तुम्हारे आने के थोड़ी देर पहिले ही मैंने ...ीक से गिना था। तुम्हारा पाप ही बस होना चाहिये यह पाप करते हुए ... जाने की जल्दी कर रही थी कि तुम्हारा हाथ टेबल पर था, ... सामाजिक स्तर और उसकी बातों में मजबूर हूँ कि शक करूँ — ... [illegible] ...रथी व्यवहार तो होगा पर है न्याय संगत। मैंने तुम्हें अपने पास ...योंकि मुझे, तुम्हारे दुर्भाग्य से सहानुभूति है मैंने तुम्हें दस रूबल का ...ी मदद के लिये दिया और तुमने उसका यह बदला दिया ! देखो ! ...ी है ! बताओ तो ! क्या तुम इन्कार करती हो !"

...ने कुछ भी नहीं लिया तुम से। तुम ने ...

दिया, यह यह रहा, रखो इसे अपने पास।" सोनिया ने वह नोट निकाल कर उसे दे दिया।

"तब तुम इन्कार करती हो कि तुमने सौ रूबल का नोट चुराया है ?" नोट वापिस न लेते हुए उसने कहा।

सोनिया ने कमरे में चारों ओर देखा। रासकोल्नीकोव दीवार से टिका खड़ा, उसकी ओर देख रहा था। "ओ ! परमात्मा !" वह बड़बड़ाई।

"अमेलिया इवानोवना ! पुलिस को इत्तला देना ठीक रहेगा।" लूजिन ने कहा।

"मुझे मालूम था कि यह चोर थी।" अमेलिया इवानोवना बोली।

"तुम्हें मालूम था ? किसी पिछली घटना के आधार पर ही तुम ऐसा कहती होगी। इसे याद रखना जो तुमने अभी कहा, आदरणीया अमेलिया इवानोवना।"

सारे मेहमानों में खलबली मच गई।

"क्या ?" कुछ स्वस्थ हो लेने पर कैथराइन इवानोवना लूजिन की ओर लपकी, "क्या चोरी का इल्जाम लगाते हो ? उसे सोनिया को ? डरपोक।" और तब वह सोनिया के पास गई "सोनिया तुमने उससे दस रूबल का नोट स्वीकार क्यों किया ? मूर्ख लड़की ! वापिस कर ! एक दम वापिस कर ! अभी।"

कैथराइन इवानोवना ने वह नोट लिया, हाथ में गोली सी बनाई उसकी और लूजिन के मुख पर दे मारा। वकील नाराज हो गया।

"इस पागल औरत को सँभालो।" वह चिल्लाया।

इस समय लेबीज्यात्नीकोव के साथ कई आदमी आकर द्वार पर खड़े हो गये। उनमें दो औरतें भी गाँव की थीं।

"पागल औरत तुम कहते हो ? तुम स्वयं मूर्ख हो, नीच आदमी ! और तुम कहते हो कि सोनिया ने पैसे लिए हैं ! सोनिया और चोर !" और कैथराइन एक फीकी हँसी हँसी। "क्या तुम लोग इस बेवकूफ को देखते हो ?" हर किरायेदार के पास जा जा कर वह कहने लगी। एक दम उसे अमेलिया इवानोवना दिखाई पड़ी। "क्या ! तुम भी ! तुम जिप्सी ! भिखारी

कमीन औरत ! तुम भी कहती हो कि सोनिया चोर है ! क्या यह सम्भव है ! तुम बदमाश, उसने अभी भी कमरा नहीं छोड़ा है, तुम्हारे पास से आकर वह रासकोल्नीकोव के पास आकर बैठ गई थी । उसकी जेबों की तलाशी ले लो । चूँकि वह कहीं भी नहीं गई है, धन उसके ही पास होगा । ढूँढो ! तलाशी लो ! यदि कुछ नहीं मिलता तो, नीच ! तुम इस बर्ताव के जिम्मेदार होगे । चूँकि वह गरीब है, इसमें उसकी कमजोरी से लाभ उठाना चाहते हो । लेकिन ठीक । मैं नहीं डरती । आओ और तलाशी जल्दी करो ।" उसने लूज़िन का हाथ पकड़ कर सोनिया की ओर खींचा ।

"मैं तैयार हूँ—लेकिन मादाम ! शान्त हो ! मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि तुम नहीं डरती । लेकिन तलाशी पुलिस आने पर होगी, यद्यपि मैं मानता हूँ कि यहाँ पर गवाह अधिक हैं लेकिन—वह औरत है—इसलिए एक आदमी के लिये जरा कठिन है— वैसे मैं तैयार हूँ । यदि अमेलिया इवानोव्ना कुछ मदद करें तो—"

"किसी से भी तलाशी कराओ ! सोनिया ! अपने जेब उलट दो ! देखो ! देखा ! राक्षस ! उसके जेब खाली हैं । अब दूसरा जेब ! देखो ! देखा तुमने !"

कतेरीना इवानोव्ना ने, सन्तुष्ट न होकर स्वयं उसके जेब उलटने शुरू किये । लेकिन उसी समय जब कि वह सीधे हाथ के जेब को उलट रही थी, एक मोड़ा सा कागज का टुकड़ा निकल कर लूज़िन के पैरों के पास जा गिरा । हर एक ने उसे देखा । पीटर जमीन पर झुका और दो उंगलियों से उस टुकड़े को उठाया । वह चार तह किया हुआ सौ रूबल का नोट था । उसने उसे ऊपर को उठाया ताकि हर एक देख सके ।

"चोर ! भागो ! पुलिस ! पुलिस कहाँ है ! उसे साइबेरिया भेजना चाहिये !" अमेलिया इवानोव्ना चिल्लाई ।

चारों ओर से आवाजें सुनाई आने लगीं । रासकोल्नीकोव चुपचाप खड़ा खड़ा सोनिया को देखता और लूज़िन की ओर जल्दी जल्दी देखने लगा । लड़की चकित थी । एक दम शर्म से लाल पड़ गई और अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया ।

केवल अपनी मूर्खतावश मैं यह समझा कि वह तुम्हारी उदारता थी। द्वार पर विदा करते समय तुमने सीधे से उससे हाथ मिलाते समय, दूसरे हाथ से तुमने उसकी जेब में एक कागज़ का टुकड़ा, डाला। मैंने यह देखा—अपनी आँखों से।"

लूज़िन पीला पड़ गया। 'क्या ताना-बाना बुन रहे हो तुम यहाँ पर ? तुम खिड़की पर जब खड़े थे, तो कागज़ को डालते कैसे देखा ?'

"कोई धोखा नहीं था—किसी भी प्रकार का। दूरी होते हुए भी मैंने सब कुछ देखा और स्पष्ट रूप से देखा। जब कि तुमने सोफ़िया को दस का नोट दिया तो उस समय मैं टेबल के पास था, उस समय मैंने तुम्हें सौ का नोट उठाते भी देखा। मुझसे यह नहीं बच सका, क्योंकि उसी समय मेरे दिमाग में एक विचार आया। जब तुमने उसकी तह बना ली तो उसे अपनी हथेली में छिपा ली। लेकिन जब तुम उठे तो तुमने वह नोट दायें हाथ से बायें हाथ में कर लिया और फिर डाल दिया। मुझे उस समय यही विचार आया कि—तुम मेरे अनजाने ही सोफ़िया की सहायता करना चाहते हो। अब तुम कल्पना कर सकते हो कि किस तरह मैं तुम्हारा सूक्ष्म निरीक्षण कर रहा था और मैंने वह कागज़ जेब में डालते देखा। मैं फिर यही कहूँगा।"

हर एक पीटर पीट्रोविच के चारों ओर इकट्ठे हो गये। कैथरीन इवानोवना उसकी ओर दौड़ी।

'ऐन्ड्रेस सम्योनिच! मैंने तुम्हें समझने में भूल की। तुमने—मेरी रक्षा की। केवल तुम ही उसके पक्ष में हो। परमात्मा ने ही तुमको अनाथों की सहायता को भेजा है। ऐन्ड्रेस सेमनोविच मेरे प्यारे मित्र! बन्धु !!' और बिना किसी बात का ध्यान किये वह उस नवयुवक के पैरों पर गिर पड़ी।

"यह बकवास है, निरी बकवास! तुम भूल कर रहे हो महाशय! तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि मैंने उसकी जेब में सौ का नोट डाला? और क्यों? क्या उद्देश्य था?"

"तुम जानना चाहते हो कि क्यों? यह मैं नहीं बता सकता। मैंने तो जो देखा वही बताया। मैं शायद तुमसे उसी समय पूछता। मैंने सोचा कि

को देखा नहीं बताया। मैं शायद तुमसे उसी समय पूछता। मैंने सोचा कि तुम अपने उस कार्य को छिपाना चाहते हो। दूसरा विचार यह आया कि तुम लड़की की परीक्षा लेना चाहते थे।"

'तुम्हारे इस काम ने मुझे परेशान कर दिया और मनों के साथ एक भय और उत्पन्न हुआ कि सोफिया तुम्हारी उदारता न जानते हुए, कहीं नोट को खो ही न दे। इसीलिये मैं यहाँ आया। मैं उसे अलग ले जाकर यह बता देना चाहता था कि किस प्रकार तुमने वह धन उसकी जेब में डाला था। एक पग के बाद ही मैं आया और इस दृश्य को देखा। अब बताओ क्या है?"

यह कहते कहते लेबीज्यातनीकोव पसीने से तर हो गया था। उसके शब्दों ने असाधारण प्रभाव डाला। पीतर ने यह अनुभव किया कि पासा पलटने वाला है।

"मैं इस पागलपन के मरमों की क्या परवाह करता हूँ। ये कोई प्रमाण नहीं हैं। तुमने शायद इन बेकार की बातों को स्वप्न में देखा होगा। तुम मूठ बोल रहे हो।

"बस इसके उत्तर में तुम्हें यही कहना है? यह तो पर्याप्त नहीं है। किसी को पुलिस के लिये भेजो। मैं अपनी शपथ लूँगा? फिर भी एक चीज़ वैसे ही रही आ रही है कि आखिर यह करने का उद्देश्य क्या था?"

भीड़ में से रस्कोलनीकोव सामने आया। "मैं इसके व्यवहार के लिये बता सकता हूँ और यदि आवश्यकता पड़ी तो शपथ भी ग्रहण कर सकता हूँ।" उसके कहने के ढंग से आस पास के लोगों को विश्वास हो गया कि यह बाहरी-भीतरी सब जानता है।

"मैं, अब सब समझता हूँ।" लेबीज्यातनीकोव से कहते हुए उसने आरम्भ किया। 'इस घटना के आरम्भ से ही मुझे किसी षड्यन्त्र की सम्भावना थी। मेरी शंकायें किन्हीं परिस्थितियों पर आधारित थीं—जो कि केवल मुझे ही मालूम थीं। तुमने—लेबीज्यातनीकोव—तुमने अपने अमूल्य वक्तव्य से मेरे मस्तिष्क को प्रकाशित किया। मुझे हर एक से मांगना करनो चाहिये कि वह ध्यान से सुने। इस महाशय ने, अभी हाल में ही

एडोल्फिया रामनोवना रासकोल्निकोव से विवाह का प्रस्ताव रखा। अभी परसों ही सेंट पीटर्सबर्ग आने के कारण वे मेरे यहाँ—मुझे देखने आये पर इसने पहिली ही भेंट में झगड़ना आरम्भ किया और मैंने इन्हें बाहर निकाल दिया। परसों तक मुझे ज्ञात नहीं हो पाया था कि यह तुम्हारे साथ रहता था—इस घटना को धन्यवाद देना चाहिये कि इनके आने के दिन ही यह वहाँ पर उपस्थित था क्योंकि मैंने स्वर्गीय मारमीलाडोव के मित्र की हैसियत से, उसकी पत्नि कैथराइन इवानोवना को थोड़े पैस—कफन आदि के लिये दिये थे। इसने एक दम मेरी माँ को लिखा कि मैंने यह धन कैथराइन इवानोवना को नहीं वल्कि उसकी पुत्री को दिया उसके साथ-साथ इस लड़की के बारे में भी इन्होंने कुछ गन्दे तरीके से बयान किया, जिससे कि माँ को यह निश्चय हो जाय कि मैं इससे भलीभाँति परिचित था। इसका उद्देश्य, तुम समझोगे, कि यह था कि मैं अपने माँ-बाप की निगाह में बदनाम हो जाऊँ।'

"गत रात्रि जब मैं अपनी माँ तथा बहिन से मिला—उस समय यह भी यहाँ था, मैंने वास्तविक बात की सत्यता को बताया जो इसके द्वारा मिथ्याख्यापित किया गया था। धन के बारे में बताया कि वह कैथराइन इवानोवना को दिया गया था न कि सोफिया को, जैसा कि झूँठ कहा गया था। यह देख कर कि उसका मनचाहा परिणाम नहीं निकल रहा था, इसने क्रोधित होकर मेरी माँ और बहिन का अपमान किया। सम्बन्ध विच्छेद उसका परिणाम निकला और इसे द्वार बता दिया गया। यह सब रात की घटना है। अब विचार करो कि सोफिया को दोषी ठहराकर इसका कौन सा स्वार्थ सिद्ध होता। यदि यह इसमें सफल होता तो अपनी माँ और बहिन की दृष्टि में मैं अपराधी होता, क्यों कि मैं, एक ओर से उनका परिचय कराते समय बिल्कुल भयभीत नहीं हुआ। और इसने मेरा अपमान करते हुए, मेरी बहिन—इसकी होने वाली पत्नी—की इज्जत बचा ली थी। यह सारा गोलमाल, इसलिये था कि मेरा, मेरे परिवार से झगड़ा हो जाय और वे उनका कृपापात्र बन जाय। इसके साथ यह मुझसे बदला भी लेना चाहता था क्योंकि मुझे सोफिया की इज्जत और आराम का ध्यान भी है। यह है इसके व्यवहार का समाधान और इसके अलावा कुछ भी नहीं है।

उसकी काँपती आवाज, उसके उत्साह और कठोर चेहरे ने वहाँ पर उपस्थित लोगों पर प्रभाव डाला।

"हाँ हाँ यही बात है। तुम्हारा कथन सत्य होना चाहिये, जिस समय कि सोनिया मेरे कमरे में घुसी, उसने बड़ी उत्सुकता से पूछा कि क्या तुम यहाँ थे। उसने तुम्हारा होना चाहा होगा। हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो।' लेबीज्यात्नीकोव ने जल्दी जल्दी कहा।

लूजिन को पीला पड़ गया था, चुप रहा और नफरत से हँसा। वह इस मुसीबत से छूटना चाहता था। लेकिन यहाँ से जाने का अर्थ यह होता कि जो अभियोग उस पर लगाया जा रहा है वह उसे स्वीकार करता है। और दूसरी ओर कुछ अतिथियों का व्यवहार भी निश्चित सा था।

सोनिया ने बड़े ध्यान से सुना। उसकी समस्त आत्मा रासकोल्नीकोव में केन्द्रित थी इसलिये उसने एक क्षण को भी उस पर से दृष्टि नहीं हटाई। कैथराइन इवानोवना बड़े कष्ट में जग रही थी, हर श्वास में एक विचित्र प्रकार की आवाज उसके फेफड़ों से आती थी। अमेलिया इवानोवना मूर्खों की भाँति देख रही थी। चारों ओर कुछ गपाड़ा मच गया और अपमानजनक शब्दों की बौछार होने लगी। लेकिन लूजिन शांत था, क्योंकि वह जान रहा था कि उसका खेल समाप्त है।

"मुझे कहने दीजिये, महाशयो! मुझे कहने दीजिये!— मुझे जाने दीजिये। यह सब बेकार है कि मुझे भयभीत किया जाय। मैं ऐसी बातों से डरने वाला नहीं। चोरी सिद्ध हो चुकी है और मैं मुकदमा दायर करूँगा।" उसने जाने के लिये मार्ग बनाते हुए कहा।

"मैं उसमें कभी नहीं रह सकता जहाँ पर तुम साँस लोगे—मेरा कमरा एक दम खाली कर दो—हमारा तुम्हारा सम्बन्ध समाप्त—'

"अभी हाल ही तो मैंने जाने के लिये कहा था, जब कि तुम मुझे रोक रहे थे, मैं अब केवल यही कहूँगा कि तुम मूर्ख हो। परमात्मा तुम्हें ज्ञान सम्पन्न करे—मानसिक तथा भौतिक। क्षमा कीजिये महाशयो!"

वह अपना मार्ग बनाने में सफल हुआ। वह लेबीज्यात्नीकोव के कमरे में आया और एक घंटे के भीतर ही उस मकान को छोड़ दिया। सोनिया

अपना अपमान बड़े धैर्य से सहन किया लेकिन ये सब उसके लिये बड़े निर्दयी थे। ज्योंही उसका परिहास मय समाप्त हुआ, उसका दिल बैठने लगा। वह बड़ी उद्विग्न सी लगी और कमरे से भागकर अपने निवास स्थान पर पहुँच गई। लूजिन के कुछ देर बाद ही वह गई थी।

कैथराइन परेशान होकर बिस्तर पर पड़ गई थी। अमेलिया इवानोवना ने बिना उसकी तकलीफ का ध्यान किये, चिल्लाना आरम्भ किया। 'यहाँ से निकल जाओ। एक दम! निकल जाओ!" और यह कहते हुए टेबल पर से हर एक वस्तु उठा उठा कर धरती पर पटकने लगी। इस पर, थकी होने पर भी कैथराइन झपट कर अमेलिया के पास पहुँची, पर कम जोर होने के कारण, उसने उसे धकेल दिया।

"क्या सोनिया को बदनाम करना काफी नहीं हुआ, जो वह अब मुझ पर आक्रमण करती है। क्या! मैं उसी दिन मकान खाली करूँ जिस दिन कि मेरा पति दफनाया गया है! मैं कहाँ जाऊँगी? मैं कहाँ-? हे भगवन ईश्वर!" वह फफक पड़ी। "क्या कहीं न्याय नहीं है! सिवाय हमारे और परमात्मा! तुम किसकी रक्षा करोगे? लेकिन ठहरो। अदालत तो है इस दुनियाँ में! ठहर तो तू बदनाम औरत! पोलेचका तू बच्चों के पास ही रहना मैं अभी वापिस आती हूँ। अगर तुम लोग बाहर निकाल दिये गये तो सड़क पर ही रुकना।

कैथराइन यह मालूम करने निकल पड़ी कि न्याय कहाँ होता है। बच्चे काँपते हुए एक कोने में बैठ कर अपनी माँ की प्रतीक्षा करने लगे। अमेलिया इवानोवना शोर मचाती हुई इधर-उधर घूम रही थी।

"अब मुझे जाना चाहिये; और सोफिया सेमनोविच हमें देखना है कि अब तुम क्या करती हो।' रासकोल्नीकोव ने विचार किया और जिधर वह भागती गई थी उस ओर प्रस्थान किया।

४

रासकोल्नीकोव ने, सोफिया की पैरवी, लूजिन के विपरीत एक की, यद्यपि वह स्वयं बड़ा चिन्तित और परेशान था। दूसरी बात यह थी, कि

वह भेद जो अभी रासकोल्निकोव की सोनिया न जानती थी, उसने उसे कई दफे डराया; उस पर प्रकाश में आया था कि लिज़ावेटा को किसने मारा था।

जब वह सोनिया के यहाँ पहुँचा तो उसका आत्मविश्वास जग पड़ा और भय भाग गया। "क्या मुझे स्वीकार करना है कि उसे किसने मारा है?" प्रश्न विचित्र था न केवल वह इस स्वीकार करने की बात को अस्पष्ट ही समझता था, वरन वह इसे कुछ देर और टालना चाहता था। इस बारे में अधिक परेशान न हो इसलिये उसने द्वार खोला। वह अपने छोटे टेबल पर कोहनी टिकाये बैठी थी उसका मुख हाथों में छिपा था। वह उससे मिलने के लिए उठी मानो वह उसकी प्रतीक्षा ही कर रही थी।

'तुम्हारे बिना मेरा क्या हाल होता?' उसने आवेश में आकर कहा और उसे बीच वाले कमरे में ले गई। वह उसके बारे में ही विचार कर रही थी और उसे धन्यवाद देना चाहती थी। रासकोल्नीकोव टेबल के पास पहुँचा और उसी कुर्सी पर बैठा जिस पर कि कुछ देर पहिले सोनिया थी। वह उसस खड़ी हुई खड़ी रही।

"देखा सोनिया, सारा अभियोग तुम्हारी सामाजिक-स्थिति तथा उसके द्वारा बनने वाले परिणाम के खिलाफ लगाया गया था। तुमने उसे समझा न?"

सोनिया के चेहरे पर दुःख की रेखायें खिंच गईं। "कल की भाँति अब और मत कहो। कृपा करके इस प्रकार बातचीत आरम्भ मत करो। मैंने आवश्यकता से अधिक सहन किया है।" वह शीघ्रता से हँसी, इस डर से कि आगन्तुक को दुःख न हो। "वहाँ अब क्या हो रहा है। मैं वहाँ जाना चाहती थी, पर मुझे आशा थी कि तुम आओगे।'

उसने सूचना दी कि मारमीलाडोव परिवार को अमेलिया इवानोवना ने घर से बाहर निकाल दिया है, और केथराइन इवानोवना न्याय की खोज में गई है।

"हे राम! चलो हम चलें।"

"हमेशा वही बात! तुम केवल उन लोगों के बारे में सोचती हो! कुछ देर मेरे साथ भी ठहरो।" कुछ परेशान होते हुए उसने कहा।

"लेकिन कैथराइन इवानोवना ?"

"वह यहाँ अवश्य आयगी। यदि वह तुम्हें यहाँ नहीं पाती है तो तुम्हारा ही दोष होगा इसमें।" सोनिया बैठ गई। "मैं मानता हूँ कि लूशिन आज तुम्हारी बेइज्जती करना चाहता था; लेकिन कहीं वह आज तुम्हें गिरफ्तार करने में सफल हुआ होता, और यदि लेबीज्यातनीकोव या मैं न होते तो आज तुम जेल में होतीं क्यों ?"

"हाँ।" धीरे से सोनिया ने कहा।

"यदि तुम जेल भिजवादी गई होतीं तो क्या हुआ होता ? मान लो, सोनिया कि तुम्हें लूशिन के इरादों का पहिले से ज्ञान होता, कि वह कैथराइन इवानोवना उसके बच्चों का और तुम्हारा पतन करने का इरादा रखता है; और मानलो कि परिणाम स्वरूप पोलेचका को वही जीवन व्यतीत करना पड़ता जिसे तुम करने पर मजबूर हुई—तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुमने क्या किया होता ?"

परेशान सी होकर उसने उसकी ओर देखा। "मैं किसी ऐसे ही प्रश्न की आशा कर रही थी।" उसकी ओर देखते हुए सोनिया ने कहा।

"तब क्या तुम लूशिन को ऐसी हरकत करने देती ?"

"मैं तो तुमसे यही कहती हूँ कि परमात्मा से कुछ भी छिपा नहीं है। तब तुम से ऐसे प्रश्न करना बेकार है। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि किसी का जीवन मुझ पर निर्भर है ?"

"परमात्मा की बात करती हो ? तब और कुछ नहीं कहना है।" कड़े शब्दों में रासकोलनीकोव ने कहा।

"बताओ न ! तुम्हें क्या कहना है ? अभी तक तुम, केवल बहाने बाजी बातें कर रहे हो, क्या तुम केवल मुझे सताने आये हो ?"

वह अधिक न सह सकने के कारण रो पड़ी। रासकोलनीकोव ने उसे देखा। "तुम ठीक कहती हो।" धीमे स्वर में कहा उसने। एकदम उसमें परिवर्तन आया—उसका वह आत्मविश्वास उसकी वह बेतुकी शालीनता एक दम समाप्त होगई थी। "जब मैं लूशिन के बारे में कह रहा था तो वास्तव में स्वयं क्षमा माँगना चाह रहा था, सोनिया !"

उसने अपना सिर झुका लिया, और अपने हाथों में मुँह छिपा लिया। एक दम उसने अनुभव किया कि उसके हृदय में सोनिया के प्रति घृणा उत्पन्न हो रही है। तभी एक दम से शंकित और भयभीत होकर उसने अपना सिर एक दम ऊपर उठाया, और स्थिर दृष्टि से लड़की को देखा, जो कि उत्सुक मन से होकर उसकी ओर देख रही थी। रासकोल्नीकोव के हृदय से नफरत एक दम गायब हो गई; इसका अर्थ यह था कि सहानुभूति पैदा उपस्थित हो गया था। एक दम वह पीला पड़ गया उठा और सोनिया को देखते हुए उसके बिछौने पर जाकर बैठ गया।

'क्या बात है ?' सोनिया ने विभ्रांत होकर पूछा।

लेकिन कोई उत्तर नहीं। वह नम्रतापूर्वक उसके पास पहुँची, उसके पास ही बिस्तर पर बैठ गई, और उसकी ओर देखती हुई प्रतीक्षा करने लगी उसका हृदय धड़कने लगा। वातावरण गम्भीर हो उठा था। वह लड़की की ओर मुड़ा—पीला मुँह, सिले ओंठ, जो कुछ कहना चाहते थे। सोनिया भयभीत हो गई थी।

"तुम्हें क्या हो गया है?" कुछ दूर झिझकते हुए उसने पूछा।

"कुछ नहीं सोनिया ! डरो नहीं। बिल्कुल बेकार बकवास है" वह बड़बड़ाया जैसे कि ध्यान कहीं हो। "सिर्फ, कि मैं तुम्हें सताने ही क्यों आया ? हाँ क्यों ? मैं अपने से ही यह प्रश्न पूछता हूँ, सोनिया !"

इस समय वह इतना कमजोर हो गया कि सारा शरीर काँपता रहा।

'ओह ! तुम्हें क्या तकलीफ है ?" भावावेश में आकर वह कहने लगी।

"यह कुछ नहीं। पर बात यह है सोनिया— तुम्हें याद है कि कल मैं तुमसे क्या कहना चाहता था ? मैंने कल कहा था, विदा होते समय, कि शायद मैं तुमसे हमेशा के लिये विदा ले रहा था, लेकिन यदि मैं आज आया तो मैं बताऊँगा कि कौन था जिसने लिज़ावेता का खून किया था।" वह काँपने लगी। "तो मैं इसलिये आया हूँ।'

'मुझे ज्ञात है तुमने यह कल कहा था। पर तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मैं जानता हूँ।"

"क्या वह खोज लिया गया ।" उसने डरते हुए पूछा ।

"नहीं, वह पकड़ा नहीं किया गया है ।"

फिर वह कुछ देर शांत रही । "तब तुम्हें कैसे मालूम ?" उसने अस्पष्ट स्वर से पूछा ।

वह लड़की की ओर मुड़ा, उसकी ओर देखा, और उसके ओठों पर मुस्कान दौड़ गई । "अनुमान लगाओ ।" उसने कहा ।

"लेकिन तुम—मुझे इस प्रकार क्यों डराते हो ?" उसने बच्चे की भाँति हँसते हुए पूछा ।

"मैं जानता हूँ क्यों कि मैं उससे भलीभाँति परिचित हूँ । एलिज़ा-वेथ—उसका उसे मारने की कोई इच्छा नहीं थी । वह तो उस बुढ़िया को मारना चाहता था वह उसके घर गया—लेकिन उसी समय एलिज़ावेथ आ टपकी—वह वहाँ था —और उसने उसे मार डाला ।"

नीरवता छा गई । कुछ क्षण दोनों एक दूसरे को देखते रहे । "और तुम अनुमान नहीं लगा सकतीं ?"

"नहीं ।"

"प्रयत्न करो फिर से ।"

इन शब्दों के कहने के उपरान्त उसके शरीर में फिर वह कँपकँपी आ गई जिससे वह चिर परिचित था । उसने सोनिया की ओर देखा । उसने इसके चेहरे पर वह भाव देखा जिसे उसने एलिज़ावेथ के चेहरे पर उस समय देखा था जब कि कुल्हाड़ी हाथ में लिये वह उसकी ओर बढ़ रहा था । सोनिया ने हाथ उठाया और उसको छाती से धकेल कर धीरे से दूर किया ।

"क्या तुमने अनुमान लगा लिया ?" वह बड़बड़ाया ।

"ईश्वर ! मेरे !" सोनिया ने निश्वास छोड़ा ।

और तब वह बिस्तर पर तकिये में मुँह छिपा कर औंधी जा पड़ी कुछ देर बाद वह एक झटके से उठी उसके पास पहुँची, और दोनों हाथों से उसे पकड़ कर उसे घूर कर देखा । क्या उसने गलती की थी ? उसने ऐसा ही विचारा । लेकिन ज्योंही उसने रास्कोलनीकोव के चेहरे को देखा उसका सन्देह सत्य हो गया ।

'बस बहुत हो चुका ! सोनिया ! क्षमा करो । "

वह अपने बिछौने से उसकी कमरे के बीचोंबीच गई, और फिर एक दम उसी प्रकार लौटी, और लगभग—कांपते छूटे हुए सी वह रासकोल्नीकोव के पास सट कर बैठ गई। एक दम वह कांपी, एक चीख निकली, और न जानते हुए भी, रासकोल्नीकोव के सामने घुटनों के बल बैठ गई। 'तुम अपने का खो चुके हो !" और एक दम वह उठी, वह उसके गले से लिपट कर चुम्बन ले लिया, और उसके ऊपर ममता से हाथ फेरा।

रासकोल्नीकोव सूखी हँसी हँसा और लड़की की ओर देखा। "मैं तुम्हें समझ नहीं पाया, सोनिया ! तुम मुझे चूमती हो जब कि मैंने कहा कि—तुम नहीं समझ रही हो कि तुम क्या कर रही हो। '

उसने कुछ नहीं सुना। "नहीं इस समय संसार में तुमसे अधिक हतभागी कोई नहीं हो सकता !" हिचकियाँ भरते हुए उसने कहा।

रासकोल्नीकोव ने अनुभव किया कि किसी कोमल भावना के वश होकर उसका हृदय द्रवीभूत हो गया—जिस भावना का कि उसने अभी तक अनुभव नहीं किया था। अपनी भावनाओं के विपरीत स्वरूप ठीक नहीं समझा उसने। आँसू के दो कण उसकी पलकों में अटक गये। 'तुम मुझे छोड़ोगी तो नहीं सोनिया ?"

"नहीं नहीं, कभी नहीं, कहीं नहीं ! मैं, तुम्हारे साथ चलूँगी, और हर जगह तुम्हारे साथ रहूँगी। ईश्वर ! और जल्दी ही मैंने तुम्हें क्यों न पहिचाना ? तुम पहिले ही क्यों न आये ? हे भगवान !!!

"तुम देखती हो कि अब मैं आ गया हूँ।"

"अब ? अब क्या किया जा सकता है ! साथ साथ' उसने एक बार रासकोल्नीकोव का फिर चुम्बन लिया ! "हाँ मैं तुम्हारे साथ फाँसी के तख्ते पर भी चढ़ जाऊँगी।'

रासकोल्नीकोव का इन शब्दों से दुःख हुआ, एक फीकी सी हँसी उसके ओठों पर दौड़ गई। "शायद मैं, अभी फाँसी पर चढ़ना न चाहूँ, सोनिया।"

उसको इस आत्मनिर्भासित व्यक्ति पर भारी दया आ रही थी। इस

वाक्य से लड़की को एक दम भाव आया कि यह हतभागी खूनी है! उसने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उसे अभी तक यह ज्ञात नहीं हो पाया कि वह खूनी कैसे हो गया।

"चोरी करने के लिये! ऐसा नहीं, सोनिया।"

'क्या तुम भूखे थे? क्या अपनी माँ की सहायता के लिये ऐसा किया तुमने? बोलो!'

"नहीं सोनिया, नहीं," वह हकलाया। "मैं इतना गरीब नहीं था। यह सत्य है कि मैं अपनी माँ की सहायता करना चाहता था—लेकिन वह वास्तविक कारण नहीं था, सोनिया!'

'क्या यह सम्भव है कि ऐसी बात ठीक हो? मैं कैसे मान लूँ? तुम कहते हो कि चोरी के लिये खून किया। तुमने जो अपना सब कुछ दूसरों को देता है, आह! वह धन जो तुमने कैतराइन इवानोवना को दिया था वह—क्या वही धन था?"

"नहीं, सोनिया! वह मेरी माँ का था जो उन्होंने मेरी बीमारी के समय भेजा था। राजुमिखिन ने देखा था। वह धन वास्तव में मेरी सम्पत्ति ही थी। और उस बुढ़िया का धन—मुझे यह भी नहीं ज्ञात कि उसमें धन भी था। मैंने उसका निरीक्षण ही नहीं किया था क्यों कि समय ही नहीं मिला मुझे। उन वस्तुओं को मैंने एक पत्थर के नीचे छिपा दिया है वहाँ अभी भी सब कुछ है।"

सोनिया ने ध्यान से सुना। "पर तुमने कुछ लिया क्यों नहीं, क्योंकि, तुम कहते हो कि तुमने खून चोरी के लिये किया?"

'मैं नहीं जानता—अभी तक यह निश्चित नहीं कर पाया कि इस धन को लिया जाय या नहीं। उसने हिचकते हुए कहा तब वह मुस्कराया।

"क्या यह पागल हो सकता है?' सोनिया ने अपने मन विचार किया, पर शीघ्र ही इस विचार को दबा दिया, नहीं, बात कुछ और है, जिसे यह समझ नहीं पाई।

"ओह सोनिया! लेकिन क्या इसलिये मैं तुम्हारे पास आया? कल

मैंने एक प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखा था कि हम दोनों साथ चल देंगे क्यों कि तुम ही मेरी सब कुछ, बची हुई हो।"

"तुम मुझे अपने साथ ले चलना क्यों चाहते हो?" लड़की ने डरते हुए पूछा।"

'लूटने को नहीं, और नहीं मारने को, विश्वास रखो। हम दोनों की विचारधारा भी एक ही नहीं है। और—जानती हो सोनिया?—अभी हाल में ही मैं यह जान पाया हूँ कि मैंने तुम्हें साथ चलने का क्यों कहा। मेरी एक इच्छा है वह यह कि तुम मुझे न छोड़ो। तुम ऐसा नहीं करोगी सोनिया" वह कुछ सोचने लगा। 'सोनिया! मैं देख रहा हूँ कि तुम किसी प्रकार के जवाब की प्रतीक्षा में हो। लेकिन मैं क्या कहूँ? तुमको भाव तो कुछ मालूम नहीं है, और वैसे ही मैं परेशान कर रहा हूँ। और फिर क्या तुम मुझ सरीखे डरपोक को प्यार कर सकती हो?"

"लेकिन तुम कुछ परेशान से हो!"

"सोनिया! मैं बुरा हूँ इसलिये आया हूँ। किसी ने ऐसा नहीं किया होगा। लेकिन मैं बदनाम डरपोक हूँ। मैं इसके लिये अपने आप को कभी भी क्षमा नहीं कर सकता।"

"नहीं, नहीं,—इसके विपरीत—तुमने आकर अच्छा ही किया। यह कहीं अधिक अच्छा है कि मुझे सब कुछ ज्ञात हो जाय!"

दुखित नेत्रों से रास्कोल्नीकोव ने उसको घूर कर देखा। "मैं दूसरा नेपोलियन बनना चाहता था, इसलिये मैंने खून किया। क्या तुम समझ सकती हो?"

'नहीं, लेकिन बोलो तो सही —मैं सब कुछ समझना चाहती हूँ।"

"तुम चाहती हो, तुम सब कुछ समझना चाहती हो?" कुछ देर तक वह कुछ विचार करता रहा।

'जैसा कि तुम जानती हो मेरी माँ कंगाल है। मैं ही उन लोगों की आशा था। मैंने विश्वविद्यालय में प्रवेश किया लेकिन साधन न होने के कारण छोड़ना पड़ा। मान लो कि मैंने उसे जारी भी रखा होता तो दस पन्द्रह वर्ष बाद अधिक से अधिक स्कूल की मास्टरी मिलती। लेकिन इस बीच में, दुःख और चिन्ताओं ने मेरी माँ के स्वास्थ्य को बिगाड़ दिया होता,

की भाँति जिसको तूफानों ने किनारे पर ला पटका। सोनिया की ओर देख कर, रासकलनीकोव के मन में उसके प्रेम के बारे में सन्देह नहीं रह गया। अब यही प्रेम उसके दुःख का कारण बन गया। अब सोनिया ने अपना सर्वस्व उसे समर्पित कर दिया था—यही उसके दुःख का कारण था—अब वह पहिले से भी अधिक दुःखी था।

"सोनिया यही ठीक रहेगा कि तुम जेल में आकर मुझसे न मिलना।

लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया, और वह रो पड़ी। कुछ क्षण बीते। "क्या तुम्हारे गले में क्रास पड़ा है ?" एक दम उसके दिमाग में कोई विचार उत्पन्न हुआ और उसने कहा। "तुम्हारे पास नहीं है, ऐसा क्यों है ? अच्छा इसे लो। यह लकड़ी का है। मेरे पास दूसरा है जो पीतल का है तथा जिसे एलिजावेथ छोड़ गई थी। हमने अदल-बदल किया था—उसने क्रास दिया और मैंने अपनी प्रतिमा। मैं उसका पहनूँगी—और तुम—तुम मेरा पहिनो। लो न यह मेरा है। हम दोनों ही प्रायश्चित्त करेंगे साथ ही साथ।

लाओ दो।" उसका दुःख कम करने के लिये उसने कहा, फिर एक दम रुक कर— 'अभी नहीं, सोनिया! बाद में—तब ठीक रहेगा।" उसने जैसे कुछ स्वीकार करते हुए कहा।

'हाँ, हाँ, बाद में। तुम इसे अपनी यात्रा के समय पहिनना। तुम मेरे पास, आओगे तब, और मैं पहिनाऊँगी, हम तब एक छोटी सी प्रार्थना करेंगे, तब हम चले जायेंगे।"

उसी समय द्वार पर तीन बार खटका हुआ। "सोनिया, क्या मैं भीतर आ सकता हूँ ?" एक पहिचानी आवाज थी।

सोनिया घबरा कर द्वार पर बढ़ी। आगन्तुक रेजुमीखिन था।

भाग ५

१

लेबीज्यात्निकोव कुछ परेशान लगा। "मैं तुम्हारी तलाश में था, सोफिया, क्षमा करना, मैं यही आशा कर रहा था कि तुम यहीं होगी?" उसने रासकोल्निकोव से कहा। "कैतराइन पागल सी होकर घर वापिस चली गई है।" सोनिया से उसने कहा। लड़की की एक चीख निकल गई।

"कम से कम लगता तो ऐसा ही है। जो कुछ भी हमें पता लग सका वह यह है कि वह मारी-मारी फिरती रही। वह धक्के देकर निकाल दी गई। वह साइमन जखारिच के पास गई। वह अपने किसी साथी के साथ भोजन कर रहा था। वह तुरन्त ही दूसरे अफसर के यहाँ गई। वह वहाँ से भी निकाल दी गई। वह कहती है कि उसने उस अफसर की तौहीन की, और उसकी ओर कुछ फेंका भी। आश्चर्य है कि उसे बन्द क्यों नहीं कर दिया गया। वह कहती है कि लोग देखेंगे कि एक कुलीन परिवार के बच्चे सड़कों पर मारे-मारे फिरेंगे—गाते-गाते भीख मागेंगे। उसने बच्चों के कपड़े फाड़ कर उनको ऐसा बना भी दिया है। और कोई बाधा न होने के कारण वह एक तमाशा ही ले लेगी। तुम ऐसी चीज की कल्पना कर सकते हो।"

सोनिया एक दम तैयार होकर बाहर की ओर भागी। दोनों उसके साथ हो लिये।

"तुमने उसे कुछ समझाया?"

"नहीं। मेरा कहने का मतलब है कि यदि ऐसी परिस्थिति में तुम किसी को तर्क के द्वारा समझाओ कि रोना बेकार है, तो व्यक्ति रोना बन्द कर देता है।"

"यदि ऐसी ही बात होती तो जीवन अधिक सुगमय होगया होता।" रासकोल्निकोव ने कहा।

अपने द्वार पर पहुँच कर, रासकोल्निकोव ने वन्दन किया और अपने

कमरे में चला गया। भीतर होकर उसने स्वयं से प्रश्न किया कि वह यहाँ क्यों आया। वह काउच पर बैठ गया। उसे अकेलापन, इस तरह का, कभी भी इतना असह्य नहीं हुआ था। उसने उसे क्यों दबाया? "मैं अकेला ही रहूँगा। वह मुझे जेल में देखने नहीं आयेगी।" एक दम द्वार खुला और अवदोत्या रोमानोवना भीतर आई। तब वह कुर्सी पर आकर बैठ गई। वह, खामोश, उसे देखता रहा।

"घबराओ मत, भाई! भाई! मेरे प्यारे! मुझे सब ज्ञात है। दमित्री प्रोकोफिच ने मुझसे सब कह दिया है। तुम्हें एक बेकार के शक में सताया जा रहा है। लेकिन उसका विश्वास है कि डरने की कोई बात नहीं है। तुमने हमें छोड़ दिया? मैं तुम्हारे निश्चय के लिये कुछ नहीं कहती, लेकिन मुझे क्षमा कर दो क्योंकि इन सबका कारण मैं ही हूँ। यदि मैं भी तुम्हारे स्थान पर होती तो संसार को त्याग कर दिया होता, मैंने भी। लेकिन माँ से कुछ न कहूँगी—बस भावत। लेकिन उनसे कहूँगी कि तुम मिलने आ रहे हो। हमेशा याद रखो कि यह तुम्हारी माँ है। और इस समय मैं यही कहने आई हूँ कि जीवन या मरण में, कभी भी तुम्हें मेरी आवश्यकता पड़े, तो मैं तुम्हारी ही हूँ। मुझे बुलाना और मैं आऊँगी। नमस्कार।' वह द्वार की ओर बढ़ी।

"दूनिया! रजुमिखिन बड़ा अच्छा आदमी है।"

वह कुछ शर्माई। "तो इससे क्या?"

"वह चुस्त, मेहनती, ईमानदार और सम्बन्ध स्थापित करने योग्य है। अलविदा दूनिया।"

बहिन शर्म से लाल पड़ गई, लेकिन एक दम किसी आशंका से भयभीत होकर बोली। "लेकिन प्यारे भाई! हम हमेशा के लिये नहीं बिछुड़ रहे हैं।

"कोई बात नहीं—अलविदा।" उसने कहा। वह रुकी और कुछ पल पश्चात् दुःखित होकर चली गई।

नहीं, यह बात नहीं थी कि वह अपनी बहिन से तटस्थ था। और एक बार फिर उसकी विचारधारा सोनिया की ओर मुड़ी।

खिड़की से ठंडी हवा आ रही थी। एक दम उठकर रासको-लनीकोव बाहर निकला। वह बिना उद्देश्य के इधर-उधर घूमता रहा। सूर्यास्त हो चुका था। उसने उन वर्षों के बारे में विचार किया था उसे प्राण-घातक परेशानी में गुजारने पड़े थे। पीछे से किसी की पुकार सुनकर वह घूमा। लेबीजियातनीकोव उसके पीछे भागा आ रहा था।

"अरे! सुना कुछ तुमने? उसने वही कर डाला जो वह कह रही थी और बच्चों को लेकर वह निकल पड़ी है। मुझे और सोनिया को उसे तलाश करने में बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। वह अपना तवा बजा रही है और उस स्वर में बच्चे नाच रहे हैं! बिचारे सब रो रहे हैं! चलो जल्दी!"

"और सोनिया का क्या हुआ?" उसके साथ लपकते हुए चलते-चलते उसने उत्सुकता से पूछा।

"वह बिल्कुल पागल हो चुकी है। मेरा मतलब कैतराइन इवानोवना से है। सोनिया से नहीं! विश्वास रखो कि वह बिल्कुल पागल हो चुकी है। वह नहर के पास ही है। यहाँ से पास ही।"

नहर के किनारे, पुल पर, काफी भीड़ थी। कैतराइन की आवाज मुश्किल से सुनाई पड़ रही थी। वह उन आने वालों के ध्यान आकृष्ट करने के लिये पर्याप्त था। वह थकी सी और असमर्थ सी लगती थी। वह अपने बच्चों की ओर दौड़ती थी, उन्हें डांटती थी। उन्हें ठीक तरह गाना न आने के कारण वह अपना माथा पीटती थी। यदि कोई साफ सुथरे कपड़े पहिने उसे दिखता तो वह उसे समझाने लगती कि किस प्रकार एक 'कुलीन परिवार के बच्चे' इस हालत पर पहुँचे।

कईयों ने उसे देखकर शोक से अपना सिर हिलाया। कभी कभी वह भी गाने का प्रयत्न करती लेकिन खाँसी के कारण वह उसे पूरा न कर पाती। लेकिन कोलिया और लिना के आँसुओं पर उसे अधिक क्रोध आ रहा था। पोलेंका अपनी माँ का साथ उसकी हालत जानते हुए, नहीं छोड़ रही थी। सोनिया उसके पास ही, उसे अपने यहाँ ले जाने को कह रही थी। लेकिन कैतराइन अडिग थी।

'मुझसे मत बोलो, सोनिया। तुम नहीं जानती कि तुम क्या कह रही

हो बिल्कुल बच्चों की भाँति बातें करती हो। तुम यह चाहती हो कि तुम्हारी खातिर किया जाय ? अरे ! क्या तुम ? तुम रोडिया रोमनोविच हो ?" उसे वहाँ देखकर उसने कहा "देखो उसे समझाओ। जनता को जानने दो कि हम कुलीन हैं, मुसीबत के मारे हैं। और जब सम्राट यहाँ से निकलेगा तो हम लोग उसके पैरों पर गिर जायेंगे और उससे संरक्षण की याचना करेंगे ! वह दयालु है—और तुम देखोगे कि वह हमारी किस प्रकार रक्षा करता है। हे ईश्वर ! इन बच्चों का क्या होगा रोडिया रोमनोविच !"

कैथराइन लगभग रो रही थी। रासकोल्नीकोव उसे घर ले चलने का भरसक प्रयत्न कर रहा था उसने उसे यह भी बताया कि राजमार्ग पर इस तरह बनजारों की भाँति घूमना ठीक नहीं। खास तौर पर जब, जबकि वह एक बोर्डिंग-हाउस खोलने का विचार कर रही थी।

"नहीं, वह स्वप्न अब समाप्त होगया," उसे खाँसी आगई थी। "वह मूर्ख क्यों हँस रहा है ?" भीड़ में से एक को हँसता देखकर उसने कहा।

"मैं तुम्हें बताऊँ रोडियो रोमनोविच कि हम लोग यहाँ क्यों पड़े हुए हैं—हमें अपना कार्यक्रम निश्चित करना है। वह सिपाही आया ! ऐ ! तुम क्या चाहते हो ?"

एक सिपाही भीड़ में से मार्ग बना रहा था। उसी समय एक आदमी आया जो कि एक ओवरकोट पहिने था जिसके भीतर फौजी वर्दी चमक रही थी—लगभग पचास वर्ष का, उसने चुपचाप आगे आकर तीन रूबल का नोट कैथराइन की ओर बढ़ाया। उसे लेकर वह नम्रतापूर्वक झुकी।

"बहुत २ धन्यवाद।" उसने बड़ी शान के साथ कहा। "अभी भी ऐसे भले आदमी हैं जो कुलीन परिवार के बच्चों की मदद कर सकते हैं। ये बच्चे कुलीन परिवार के हैं जो आपके सामने अनाथ पड़े हैं, श्रीमान ! अरे वह सिपाही फिर आया। मुझे बचाओ ! यह मुझे इस प्रकार क्यों घोखता है ? हम तो वैसे ही सड़क पर कर दिये गये हैं।"

"सड़कों पर इस प्रकार लोग गोलमाल नहीं मचा सकते। अगर चाहो तो अपना काम करो मेहरबानी करके।'

"कृपा करके मुझे अकेला छोड़ दो। हम बाजा बजाकर भीख मांगते हैं।"

"गाना-बजाने वालों के पास 'लाइसेंस' होना आवश्यक होता है। तुम्हारा पता क्या है?"

"क्या? 'लाइसेंस'? मैंने अपने पति को आज ही दफनाया है, क्या यही लाइसेंस पर्याप्त होगा, मेरे विचार से?"

"माई! माई! कृपा कर शांत हो!" उस ओवरकोट वाले महाशय ने कहा। "चलो मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँ। यह ठीक स्थान नहीं है—तुम बीमार हो।"

"श्रीमान आपको कुछ नहीं मालूम। हम यवस्की प्रोस्पेक्ट्स जा रहे हैं—सोनिया! सोनिया! कहाँ गई? अरे वह क्यों चिल्ला रही है? अरे तुम सबको क्या हो गया है? कोलिया, लिना, अरे तुम कहाँ हो?" वह पागल सी होकर चिल्ला रही थी।

"एक सिपाही को देख कर जो उन लोगों को पकड़ने जाता था, वे सब भाग गईं थीं डर के मारे। बिचारी कैथराइन रोती बिलखती उनके पीछे दौड़ी और सोनिया व पोलेंच्का ने उसका पीछा किया।

"सोनिया! पोलेंच्का! पकड़ो इन बच्चों को, ओह! बेवकूफ बच्चे" लेकिन ज्योंही वह दौड़ी, उसका पैर डगमगाया और वह गिर पड़ी।

"उसे चोट आगई! खून से तर हो गई। हे राम।" उसकी ओर झुकती हुई सोनिया चिल्लाई।

उसके चारों ओर भीड़ इकट्ठा होने लगी। रैस्कोल्नीकोव और रास्कोल्नीकोव ने शीघ्रता की। ऐसा लगा कि उसे इतनी चोट नहीं आई थी जितनी कि सम्भावना थी। वह खून की धरती पर पड़ा था, उसके फेफड़ों से निकला था।

"मैं जानता हूँ इसका क्या मतलब है," उस ओवरकोट वाले व्यक्ति ने इन दोनों से कहा। "यह क्षय है, इसी प्रकार खून निकलता है और तब बीमार समाप्त हो जाता है। कुछ भी नहीं हो सकता। वह मर जायगी।"

"इधर, इधर मेरे मकान की ओर।" सोनिया चिल्लाई "मैं यहाँ रहती हूँ। जल्दी करो। किसी डाक्टर के लिये भेजो। हे भगवान।"

उस व्यक्ति तथा सिपाही की मदद से उसे उठाया गया। वह लग-

मय समाप्त हो चुकी थी, जब कि उसे सोनिया के बिस्तर पर लिटाया। खून कुछ देर तक निकलता रहा, लेकिन केथराइन होश में आगई। तब सम्बन्धित लोग भीतर आगये। बच्चों को भी पोलेचका ले आई। वह दर्जी भी आगया। उसकी बीबी भी। एक दम स्विद्रिगैलोव भी दिखा। यह न मालूम होते हुए कि वह भी इसी मकान में रहता था, रासकाल्नीकोव को उसको देख कर आश्चर्य हुआ। फिर किसी डाक्टर और पादरी के लिये परामर्श हुआ। उस ओवरकोट वाले भले आदमी ने जो भी उस समय उचित हो सकता था—चिकित्सा के लिये और आत्मा की शांति के लिये—वह किया। केथराइन बावजूद खून के निकल जाने के, इस समय कुछ ठीक दीख रही थी।

"बच्चे कहाँ हैं?" कमजोरी से वह बोली। "क्या तुम उन्हें घर ले आई, पोलिया? और तुम लोग भाग—क्यों—गये थे?" उसके मुख से फिर खून निकला। उसने चारों ओर कमरे में देखा। 'और सोनिया! इस प्रकार से तुम रहती हो? मैं तुम्हारे यहाँ एक भी बार न आ सकी, और अब इस हालत में आई।" उसने सबकी की ओर देखा। "सोनिया! हम तुम्हारे सहारे जिये। पालिया, लिना कोलिया! यहाँ आओ। ये रहे सोनिया! इन्हें तुम सम्भालो। मैं तुम्हारे सुपुर्द करती हूँ। खेल समाप्त है। मुझे जाने दो, मुझे शांतिपूर्वक मरने दो।" उसका सिर तकिये पर झुक पड़ा।

सोनिया उसकी छाती पर धड़ाम से आ गिरी, और हाथ को हाथों से चिपटा लिया। पोलेचका ने अपनी मृतक माँ के चरणों का चुम्बन लिया—हिचकियाँ लेते हुए। कोलिया और लिना, यह सब कुछ एक दम नहीं समझ पाये और एक दूसरे की गर्दन में हाथ डाले कुछ देर खड़े रहे फिर एक दम फूट कर रो पड़े।

"मर गई," लेबीज्यातनीकोव ने कहा।

और अब स्विद्रिगैलोव पास आया। "रोडिया रोमनोविच, मैं तुमसे एक बात करना चाहता हूँ।"

लेबीज्यातनीकोव ने मार्ग दिया और दूर हो गया। वह रासकोल्नीकोव को अलग ले गया।

'इस सब के लिये—मेरा मतलब दफनाने आदि से है—इसका काम मैं

पूर्ण करूँगा। मैंने तुम्हें पहिले ही बताया था कि मेरे पास आवश्यकता से अधिक है। बच्चों को अनाथालय में भिजवा दिया जाय जहाँ उनकी ठीक व्यवस्था हो जायगी। मैं उनके नाम पन्द्रह सौ रूबल जमा करता दूँगा, जिससे कि सोफिया को उनके लालन पालन के लिये कष्ट न करना पड़े। और उसका प्रश्न—मैं समझता हूँ, उसे नर्क से बाहर निकालो आप वह बड़ी अच्छी लड़की है है न? अपना ना पुल्खेरिया रोमानोवना को यह सब धन का उपयोग बता देना।

'इतनी उदारता क्यों ?''

"क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि यह धन मेरे किसी काम का नहीं है? तब इस मानवता में ही लगाया जाय। पर तुम इस सब पर विश्वास नहीं करते। फिर भी यह महिला, किसी भी हालत में, किसी उधार देने वाली के समान 'परोपजीवी' नहीं थी। क्या तुम स्वीकार करते हो कि उसके लिये मरना ही उचित था, और लुजिन केवल बुरे काम करने के लिए ही जा रहा है? बिना मेरी सहायता के पोलेचका का वही हाल होता जो उसकी बहिन का हुआ।"

उसकी आवाज और बातों का ढङ्ग खुशमी था, और बोलते समय उसने अपनी निगाह रस्कॉल्नीकोव पर से नहीं हटाई थी। और अपने उन्हीं शब्दों के समान शब्द सुन कर जो उसने बातचीत में सोनिया के साथ प्रयोग किये थे, वह पीला पड़ गया और ऊपर से नीचे तक काँप गया। "तुम यह सब कैसे जानते हो?" उसने हकलाते हुए पूछा।

"क्यों, मैं यहीं रहता हूँ, दीवार के उस ओर, श्रीमती रेसलिच के कमरों में—वह मेरी पुरानी परिचित है। मैं सोफिया सेमयोनवना का पड़ौसी हूँ।

कुछ हँस कर स्विद्रिगेलोव ने कहा, "मैंने कहा था कि हम फिर मिलेंगे। और हम फिर मिले, जैसा कि तुम देख ही रहे हो। और अब भी लोग मेरे साथ रहना पसन्द करते हैं।"

———

भाग ६

१

यह रासकोल्नीकोव के लिये विचित्र समय था ऐसा ज्ञात होता था कि जैसे कुहासा उसके ऊपर गिर पड़ा है, और जिसने उसे अभेद्य तथा दुखित अकेलेपन में लपेट लिया हो। समय को फिर से याद करते हुए, बहुत दिन बाद, उसने अनुमान लगाया कि उसकी ज्ञान चक्षु की शक्ति मध्यम होगई थी और कमजोर थी। और यह कुहासे की सी हालत—बीच में कभी २ छोड़कर अन्तिम आपत्ति के आने तक रही। उसे निश्चय होगया था कि उसने कई मामलों में कई दफे त्रुटियाँ कीं। पर उसने फिर उन घण्टों की याद की जब कि पहरों घण्टों तथा दिनों उसके मन पर उदासीनता छाई रहती थी।

ऐसे दिनों में, बजाय इसके कि वह अपनी स्थिति के बारे में विचार करे, वह, विशेष रूपसे, अपने बारे में मनन करना छोड़ देता था। दैनिक जीवन की ऐसी समस्याएँ जिनका कि तुरन्त ही समाधान होना चाहिये था—और जिनमें, निस्सन्देह वह अभिरुचि भी रखता था—लेकिन वह उनको टाल जाने में बड़ा प्रसन्न होता था जब कि वे प्रश्न उसके लिये बड़े महत्व के होते थे। प्रधानतः स्विद्रिगेलोव का प्रश्न उसको बड़ा परेशान करता था। सोनिया के मकान पर, उसके कहे गये स्पष्ट तथा भयानक कथन, रासकोल्नीकोव के लिये एक नवीन मोड़ था। लेकिन, यद्यपि नये तथ्य ने उसे परेशान किया था, पर फिर भी जानबूझ कर, उस पर विचार करना वह टाल गया।

एक बार कहीं से जाते समय उसे याद आया कि उसी स्थान पर उसने स्विद्रिगेलोव से मिलने को कहा था। एक प्रातःकाल वह तड़के ही जाग उठा और खेतों पर झाड़ी के नीचे अपने सोने के स्थान को देख कर उसे आश्चर्य हुआ वह नहीं समझ पाया कि वहाँ कैसे आया। केथराइन इवानोवना का शरीर अभी भी कमरे में रखा था। स्विद्रिगेलोव ने रासकोल्नीकोव को सूचित किया कि बच्चों का प्रबन्ध हो गया है, और उसके मित्रों के प्रयास से

वे लोग आदमियों को सुपुर्द कर दिये गये हैं। उसने सोनिया के बारे में भी बातचीत की और उसका वचन दिया कि वह उसके यहाँ मिलने आयेगा। यह बातचीत सीढ़ियों पर हुई थी। रासकोल्नीकोव अक्सर उधर निकल जाया करता था। स्विद्रिगेलोव ने रासकोल्नीकोव की ओर देखा।

"तुम पर क्या सवार है। रोदियो रोमनोविच ? तुम सुनते हो, लेकिन ऐसा ज्ञात होता है कि स्वप्न में हो, बेहोश हो, आदमी ! हम साथ साथ कुछ बातचीत करेंगे—भाई ! मैं बड़ा व्यस्त हूँ। अह ! रोदियो रोमनोविच। आदमी के लिये हवा कितनी आवश्यक है—केवल वायु समस्त वायु !'

वह अफसर और पादरी को स्थान देने के लिये एक ओर हट गया जो कि वहाँ कार्य करने आते थे। स्विद्रिगेलोव ने विशेष ध्यान दिया कि यह दिन में दो बार हुआ करे। मृत्यु का विचार हमेशा ही रासकोल्नीकोव के हृदय में भय भरता था। जिसके कारण वह हमेशा ऐसे समय दूर ही रहता था। सोनिया ने प्रार्थना की। "इन तमाम दिनों उसने मेरी ओर कभी भी नहीं देखा था बोली।" एक दम रासकोल्नीकोव का विचार आया। धूप का प्रकाश कमरे में फैल रहा था, धूप बत्ती की सुगन्ध आ रही थी और पादरी पढ़ रहा था; "ओ। ईश्वर ! उसे अनन्त शान्ति प्रदान कर !"

रासकोल्नीकोव उस पूरी कार्यवाही में खड़ा रहा। कार्य समाप्त होने पर वह सोनिया के पास गया। सोनिया ने अपने दोनों हाथों से उसे पकड़ा और उसके कंधों पर अपना सिर डाल दिया। इससे रासकोल्नीकोव को आश्चर्य हुआ। "क्यों सोनिया !" बड़े दृढ़ विश्वास के साथ उसका हाथ उस पर था। वैयक्तिक अस्वीकार की उपेक्षा थी। सोनिया बोली नहीं। और रासकोल्नीकोव ने उसका हाथ कोमलता से दबाया, और कमरे के बाहर चला गया। उसने भयानक दुःख का अनुभव किया। यदि अब हम नितांत एकांत में जाना, उसके लिये, संभव हुआ होता तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ होता, लेकिन वह असम्भव था, क्यों कि यद्यपि वह हमेशा ही अकेला था पर उसने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया। अजीब बात तो यह थी कि स्थान जितना भी एकांत मिला, उसमें उसने उतनी ही भयप्रद छाया का आभास पाया, जिसने

"देखो अब, मैं कहीं भी जाऊँ, मेरा कुछ भी हो, लेकिन तुम उन लोगों के संरक्षक हो। मैं उन लोगों को तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम उसे प्यार करते हो, तुम्हारा हृदय पवित्र है। वह भी तुम्हारी ओर झुकी है भले ही अभी प्यार न करती हो। अब तुम ही सोच लो कि पीने जाना है या नहीं।"

"रोदिया!—शैतान समझे—तुम क्या करने वाले हो? अगर कोई गुप्त बात है—तो, होने दो; लेकिन इतना मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सारे विचार केवल चाकू की चमक है, और गम्भीरता कुछ भी नहीं है। देखो, तुम बड़े अच्छे व्यक्ति हो—हजारों में एक।'

'मेरी गुप्त बातों को मुझ पर छोड़ो, तुम चिन्ता मत करो। समय पा सब सामने आजायेगा। कल एक आदमी ने कहा था कि हर आदमी के लिये वायु आवश्यक है। वायु! वायु! मैं उसके पास जाने की सोच रहा हूँ, आखिर उसका अर्थ क्या है?'

राजुमिखिन को एक सन्देह हुआ। "क्या वह राजनैतिक षड्यंत्रकारी है? क्या दूनिया भी इसमें शामिल है?" और तब उसने जोर से कहा, "दूनोशिया यहाँ तुमसे मिलने आती है, और तुम भी एक आदमी से मिलना चाहते हो जो वायु के बारे में कहता है। शायद वह पत्र ऐसे ही किसी का आया होगा।" उसने कहा।

'पत्र क्या?'

"कल एक पत्र, उसके पास आया जिससे वह परेशान हो गई। मैं तुम्हारे बारे में कहने जाता था कि उसने चुप करा दिया और तब उसने कहा कि शायद हम लोग जुदा हो जाँय—बहुत शीघ्र ही। और धन्यवाद देने लगी—

"उसे पत्र मिला?" रासकालनीकोव ने फिर कहा।

"हाँ, पत्र—और तुम्हें नहीं मालूम?"

दोनों खामोश रहे।

"नमस्कार, रोदिया। वे दिन थे—लेकिन अब मित्र—नमस्कार, नमस्कार तुम अब मुझे धोखा नहीं परखोगे, अब उसकी आवश्यकता नहीं है।'

रह गया। लेकिन द्वार खोल कर फिर कहा। "तुम्हें उस खून की याद है—पोरफीरियस वाला मामला—वह बुढ़िया? उसमें खूनी मिल गया है, जिसने स्वीकार कर लिया है। उन दोनों कारीगरों में से एक था, जिसकी मैं बड़ी तरफदारी करता था। लेकिन उसने स्वीकार कर लिया है।"

बताओ न, कृपा करके—तुम्हें कहाँ पता चला और तुम इतना रस इसमें क्यों ले रहे हो?"

"क्या मतलब है। पोरफीरियस ने मुझ से और लोगों के साथ कहा। वह इस मामले में सब कुछ जानता है।"

'पोरफीरियस?"

"पोरफीरियस!"

"क्या—क्या कहा उसने?"

"उसने सब कुछ मनोवैज्ञानिक ढङ्ग से समझाया—तुम तो उसके तरीके जानते ही हो?"

"उसने समझाया?—उसने स्वयं ने?'

"उसने स्वयं ने समझाया—मेरे पास समय नहीं है। कभी समय था जब कि—और अब पीछे की क्या आवश्यकता है?" वह चला गया।

"यह षड्यन्त्रकारी है निस्सन्देह। उसने अपनी बहिन को भी साथ लिया है। उन दोनों से मुलाकातें होती हैं जब मुझे दुनिया के कई शब्द याद आते हैं—मैं सोचा करता था—कि—मैंने क्या नहीं माना? कैसा भयानक विचार। यह कितना अच्छा हुआ कि निकोला ने स्वीकार कर लिया। लेकिन उस पत्र का क्या अर्थ? किसने भेजा?" उसने रजिया के बारे में विचार किया और उसके हृदय में धड़कन होने लगी।

रासुमिखिन के चले जाने के बाद ही, रासकोल्नीकोव उठा था—खिड़की के पास पहुँचा फिर कमरे में इधर उधर चक्कर लगाने लगा था, और अन्त में फिर सोफा पर आकर बैठ गया। निकोला और पोरफीरियस के विचार ने उसकी दम निकाल दी, और सोनिया के पत्रों के कारण ने उसमें असन्तोष की भावना भर दी। उसने सोनिया से स्वीकार किया था कि उसके

"तुम यह जानना चाहते हो कि मैं यह सब तुमसे क्यों कह रहा हूँ? इसलिये, क्योंकि मैं इसे अपना पवित्र कर्त्तव्य समझता हूँ कि अपने कार्य करने की विधि तुम्हें बताऊँ। इसलिये, क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ—यह मैं स्वीकार करता हूँ—बड़ा बुरा व्यवहार किया, और इसलिये भिन्न होकिया! मैं यह नहीं चाहता कि तुम मुझे नरभक्षी न समझने लगो। इसलिये, बतौर सफाई के मैं यह सब तुम्हारे सामने रख रहा हूँ कि बाद में क्या हुआ। एक ऐसी परिस्थिति, संयोग वश, आगई थी जिसका कि अब ज़िक्र करना व्यर्थ है, जिसने मेरे मन में सन्देह उत्पन्न कर दिया था। कुछ रिपोर्ट तथा इन विचित्र परिस्थितियों वश मैंने कुछ निष्कर्ष निकाले। मैंने ही, सब से पहिले इस मामले में तुम को भी लाया। उस बुढ़िया के यहाँ जो माल बरामद हुआ था, उस पर मैं विशेष ध्यान नहीं देता। ये सब कोई महत्व नहीं रखते। इसके साथ ही पुलिस दफ्तर में जो घटना हुई थी यह भी मेरे ध्यान में है। ठीक है न, लेकिन ऐसी हालत में कोई एकांगी दृष्टिकोण कैसे रख सकता है? 'एक चिड़िया ग्रीष्म नहीं लाती'—जैसी कि अंग्रेजी में कहावत है। सैकड़ों सम्भवताएँ किसी एक प्रमाण को सिद्ध नहीं करतीं। कम से कम तर्क तो यही कहता है, मैं यह मानता हूँ लेकिन किसी भी व्यक्ति का सन्देह के तर्क की कसौटी पर रख लेना चाहिये। मुझ सरीखा—विचारा काई मजिस्ट्रेट—आखिर इन्सान ही तो है—इसलिये सन्देही होना स्वाभाव संगत ही है।

"मुझे यह भी याद है कि तुमने एक लेख किसी मैगज़ीन में छपवाया था। मैंने तुम्हारे उस सफल प्रयास में बड़ा आनन्द प्राप्त भी किया था—भले ही वह मेरा अधेड़पन का आनन्द रहा हो। ऐसा लगता है कि वह लेख किसी रात्रि में ज्वरावस्था में लिखा गया था। मैंने इस समय यह विचार किया था कि लेखक उससे भी अधिक कार्य कर सकता था। (जो उसने किया)। अब तुम्हीं, बताओ, कि मैं, जो कुछ हुआ, उससे उसको कैसे सम्बन्धित न करूँ? ऐसा करना स्वाभाविक ही था। अब उसके बारे में मैं क्या विचार कर सकता हूँ? कुछ समय के लिये तो उसका सम्बंध मिकोल्का के साथ जोड़ सकता हूँ—क्यों कि प्रमाण ही ऐसे थे — प्रमाण क्या थे, आखिर! मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ वह यदि तुम्हें सब बता दूँ जैसा कि अभी कर रहा हूँ तो तुम्हारा मन मेरे उस

ति के व्यवहार से मुझे मुक्त कर देगा। तुम पूछोगे, कि, 'मैं उसी समय तुम्हारी तलाशी करने क्यों न आया ?' मैं आया था, हः ! हः ! मैं गया था जब तुम बीमार थे—लेकिन अधिकारी की हैसियत से नहीं। पहिले ही शक पर हमने तुम्हारे स्थान की खूब तलाशी ली थी। तब मैंने मन में कहा था कि 'यह आदमी मेरे पास आयेगा— स्वयं ही। यदि वह अपराधी है तो अवश्य आयेगा मेरे पास। और प्रकार के लोग भले ही न आयें पर यह आयेगा।'

' और तुम्हें राज़ुमिखिन का वह मजाक याद है ? हमने जानबूझ कर अपने शक को उस पर प्रगट किया था, जिससे कि वह तुमको विचलित करदे। ज़ेमीतोव, विशेष रूप से, तुम्हारी निडरता से आकृष्ट हुआ था। मैंने, विश्वास पूर्वक तुम्हारी प्रतीक्षा की थी, और ईश्वर ने तुम्हें भेज भी दिया ! अब मैं तुम से पूछता हूँ कि तुम्हारे आने का, उस समय, क्या अर्थ था ? तुम हँसते हुए भीतर आये थे अगर तुम्हें याद हो तो। तुम्हारी हँसी ने मेरा शक और बढ़ाया। और वह पत्थर ! वह पत्थर तुम्हें याद होगा जहाँ वे वस्तुएँ छिपी हुई थीं चोरी की। इस प्रकार रोडियो रोमानोविच ! मेरा शक धीरे-धीरे पक्का होता गया और जब मैंने उस घंटी बजाने की बात सुनी तो मेरा शक समाप्त होगया, और मुझे विश्वास होगया कि मेरे पास प्रमाण आरपार है फिर और अधिक खोज-बीन की आवश्यकता नहीं रह गई।

"तुम्हें याद है कि हम लोगों की बातचीत में एक निकोला कैसे आगया था ? बिजली की कड़क की भाँति ! और मैंने किस प्रकार उसका स्वागत किया ? मैंने उसका कम से कम महत्व दिया याद है न ? जब तुम चले गये तो मैंने उसका फिर निरीक्षण किया। कुछ बातों पर, उसके जो उत्तर थे उनसे मैं चौंका और मुझे विश्वास होगया कि मैं अपने पुराने विश्वासों पर चट्टान की भाँति अटल हूँ।"

"राज़ुमिखिन ने, मुझे अभी बताया अभी तो तुम निकोला के अपराध को मानते हो—तुमने ऐसा स्वयं उसे बताया विश्वास के साथ !" वह और आगे कह नहीं सका उसकी साँस फूल रही थी।

"राज़ुमिखिन ! अरे उससे तो मुझे अपना पीछा छुड़ाना था जो बिना काम के मेरे पास मुँह बाकर आया करता था। क्या तुम निकोला के

बारे में मेरे विचार जानना चाहते हो ? वह बिल्कुल अच्छा है वह कुछ सनकी सा है। वह खून पीता है—जब तक कि बेहोश न हो जाय। जब वह हवालात में था तो अपने विगत धार्मिक जीवन की याद करता था।"

"नहीं, बचुआ, रोडियो रोमनोविच निकोलाई असली अपराधी नहीं है। असली अपराधी तो सिद्धान्तवादी है, किताबी कीड़ा। वह प्रमाणों को मिटाना भूल गया, और किसी विशेष सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिये, दो व्यक्तियों का खून कर डाला। उसने वह खून किया, लेकिन बिचारे को यह भी नहीं आया कि किस प्रकार उन वस्तुओं का उपयोग किया जावे और उन सब को पत्थर के नीचे छिपा कर दबा दिया। अगर तुम चाहो तो इसे एक प्रकार की बीमारी कहा जा सकता है—एक प्रकार की सन्निपात की दशा—लेकिन दूसरा भी बिंदु विचारणीय है। उसने खून किया है फिर भी वह अपने आपको निर्दोष समझता है। नहीं, नहीं, यहाँ निकोलाई का प्रश्न है ही नहीं, वह अपराधी नहीं है!"

रासकोलनीकोव ने काँपते हुए पूछा, "तब—तब खून किसने—किया—है?"

पर्फिरी को इस प्रश्न से बड़ा आश्चर्य हुआ "किसने खून किया?" इस तरह कहा जैसे उसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ हो। "क्यों, तुम—तुमने किया—रोडियो रोमनोविच!—तुमने—" बड़े विश्वासात्मक स्वर में धीरे से उसने कहा।

रासकोलनीकोव एक दम खड़ा होगया। कुछ देर रुका, और फिर बैठ गया—बिना एक शब्द बोले। उसके चेहरे के स्नायु सिकुड़ से गये।

"अरे! मैं देख रहा हूँ कि कल की भाँति तुम्हारे ओठ काँप रहे हैं" पारफीरियस पीट्रोविच ने सहानुभूतिपूर्वक कहा।" मेरे विचार से, तुमने मेरे आने का कारण, भली भाँति नहीं समझा, शायद?" उसने कुछ देर की शांति के बाद कहा, "मैं तुम्हें सब कुछ बताने के इरादे से ही आया हूँ।"

"मैंने खून नहीं किया," इस तरह जैसे कि कोई बच्चा गलती करने पर पकड़ा जाता है, वह बोला।

"हाँ, हाँ तुम ही थे, रोदियो रामानोविच तुम ही थे और केवल तुम," कुछ कठोरता से पोरफीरियस ने कहा।

दोनों मौन हो गये थे—लगभग दस मिनिट तक यह शांति रही। मेज पर झुके हुए रासकोल्नीकोव ने अपनी अंगुलियाँ बालों में घुमाईं। पोरफीरियस कुछ देर शांति से प्रतीक्षा करता रहा। एक दम रासकोल्नीकोव ने कहा, "मैं देख रहा हूँ कि तुम अपनी पुरानी तरकीबों पर उतर रहे हो ?"

"मेरी तरकीबों की चिंता न करो। स्वीकार करो या नहीं; कुछ समय तक के लिये तो मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। किसी भी हालत में मेरी तो धारणा बन ही चुकी है।"

"यदि यह बात है तो आप क्यों हो; मेरे नाम 'वारंट' क्यों नहीं निकालते ?"

"यह भी क्या प्रश्न है! लेकिन मैं तुम्हें सिलसिलेवार बताऊँगा। तुम्हें गिरफ्तार करने से मेरा काम नहीं होगा।'

"तुम्हें काम नहीं होगा? यह कैसे? निश्चय हो जाने के उपरान्त तो—"

"मेरे निश्चय हो जाने से क्या काम—? अभी यह सब बालू की भीत है। क्या मैंने तुमसे नहीं कहा कि मनोविज्ञान के, हर वस्तु को समझने के दो पहलू होते हैं और अगर यह बात नहीं हुई होती तो, हाल फिलहाल तो तुम्हारे विपरीत मेरे पास कुछ भी नहीं है! मैं, यद्यपि तुम्हें गिरफ्तार करना चाहता हूँ—इसी ओर ध्यान दिलाने मैं तुम्हारे पास आया हूँ। दूसरा उद्देश्य मेरा तुम्हारे पास आने का—"

"हाँ, यह क्या है ?" रासकोल्नीकोव ने पूछा।

"यह मैं तुमसे पहिले ही कह चुका हूँ।—कि तुम्हारी बिगाड़ों में मैं भर-भरी न हो पाऊँ इसलिये—यह विश्वास दिलाने आया हूँ कि मैं अभी भी तुम्हारे पक्ष में ही हूँ। इसलिये यह सोचते हुए—तुम्हारी भलाई के लिये—मैं तुमसे जोर देकर कहने आया हूँ कि तुम अपना अपराध स्वीकार कर लेना। यही तुम्हारे लिये सबसे अच्छा मार्ग है—तुम्हारे लिये भी और मेरे लिये भी।"

रासकोल्नीकोव ने कुछ देर विचार किया। "मेरी बात सुनो पोरफी रियस! तुम्हारे कथन के अनुसार मेरे खिलाफ तुम्हारे पास सिवाय मनो वैज्ञानिक विचारों के और कुछ भी नहीं है, और तब भी तुम वैज्ञानिक प्रमाण की आशा करते हो।"

"हाँ, राडिओ रोमनोविच! मैं बिल्कुल ठीक कहता हूँ। मेरे पास प्रमाण हैं! और ये प्रमाण मेरे अधिकार में दूसरे ही दिन आये।"

"क्या है वह?"

"मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा। मैं तुम्हें गिरफ्तार करने आया हूँ। तब विचार करो कि जो कुछ तुम कहते हो वह अधिक महत्व का नहीं है मेरे लिये; और जो कुछ मैंने कहा है वह तुम्हारे लाभ का है, तुम इस पर आश्रित हो सकते हो।"

रासकोल्नीकोव ने बोला; 'तुम्हारी भाषा बड़ी बेहूदा है—निर्लज्जता पूर्ण। मुझे दोषी समझ कर (जिसे मैं स्वीकार नहीं करता) मैं क्यों अपने आपको कुर्बान करूँ, क्योंकि जैसा कि तुमने अभी कहा मैं जेल जाकर वहाँ शांति पाऊँगा।'

"मैं निसन्देह इस विचार का हूँ कि जेल अपराधी को कुछ शांत कर देता है, लेकिन यह केवल सिद्धांत है। लेकिन तुम्हें यह आशा नहीं करनी चाहिये कि मैं तुम्हें सारी गुप्त बातें बता दूँगा। शायद तुम्हारी सजा कम कर दी जाय। तो तुम विचार कर लो कि किस शुभ घड़ी में तुम स्वीकार कर रहे हो—जब कि एक आदमी स्वप्न में मारा जा रहा है—शक में; और सारा विभाग खोजबीन में परेशान हो रहा है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है—मैं व्यक्तिगत रूप से तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि जज को इस मामले का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण बिल्कुल नहीं बताऊँगा और न तुम्हारे बारे में कोई सन्देह ही। वे लोग इस मामले में केवल एक स्वाभाविक प्रेरणा समझेंगे। और वास्तव में वह कुछ भी नहीं है। मैं ईमानदार आदमी हूँ और अपना वचन निभाऊँगा।"

रासकोल्नीकोव ने सिर झुका लिया और विचारमग्न हो गया; फिर एक दम थोड़ा सा मुस्कराया। "मैं इसकी चिंता नहीं करता।" उसने धीरे से

कहा, मालूम पड़ता था जैसे कुछ स्वीकार सा कर रहा है। "मैं सजा के कम हो जाने की क्या चिन्ता करता हूँ—जिसके बारे में तुम कहते हो ! मैं इसे नहीं चाहता ।"

"यही तो मुझे डर था तुम हमारी दया को अमोल ।" रास्कोल्निकोव ने अपना दु खित चेहरा ऊपर उठाया । "इस प्रकार जीवन मत गंवाओ ! अभी बहुत कुछ है जीवन में । और तुम दण्ड का कम होना नहीं चाहते !"

'मैं अब भविष्य में क्या देखूँ ?"

"जीवन ! खोजो और तुम पाओगे । और फिर तुमको आजीवन दण्ड भी नहीं मिलेगा ।"

मैं मौजूदा परिस्थिति से लाभ उठाऊँगा ।" हँसते हुए उसने कहा ।

'यह बड़े शर्म की बात होगी ।

"कभी नहीं !' उसने एक बार फिर उठने का प्रयास किया, फिर बैठ गया ।

"तुम भविष्यवाणी करते हो ! और यह सोचते हो कि मैं तुम्हें जाल में फांस रहा हूँ । लेकिन बताओ अभी तक क्या तुम वास्तव में जी रहे थे ? तुम अपने बनाये हुए सिद्धान्त की असफलता पर शर्मिन्दा हो । तुमने अपराध किया । लेकिन अभी भी सिद्ध अपराधी से बहुत दूर हो । और फिर तुम्हें इधर कई दिनों से परिवर्तन की भी आवश्यकता थी । और यह सहना भी बड़ा अच्छा है । सहन करो, फिर ! मैं तो यही समझता हूँ कि तुमको बहुत जीना है । यह तो गनीमत था कि तुमने एक डायन बुढ़िया को मारा । यदि कहीं तुम्हारा सिद्धांत कुछ और हुआ होता ! परमात्मा को धन्यवाद दो ! क्या पता उसकी क्या इच्छा है, तुम्हारे लिये । तुम्हें इस समय हवा की आवश्यकता है वायु ! वायु !"

"लेकिन तुम भविष्यवाणी करने वाले कौन ?"

"मैं कौन हूँ ? मैं वह आदमी हूँ जिसके कभी दिन थे बस । एक दयालु और अनुभवी व्यक्ति जिसने कुछ सीखा । परिवर्तन से इतना क्यों घबराते हो, शायद यह तुम्हारे जीवन में ही नया परिवर्तन ला दे । यह अन्य कालमय समय तुम पर निर्भर है ! सूर्य के समान चमको, और अगर तुम्हें

पहिचान लोगे। क्यों हँस रहे हो? समय बता देगा कि मैं पागल था या ईमानदार।"

"तुम कब मुझे गिरफ्तार करने वाले हो?"

"मैं अभी भी तुमको एक या दिन दे सकता हूँ। परमात्मा से प्रार्थना करो कि वह तुमको प्रेरणा दे।"

"और मान लो मैं भाग निकलूं?" मुस्कराते हुये उसने पूछा।

तुम ऐसा कभी नहीं कर सकते—क्यों कि तुम अपने सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं करते। भागे हुए व्यक्ति के जीवन की कल्पना की है, कितना असम्मान पूर्ण होता है? यदि तुम भाग गये तो फिर आ जाओगे। तुम हमारे बिना रह नहीं सकते। यदि चाहो तो तीन मास बाद तुम्हें गिरफ्तार करूँ, तब मेरी बातें याद रखना।"

रासकोल्नीकोव ने टोपी उठाई, पारफीरियस भी उठा। "क्या घूमने जा रहे हो? तूफान न आये तो रात्रि अच्छी रहेगी यद्यपि तूफान वायु को साफ कर देगा।"

"मित्र! कहीं यह मत विचार कर लेना कि मैं आज ही 'स्वीकार' कर रहा हूँ। इसे मत भूलना। तुम अजीब आदमी हो।"

"मैं नहीं भूलूंगा। तुम—घबराओ मत, घूम आओ लेकिन सीमा के बाहर मत जाना।"

३

उसे स्विड्रिगेलोव को देखने की शीघ्रता थी। एक प्रश्न जिसने उसके मस्तिष्क को भर दिया था वह यह था, क्या वह पोरफीरियस के पास गया था। "नहीं" उसका उत्तर था। वह नहीं गया था इसकी शपथ ले सकता था।

ऐसे अवसर पर एक विचित्र बात को भी वह याद कि, वह ऐसी विचित्र परिस्थिति में पड़े हुए भी, अधिक परेशान नहीं था। जिसने उसे परेशान किया हुआ था वह इससे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न था—जिसमें वह व्यक्तिगत रूप से संलग्न था।

वह स्विड्रिगेलोव के पास पहुँचने की जल्दी में था। क्या वह अवसर की बात थी या भाग्यलीला कि ये दोनों व्यक्ति इतने पास आ गये? रास्कोल्निकोव ने तो शायद इसलिये यह कदम उठाया होगा कि उसको और मार्ग नहीं था। क्या सोनिया ठीक रहेगी? पर इस समय सोनिया के पास क्यों जाया जाए? उसके आँसुओं को फिर देखने? इसके अलावा सोनिया ने तो उसे डरा दिया। लेकिन, इस समय तो स्विड्रिगेलोव के पास ही जाना, ठीक रहेगा। यद्यपि इन दोनों में किसी प्रकार का भी साम्य नहीं था। उसके मन में बुरी खबरें थीं। यह ठीक है कि उसने कैटराइन इवानोवना के बच्चों को सहायता पहुँचाई, लेकिन क्या वास्तविकता से लोग अवगत हैं?

दूसरा विचार बहुत दिनों से उसे परेशान किये हुए था। "स्विड्रिगेलोव मेरे इर्दगिर्द चक्कर लगाता है। उसने मेरा रहस्य जान लिया है। मेरी बहिन की ओर उसकी लिप्सा थी और शायद अभी भी हो। मानो उसे मेरा रहस्य ज्ञात है, तो क्या इसके द्वारा वह दूनिया पर लिप्सा नहीं गाँठेगा?" यह विचार इस समय से पहिले कभी भी इतनी तीव्रतापूर्वक नहीं आया था या कभी भी आशंका कि बहिन को भय बना है—इससे शायद परिस्थिति में अन्तर पड़ जाय। फिर विचार किया कि दूनेचका के बारे में वह बिल्कुल नहीं सोचेगा। और अब! यहाँ पर उसे रात कौन भेज सकता है? (सुमिज?) रजुमिखिन की निगरानी तो बनी रहती ही है!

थकेपन का भाव उसके मन में भर रहा था। वह सड़क के बीचोंबीच खड़ा हो गया। उसने किस मार्ग को पकड़ लिया था? उसने देखा कि वह पोस्तेलस्त्म में था। बाईं ओर के मकान की दूसरी मंजिल कलारी के काम आती थी। एक दम उस मकान की बीच वाले में—खिड़की में से, एक कोने में बैठा हुआ स्विड्रिगेलोव दिखा उसने अपने मुँह में से पाइप निकाल लिया और वह रास्कोल्निकोव की दृष्टि से बचना चाहता था—ऐसा दिखा। लेकिन बाद में उसे लगा कि अब बेकार है। एक दम वह हँस पड़ा।

"इधर आओ, यहाँ, मैं यहाँ हूँ।" वह खिड़की में से चिल्लाया।

रास्कोल्निकोव ऊपर गया। उसने उसे एक छोटे से कमरे में पाया। उसके सामने शैम्पेन की बोतल खुली रखी थी। आधा भरा गिलास देखकर। सामने

एक कोने में कुछ साजिन्दों को साथ लिये—एक लड़की—लगभग अठारह वर्ष की—गा रही थी।

"बस करो!" रासकोलनीकोव के आने पर उसने बोल्की से कहा। वह रुक गई, हट गई और आदरपूर्वक एक कोने में प्रतीक्षा करने लगी।

"सुनो, फिलिप! एक गिलास!" वह चिल्लाया।

"मैं शराब नहीं लूँगा।" रासकोलनीकोव ने कहा।

"तुम्हारी इच्छा। पियो कातिया! अब मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है, तुम जा सकती हो।"

उसने एक गिलास में शराब डाली, कातिया की ओर बढ़ाई और उसके साथ एक पीला नोट भी। उसने मुँह लगाकर पिया—जैसा कि अक्सर औरतें करती हैं। नोट लेने के पश्चात् उसने उसका हाथ चूमा जिसे गम्भीरता पूर्वक स्विद्रिगेलोव ने स्वीकार किया। इसके बाद गाने बजाने वाले चले गये। द्वार बन्द हो गया। उसे अभी कुछ ही दिन हुए थे यहाँ आये पर उसकी पुरानी आदत—अड्डों पर जाने की—फिर नई हो गई। फिलिप पहिले से उसे जानता था।

"मैं तुम्हारे पास जाने वाला था। लेकिन न जाने कैसे मैं इधर निकल आया। मेरा इधर आने का बिल्कुल विचार नहीं था। और सुना कि तुमको देखा। कितनी अजीब बात है!"

"सीधी तरह से क्यों नहीं कहते कि यह एक दम अद्भुत है!"

"इसलिए कि यह केवल अवसर की बात है!"

"इसी प्रकार हर एक यहाँ आता है।" स्विद्रिगेलोव ने हँसकर कहा। "तुमने मेरी उत्सुकता उस घटना से बढ़ा दी।"

"केवल उस घटना से?"

"बस काफी है।" यद्यपि आधा गिलास ही पिया था फिर भी मदहोश हो रहा था वह।

"जब तुम मेरे यहाँ आये थे तो तुम्हें ध्यान नहीं था—मेरे ख्याल से कि यदि मैं वही होता जो तुम विचार कर रहे थे।" रासकोलनीकोव ने कहा।

"वह बात और थी। प्रत्येक व्यक्ति का अपना विचार ध्येय होता है।

लेकिन शायद तुम कई दिनों से लगातार सो रहे हो, क्योंकि मैंने स्वयं ही तो तुम्हें इस स्थान का पता दिया था। तुम्हें याद नहीं है?"

"नहीं तो।" कुछ आश्चर्य से रास्कोल्नीकाव ने कहा।

"मैं जानता हूँ। तुम अपने आसपास कुछ ध्यान नहीं रखते, ऐसा लगता है, रोदियो रोमनोविच! यह शहर शायद आधा तो पागलों से भरा सा लगता है। यहाँ की, आबोहवा भी अच्छी नहीं है। लेकिन मैं तो यह कह रहा था कि जब तुम अपने घर से चलते हो तुम सीधे चलते हो, लगभग बीस कदम चलने के बाद तुम्हारा सिर झटकने लग जाता है और हाथ पीछे की ओर बँध जाते हैं। तुम सामने देखते हो पर ज्ञात होता है जैसे कहीं और देखते हो। यद्यपि, इन बातों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है और न ही मैं तुमको प्रभावित करना चाहता हूँ, इन बातों से।"

"तुम्हारा मतलब है कि कोई मेरा पीछा करता है?"

"मैं यह सब कुछ नहीं जानता।" उसने आश्चर्य से पूछा।

"तब कृपा करके फिर मुझसे कुछ न पूछना" कुछ नाराज होता हुआ सा वह बोला।

"बहुत अच्छा, तुम्हारे साथ फिर बातचीत नहीं की जायगी।"

"केवल इस प्रश्न का उत्तर दो कृपा करके—कि जब दो बार तुमने मिलने के लिए इस स्थान का हवाला दिया था तो फिर मुझे देख कर अभी तुमने अपने को छिपाने का प्रयत्न क्यों किया? मैंने बिल्कुल साफ देखा।"

"ओह! हाँ, जब मैं तुम्हारे कमरे में घुसा था तो जागते हुए भी तुमने सोने का बहाना किया था? मैंने बिल्कुल साफ देखा।"

"इसके लिये कुछ कारण हो सकते हैं, जैसा कि तुम जानते हो।"

"इसके लिए भी कोई कारण हो सकते हैं जो कि तुम नहीं जानते हो।"

कुछ देर तक अपने प्रश्नकर्ता की ओर रास्कोल्नीकाव घूरता रहा।

"झगड़े का तो हम लोगों के बीच में प्रश्न ही नहीं उठता है, और तुम शायद ऐसी अवस्था में हो कि कुछ नुकसान पहुँचा सको—यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा हो तो—मैं तब भी तुमसे भलीभाँति बात करता हूँ। यह जान लो कि यदि मेरी बहिन के बारे में तुम्हारे अभी तक वही विचार हों—और

अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये—तुम उस रहस्य का इस्तेमाल करो जो तुम्हें उस दिन ज्ञात हुआ—तो बजाये इसके कि तुम मुझे भेद सिखलाओ, मैं तुम्हारी जान ही लेने की इच्छा रखता हूँ। दूसरी बात, मुझे ज्ञात हुआ कि तुम मुझ से बातें करना चाहते हो, यदि यह बात है तो कहो, क्योंकि समय मूल्यवान है।"

"असली क्या है?"

"हर व्यक्ति को अपना मुख्य काम होता है।' रासकाल्निकोव ने कहा।

"तुमने अभी मुझ से कहा कि स्पष्टता होनी चाहिये, और जो पहिला ही प्रश्न मैंने पूछा, कि तुमने उत्तर देने से इन्कार कर दिया। किसी 'प्रयोजन' से तुम मुझे सम्बन्धित करते हो, तब भी तुम मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखते हो। लेकिन फिर भी भले ही मैं कितना ही उत्सुक होऊँ तुमसे मित्रता करने का, पर तुम्हें कभी भी मैं, धोखा नहीं दे सकता। और मेरे पास कोई विशेष समाचार नहीं है जो मैं तुम्हें सुनाऊँ।'

"तब तुम मुझसे क्या चाहते हो? लगातार तुम मेरे इर्दगिर्द क्यों चक्कर लगाते हो?"

"केवल इसलिये कि तुम मन बहलाव के साधन मात्र हो। और जब मैं सेंटपीटर्सबर्ग में—नया नया आया तो यह अनुमान किया था कि तुमसे कुछ नवीन समाचार प्राप्त होंगे।"

"मुझसे कुछ समाचार? क्या?"

"मैं क्या जानूँ? तुम देख ही रहे हो कि इस नर्क में किस बुरी तरह मैं अपने दिन बिता रहा हूँ। यह नहीं कि यह जीवन मुझे अच्छा लगता है लेकिन आखिर आदमी को कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये। मैं इस कतिया से, जो अभी बाहर गई अपना मन बहलाता हूँ। मैंने अभी शराब की एक बोतल के लिये आज्ञा दी थी, इसका कारण यह था कि मुझे कहीं जाना है, जहाँ साहस की आवश्यकता है—यह शायद कुछ मदद करे। तुम इस समय मुझे विचित्र 'मूड' में पाते हो। मैं यह अनुमान कर रहा था कि तुम्हारे आने से शायद मेरा मन उद्विग्न हो जाय—लेकिन अब तो—शायद एक आध घंटा मैं तुम्हारे साथ बिता सकता हूँ। जीवन में कभी-कभी ऐसा भी समय आता

है अब मनुष्य का कुछ भी अच्छा नहीं लगता। इसी कारण मैं आशा कर रहा था कि तुम कुछ नवीन समाचार सुनाओगे।"

"तुम कौन हो, और यहाँ पर आये क्यों हो, आखिर ?"

"हाँ, पूछो कि मैं कौन हूँ !"

"तुम जुआ खेलते हो, मेरे विचार से ?"

"मैं जुआ खेलता हूँ ? नहीं, केवल ताश का खिलाड़ी कहो, अगर तुम चाहो तो।"

"क्या तुम ताश में बेईमानी किया करते थे ?

"हाँ, की भी।"

"तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ भी पड़े थे, पड़े थे न ?"

"हाँ पड़े थे। पर तुम क्यों जानना चाहते हो ?,

"अच्छा तो तुम द्वन्द्व युद्ध कर सकते हो, ऐसा तुम्हारे बारे में ख्याल है।"

"हाँ, मैं इस पर कोई विरोध नहीं कर सकता। लेकिन निःसन्देह मैं दार्शनिक बहस के योग्य नहीं हूँ। मैं तुमसे कहूँ, कि यहाँ पर मेरा आना केवल नारी के कारण हुआ है।"

"मार्फा पीट्रोवना के दफनाते ही ?"

स्विड्रिगेलोव हँसा। "खैर, हाँ, तुम्हें सुन कर आश्चर्य हुआ ?"

"क्या तुम्हें आश्चर्य हुआ कि व्यभिचार की बात सुन कर मुझे ताज्जुब हुआ ?"

"मैं डरपोकों की भाँति क्यों व्यवहार करूँ ? रमणियों से अपना सम्बन्ध क्यों तोड़ूँ, और खास तौर पर जब कि मेरी अभिरुचि है उस ओर ? ये भी तो एक पेशा है।" रास्कोलनीकोव उठ खड़ा हुआ। वह कुछ नाखुश सा हुआ यह सुन कर। स्विड्रिगेलोव ने यह देखा। "कुछ देर और रुको। चाय पियो न। मैं तुम से कुछ कहने वाला हूँ। क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि किस प्रकार परिया किस्म की औरत ने मुझे बिगाड़ा ! वह तुम्हारे पहिले प्रश्न का उत्तर होगा। तो आरम्भ करूँ ? समय ही तो गुजारना है न।"

"आरम्भ कर सकते हो—"

"बतलाओ मत ! मुझ सरीखा नीच आदमी भी पूर्णतया के

भद्दा रूप सकता है । मैं उसे भली प्रकार जानता हूँ, मेरे दमाग से । लेकिन यह इतनी सुन्दर क्यों है ? क्या यह भी मेरी गलती है ? तो एक लड़की—पारशा नाम की मुझे गौरव का गुलाम समझती थी—वह बड़ी सुन्दर थी—लेकिन एक दम मूर्ख, उसके आँसू, उसका सिसकना—। एक दिन खाना खाने के बाद, एवडोकिया रोमनोवना मुझे एकांत में ले गई—और उसकी चमकती आँखों ने—मुझे इस बात पर जोर दिया कि मैं पारशा को छोड़ दूँ । मेरा उसका एकांत में शायद यह प्रथम मिलन था । स्वाभाविक था कि मैंने उसकी आज्ञा पालन की ।

'उसके बाद हम अक्सर एकांत में मिला करते थे वह मुझे उपदेश दिया करती थी और आँखों में आँसू भर कर कहा करती थी कि मैं इस प्रकार के जीवन को त्याग दूँ । मेरे तो दिन ही खराब थे । मैं ऐसा बन गया जैसे कि मुझे प्रकाश की आवश्यकता है—और फिर मैंने एक ऐसे हथियार का प्रयोग किया जिसका तात्कालिक प्रभाव नारियों के हृदय पर पड़ता है, अर्थात् चापलूसी । तुम मुझे क्षमा करोगे यदि मैं यह कहूँ कि एवडोकिया ने भी मेरी अनसुनी नहीं की । पर दुर्भाग्य से मैंने ही सारी बात बिगाड़ दी । मेरे देखने के ढंग से वह डर गई । परिणाम स्वरूप मैं और आगे बढ़ा ।

'मित्र ! काश उन दिनों तुमने अपनी बहिन की आँखें देखी होतीं । वह मुझे सपनों में भी परेशान करने लगी, शायद बात इतनी न बिगड़ती यदि मैंने उसके कपड़ों की—आते जाते समय—सरसर न सुनी होती । मैंने सोचा कि मुझे गश आ जायेगा । फिर यह आवश्यक हो गया मेरे लिए कि उसके साथ सम्बन्ध स्थापित किया जाय, पर सम्बन्ध स्थापित करना असम्भव था । सोचो फिर मेरा क्या हाल हुआ । रोडिया जब कभी तुम्हारी भी ऐसी हालत हो तो कभी कुछ न करना । यह जानकर कि वह गरीब है और अपनी कमाई के सहारे जीता है तथा उसकी माँ और तुम उस पर आश्रित हो (क्षमा करना इन विचारों के लिये) तो मैंने अपनी सारी सम्पत्ति उसके नाम करने का विचार किया और यह प्रस्ताव रखा कि हम दोनों सेंट पीटर्सबर्ग भाग चलें ।

"क्या तुम विश्वास करोगे ? कि मैं उस पर इतना दीवाना हो गया था कि यदि उसने यह कहा होता कि "मार्फा को जहर देकर मार डालो" तो शायद मैंने ऐसा ही कर डाला होता । लेकिन जिस समय मुझे यह बात विदित हुई कि मेरी पत्नि ने उसका विवाह उस बदमाश लूजिन के साथ तय कर दिया है तो मेरे गुस्से की सीमा न रही ।—'

स्विद्रिगेलोव ने कह कर एक घूंसा टेबल पर मारा, वह दो गिलास शैम्पेन के पी चुका था, और उस पर उसका प्रभाव हो रहा था । रासकोलनीकोव ने ध्यान से यह सब सुना और देखा । उसने मन में निश्चय किया कि उसके आने के रहस्य को जाना जाय—क्योंकि यह उसका सब से जबर-दस्त दुश्मन था । "अच्छा, तो उसके बाद, तुम मेरी बहिन के पीछे यहाँ तक आये हो ?"

"बकवास ! क्या मैंने तुमसे नहीं कहा । इसके अलावा तुम्हारी बहिन तो मेरी सूरत भी देखना पसन्द नहीं कर सकती ।"

"और उसके लिये मुझ फुसलाया गया, पर यहाँ वह बात नहीं है ।"

"क्या वास्तव में तुमको फुसलाया गया कि वह मेरी दृष्टि भी सहन नहीं कर सकती ?" चिढ़ाते हुए हँस कर स्विद्रिगेलोव ने कहा । "तुम ठीक कहते हो वह मुझे प्यार नहीं करती – लेकिन अभी प्रेमिका का क्या विश्वास ? क्या तुम विश्वासपूर्वक यह कह सकते हो कि दूर्नेचिका रोमनोवना मुझ से नफरत करती है ?

'तुम्हारे कथन के कुछ शब्द ही यह बताते हैं; इस समय भी उसके लिये तुम्हारी नियत बुरी है—और इसे तुम शीघ्र ही काम रूप में परिणित करना चाहते हो ।"

"क्या ? क्या मैंने इस तरह की कोई बात की ?" एक दम उत्सुक सा होकर वह बोला ।

"क्यों इसी समय तुम्हारे बुरे इरादे स्पष्ट हैं । तुम इतने डरते क्यों हो ?"

"मैं डरता हूँ ? और तुम से ? क्या कहानी गढ़ रहे हो ? वास्तव में तो तुमको मुझसे डरना चाहिये । फिर मैं नशे में हूँ—कुछ और भी बकवास

बक सकता हूँ । ओह ! पानी लाना ।' यह कह उसने बोतल खिड़की से फेंक दी । फिलिप पानी लाया । "तुम जानते हो मैं शादी करने वाला हूँ ?" उसने मुँह पर गीला तौलिया फेरते हुए कहा ।

'यह तो तुम मुझ से कह ही चुके हो ।'

'मैं कह चुका हूँ ? तब तो शायद मैं भूल गया हूँ । लेकिन बात चीत ठीक हो चुकी है । यदि इस समय अवकाश होता तो मैं तुम्हें अपनी पसन्द दिखाने ले जाता । बस दस मिनट और । मैं अपनी शादी की कहानी तुमको बताता हूँ । क्या तुम्हें जाना ही है ?"

'नहीं; अब तो मैं अवश्य तुम्हारे साथ चिपटूँगा ?'

"मेरे साथ चिपकोगे ? हाँ, ठीक है तुम्हें मेरी भविष्य में होने वाली पत्नि को जानना चाहिये, लेकिन अभी नहीं, क्योंकि हमें बिछुड़ने की सोचना चाहिये । श्रीमती रेसलिच, जिसके यहाँ मैं रहता हूँ न, उसी ने कुछ प्रबन्ध किया है । यह मत विचार करना कि मैं प्रसन्न हूँ, इससे । लेकिन मैं किसी की हानि नहीं करता । एक परिवार है, उसमें, एक लड़की है जो लगभग सोलह वर्ष की होगी—वह है मेरे लिये ।

"मेरी पचास वर्ष की आयु इसमें तनिक भी बाधा नहीं देती । मैं उस परिवार में गया और शीघ्र ही उनसे जान पहिचान भी हो गई । मैंने उन लोगों से विवाह के लिये जल्दी की, और परसों हमारी सगाई भी हो गई । अब जब वहाँ जाता हूँ तो वह मेरे घुटनों पर बैठी रहती है, और मैं उसका चुम्बन लेता हूँ । बिना किसी आपत्ति के, वह शरमा जाती है ।

"सगाई के दूसरे दिन मैं लगभग पन्द्रह सौ रूबल की भेंट उसके लिये ले गया । ज्यों ही आगे बढ़ कर मैं उसे अंक में भर रहा था, वह शर्म से लाल होगई और आँसुओं की झलक उसकी आँखों में दिखी, जिसे वह छिपाने का प्रयत्न कर रही थी । हम दोनों अकेले छोड़ दिये गये, तब उसने अपनी बाहें मेरे गले में डाल दीं, और चिपकते हुए, उसने शपथ लाकर कहा कि वह एक वफादार, और अच्छी पत्नी बन कर रहेगी । वह भेंट नहीं चाहती । मैं उससे तुम्हें मिलवाना चाहता था लेकिन अभी नहीं कर सकता ।'

"संक्षेप में यह अस्वाभाविक अवस्था का अन्तर तुम्हारी काम वासना को और तप्त करता है ? कभी तुमने इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया है ?"

"तुम बड़े आदर्शवादी हो।" तब उसने फिलिप को बुलाया और पैसे आदि देकर कहा, "मुझे दुःख है कि मैं तुम्हारे साथ अधिक सहवास नहीं कर सकूँगा—लेकिन हम फिर मिलेंगे अवश्य—कुछ प्रतीक्षा करो।"

उसने बग्घी मांग दी। रासकोल्नीकोव उसके पीछे-पीछे चलने लगा। उसका चेहरा उदास होगया और वह विचार मुद्रा में था जैसे कोई बड़ी महत्वपूर्ण समस्या सुलझा रहा हो। रासकोल्नीकोव ने यह सब देख कर उसका पीछा करने का निश्चय कर लिया। वे गली तक साथ आये।

"हम यहाँ से विदा होते हैं। तुम दायें बाजू मैं बायें। अलविदा।" और वह हे-मार्केट की ओर चल दिया।

४

रासकोल्नीकोव ने उसका पीछा किया।

"तुम क्या कर रहे हो ?" मुड़ कर उसने रासकोल्नीकोव से पूछा। "शायद मैंने तुमसे कहा था कि—"

"इसका अर्थ यह है कि मैं तुम्हारे साथ चलने का निश्चय कर चुका हूँ।"

"क्या ?"

दोनों रुक गये, और कुछ क्षण तक एक दूसरे को ताकते रहे।

"मुझे ज्ञात है कि मेरी बहिन ने एक पत्र प्राप्त किया है, आज सुबह। तुम्हारे इस घूमने के सिलसिले में एक बीबी के ताकने को मैं खूब समझता हूँ। यह सब, कुछ नहीं है। लेकिन मैं यह जानने को उत्सुक हूँ कि—" वह समझ नहीं सका कि क्या कहे।

"वास्तव में! अब क्या तुम पुलिस बुलाना चाहते हो ?"

"बुलाना बिलकुल।"

एक बार फिर वे दोनों रुक गये। स्विद्रिगेलोव के चेहरे का भाव बदल गया। उसने मित्रता के लहजे में कहा "अजीब आदमी हो। मैंने जान बूझ कर तुम्हारे मामले का जिक्र नहीं किया। मैं किसी और समय के लिये उसे स्थगित करना चाहता था। अच्छा तो आओ, लेकिन तुम्हें बता दूँ कि मैं केवल घर जा रहा हूँ कुछ पैसे लेने, उसके बाद कोई सवारी लेकर शाम काटने मैं किसी द्वीप में जाऊँगा। इसलिये मेरे साथ क्यों चल रहे हो?"

"मुझे तुम्हारे घर कुछ काम है, लेकिन तुम्हारे कमरों में नहीं, मुझे सोनिया से मिलना है।

'जैसा तुम चाहो, लेकिन वह घर पर नहीं है। वह तीनों बच्चों को मेरे बताये हुए एक अनाथालय में एक महिला के पास लेगई है। बेचारे इन के बच्चों के लिये मैंने इस महिला को कुछ धन दे दिया है। और उससे मैंने सोनिया को भी कहानी सुना दी है पूर्ण रूप से।"

"इससे कोई मतलब नहीं, मैं फिर भी उससे मिलने जाऊँगा।"

"जैसा तुम चाहो करो, केवल मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूँगा; काम क्या है? पर तुम जानते हो, कि मुझे पूर्ण विश्वास है, कि तुम मुझ पर यकीन नहीं कर रहे हो, क्योंकि अभी तक मैं उदारता का व्यवहार करता रहा।" स्विद्रिगेलोव ने कहा।

'तुम समझते हो कि बेकार की बातों पर ध्यान देना उदारता है।"

'हाः हाः हाः! मुझे अचम्भा हुआ होता, यदि तुमने यह नहीं कहा होता। अगर तुम यह सोचो कि बेकार की बातों को जो सुनना मना है, लेकिन वे सब चारों दुखियों का भला कर सकते हैं। तथा, शायद मस्तिष्क इस प्रकार विचार नहीं कर सकता—कि तुम अमेरिका आदि कहीं भी भाग भी सकते हो! नौजवान! भाग चलो एक दम! अभी भी समय है। मैं तुम्हारे भले के लिये ही कह रहा हूँ। क्या तुम्हें धन की आवश्यकता है? यदि है, तो मैं तुम्हें किराया खर्च दे सकता हूँ।" स्विद्रिगेलोव ने कहा।

'मैं उसके बारे में नहीं सोच रहा हूँ ।' रासकोल्नीकोव ने मफरत से कहा ।

"मैं समझा: तुम्हें अपने आप से यह प्रश्न पहिले ही से करना था, पर अब तो यह तिथि-क्रम-भ्रांति (anachronism) है । यदि तुम सोच हो कि तुम किसी अपराध के अपराधी हो तुम्हें अपना भेजा फास देना होगा; यही तो तुम करना चाहते हो न, ऐसा ही है न ?"

'मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे चिढ़ाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हो —इस आशा से कि मैं तुम्हारा पीछा छोड़ दूँ ।"

"आ ! सनकी आदमी ! हम आ पहुँचे ! चलिये चढ़िये ऊपर । यह सोफिया का द्वार है भीतर कोई नहीं है । मेरा विश्वास नहीं है ? पूछो इन्हीं से । यह उसकी भी आ गई । क्यों सोफिया बाहर गई है ? अब तो तुम सन्तुष्ट हो गये ? वह शाम की देर तक भर नहीं आ सकेगी । अब आओ मेरे कमरे में ! यह रहा मेरा कमरा । श्रीमती रेसलिच बाहर गई हैं । ये देखो मैं कैसे आ रहा हूँ डेस्क में से । देखा तुमने ? मैं अपना कमरा बन्द करता हूँ, और अब हम फिर दोनों पर हैं । चलते हो तुमने, गाड़ी ले लूँ ? मना करते हो ? देखो चलो, पानी पड़ने वाला है, फिर भी हम लोग 'टूट' जायेंगे ।"

स्विद्रिगेलोव गाड़ी पर सवार हो गया । उसके शक के होते हुए भी रासकोल्नीकोव ने विचार किया कि देर हो जाने में कोई डर नहीं है । इस लिये बिना कुछ कहे वह हे मार्केट की ओर मुड़ गया । यदि उसने पीछे फिर कर देखा होता, तो देखता कि स्विद्रिगेलोव ने थोड़ी दूर जाकर गाड़ी वाले को किराया दिया और वह उतर गया था । लेकिन वह विचारमग्न बढ़ता गया । पुल पर पहुँच कर वह खड़ा होकर नहर देखता रहा । थोड़ी ही दूर पर उसकी बहिन, खड़ी बड़े गौर से उसे देख रही थी । पुल पार करके, वह उसके बिलकुल पास से उसे बिना देखे निकल गया । उसे देख कर वह कुछ घबरा गई और एक क्षण को यह विचार किया कि उसे पुकारा जाय । लेकिन अचानक उसे स्विद्रिगेलोव आता नजर आया । वह रासकोल्नीकोव की नजर बचाते हुए आगे बढ़ रहा था । उसने दूनिया को देख कर इशारा

"यदि तुम विश्वास नहीं करतीं तो यहाँ तक आने का कष्ट कैसे किया ? केवल उत्सुकता ही थी न !"

"ओह, परेशान मत करो, बोलो !"

"यह बात मानता हूँ कि तुम बहादुर लड़की हो। मैंने पहिले सोचा था कि तुम शायद मिस्टर राजुमिखिन से कहने को कहो। पर वह तुमने ठीक ही किया। हां, तो तुमने उसे अभी देखा। तुम्हारा क्या ख्याल है उसके बारे में ?"

"निसन्देह तुम ऐसी मामूली नींव पर अभियोग स्थापित नहीं कर रहे हो !"

"किसी तरह नहीं—लेकिन रोडियो के शब्दों द्वारा ही वह सोफिया के यहाँ लगातार ही आया जाया। और उसने उस लड़की को सब कुछ स्पष्ट कर दिया। दूसरे शब्दों में वह खूनी है। उसने एक उधार देने वाली बुढ़िया का खून कर डाला, जिसके पास उसने कई वस्तुएँ बन्धक में रखी थीं। उसने उसकी बहिन का भी खून किया चोरी करना उसका इरादा था, और चोरी उसने की। यही उसने शब्द ब शब्द सोफिया से कहा। केवल वह ही इस रहस्य को जानती है, पर उसका इसमें हाथ बिल्कुल नहीं है। लेकिन वह तुम्हारे भाई को बदनाम नहीं करेगी।"

"असम्भव ! असम्भव ! ऐसा कोई कारण नहीं था; इस प्रकार का अपराध करने का तनिक भी संकेत नहीं था। यह बात झूठ है।"

उसने चोरी की और यह सच है कि उसने उस माल को छुआ भी नहीं, और उसे पत्थर के नीचे दबा दिया, जहाँ वे अब भी हैं। वह उनके उपयोग करने से डरता था।"

"क्या यह कभी भी सम्भव है कि उसने चोरी की ? क्या कभी उसके ऐसे विचार भी हो सकते थे ? तुम उसे जानते हो ? और देखा भी है तुम क्या सोचते हो कि वह चोर है ?" उसने हुए एक दम दुखिया चिल्लाई।

"इस वर्ग में कई प्रकार के आदमी होते हैं अक्सर चोर अपने अपराध के बारे में चौकन्ना रहते हैं। तुम्हारे भाई ने यह सोचा होगा कि वह कोई प्रशंसनीय कार्य कर रहा था मैंने भी पहिले अनसुनी की होती, तुम्हारी तरह,

—लेकिन अब मैं अपने कानों पर विश्वास कैसे न करूँ। तुम कहाँ जा रही हो दूनिया ?"

"मुझे सोफिया सेमनोवना से मिलना चाहिये। हर हालत में अब तक तो लौट कर आगई होगी ?" वह क्रोध के कारण आगे नहीं कह सकी।

"सोफिया रात्रि के पहिले नहीं आयगी।"

"ओ ! तो इस तरह से झूठ बोला जाता है ! तुम झूठ बोलते आ रहे हो। अभी तक सब झूठ ही कहते रहे हो। मैं विश्वास नहीं करती।" आत्म संयम खोकर उसने आवेश में आकर ज़ोर से कहा, वह गश सा खा गई, और कुर्सी पर गिर पड़ी।

"अवदोतिया रोमनोवना ! क्या बात है ? होश में आओ। कुछ पानी पीओ।" उसने अपना मुँह पानी से धोया। वह काँपी और एक बार फिर अपने में आगई। "शांत हो दूनिया ! याद रखो कि रास्कोल्नीकोव के मित्र हैं। हम लोग उसे बचायेंगे। क्या तुम चाहोगी कि मैं उसके साथ देश छोड़ दूँ ? मैं साधन सम्पन्न हूँ और तीन दिन में ही सारा धन प्राप्त कर सकता हूँ। उसके लिये अभी भी अवसर है, वह अभी भी बड़ा आदमी बन सकता है। तुम्हें क्या होगया ? तुम अब कैसी हो ?"

"नीच ! ऐसे समय मज़ाक ! छोड़ दो मुझे ?"

"और तुम कहाँ जाओगी ?"

"उसके पास। वह कहाँ है ? द्वार बन्द क्यों है ? तुमने ताला कब लगाया ?"

"मैंने यह उचित नहीं समझा कि घर का कोई और कुछ सुने। भाई की तलाश में क्यों जा रही हो ? और इस हालत में ? क्या तुम उसका नाश चाहती हो ? ऐसी दशा में वह अपने आप आत्मघात कर देगा। उसकी निगरानी हो रही है और ज़रा सी चूक उसके लिये सांघातिक हो सकती है। ठहरो थोड़ी देर। मैं अभी मिला था और बातचीत की थी, अभी भी उसे बचाने का समय है। बैठ जाओ, और अपन अभी विचार करते हैं कि क्या किया जाय। इसीलिये तो तुम्हें बुलाया था। बैठो।"

"तुम कैसे बचा सकते हो ? क्या यह सम्भव है ?" वह बैठ गई। स्विद्रिगेलोव भी कुर्सी लेकर उसके पास ही आ बैठा।

"यह सब तुम पर आश्रित है तुम पर केवल" उसने धीरे से कहा। उसकी आँखें चमक रही थीं, दूनिया देख कर कांप गई—वह कुछ दूर हट कर बैठ गई। "तुम—केवल एक शब्द, और वह बच गया।" उसका हर हिस्सा कांप रहा था। "मैं—मैं उसे बचाऊँगा मेरे पास धन और साधन भी हैं। वह बाहर जायगा और पासपोर्ट मैं बनवाऊँगा, मैं दो लूँगा—एक उसके और एक मेरे लिये। मेरे विश्वसनीय मित्र हैं, तुम क्या कहती हो ? मैं तुम्हारे लिये भी पासपोर्ट ले सकता हूँ तुम्हारी माँ के लिये भी। रजुमिखिन के बारे में क्यों सोचती हो ? मैं तुम्हें बुरी तरह से प्रेम करता हूँ। तुम मुझे अपने कपड़ों की किनोर ही चूमने दो ! कृपा करो। बोलो ! और मैं तुम्हारी सारी आज्ञाओं का पालन करूँगा, चाहे कुछ भी हो जाय। लेकिन इस तरह न देखो, मैं बुरी तरह पागल हो रहा हूँ। तुम मुझे मारे डाल रही हो।

वह बकवास करने लगा। दूनिया द्वार पर पहुँची। "खोलो ! खोलो ! मैं कहती हूँ खोलो। क्या बाहर कोई नहीं है ?"

वह उठा। अब तक उसमें आत्म संयम वापिस आ चुका था। एक कड़ुवी सी चिढ़ाने वाली हँसी हँसकर वह बोला, "कोई पास नहीं है," धीरे से उसने कहा, "मेरी मकान मालकिन बाहर गई है और तुम्हारा चिल्लाना बेकार है, बेकार क्यू करती हो।"

"चाबी कहाँ है ? द्वार एक दम खोल दो—एक दम, नीच !"

मैंने चाबी खो दी मैं ढूँढ नहीं सकता।"

"तब यह जालसाजी है।" और कमरे में दूर एक कोने में जाकर खड़ी हो गई, एक टेबल की आड़ लेकर। तब अपने शत्रु की ओर एक टक देखने लगी। वह अपने स्थान से नहीं हिला। वह इस समय पूर्णरूप से स्वस्थ हो चुका था।

"तुमने अभी एक शब्द—जालसाजी का प्रयोग किया। अगर ऐसी बात ही है तो सब बातों का ध्यान रख लिया गया है। सोनिया बाहर गई हुई है। दर्जी का कमरा यहाँ से पाँच कमरे छोड़ कर है। और मैं तुमसे दुगना

सकता हूँ। और यदि तुम हिफ़ाज़त करती हो तो तुम्हारा भाई गया। और फिर कोई विश्वास भी नहीं करेगा, क्योंकि उस जवान औरत की सारी कार्यवाही समाप्त हो जाती है या घटकी दूसरों के घर जाती है। और तुम भाई को भी मूल जाओ तो साबित क्या करोगी, कुछ नहीं।

अयोग !"

'ऐसा ही हो। अलिम ध्यान रहे अप तक तो मैंने जो कुछ कहा वह तुम्हारे ही भले के लिये कहा। मैंने जो कुछ इस विषय में कहा, यदि तुम अपनी खुशी से अपने भाई को बचाने के लिये स्वीकार कर लो—जिस प्रकार मैंने कहा। परिस्थितियों को देखते हुए तुम अपने काम के पक्ष में स्वीकृति दे सकती हो। जरा सोचो: तुम्हारी माँ और भाई का भाग्य इस समय तुम्हारे हाथ में है। आश्रम में तुम्हारा दास बन जाऊँगा। बस।'

वह सोफ़ा पर बैठ गया। लड़की ने विचार किया कि इसका निश्चय परम है। इसके अलावा यह भी जानती थी, कि वह क्या है। एक दम उसने जेब से रिवाल्वर निकाल लिया, भरा और टेबल पर रख दिया। "ओह तो यह है तुम्हारा उत्तर! अच्छा, तो अब परिस्थिति बिल्कुल बदल गई। लेकिन यह तो बताओ कि तुमने यह रिवाल्वर कहाँ से लिया? शायद श्री राजुमिखिन ने यह दिया होगा? अरे, यह तो मेरा है, मैं पहिचान गया। मैंने इसकी बेकार ही काफ़ी खोज की थी। जो निशाना चलाना मैंने तुम्हें गाँव में सिखाया था वह बिल्कुल बेकार नहीं गया।"

यह रिवाल्वर तुम्हारा नहीं था, मार्फ़ा पैट्रोवना का था जिसको कि तुमने मारा। उसके घर में तुम्हारा कुछ भी नहीं था। एक भी कदम आगे बढ़े कि मैं चला दूँगी।' दूनिया अपनी धमकी को कार्यान्वित करने के लिए तैयार खड़ी थी।

'पर तुम्हारे भाई का क्या होगा? मैंने वैसे ही पूछा स्वाम्बुसमाइलव।'

उसी हालत में खड़े हुए उसने पूछा।

'तुम चाहो तो कुछ भी करो! लेकिन हिलना नहीं, नहीं मैं दाग दूँगी। तुमने अपनी बीवी को जहर दिया तुम खुद भी खूनी हो।"

"तुम्हें पक्का विश्वास है कि मैंने मार्फ़ा को जहर दिया था?"

"हाँ ! तुमने ही मुझे विश्वास दिलाने की बात कही थी—तुमने प्यार के बारे में बात की थी । तुम ही थे-वास्तव में तुम ही थे नीच, दुष्ट व्यक्ति—।"

"मान लो ऐसा हुआ भी हो—तो वह केवल तुम्हारे लिये था—तुम उसका कारण थी ।"

"झूठे । मैंने हमेशा—हमेशा तुमसे नफरत की । '

"तुम भूल गईं शायद, कि मुझे परिवर्तित करने के जोश में तुम मेरे ऊपर किस प्रकार झुक गईं थीं—कामातुर दृष्टि से देखते हुए । मैंने तुम्हारे नयनों में पढ़ा था—शाम का समय था—याद है तुम्हें ! चाँद चमक रहा था ।"

"झूठे ! बदमाश !'

"मैं झूठा तुम कहती हो ? और, मैं हमेशा ही झूठ बोलता रहा । औरतें अक्सर ऐसी मामूली बातों को याद नहीं रख पातीं ।" उसने हँसते हुए कहा । "मैं जानता हूँ कि तुम गोली चलाओगी, तो चलाओ न ?"

दूनिया ने निशाना साधा—कि जरा भी बढ़े कि गोली चला दे । मृत्यु का आतंक लड़की के चेहरे पर आ गया, उसकी काली बड़ी आँखों में से चिनगारियाँ निकल रही थीं । स्विद्रिगेलोव ने उसे इतनी सुन्दर कभी नहीं देखा था । वह एक कदम आगे बढ़ा । गोली चली । उसके सिर पर से रगड़ती दीवाल पर जा लगी । वह रुकी ।

"केवल एक कीड़े ने काटा ।" जरा हँस कर कहा । "मेरे सिर पर उसने निशाना लगाया था—। यह क्या ? खून !" उसने रूमाल निकाल कर खून पोंछ डाला । दूनिया ने हथियार नीचे कर लिया । वह नहीं समझ सकी कि वह क्या कर गई । "तुम जरा चूक गईं—फिर चलाओ—मैं इन्तजार कर रहा हूँ ।"

एक झटके के साथ उसने फिर तैयार किया । "मुझे जाने दो । मैं शपथपूर्वक कहती हूँ कि मैं फिर गोली चला दूँगी —मैं तुम्हें मार दूँगी ।

"असम्भव है कि अब भी—चार कदम पर से तुम चूको—लेकिन यदि तुम मुझे मार नहीं पाईं तब"—और वह दो कदम और बढ़ गया । दूनिया ने घोड़ा दबा दिया, रिवाल्वर फिर निशाना चूक गया । "कोई बात नहीं, एक बार और कोशिश करो मैं प्रतीक्षा करूँगा ।"

दो कदम पर खड़े हुए उसने लड़की को इस प्रकार निगाह भर कर देखा कि उसमें उसका निश्चय स्पष्ट झलक रहा था। दूनिया ने अनुमान लगाया कि झुकने के बजाय वह मरना पसन्द करेगा। एक दम उसने रिवाल्वर फेंक दिया।

'तुम थोथी जबान से इन्कार करती हो।" धीरे धीरे साँस लेते हुए उसने कहा। मौत का भय नहीं था, जिसके छुटकारे से, उसने अनुभव किया, कि उसके मस्तिष्क को शांति मिली लेकिन जो राहत उसे प्राप्त हुई उसे वह समझ न पाया। वह दूनिया के समीप आ गया और कोमलतापूर्वक उसकी कमर में हाथ डाल दिये। उसने कोई आपत्ति नहीं की, लेकिन काँपती, वह उसकी ओर देखती रही। वह बोलना चाहता था, पर बोला न गया।

"मुझे जाने दो।" दूनिया ने कहा।

इस सम्बोधन को सुनकर, जिसमें पहिले से अन्तर था, वह काँप गया। "और तुम मुझे प्यार नहीं करतीं?" उसने अटकते हुए पूछा। दूनिया ने अपना सिर हिला दिया। "और न कर ही सकती हो? क्या—कभी नहीं?" असम्भवता से उसने पूछा और कहा।

"कभी नहीं" एक गुनगुनाहट थी।

एक क्षण के लिये स्विड्रिगेलोव के दिमाग में भयंकर तूफान उठा। उसकी आँखें लड़की पर टिक गईं—अवर्णनीय भावों के साथ। तब एक दम उसने उसकी कमर से हाथ निकाले, जो अभी तक लिपटे थे, और शीघ्रता से मुड़कर खिड़की के पास बाहर की ओर देखते हुए खड़ा होगया। "यह रही चाबी।" उसने जेब से निकाल कर मेज पर बिना मुड़े रख दी। "लेना और जल्दी से चली जाओ!" खिड़की से बाहर देखते हुए उसने कहा। "जल्दी! जल्दी!" उसने फिर कहा।

दूनिया ने चाबी उठाई ताले में लगाई, द्वार खोला और शीघ्रता से बाहर होगई। वह दूसरे तीन मिनट तक खिड़की पर खड़ा रहा। बाद में धीरे से मुड़ा, चारों ओर कमरे में देखा। रिवाल्वर द्वार के पास पड़ा था। उसने उठाया, उसका निरीक्षण किया, अभी दो गोलियाँ और थीं। एक क्षण विचार कर, उसने उसे अपनी जेब के हवाले किया, टोपी उठाई, बाहर चला गया।

५

उस रात दस बजे तक, मारकेलियस इवानोविच स्विद्रिगेलोव, प्रत्येक होटल में गया। इनमें से एक स्थान पर कात्या के फिर मिल जाने पर उससे कुछ मन बहलाव हुआ।

उस शाम को उसने एक बूंद भी शराब की नहीं पी; वाक्सहाल में सिवाय चाय के और उसने कुछ भी नहीं लिया था, वह भी सभ्यता के नाते वह मजबूर था। शाम भाग बदलता जा रहा था, और काले बादल आस मान में घुमड़ रहे थे। लगभग दस बजे बड़ी जोर से बिजली गरजी। स्विद्रिगेलोव, बिल्कुल तर घर गया। वह कमरे में बन्द होगया और लिखने की टेबल खोल कर, उसमें से अपने सारे धन को निकाल कर, तीन या दो कागज फाड़ डाले। पैसों को जेब में डाल कर, टोपी उठाई और बाहर निकला, बिना द्वार लगाये। वह सीधा सोफिया के कमरे में गया, जो भीतर ही थी। वह अकेली नहीं थी। उस दर्जी के चार बच्चों से वह घिरी थी। वह उनको चाय पिला रही थी। आदरपूर्वक उसने आगन्तुक का स्वागत किया, कुछ अचरज के साथ उसके भीगे कपड़ों को देखा। सब बच्चे उसे देख कर धीरे से खिसक गये—डर कर। वह टेबल के पास ही बैठ गया और सोफिया से भी बैठने को कहा। वह क्या कहा जाता है, यह सुनने को तैयार हुई।

'सोफिया सेमनोवना! मैं शायद अमेरिका जाऊँगा और शायद यह हमारी आखरी भेंट हो। मैं कुछ तय करने आया हूँ। और तुम उस महिला के यहाँ गई थीं न? ठीक। तुम्हारे भाई और बहिनों के लिये मैंने धन रख दिया है, उसकी यह रसीद लो। पर तुम्हारे लिये, पाँच प्रतिशत के तीन बौंड, जो तीन हजार रूबल के हैं। मैं चाहता हूँ कि ये बातें हम तुम तक ही सीमित रहें। तुम्हारे लिये धन बड़ा आवश्यक है।"

'बिचारे अनाथों पर आपने बड़ी कृपा की, और उस मृतक महिला पर तथा मुझ पर भी। और यदि—इस समय मैं आपको केवल धन्यवाद दूँ तो यह मत समझना कि—'

'बस बस ठीक है।

"जहाँ तक इस धन का प्रश्न है, मैं आपकी बड़ी आभारी हूँ, लेकिन अभी मुझको इसकी आवश्यकता नहीं है। मुझे केवल अपने आपका काम ही तो चलाना है इसके लिये मैं स्वयं अपनी मदद कर सकती हूँ। मेरे मना करने पर मुझे घमण्डी मत समझना। और यूँ कि—

'ले लो सोनिया ! और कृपा करके अब कोई आपत्ति मत करना, क्योंकि सुनने के लिये अब मेरे पास समय नहीं है। रोदियो रोमनोविच के सामने दो ही रास्ते हैं। या तो अपने आपको गोली मार दे या साइबेरिया।' इसको सुनकर सोनिया काँप उठी, और फटी आँखों प्रश्नकर्ता की ओर देखने लगी।

"परेशान न हो। मुझे सब ज्ञात है—उसकी ही जबानी, मैं किसी से भी कुछ न कहूँगा। जब वह साइबेरिया जायगा तो तुम भी अवश्य ही उसके साथ जाओगी जाओगी न ? तब धन की आवश्यकता होगी—उसके लिये, समझीं ! इसके अलावा तुमने अमेलिया इवानोवना से भी, उसको उसका शुल्क देने का वचन दे दिया है। उसकी कर्जदार तो केथराइन इवा नोवना थी, तुम नहीं, और। अगर कल या परसों कोई मेरे बारे में तुम से पूछे, तो अपने मिलने की बात कभी मत कहना। और न धन वाली बात ही कहना। और अब अलविदा।" वह उठा। 'रासकालनीकोव को मेरी याद दिला देना। तुम अपना धन राजुमिहिन के सुपुर्द कर सकती हो, वह बड़ा भला आदमी है तुम तो जानती होगी उसे ? कल या फिर कभी उसके पास ले जाना इसे, लेकिन इस बीच ध्यान रखना, चोरी न हो जाय।"

सोनिया उठी और बड़ी उत्सुकता से उसने आगन्तुक को देखा। वह कुछ पूछना चाहती थी, लेकिन वह डर गई। "और आप इस मौसम में जायेंगे ?'

"जब आदमी अमेरिका जाता है तो वह मौसम पर ध्यान नहीं देता। अलविदा, प्यारी सोफिया सोमनोविच। भगवान तुम्हें दीर्घायु करे, जब कि तुम दूसरों के काम आती हो। मेरा प्रणाम राजुमिहिन से भी कह देना। भूलना नहीं।

उसी शाम को एक अजनबी अलेक्सर स मिलने को गया। पानी बर

रहा था। बड़ी कठिनाई से वह भीतर जा पाया। कुर्सी दी गई और वह बैठा। इधर-उधर की बातें होने लगीं, लेकिन आज स्विद्रिगेलोव को जल्दी थी, पहिले तो कभी ऐसा हो सकता था। उसने मंगेतर को देखने की इच्छा की—वह सोने जा चुकी थी। वह आई। उसने उसको बताया कि उसको काम से सेंटपीटर्सबर्ग से बाहर जाना है, और वह कि वह पन्द्रह हजार रूबल लाया है उसके लिये—जिसका कि उसने वचन दिया था।

परिवार वालों के शक के होते हुए भी, उन्होंने उसके लिये बड़े-बड़े धन्यवाद दिये और माँ ने तो आँसू भी बहा दिये। स्विद्रिगेलोव उठा, उसने उसको चूमा, गाल पर प्यार से हाथ फेरा और कहा कि वह शीघ्र ही आ जायेगा। लड़की ने उसकी ओर बेकरारी से देखा। स्विद्रिगेलोव ने इसे समझा और एक बार फिर चुम्बन लिया और जाते समय कह गया कि रुपयों की सम्हाल कर रखना। अर्धरात्रि में वह शहर में—पुल से होकर आया पानी बरसना बंद हो चुका था, पर हवा सूँ सूँ करके बह रही थी। आध घंटे तक वह इधर उधर घूमता रहा। कभी उसने यहाँ पर सीधे हाथ की ओर एक होटल को देखा था। वह उसे ढूंढता रहा। अन्त में वह मिला। वह भीतर घुसा। उसकी ओर एक बार देख कर, वहाँ के एक आदमी ने उसे एक कमरा बता दिया—छोटा सा। वही एक कमरा था।

"चाय है ?" उसने पूछा।

"ला सकता हूँ तुम्हारे लिये।"

"और क्या है ?"

"बछड़े का गोश्त (veal) वोदी और—"

"चाय और बछड़े का गोश्त लाओ।"

"और कुछ चाहिये ?" उसने हिचकिचाते हुए पूछा।

"कुछ नहीं।"

वह वेटर बिचारा निराश होकर चला गया।

"मैं देखूँ तो कि किस किस्म के आदमी यहाँ रहते हैं।" उसने विचार किया।

उसने मोमबत्ती जलाई, और सोने का कमरा देखा। वह बहुत छोटा,

छत नीची और उसकी तम्बूनुमा छाया था सीधा खड़ा भी न हो सकता। फर्नीचर भी रद्दी सा था। उसने अपनी मोमबत्ती टेबल पर रख दी, और बिस्तर के कोने पर बैठ कर विचार करने लगा। लेकिन पास के पार्टीशन से लगातार चें चें की आवाज आ रही थी। उसका ध्यान उधर आकृष्ट हुआ। वह उठा मोमबत्ती ली और उधर देखा। दो आदमी थे जो झगड़ रहे थे।

चाय पीते समय वेटर ने एक बार फिर हिचकिचाते हुए पूछा कि और कुछ नहीं चाहिये। उसके बुखार ने उसकी भूख मिटा दी थी। उसने जाकेट और ओवरकोट उतारा और कम्बल ओढ़ कर बिस्तर में आ पड़ा।

वह बिस्तर पर पड़ा था—कम्बल में लिपटा—मोमबत्ती बुझाई नहीं गई थी—दिन निकल रहा था। "मैं रात भर भयानक स्वप्न देखता रहा।" वह उठ बैठा। बाहर घना कुहरा छा रहा था, कहीं कुछ भी दिखना असम्भव था। लगभग पाँच बजा था; स्विद्रिगेलाव काफी देर तक सोया था। एक दम वह खड़ा हुआ वह और अपने गीले कपड़ों को फिर पहिना, और रिवाल्वर को जेब में डाल कर, बाहर निकाल कर देखा कि ठीक तरह से भरा हुआ था। तब वह बैठ गया, और नोट बुक के पहिले पृष्ठ पर कुछ बड़े बड़े शब्द लिखे। दुबारा पढ़ कर, उसने कोहनी टेबल पर टिका दी, और विचारों में खो गया। तब अपने कार्य का ध्यान करके तथा परिस्थिति का ध्यान करके उसने एक दम कमरा छोड़ दिया। दूसरे ही क्षण वह फिर सड़क पर था। शहर पर कुहरा छा रहा था—अब वह मालाया नेवा की ओर बढ़ रहा था। चलते-चलते उसने अपनी कल्पना में पीट्रोवस्की द्वीप देखा—उसके कुंजनुमा लान, पेड़, मार्ग, आदि। कोई भी राहगीर न था—न कोई गाड़ी ही आती जाती दिखी। सर्दी और मौसम का दम घुमक्कड़ पर असर पड़ रहा था।

एक ओर उसने एक बदसूरत कुत्ता देखा जो दुम टांगों में दबाये जा रहा था। पेवमेंट पर एक शराबी औंधे मुँह पड़ा था। आगे बाएँ उसने घंटाघर देखा। "हा हा!" उसने विचार किया, "यह स्थान ठीक रहेगा—पीट्रोवस्की द्वीप क्यों जाया जाय? यहाँ पर तो कानूनी रूप से कोई गवाही भी दे सकेगा—" अपने नये विचार पर उसे कुछ हँसी आई। वह—गली

की ओर झुका। एक छोटा सा आदमी फौजी लबादे में, तांबे का टोप पहिने द्वार के सामने खड़ा था। इसको पास आते देख उसने इसे देखा। कुछ देर दोनों एक दूसरे को शांति से देखते रहे। वे बिल्कुल पास थे, एक दूसरे के।

"तुम क्या चाहते हो?" बिना हिले हुए उसने पूछा।

"क्यों, कुछ नहीं मित्र! नमस्ते!"

"तो जाओ अपने काम से लगो।"

"मैं विदेश जा रहा हूँ, मेरे मित्र।"

विदेश! तुमने कहा?"

"अमेरिका को!"

"अमेरिका को? ओ!"

उसने अब रिवाल्वर निकाला और उसे चढ़ाया। सिपाही ने उसे देखा, "मैं कहता हूँ, यहाँ पर कोई ऐसी बदतमीजी नहीं।

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि यह उचित स्थान नहीं है।"

"कोई बात नहीं मित्र! यह जगह चल जायगी। यदि कोई तुमसे पूछे कहना मैं अमेरिका चला गया हूँ।" उसने नाल अपनी कनपटी पर लगाई।

"मैं कहता हूँ, तुम यह यहाँ नहीं कर सकते।" उसने आँखें फाड़ते हुए कहा।

स्विद्रिगैलोव ने घोड़ा दबा दिया।

६

उसी दिन शाम को छः और सात बजे के बीच में, रासकॉल्नीकोव अपनी माँ और बहिन से मिलने गया। वे दो महिलायें इस समय बैकालीव मैन्शन, में रहती थीं। राजुमिखिन ने ठीक करवाया था इसे। चढ़ते समय वह एक बार फिर झिझका। लेकिन मिलने का उसने निश्चय कर लिया। "शायद वे अभी तो कुछ जानते नहीं। और अभी तक तो वे मुझे पागल ही

समझते रहे हैं।" उसने विचार किया। उसके वस्त्र कीचड़ में सने हुए थे और फटे भी, और इन चौबीस घंटों की मानसिक वेदना उसके चेहरे पर झलक रही थी। उसने द्वार खटखटाया, उसकी माँ ने खोला, दुनेच्का बाहर गई हुई थी, नौकरानी भी नहीं थी उस समय। माँ ने एक दम खुशी में उसका हाथ पकड़ कर भीतर खींच लिया।

"लो तुम आ गये आखिर! परेशान मत हो प्यारे यह मेरे खुशी के आँसू हैं बैठ जाओ न प्यारे! तुम थके हो। इतने गंदे क्यों हो तुम?"

"मैं कल पानी में भीग गया था माँ।"

"बेवकूफ! डरो मत बेटा, मैं समझ सकती हूँ! सेंटपीटर्सबर्ग की सड़कों को, लेकिन हमारे यहाँ से यहाँ के आदमी अधिक चालाक हैं। पता नहीं तुम्हें क्या परेशानी है, मैं तुम से कोई प्रश्न नहीं पूछूँगी!—किसी बारे में नहीं। तुम्हें ज्ञात है, मैं तुम्हारा लिखा लेख तीसरी दफा पढ़ चुकी हूँ—इलियी मोसेविच ने मुझे दिया था। 'यही बात है जो उसको दिन रात खाये जाती है' मैंने विचार किया था। 'उसके दिमाग में नवीन विचार भरते रहते हैं, वह कहता किसी से नहीं।' हाँ तो उस लेख में कुछ ऐसी बातें हैं जो मेरी समझ में नहीं आई हैं।

"मुझे देखने दो माँ, उसे।" कोई भी लेखक अपने लेख का छपा हुआ देख कर बड़ा प्रसन्न होता है, जब कि उसकी अवस्था तेईस वर्ष से अधिक न हो। इतना परेशान होते हुए भी, खुशी की एक रेखा उसके चेहरे पर दौड़ गई। कुछ लाइनें पढ़ कर वह विचार मग्न सा हो गया और उसे एक ओर फेंक दिया।

"यद्यपि मैं मूर्ख हूँ पर मेरा विश्वास है कि बहुत शीघ्र ही तुम्हारा यदि प्रथम नहीं, तो भी, विज्ञान के संसार में, मशहूर स्थान हो जायगा। और तब भी कुछ लोग सोचते हैं कि 'तुम पागल हो। बेवकूफ लोग! तूने कहा शक को शक है। क्या यह हो सकता है? कुछ दिन पहिले तो तुम्हारे रहन सहन से मुझे भी शक हो गया था, पर अब सब समझ गई हूँ। मैं समझती हूँ तुम अभी बहुत—"

"दुनिया कहाँ है, माँ!"

"वह बाहर गई है, रोडिया! वह अक्सर बाहर चली जाती है, मुझे अकेला छोड़ कर। दमित्री प्रोकोफिच अक्सर आता है और तुम्हारी ही बातें करता है। वह तुम्हारी बड़ी इज्जत करता है। जहाँ तक तुम्हारी बहन का सवाल है, वह मुझे अपने बारे में कुछ बताती ही नहीं है। मैंने तो कभी भी अपने बच्चों से कुछ नहीं छिपाया। मैं जानती हूँ कि दूनिया हम दोनों को प्यार स्नेह करती है लेकिन अफसोस है कि इस समय वह यहाँ नहीं है। आयेगी तो कहूँगी कि तुम्हारा भाई आया था, तुम कहाँ थी!' जब तुम्हारा जी चाहे आया करो बेटा मैं तब तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी जब तक कि तुम मुझे प्यार करते रहोगे। मैं तुम्हारे बगैर रहूँगी। मैं जानती हूँ कि अपनी माँ को सुख पहुँचाने के लिये ही आज तुम आये हो।" माँ एक दम रो पड़ी। "मैं फिर—बुरा मत मानना—बेटा! मैं मूर्ख हूँ न!—कुछ काफी है, ठहरो जरा।"

"मुझे आवश्यकता नहीं है माँ, मैं तो चला। मेरी बात सुनो! माँ प्यारी! क्या तुम कुछ भी होने पर, मेरे बारे में कुछ भी सुनने पर, मुझे इसी प्रकार प्यार करोगी?" वह पूछ बैठा।

इन शब्दों को तोलने के पहिले ही, ये उसके वाग्धारा प्रवाह से निकल गये। 'रोडिया! बेटे! क्या बात है? ऐसा क्यों पूछते हो? कौन तुम्हारे खिलाफ कहेगा। मैं कभी नहीं सुनूंगी।"

"मेरा आने का यह मतलब था कि मैं यह कहता हूँ कि तुम्हें हमेशा मैंने प्यार किया—यह भी अच्छा रहा कि इस समय आप अकेले हैं। और हमेशा याद रखना कि तुम्हारे बेटे ने अपने से अधिक तुम्हें प्यार किया। मैं हमेशा ही तुम्हें प्यार करूँगा। मुझे यह विश्वास तुम्हें दिलाना था।"

पुलचेरिया अलेक्जेण्ड्रोव्ना ने चुपचाप अपने बेटे को छाती से चिपका लिया और अपनी ओर जोर से दबाया। 'मैं नहीं समझ सकी कि तुम्हें क्या हो गया है। अभी तक मेरा अनुमान था कि समाज के कारण तुम परेशान रहते हो, लेकिन अब कुछ ऐसा लगता है कि कोई बड़ा दुर्भाग्य हुआ चाहता है। गतरात्रि तुम्हारी बहिन भी स्वप्न में कुछ बक रही थी, जिसमें तुम्हारा नाम भी लिया था। मैं कुछ भी नहीं समझ सकी, यद्यपि इधर

सफर के कुछ शब्दों को बोलने की कोशिश की। तुम कहाँ जा रहे हो, तुम बिल्कुल जाने को तैयार हो हो न?"

"हाँ, हूँ।"

"मैंने यह भी सोचा था। लेकिन यदि तुम्हें जाना ही है तो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ, दूनिया भी तुम्हारे साथ चलेगी क्योंकि वह भी तुम्हें बहुत प्यार करती है। और सोफिया सेमयोनोव्ना भी चल सकती है, क्योंकि मैं उसे अपनी पुत्री जैसी मानने को तैयार हूँ। दमित्री प्रोकोफिच सब व्यवस्था कर देगा। लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो?"

"अलविदा, माँ।"

"क्या आज ही!" किसी अनन्त वियोग की भावना से भयभीत होकर।

"मैं ठहर नहीं सकता, मुझे जाना ही पड़ेगा।"

"मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकती?"

"नहीं, लेकिन तुम परमात्मा से प्रार्थना कर सकती हो। शायद वह तुम्हारी प्रार्थना सुन ले।"

"मुझे आशा है वह सुनेगा। मेरा आशीर्वाद—ओ ईश्वर!"

वह खुश था कि उसकी बहिन नहीं थी। अपना हृदय खोलने के लिये यह आवश्यक था—कि कोई भी न हो। वह अपनी माँ के चरणों में गिरा और पैरों को चूमा। माँ-बेटे ने, अश्रुपूर्ण नेत्रों से एक दूसरे को गले मिलाया। माँ ने फिर कुछ न पूछा। उसने सोचा कि शायद इनके मामलों का फैसला दुर्भेद्य रूप में ही होने वाला है।

"रोदिया, प्यारे, मेरे प्रथम पुत्र।" उसने हिचकियों के बीच कहा। "तुम एक दम ही तो चले नहीं जाओगे?"

"नहीं।"

"फिर आओगे?"

"अवश्य, आऊँगा।"

"रोदिया, नाराज न होना, मैं पूछना तो नहीं चाहती—पर क्या तुम बड़ी दूर जा रहे हो?"

"कहीं दूर ?"

"क्या तुम्हें वहाँ कोई काम मिलेगा, या क्या ?

"जो ईश्वर चाहेगा वही, पर मेरे लिये प्रार्थना करना।" रासकोल्नीकोव जाना चाहता था पर माँ ने उसे पकड़ रखा था, और उसे पूर्ण प्रेम से निगाह भर कर देखा। "बस करो, माँ, बस करो।"

"लेकिन तुम हमेशा के लिये नहीं जा रहे हो ! तुम फिर एक बार आओगे न ?"

"मैं आऊँगा, आऊँगा। अलविदा —।" वह चला गया।

मौसम साफ होगया था। रासकोल्नीकोव शीघ्र ही घर पहुँचा। रात्रि से पहिले वह सबसे मिलना जुलना समाप्त कर देना चाहता था, वहीं तो फिर उस हालत में उससे मिलना सम्भव नहीं था। ऊपर चढ़ते समय उसने देखा कि नास्तासिया उसकी ओर देख रही है। 'क्या कोई मेरी प्रतीक्षा कर रहा है ?' पोरफीरियस के बारे में उसने विचार किया। लेकिन द्वार खोलने पर दुनिया दीखी। अपने विचारों में खोई, कोच पर बैठी थी, वह बड़ी देर से प्रतीक्षा में थी। उसने एक बार उसकी ओर इस प्रकार देखा जिससे रासकोल्नीकोव को यह भास हुआ कि वह सब कुछ जानती है।

"भीतर चला आऊं, या बाहर ही खड़ा रहूँ।" उसने झिझकते हुए पूछा।

"मैं सोफिया सेमनोवना के यहाँ तमाम दिन प्रतीक्षा करती रही, तुम्हारी—हम तुम्हारी वहाँ आशा कर रहे थे।"

रासकोल्नीकोव भीतर आया। कुर्सी पर बैठ गया थका हुआ सा। "मैं बहुत थक गया हूँ, दुनिया ! और इस समय मुझे अधिक शान्ति की जरूरत है।"

"कल सारी रात कहाँ बिताई तुमने ?"

"मैं नहीं जानता मैं किसी विशेष निष्कर्ष पर पर आना चाहता था, और कई बार नीवा की ओर गया, यही याद है। मैं उस प्रकार सब कुछ ठीक ठाक करना चाहता था, लेकिन अभी तक कुछ भी नहीं कर पाया हूँ।" अपने शब्दों का प्रभाव लड़की के चेहरे पर देखते हुए उसने कहा।

'परमात्मा को धन्य है! यही बात तो हमें व्याकुल पैदा कर रही थी —मेरा मतलब मैं और सोनिया को! तुम्हें अभी भी जीवन की लालसा है—ईश्वर से प्रार्थना करो!"

रास्कोल्नीकोव हँसा। "मैं करने का आदी नहीं। लेकिन अभी माँ के पास गया था, इस अर्थ मिश्रित आँसुओं से भीगते हुए; मैंने उनसे प्रार्थना करने को कहा है।"

'तुम माँ से मिले? और तुमने उनसे बातें भी कीं?" डरकर उसने पूछा। लेकिन तुमने वह सब कुछ तो नहीं कहा न?"

' नहीं, बिल्कुल नहीं। लेकिन उन्हें कुछ शक है अवश्य। उसने मुझे स्वप्न में बकते सुना। मुझे शायद उनसे मिलना न चाहिये था; पता नहीं मुझे क्या हो गया। मैं बड़ा कमीना हूँ, दूनिया!"

"लेकिन ऐसा जो प्रायश्चित करने को तैयार है। करोगे न?"

"बिना देर किये। मैं डूबने जा रहा था, लेकिन फिर कुछ इस विचार आया कि हिम्मत वाले आदमी बदनाम से नहीं डरते। क्या यह अहंकार है, दूनिया?"

"हाँ, है, रोडिया!"

उसकी आँखें एक दम चमक उठीं; अपने अहंकार की रक्षा करती—इस भाव से वह प्रसन्न हो उठा। ' दूनिया तुम यह तो नहीं समझती कि मैं पानी से डर गया?"

"बस बस करो रोडिया!" दुःखित होकर लड़की ने कहा।

दोनों कुछ देर खामोश रहे। एक दम वह उठा। 'समय निकला जा रहा है, मुझे अब तक पहुँच जाना चाहिये। मैंने यही विचार किया कि स्वयं ही पहुँचा जाए।" बहिन की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। "और दूनिया! तुम रो रही हो? लेकिन क्या तुम मेरा हाथ पकड़ सकती हो?"

"क्या तुमने कभी शक किया है?" और उसने उसके हाथ को जोर से अपने हृदय से लगा लिया। "तुम जानते हो कि अपने अभियोग को स्वीकार करने से अपराध आधा रह जाता है?" अपने भाई को अपने अंक में भरते हुए उसने कहा।

"मेरा अपराध ? कैसा अपराध ?" विक्षिप्त की सी अवस्था में वह एक दम दहाड़ पड़ा। 'किसी गिद्ध को मार डालना अपराध है, जो कि सब के लिये समाज में घातक हो,—ऐसी जुवेश जो दूसरों के जीवन पर जीवित हो ! मैं तो ऐसा विचार भी नहीं करता। और मानसिक—वाह ! तो हर एक मुझसे 'अपराध ! 'अपराध' ! कह कर क्यों बोलता है। और अब चूंकि, मैंने अपनी इच्छा से बेइज्जती को सहर्ष स्वीकार कर लिया है ऐसे मूर्खता के निश्चय पर मुझे स्वयं भी, अब तो ग्लानि होती है। यह केवल मन की कमजोरी का परिणाम है।'

"भाई ! भाई ! तुम कैसे बात रहे हो ? क्या तुम खून बहाने के अपराधी नहीं हो ?"

"मानतो कि हूं। और क्या हर एक यह नहीं करता ? क्या आज तक हमेशा इस प्रकार बहता नहीं आया है ? क्या वे व्यक्ति जो खून को पानी की भांति बहाकर सत्ता धारण करते हैं उन्हें लोग मानवता का रक्षक नहीं कहते ? निर्णय देने के पहिले वास्तविक स्थिति का ज्ञान करो। मैं भी अपना काम करना चाहता था, पर कोई कोरा पागलपन नहीं था। हाँलाकि चतुरता की कमी के कारण अच्छी योजना भी बेकार लगती है। यही बात मेरे साथ हुई। यदि चतुरता भी होती तो विजयी हुआ होता ! लेकिन अब तो कुत्तों से भी बदतर।'

'लेकिन भाई ! यहाँ इस समय यह बात नहीं है।"

"मैं जानता हूँ कि मैंने रूप निरूपकता के नियमों का उल्लंघन किया है ! लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता क्यों किसी घिरे हुए शहर में गोलियां बरसाना सम्मानास्पद समझा जाता है, बजाय कुल्हाड़ी से किसी के ध्वंस करने के। रूप निरूपकता (aestheticism) का भय ही तो अयोग्यता का चिन्ह है। आज के पहिले इस सत्य का मैंने पहिले कभी भी अनुभव नहीं किया ! आज के पहिले कभी भी मैंने अपने को इतना असमर्थ और कायर नहीं पाया !"

उसके पीले चेहरे पर फिर रंगत आ गई। लेकिन दूनिया को देखते ही, जो कि उसकी ओर घोर दुःख से देख रही थी—उसकी हालत मानिस ऐसी

ही साधारण हो गई। उस मानना ही पड़ा कि इन दो महिलाओं के दुर्भाग्य का यही कारण है।

"दूनिया, यदि तुम मुझे वास्तव में अपराधी समझती हो तो क्षमा करना। अलविदा। समय हो रहा है मुझे जाना चाहिये। लेकिन तुम मेरे पीछे न आना। मुझे एक जगह और जाना है। माँ के पास जाओ, और उसे सान्त्वना दो।—यह मेरी अन्तिम प्रार्थना है—स्वीकार करना। वह बेहद दुःखी है या तो मर न जाँय और नहीं तो पागल न हो जाँय। उनकी निगरानी करना। राजुमिखिन तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगा। मुझे एक विश्वास है। और यद्यपि मैं खूनी हूँ, पर मुझे बुरा न समझना साहस और अच्छे काम के लिये जीवन के अन्तिम वर्षों तक लगा रहूँगा। किसी दिन तुम सुनोगी मेरे बारे में—लेकिन अब अलविदा।' उसने जल्दी से कहा "अरे रोती क्यों हो? रोओ मत—न—न।"

वह फिर मुख्य बात पर आगया।

इस समय जो मुख्य बात है वह यह कि मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ उसके बारे में ठीक से विचार कर लिया है या नहीं, और क्या जो कुछ भी परिणाम हो उसके लिये तैयार हूँ। बीस वर्ष बाद उससे छुटकारा पाने के बाद मेरे पास कौन सा नैतिक बल रह जायगा? तब क्या जीवन अपवित्र होगा? तो इस लिये यह भार मैं स्वयं उठा रहा हूँ। जब मैं नीवा में डूबने जा रहा था तो वास्तव में मैं डरपोक बन गया था।'

फिर दोनों ने घर छोड़ा। वे गली में एक दूसरे से बिछुड़े। कुछ दूर जाने पर लड़की ने अन्तिम दृष्टि डालने के लिये मुँह घुमाया। उसने भी गली के कोने से देखने के लिये सिर घुमाया। दोनों की निगाहें टकराईं। फिर दोनों अलग होगये।

७

अँधेरा हो रहा था जब वह सोनिया के यहाँ पहुँचा। सारे दिन वह उसकी प्रतीक्षा करती रही। पहिले तो दूनिया उसके पास आई थी, जिसने स्विद्रिगेलोव से यह जान कर कि सोनिया सब कुछ जानती है, यह निश्चय र लिया था कि वह उसके यहाँ जायगी। वहाँ वह अकेला व्यर्थ होगा कि

दोनों मिल कर खूब रोये, और पक्के मित्र बन गये। दूनिया को पता चला कि सब से पहिले सोनिया के सामने ही उसने 'स्वीकार' किया था, और अब में भाग्य जहाँ भी ले जाय सोनिया उसके साथ जायगी। सोनिया की ओर दूनिया ने बड़ी स्निग्ध दृष्टि से देखा; वह घबरा गई क्योंकि उसने तो कभी अपने को इस योग्य भी नहीं समझा था कि दूनिया को निगाह उठाकर देखे। क्योंकि वह इसके लिये अपने को सर्वथा अयोग्य समझती थी।

दूनिया अपनी भाई के यहाँ पर ही उसकी प्रतीक्षा करेगी यह कह कर चली गई। उसके चले जाने के बाद सोनिया को यह भय फिर व्याप गया कि कहीं वह आत्महत्या न करले। लेकिन वह उसके अहङ्कार को जानती थी। 'यह हो सकता है क्या कि वह जीने की चिन्ता करे—अपने ही बदहासी से—मृत्यु के भय से ?" उसने निराश होकर विचार किया। तभी एक दम वह कमरे में घुसा। उसके हृदय से एक खुशी की चीख निकल गई। लेकिन उसके चेहरे को देख कर वह पीली पड़ गई।

'हाँ, ' हंस कर उसने कहा, "मैं क्रास पहिनने आयाता हूँ, सोनिया। तुमने ही तो कहा था न कि किसी सार्वजनिक स्थान पर जाकर अपराधस्वीकृति की जाय; अब, मैं ऐसा ही करने जाता हूँ। सोनिया ने अचम्भे से उसकी ओर देखा। रास्कोल्नीकोव ने लड़की की ओर न देखते हुए कहा, "मैं समझता हूँ, सोनिया; कि यह सबसे अच्छा होगा। तुम जानती हो मुझे क्या परेशान कर रहा है ? वे सब लोग भिन्न प्रकार के मुझसे प्रश्न करेंगे, मुझे ताकेंगे, जगली लोग; और मुझे उत्तर देना' पड़ेगा। मैं पोरफीरियस के पास जाना नहीं चाहता, वह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं इधर बड़ा थक सा गया हूँ, कुछ दिनों से। मेरा पतन हो गया है ! अच्छा तो क्रास कहाँ है ?"

यह नवजवान एक क्षण भी स्थिरता से नहीं रह सकता और न बात कर सकता है। उसके विचार न तारतम्य नहीं पाते, उसके हाथ काँप रहे थे। सोनिया चुप थी। उसने दो क्रास निकाले उसने अपने आप पहिना, और एक रास्कोल्नीकोव के गले में।

"मैं तुमसे कुछ विशेष बातें कहने आया हूँ, जिससे तुम निश्चिन्त हो जाओ। यही सब। इसीलिये मैं आया था। और शायद अभी कुछ और

कहता है। हाँ, तुमने स्वयं ही कहा था न यह कदम उठाने को ? मैं जेल चला जाऊँगा और तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायगी। तुम रोती क्यों हो !— तुम-भी ? बस काफी है। काश तुम समझ सको कि यह मुझे कितना दुःख देती है !" सोनिया के आँसुओं से उसका दिल भर आया। "मैं उसका, कौन लगता हूँ !' उसने अपने आप कहा। "इसे मुझसे इतना लगाव क्यों आखिर ?"

"क्रास का चिन्ह बनाओ और एक छोटी सी प्रार्थना करो।" उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा।

"मैं तुम जितनी कहोगी उतनी प्रार्थना करूँगा, सोनिया ! और यह भी हृदय से, सोनिया हृदय से !'

वह कुछ कुछ कहना चाहता था। उसने क्रास के कई चिन्ह बनाये। फिर उसने एक हरी रूमाल उसके सिर पर बाँधी। और रास्कोल्नीकाव ने देखा कि साथ चलने की तैयारी कर रही थी।

'तुम क्या कर रही हो ? तुम कहाँ जा रही हो ? तुम यहीं ठहरो। मैं वहाँ अकेला रहना चाहता हूँ।" उसने तेजी से कहा। सोनिया ने आग्रह नहीं किया। वह बिना उससे नमस्कार किये ही बाहर निकल गया। इस समय केवल एक विचार उसके मन में था; "क्या खेल वास्तव में-समाप्त हो गया है ?"

फिर भी वह चलता गया। सड़क पर उसे याद आया कि वह सोनिया से मिलकर नहीं आया था फिर उसने एक प्रश्न अपने आप और किया, 'मैं उससे मिलने वहाँ गया ही क्यों ? मैंने कहा मैं काम से आया हूँ। क्या काम ? मुझे कोई काम नहीं है। क्या मैं यह बताने गया कि मैं जा रहा हूँ— कहाँ ? इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी ? क्या यह कहने गया था कि मैं उसे प्यार करता हूँ ? बेहूदगी ! लेकिन मैंने एक कुत्ते की तरह उसे धक्का क्यों दे दिया ? और उसका क्रास मैं क्या करूँगा ? था। मेरा कितना पतन हो गया है ? नहीं, मैं उसके आँसुओं को देखना चाहता था। या शायद आज, कुछ समय और बर्बाद करना चाहता था।"

वह नहर के किनारे चला जा रहा था; पुल पर रुका और हे मार्केट की ओर एक दम मुड़ा। "एक हफ्ते या एक माह में" उसने विचार किया। "मैं फिर इस स्थान से गुजरूंगा—कैदी की गाड़ी मुझे कहीं ले जायगी ! उस समय मेरे विचार क्या होंगे ? कैसे वाक्य मजेदार हैं नाहक ही मैं दुःख मना रहा हूँ। इस भीड़ को देखो ! यह जर्मन महिला अभी मुझ से टकरा गई। इसे क्या मालूम कि वह किस से टकराई है। वह बच्चे को ले जाती हुई भिखारी औरत शायद मुझे अपने से सुखी समझती होगी। इसे कुछ दे डालूँ ! पर है क्या मेरे पास ! अरे पाँच कोपेक मेरे पास ! ताज्जुब ! सुनो मातुश्का !"

"भगवान तुम्हारी रक्षा करे।" भिखारिन ने आशीर्वाद दिया।

मार्केट में भीड़ बढ़ती जा रही थी। वह बीच में आ गया था ! एक दम उसे सोनिया के शब्द याद आ गये। "किसी सार्वजनिक स्थान पर जाओ, भीड़ को प्रणाम करो, पृथ्वी को चूमो और जोर से कहो, मैं खूनी हूँ।" इस विचार पर वह काँप गया। वास्तविक दुःख उसके ऊपर छा गया, वह रो पड़ा। वह बीचोंबीच घुटनों के बल बैठा, जमीन की ओर झुका—और प्रसन्नता से जमीन को चूमा। उठकर एक बार फिर घुटने टेके।

"वह रहा एक आदमी जिसने एक पूरी पी ली है।" खड़े हुए किसी लड़के ने कहा।

यह सुनकर सब हँस पड़े।

"वह तीर्थ जाता है—जेरुसलम के लिये। वह अपने बच्चों और देश से विदा ले रहा है, वह हर एक से अलविदा कह रहा है।" एक भले आदमी ने कहा।

'वह अभी तो जवान ही है।" किसी तीसरे ने कहा।

"वह भले घर का है।'

"आज कल भले और बुरे की पहिचान मुश्किल है।'

अपने आपको हंसी का विषय बनते देख उसका आत्मसंयम डिग गया—वह चिल्ला पड़ा। "मैंने खून किया है।" भीड़भाड़ की ओर ध्यान दिये बिना ही वह शान्ति से पुलिस थाने की ओर चल दिया। जब वह दूसरी बार झुका था तो उसने पास ही सोनिया को खड़े देखा था। वह मुश्किल से अपने

को छिपाती हुई उसके पीछे आ रही थी। उस क्षण उसने विचार किया कि सोनिया हमेशा के लिए उसकी हो गई है। मृत्यु में जीवन में। पुलिस थाना चौथी मंजिल पर था। ऊपर पहुँचते हुए उसने एक बार फिर अपना इरादा बदलने के लिए विचार किया।

एक झटके के साथ उसने सुपरिन्टेन्डेंट के द्वार को खोला। इस समय उसने बाहर के कमरे में एक चौकीदार और मजदूर को देखा। सिपाही ने तो उसकी ओर ध्यान भी नहीं दिया। रास्कोल्निकोव भीतर के कमरे में घुसा। वहाँ दो क्लर्क बैठे थे। जमीतोव तथा निकोदिम-दोनों गायब थे।

"क्या सब बाहर हैं?" एक क्लर्क से पूछा।

"तुम किसे चाहते हो?"

"—सेवा में हाजिर!" एक परिचित आवाज़ एक दम सुनाई दी। रास्कोल्निकोव डरा। वह पावडर के सामने खड़ा था जो अभी भीतर से निकला था। "हरि इच्छा!—यह यहाँ कैसे आया?" इसने विचार किया। "तुम यहाँ? क्या बात है?" पोरोविच बोला। "यदि तुम काम से आये हो तो बहुत जल्दी है अभी। समय की बात है कि मैं यहाँ हूँ। लेकिन मैं किस काम—मुझे क्या करना चाहिये—क्या—? तुम क्या—? क्षमा करना—"

"रास्कोल्निकोव।"

"हाँ हाँ, रास्कोल्निकोव! तुमने कभी यह तो विश्वास नहीं कर लिया कि मैं तुमको भूल गया हूँ? राडि—राडियो—रोम—रोमनोविच—मेरे ख्याल से!"

"रोडियो रामनोविच।"

"हाँ हाँ हाँ! मुझे वास्तव में अफसोस है कि हमने किस प्रकार तुम्हारे साथ उस दिन व्यवहार किया था—लेकिन बाद में बात मेरी समझ में आई; मुझे ज्ञात हुआ कि तुम एक लेखक हो। मुझे ज्ञात हुआ कि तुम साहित्य का अध्ययन करना चाहते थे। बताओ! ऐसा कौन लेखक है जो अपने दिमाग में कुछ सनकीपन न रखता हो!—हाँ तो मैं पूछना चाहता था कि तुम्हारे यहाँ आने का—मतलब क्या है? तुम्हारा परिवार भी यहीं है?"

"हाँ, माँ और बहिन।"

'मैं, तुम्हारी बहिन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ—बड़ी अच्छी महिला है। हाँ, तो उस दिन उस झगड़े के लिये हमें बड़ा अफसोस है। और तुम्हारे एक वस्तु गायब हो जाने पर भी बहुत से अनुमान लगाये गये थे, वे सब भी झूठे साबित हो चुके हैं। मैं तुम्हारे क्रोध के कारण को भली—प्रकार समझ सकता हूँ। और चूँकि तुम्हारा परिवार सेंटपीटर्सबर्ग आ गया है इसलिये अब शायद तुम भी अपना विश्वास त्याग कर दोगे।'

"नहीं अभी तो नहीं। मैं इसलिये—आया—मैंने सोचा कि मुझे जेमीतोव से मिलना चाहिये।"

"हां, मुझे याद आया। उसका परिचय था तुमसे। अब वह यहाँ नौकरी पर नहीं है। हमारे कुछ आदमियों से उसका झगड़ा हो गया था। तुम मेरे साथ बिल्कुल अपनेपन से व्यवहार कर सकते हो। मैं एक पदाधिकारी हो सकता हूँ लेकिन फिर भी एक आदमी हूँ—नागरिक हूँ। तुम अभी जेमीतोव के बारे में कह रहे थे न। वह एक नवयुवक है, फ्रांस की जीवन प्रणाली के हिसाब से रहता है, और एक अधिक गिलास शराब पीकर बड़े काम कर सकता है। अब तुम ही सोच सकते हो कि वह क्या था। इसके अलावा मैं एक ऊँचे पद पर—अपना कर्तव्य करता हूँ—"

रासकोलनीकोव कुछ झमेले में पड़ सा गया। वह ईलिया पीट्रोविच की अधिक पिये हुए समझा—क्योंकि अभी वह खाना खा रहा था।

"आज कल एक नया भूत लोगों पर सवार हो रहा है—आत्म हत्या का। कोई आदमी पहिले तो अपना पाई-पाई लुटा देता है और तब अपने आपको समाप्त कर देता है। अभी हाल में ही, एक आदमी जो हाल में ही यहाँ आकर रहने लगा था, ने ऐसा किया है, श्री निकोदीमिच! निकोदीमिच! उन महाशय का क्या नाम था जिसने कनपटी पर रिवॉल्वर से गोली चला कर आत्महत्या की?"

"स्विड्रिगेलोव।" किसी ने दफ्तर में से कहा।

रासकोलनीकोव हिल गया। "स्विड्रिगेलोव! उसने आत्म हत्या कर ली?"

"क्या, तुम उसे जानते हो?"

"हाँ जानता हूँ। वह अभी हाल ही में यहाँ आया था।"

"हाँ, आया था। तुम ठीक कह रहे हो उसकी बीवी का देहान्त हो गया था। उसकी जेब में एक पॉकेट-बुक मिली है—जिस पर लिखा है, 'मैं पूर्ण होश की हालत में आत्महत्या कर रहा हूँ। इसलिये मेरी मृत्यु का उत्तरदायित्व किसी पर नहीं है।' उन लोगों का कहना है कि वह अमीर था। लेकिन तुम कैसे जानते हो?"

'मैं—मेरी बहिन उनके यहाँ गवर्नेस थी—उस परिवार में।"

"वाह! वाह! तब तो तुम और भी अधिक उसके बारे में कुछ बता सकोगे। क्या उसके इरादों के बारे में तुम्हें कुछ ज्ञान था?"

"मैंने उस कल देखा—वह पी रहा था—लेकिन मुझे कुछ भी शक नहीं हुआ था।" "रासकोल्नीकोव ने अपने हृदय पर भारीपन का अनुभव किया।

"तुम मुझे फिर कुछ पीले नज़र आ रहे हो। इस कमरे में गर्मी—"

"हाँ, अब तक मुझे चला जाना चाहिये था।" वह कुछ मुस्कराया। "क्षमा करना तुमको कष्ट दिया।"

"बेवकूफ! मैं हमेशा तुम्हारी आज्ञा में हूँ। बड़ी प्रसन्नता हुई मिल कर। और मुझे यह कहते—' कहते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"मैं केवल यह कहना—मैं ज़ेमीतोव से यह कहना चाहता था—।"

"मैं समझ गया बड़ी खुशी हुई मिलकर—"

रासकोल्नीकोव को गश आया, और नीचे आते समय मुश्किल से वह दीवार पकड़ पा रहा था। उसने देखा कि चौकीदार, नीचे जाते समय उससे टकराता हुआ गया। नीचे कोई कुत्ता भौंक रहा था। वह नीचे अहाते में पहुँचा। नीचे सोनिया, पीली सी पड़ी हुई खड़ी, उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसके सामने खड़ा हो गया। उसे देख कर वह हँसा।—लेकिन वह हँसी! एक क्षण बाद वह फिर पुलिस आफिस की ओर गया। इलिया-पेत्रोविच कुछ कागज़ात देख रहा था। वह उसके सामने फिर आकर खड़ा हो गया।

"ओह! तुम फिर आ गये! क्या कुछ भूल गये? क्या बात है?"

पीले पड़े ओठों और निगाह स्थिर—वह उसकी ओर बढ़ा—बिल्कुल पास। वह बोलना चाहता था लेकिन केवल कुछ अस्पष्ट शब्द ही निकल पाये।

"तुम्हें कुछ कष्ट है, कुर्सी पर बैठो, कुछ पानी लो!"

वह कुर्सी पर बैठ गया। कुछ देर तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे। पानी लाया गया।

"वह मैं था—"

"पियो!"

एक क्षण मात्र में उसने गिलास खतम कर दिया, फिर बड़ी धीमी आवाज में उसने कहा :

"वह मैं था जिसने, कुल्हाड़ी से, उस बुढ़िया उधार देने वाली को, और उसकी बहिन एलिजावेथ को मारा। चोरी करना मेरा उद्देश्य था।"

इल्या पीट्रोविच ने सहायता के लिये आदमी बुलाये। आदमी दौड़ आये चारों ओर से। रासकोल्नीकोव ने फिर अपना स्वीकारण दुहराया।

उपसंहार

१

साइबेरिया। एक विशाल पर, चपल सी नदी के किनारे एक गाँव है जो रूस के कई शासन केन्द्रों में से एक है; इस गाँव में एक गढ़ है; इस गढ़ में एक जेलखाना। इस जेलखाने में रस्कोल्नीकोव भी नौ मास से रह रहा था—एक द्वितीय श्रेणी के देश-निर्वासित अभियोगी की भाँति। लगभग अठारह मास इस अपराध को हुए हो गए।

बिना किसी विशेष अड़चन के न्याय पारित हो गया था। अपराधी ने स्पष्ट रूप से अपना स्वीकरण किया। न तो उसने वास्तविकता को तोड़ा-मरोड़ा और न किसी बातीत बात का पक्ष। उसने अपराध की प्रत्येक घटना का वर्णन किया, और सम्पुट के रहस्य का भी उद्घाटन किया (लकड़ी और लोहे का सम्पुट) जिसे कि उसने उस औरत को बताया था। उसने बताया कि उसने बुढ़िया की चाबियाँ ली थीं, और वस्तुओं से भरा सम्पुट, और अन्त में एलिज़ावेता के खून का भी वर्णन किया; फिर कोच का आना और द्वार खटखटाना उसके पीछे एक विद्यार्थी का आना, उनकी बातें, फिर वह अपराधी किस प्रकार नीचे गया और निकोला आदि की बातें सुन कर किस प्रकार खाली कमरे में छिप गया। अन्त में, सब बातों को स्वीकार करने के बाद उसने उस स्थान को भी बताया—अहाता और द्वार जहाँ पत्थर के नीचे उसने पैसा आदि छुपाया था। वे सब चीज़ें वहीं मिली थीं। निरीक्षण करने वाले जजों को आश्चर्य हुआ कि उसको उन वस्तुओं को छिपाने के बजाय उसने लाभ उठाया था; लेकिन आश्चर्य की बात तो तब और भी हुई जब कि वह यह भी नहीं पता सका कि वस्तुएँ वास्तव में संख्या में कितनी थीं। उन्हें बड़ी अजीब सी बात लगी कि उसने खोल कर भी नहीं देखा। उसमें लगभग तीन सौ सत्तर रूबल के नोट थे जो कि खराब भी हो गये थे।

उन लोगों ने अधिक समय इसमें लगाया कि किसी प्रकार यह ज्ञात हो जाय कि इस जानकारी को छिपाने का कारण क्या था, जबकि और सब बातों को उसने स्वीकार किया था। यह समझा गया था कि इसमें अपराधी झूठ बोलेगा। जब बाद में उसने यह कहा कि वास्तव में वह यह नहीं जानता कि वह माल क्या था, इस तर्क पर मान लिया गया कि अपराध एकांकी—पागलपन की प्रतिक्रियास्वरूप था—कोई विशेष कारण चोरी या खून का नहीं था। यह बात अस्थाई-पागल पन वाले सिद्धान्त से ठीक उतरता था। इसके अलावा, इस सम्बन्ध में कई गवाही भी थीं, जिससे रासकोल्नीकोव की विचित्र हालत की सत्यता मानी जा सकती थी—उनमें से डाक्टर जोसीमोव पुराने जान पहिचान वाले, मकान मालकिन और नास्ता दिया जिसकी गवाही विशेष रूप से इसको सिद्ध करती थी कि रासकोल्नीकोव का मामला मामूली खून या चोरी का नहीं था। दुर्भाग्यवश अभियोगी ने,यह पूछने पर कि उसका इरादा अपराध करते समय क्या था बताया कि इस सब का कारण उसकी हीन अवस्था उसकी लाचारी, और कुछ प्राप्त करने की उसकी प्रबल इच्छा थी जिससे वह अपना जीवन प्रारंभ कर सके। पूछने पर कि उसने जोश क्यों दिया,सब कुछ, उसने उत्तर दिया कि वह पछता चुका था।

फिर भी, इन बातों को ध्यान में रखते हुए, सजा कहीं अधिक आसान थी और जजों की यह नम्रता शायद इस कारण थी कि उसने अपनी पैरवी नहीं की, और उसने अपराध स्वीकार कर लिया था। और फिर हर बात का इसमें बड़ा ध्यान रखा गया था। उसकी बीमारी और गरीबी पर किसी प्रकार का शक किया ही नहीं जा सकता। और चूँकि उसने चोरी के माल से लाभ नहीं उठाया था, इसलिये यह विचार किया गया कि या तो एक दम उसे इसका दुःख हुआ होगा या इसको करते समय उसका दिमाग ठिकाने नहीं रहा होगा। कुछ हद तक पश्चात्ताप का मूल भी उसके पक्ष में रहा। एक आदमी दो खून करता है, और फिर भी भूल जाता है कि हार लुटा है। और अंत में अपना स्वीकरण उस समय करना जब कि निकोला के स्वीकार करने से

अमली अपराधी की तरफ से बिल्कुल शक हट गया। इन सब बातों ने उसके दण्ड को कम कर दिया।

इसके अलावा उसके मित्र राजुमिखिन ने यह बयान दिया कि विश्व विद्यालय में पढ़ते समय अपनी गरीबी में भी उसने कई लोगों की मदद की थी, उसकी पहिले वाली मकान मालकिन ने भी बयान दिया था कि किस प्रकार-जब आग लगी थी तो जान की बाजी लगाकर, रासकोलनीकोव ने आग में कूद कर उसकी दो बच्चियों को निकाला था। संक्षेप में अदालत ने इन प्रमाणों के आधार पर उसके स्वीकरण पर और उसके पहिले के अच्छे चरित्र पर ध्यान रखकर उसकी सजा आठ वर्ष के कठोर कारावास और साइबेरिया में देश निकाला की दी थी।

जिस समय इसके मुकदमें पर विचार हो रहा था इसकी माँ बीमार पड़ी। दूनिया और राजुमिखिन ने उसके स्थान को बदलने का विचार किया और उसे शहर से थोड़ी ही दूर ले जाकर रखा। जिस शाम को भाग्यहीन दूनिया अपने भाई से मिलकर घर पहुँची थी उस शाम माँ सन्निपात में होगई थी। उसी दिन दोनों ने रासकोलनीकोव के न होने के कारण गढ़ लिये जो माँ को सुनाए गये।—कि वह हम से बहुत दूर किसी महान कार्य को लेकर चला गया है और बड़ा धन और पद प्राप्त करके लौटेगा। लेकिन माँ ने कभी भी बेटे के बारे में नहीं पूछा। उसके विपरीत वह स्वयं बताती कि किस प्रकार बेटा उससे अन्तिम विदा लेकर गया, इसके साथ वह यह भी बताती कि कोई बड़ी गुप्त बात थी जो वह जानती थी, और जिसका उल्लेख न करना ही अच्छा था।

माँ ने उसके लेख को भी कई बार पढ़ा, और कभी कभी पढ़ते पढ़ते उसके साथ सो भी जाती थी। दूनिया और राजुमिखिन उसकी इन बातों से डर गये थे। और उन्हें दिख रहा था कि माँ की हालत खराब होती जा रही थी।

कई दिनों की चुप्पी के बाद माँ को दौरा पड़ने लगा, और वह उसमें अपने बेटे के बारे में बातें करती, उसकी आशाओं और उसके भविष्य

के बारे में। दोनों उसके ध्यान को बटाने का भरकस प्रयत्न करते। लेकिन वह बातें करती ही रहती।

दूनिया पीद्रोविच के सामने स्वीकार करने के पाँच माह पश्चात् सजा सुनाई गई। राजुमिखिन और सोनिया उससे हवालात में अवसर मिलने जाते। अन्त में देश निर्वासन का समय आया। बहिन ने कहा कि अलविदा हमेशा के लिये नहीं है। हो सकता था कि रास्कोल्नीकोव वहीं जाय वहीं पर स्थाई रूप से रहने लगे। और अपना नया जीवन आरंभ करदे। विदा के समय सब रो पड़े। आखरी दिनों में वह बड़ा चंचल हो उठा था। माँ के बारे में पूछता और उसकी हालत जानकर बड़ा उदास हो जाता। सोनिया से इन दिनों वह अलग ही रहा। लेकिन धन की सहायता से सोनिया ने उसके साथ जाने का प्रबन्ध करवा लिया था। उसने रास्कोल्नीकोव से इसका कभी जिक्र नहीं किया। आखरी समय उसके चेहरे पर यह सुनकर कि उसका भविष्य उज्वल हो जायगा जब वह लौट कर आयगा, मुस्कराहट आ गई। उसने अन्तर्दृष्टि से माँ की मौत देखी। अन्त में सोनिया और वह रवाना हुए।

दो माह बाद दूनिया ने राजुमिखिन से विवाह किया। पोरफीरियस और जोसीमाव बुलाये गये थे।

माँ ने बेटी और जामाता को आशीष दिया, लेकिन विवाह के बाद वह और भी उदास रहने लगी। दूनिया की कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करे। वह सड़कों पर मारी मारी फिरती और दोनों बच्चों का पता पूछ कर आने का निश्चय करती।

अत में हालत और अधिक खराब होगई। वह खूब रोती और सन्निपात में चिल्लाती। एक दिन वह कहने लगी कि वह आने वाला है पर वह न आया। वह और निराश हो गई और बुखार आ गया, लगभग पन्द्रह दिनों में वह मर गई।

रास्कोल्नीकोव को बहुत समय तक माँ की मृत्यु के बारे में ज्ञात नहीं हुआ। यद्यपि पत्र-व्यवहार चलता रहा। सोनिया रास्कोल्नीकोव के

जीवन का वर्णन सिलसिलेवार करती थी। वह अपने बारे में कुछ नहीं लिखती थी।

लेकिन इससे ज्यादा ही शांति इन दोनों को मिल पाती थी। सोनिया ने जब उसे माँ की मृत्यु का समाचार बताया तो कोई विशेष प्रभाव उस पर नहीं पड़ा। शायद तो उसने अनुमान लगा लिया था। उसका स्वास्थ्य ठीक रहता था। वह प्रति दिन अपना काम करता था। उसका खाना बड़ा खराब मिलता था। त्योहारों आदि के दिनों को छोड़ कर खाना इतना खराब होता था कि उसने सोनिया से कुछ पैसे चाय पीने के लिये लिये। उसने लिखा कि जेल में वह सबके साथ रहता और तख्ते पर सोता। उसे काम भी हो सकता था लेकिन उसने कभी प्रयत्न नहीं किया। सोनिया ने स्वीकार किया था कि वह उसके प्रति पहिले तो किसी प्रकार का स्नेह बताने के बजाय नफरत करता था। लेकिन बाद में मुलाकातें अच्छी तरह से होने लगीं। त्योहारों के दिन वे दोनों एक दूसरे को चौकीदार के दरवाजे पर से देख लेते थे। लेकिन अक्सर वह रास्कोल्नीकोव को नदी पर या खेत पर काम करते देख लेती।

अपने सुख के बारे में उसने लिखा था कि उसने सीना-पिरोना आरंभ कर दिया है, क्योंकि वहाँ पर कोई भी कपड़े सीने वाला नहीं है इसलिये वह अमूल्य हो गई है। अन्त में उन्हें समाचार मिला कि रास्कोल्नीकोव बहुत दिनों से बिल्कुल बोला नहीं है। दूसरे पत्र में था कि वह बहुत बीमार है, और जेलखाने के अस्पताल में है।

२

वह बहुत दिनों तक बीमार रहा। लेकिन इसका कारण जेल का यातनापूर्ण जीवन नहीं था। उसमें क्या डर? एक बात थी: वह अपने काम से तुष्ट था। शारीरिक परिश्रम करने के बाद उसे सुख की नींद तो आती थी। वह खराब खाता। उससे क्या? क्या उसे खाने को भी पाकर वह विद्यार्थी जीवन में प्रसन्न नहीं रहता? अपना दुखी सिर लेकर वह किसके सामने शरमा जाय? सोनिया के? लेकिन वह उससे डरता था।

और स्नेह उमड़ रहा था' एक का हृदय दूसरे के लिये अपार आनन्द अनन्त प्रकाश दे रहा था। उन्होंने प्रतीक्षा करने की ठानी। अभी भी सात वर्ष उनके सामने पहाड़ से थे, पर फिर आशा और सुख! वह था! वह यह जानता था। और वह—वह उसके जीवन का अङ्ग थी।

उस दिन की सन्ध्या आई। रास्कोल्नीकोव उसके विचारों गया। उसके अभियोगी साथी उस पर कृपा की दृष्टि रखे थे। वह उनसे और उन्होंने उत्तर दिया—प्रसन्नता से। उसने इस परिवर्तन को देखा, विचार किया, "शायद सब कुछ परिवर्तित हो जायगा।" उसे सब कुछ लगा जैसे कुछ न हुआ हो। वह उस शाम को कुछ न विचार कर सका जीवन!—एक, वास्तविक जीवन आने वाला था! उसके तकिये के नीचे 'टेस्टामेंट' थी। उसने अपनी बीमारी के समय इसके लिये उससे पूछा था। उसने ला रखी थी। वह बिना खुले ही पड़ी थी।

सोनिया का विश्वास, भावना, क्या मेरे उसके समान नहीं हो सकते एक दिन में इतनी उत्तेजित हो गई थी, कि शाम को फिर बीमार पड़ गई पर वह प्रसन्न थी। सात वर्ष—! केवल—सात-वर्ष!!! सुख के दिन का आरम्भ पर ये सात वर्ष केवल सात दिन का स्वप्न मात्र रह जायगा। उन्हें नहीं ज्ञात कि नया जीवन उन्हें व्यय ही नहीं दिया जा रहा है।

लेकिन अब नवीन इतिहास आरम्भ होता है। एक नये व्यक्ति का पुनः जागरण।—ऐसा परिचय जो अभी तक संसार से अपरिचित था—वास्तविकता से अपरिचित था। यह नवीन कहानी का प्रारम्भ हो सकता है। जिसे हम पाठकों को भेंट करना चाहते थे।